

भारत के सबसे ज्यादा बिकने वाले लेखक
वेद प्रकाश शर्मा

शाकाहारी खगार



शाकाहारी खंजर

शाकाहारी खंजर में जो कहानी मैं लिखनी चाहता था, उसे मुख्य किरदार का नाम आर. के. राजदान था। एक युवा बिजनेसमैन उसके छोटे भाई का नाम देवांश था। राजदान आज अपनी मेहनत, लगन और निठा के बूते पर 'राजदान एसोसिएट्स' नामक कंस्ट्रक्शन कंपनी का मालिक था। देवांश से वह बेइतिहास प्यार करता था।

राजदान की पत्नी का नाम था-दिव्या।

देवांश अगर राजदान की आंखों का तारा था तो दिव्या थी उन आंखों की ज्योति। देवर-भाभी के रूप में देवांश और दिव्या थी एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

उपरोक्त किरदारों की कहानी जब मैंने लिखनी शुरू की तो फैलते-फैलते इतनी लम्बी हो गई कि वह 'स्पॉट' ही नहीं आया जहां इस कथानक को उस 'मोड़' पर पहुंच जाना था जहां इसका नाम 'शाकाहारी खंजर' रखा जाना चाहिए था, और उतने पेज लिखे जा चुके थे जितने में एक उपन्यास 'कम्पलीट' माना जाता है।

मजबूरीवश मुझे कलम रोक देनी पड़ी।

वहां तक के कथानक को एक नया नाम दिया।

'कातिल हो तो ऐसा।'

कातिल हो तो ऐसा के प्रथम दृश्य में आर. के. राजदान करीब बीस दिन बाद कनाडा से भारत लौट रहा था। दिव्या और देवांश 'राजदान एसोसिएट्स' के चुनिंदा स्टॉफ के साथ उसे रिसीव करने आये थे। वे सब विजिटर्स लॉबी में थे जबकि एयरपोर्ट के बाहर, कार पार्किंग में खिल रहा था एक गुल।

राजदान के ड्राइवर का नाम-केशोराज बन्दूकवाला था। उस वक्त वह अपने मालिक की सिल्वर कलर की चमचमाती मर्सडीज पर कूल्हा टिकाये सिगरेट में कश लगा रहा था। जब एक अत्यन्त खूबसूरत और सैक्सी लड़की लड़की ने उसे अपनी नग्नता के लपेटे में लपेटा। इतने झीने कपड़े पहन रखे थे उसने कि पट्टी का सब कुछ नुमाईया हो रहा था। छक्के तो केशोराज बन्दूकवाला के उसे देखते ही छूट गये थे परन्तु उस वक्त तो होश ही फाख्ता हो गये जब बन्दूकवाला के अत्यन्त नजदीक पहुंचकर उसने अपनी छातियां तान दीं। अपने वक्षस्थल की तरफ इशारा करके कहा-देख क्या रहा है? भींच इन्हें।

कौन मर्द का बच्चा होगा जो ऐसी अवस्था में होशो-हवास न गंवा बैठेगा? वही हुआ बन्दूकवाला के साथ। जैसे ही उसने वह करना चाहा जो खुद लड़की ने कहा था, वैसे ही लड़की ने गौर मचा दिया, 'देखो, ये गुण्डा सरेआम एक लड़की की इज्जत पर हाथ डाल रहा है।' फिर क्या था?

चारों तरफ से लोग बन्दूकवाला पर झपट पड़े। ऐसी मार पड़ी कि छकड़ी भूल गया। जिसने उसकी करतूत के बारे में सुना वही अपने हाथों की खुजली मिटाने में जुट गया। एक पुलिस वाले को उधर आता देखते ही पारदर्शी कपड़ों वाली लड़की मर्सडीज के दूसरी तरफ सरकी। उसी वक्त-शक्ल में से गुण्डा नजर आने वाला एक लड़का मर्सडीज का दरवाजा खोलकर बाहर निकला। वह लड़की का साथी था। आंखों की आंखों में दोनों की बातें हुई। पता लगा-लड़की ने बन्दूकवाला को इसलिए खुद में उलझाया था ताकि उसका साथी आराम से मर्सडीज में टाइम बम फिट कर सके। बन्दूकवाला ठुकता रहा, वे दोनों अपना काम करके निकल गए।

उधर-दिव्या, देवांश और 'राजदान एसोसिएट्स' के स्टाफ ने गर्मजोशी के साथ राजदान का स्वागत किया। देवांश तो बाकायदा पूरा बैण्ड और फूलमालाएं लेकर पहुंचा था वहां। वह चहक रहा था। दिव्या की आंखों में खुशी के आंसू थे, मगर राजदान में उन्हें देखकर वह गर्मजोशी नहीं थी जो होनी चाहिए थी। जाने क्यों, वह उदास-उदास और कुछ हद तक टूटा हुआ लग रहा था। दिव्या और देवांश ने कारण जानना चाहा। राजदान ने कुछ बताया नहीं बल्कि खुद को सामान्य दर्शने की नाकाम कोशिश करने लगा। अंततः वे एयरपोर्ट से बाहर निकले। पार्किंग में पहुंचे। बन्दूकवाला की करतूत के बारे में पता लगा। उस बेचारे की इस बात पर राजदान सहित कोई विश्वास करने को तैयार नहीं था कि जो कुछ उसने किया वह करने के लिए खुद लड़की ने उकसाया था। बन्दूकवाला को पुलिस के हवाले क दिया गया। देवांश ने सिल्वर कलर की उस मर्सडीज की ड्राइविंग सीट संभाली जिसमें टाइम बम फिट किया गया था और राजदान दिव्या के साथ पिछली सीट पर बैठा। बाकी लोग देवांश को 'जेन' और स्टाफ कार में थे।

काफिला 'राजदान विला' की तरफ चल दिया।

रास्ते में राजदान ने दिव्या और देवांश से पूछा कि 'बबलू' उन्हें रिसीव करने एयरपोर्ट पर क्यों नहीं पहुंचा? दोनों का जवाब था—हमें नहीं मालूम। असल में बबलू का नाम बीच में आते ही उनका मूड ऑफ हो गया था। यह कहा जाये तो ज्यादा मुनासिब होगा, बबलू का नाम राजदान की जुबान पर आते ही अक्सर उनका मूड ऑफ हो जाया करता था।

बबलू एक गरीब लड़का था। उम्र करीब सोलह साल। उसके पिता टीचर थे। वह राजदान विला के ठीक सामने सड़के के उस पार बनी तीन मंजिला इमारत में, एक फ्लैट में रहता था। जाने कैसे, राजदान का बबलू में और बबलू का राजदान में प्यार पड़ गया था। बबलू के प्रति राजदान की यह चाहत दिव्या और देवांश को बिल्कुल पसंद नहीं थी। उसके बारे में राजदान से बातें तक करना नहीं चाहते थे वे, अतः टॉपिक चेन्ज करने की गर्ज से कार ड्राइव करते देवांश ने राजदान से उसकी मायूसी और उखड़ेपन का कारण पूछा। जवाब में राजदान भड़क उठा जबकि यूँ भड़क उठना उसके स्वभाव में नहीं था। इससे दिव्या और देवांश को पूरा यकीन हो गया राजदान कनाडा से कोई बड़ी उलझन दिमाग में लेकर आया है। दोनों उस उलझन को जानने के लिए बैचन हो उठे। बहरहाल, प्यार तो वे भी राजदान को बेइतिहा करते थे परन्तु तत्कालीन माहौल में कुछ पूछने की हिम्मत न जुटा सके। कार में तनावपूर्ण सन्नाटा छा गया था। और तब इस सन्नाटे के कारण ही 'टिक्-टिक्-टिक्-टिक्' की आवाज देवांश के कान खड़े कर सकी। टिक्-टिक् की उसी आवाज का पीछा करते वे मर्सडीज में छुपे टाइम बम तक पहुंच गये और उसे उठाकर गाड़ी से बाहर फेंका ही गया था कि वह फट गया।

अर्थात्। मरते-मरते बचे थे दिव्या, देवांश और राजदान।

यहां इन्टरड्यूज होता है—इंस्पेक्टर ठकरियाल। अदरक की गांठ जैसे गरीब का मालिक। बेहद काईयां और मुंहफट पुलिसिया। जो दिमाग में आये उसे फट से कह देने में जरा नहीं हिचकता। घटनास्थल पर पहुंचते ही उसने केशोराज बन्दूकवाला को भी तलब कर लिया। उसके मुंह से पार्किंग में घटी घटना को डिटेल सुनी। पहली बार बन्दूकवाला को यह महसूस करके राहत मिली कि अब लोग उसकी बात पर विश्वास कर रहे थे। ठकरियाल इसी नतीजे पर पहुंचा कि बन्दूकवाला को उलझाने की घटना मर्सडीज में बम रखने के लिए की गई थी परन्तु सबसे बड़ा सवाल था—यह सब किया किसने? कौन था उनके खात्मे का तलबगार? क्यों मार डालना चाहता था उन्हें?

ये कुछ ऐसे सवाल थे जो हर दिमाग को मथ रहे थे। देवांश इस वारदात के जनक का पता लगाने के लिए पगलाया हुआ था। दिव्या चिंतित! ठकरियाल कयास पर कयास लगाये जा रहा था। उसका ख्याल था—शायद राजदान का कोई बिजनेस प्रतिद्वन्द्वी उन्हें खत्म कर देना चाहता है। ठकरियाल को ही नहीं, दिव्या और देवांश को भी—सबसे ज्यादा चक्कर में डाला था। राजदान के व्यवहार ने। एक उसके फेस पर वह खौफ था जो अभी-अभी मौत के मुंह से बचे हुए फेस पर होना चाहिए था। न ही यह जानने की उत्सुकता कि उसका कत्ल आखिर कौन क्यों करना चाहता है? जब ठकरियाल ने यह कहा 'हमलावर अपना एक हमला नाकाम होने पर दूसरा-तीसरा हमला भी कर सकता है।' तब, राजदान ने फीकी मुस्कान के साथ कहा था—“अगर वह ऐसा करता है तो बड़ी दुर्भाग्यशाली होगा।” राजदान के इस अटपटे वाक्य का मतलब किसी की समझ में नहीं आया।

कोशिश के बावजूद कोई समझ नहीं पा रहा था। राजदान आखिर है किस मानसिक उलझन में? क्या समस्या लेकर आया है कनाडा से? उसके होठों पर पहली बार मुस्कान तब आई जब बबलू के फ्लैट में जाकर उससे मिला। बबलू को बुखार था। इसके बावजूद वह राजदान को रिसीव करने एयरपोर्ट जाना चाहता था। परन्तु उसके माता-पिता ने नहीं जाने दिया। यहां जब एकान्त में राजदान और बबलू को बातें हुईं तो पता लगा—बबलू का इश्क उसके स्कूल में पढ़ने वाली एक हमउम्र लड़की से चल रहा है। राजदान से वह उसी लड़की के बारे में घुट-घुट बातें करता है। बड़ा ही मासूम प्यार था बबलू और उस लड़की के बीच। राजदान की कोशिश थी—उस प्यार को 'मासूम' ही बनाये रखना है। दरअसल, वह बच्चों को बहकने नहीं देना चाहता था।

उधर, विला में दिव्या और देवांश कुढ़ रहे थे। कुढ़न का कारण था—राजदान का बबलू के पास से अब तक न लौटना। उनका ख्याल था—बबलू के मां-बाप ने अपने बेटे को जानबूझ कर राजदान के पीछे लगा रखा है ताकि वक्त आने पर किसी बहाने से 'नावा-पत्ता' झटक सके।

दिव्या और देवांश के बीच इस बारे में बातें चल ही रही थी कि राजदान पहुंच गया। बोला—“तुम्हें आदमी की पहचान नहीं है। वे लोग कैसे नहीं है।” इस बारे में न दिव्या ने बहस की, न देवांश ने। हां, एक बार फिर देवांश ने राजदान की उदासी का कारण जरूर जानना चाहा। जवाब में राजदान पुनः भड़क उठा।

तब, दिव्या ने निश्चय किया—वह इस भेद तक रात के वक्त बैडरूम में पहुंचेगी।

उस रात दिव्या ने खुद को विशे। रूप से सजाया-संवारा। वे कपड़े पहने जो राजदान विशे। रूप से ऐसे ही किसी अवसर पर पहनने के लिए लाया था। गर्ज यह कि उसने वे सभी लटके-झटके इस्तेमाल किये जो एक पत्नी अपने पति को लुभासे के लिए कर सकती थी मगर राजदान विला के पिछले हिस्से में बने किचन लॉन की रोशनियों में खोया रहा। यह किचन लॉन खुद राजदान ही ने बनवाया था। अपने और दिव्या के लिए। दो हजार गज में फैले उस लॉन में कृत्रिम पहाड़ और झरने थे। पेड़-पौधे और झाड़ियां थीं ओर थे ऊंचे-ऊंचे फव्वारे। रात के वक्त जब वह रोशनियों से जगमगाता तो 'परिस्तान' जैसा लगता था।

बॉल्कनी में बैठा राजदान उस वक्त उसी का नजारा कर रहा था। जब दिव्या उसे अपने मादक स्पर्श से उत्तेजित करने का प्रयास करती बैडरूम में ले आई। जब तब भी राजदान उत्तेजित न हुआ तो दिव्या हैरान रह गई। बोली—“आखिर बात क्या है राज, बाहर से आकर तो खुद ही मुझ पर इस तरह झपट पड़ते थे जैसे कई दिन का भूखा थाली पर झपटता है मगर इस बार मैं खुद उत्तेजित करने की कोशिश कर रही हूँ। तुमसे करंट ही मालूम नहीं पड़ता। दिमाग में ऐसी क्या प्रॉब्लम लेकर आये हो कनाडा से जो तुम्हारा ध्यान किसी ओर तरफ नहीं लगने दे रही? मुझे बताओ राज! मैं पत्नी हूँ तुम्हारी। तुम्हारी हर प्रॉब्लम के बारे में जानने की हकदार।” और तब राजदान बुरी तरह उत्तेजित हो उठा। जब से एक कागज निकालकर उसकी तरफ फेंकता हुआ चीखा—“जानना ही चाहती हो तो लो देखो इसे। ये ही मेरी प्रॉब्लम।” कागज को पढ़ते ही दिव्या के हलक से चीख निकल गई—“नहीं! ऐसा नहीं हो सकता।” तब राजदान ने बहुत ही गान्त स्वर में कहा था—‘ऐसा हो चुका है।’ तब दिव्या राजदान की तरफ इस तरह देखती रही गई थी जैसे अपने पति की तरफ नहीं बल्कि चिड़ियाघर से भागकर आये संसार के किसी विचित्र प्राणी की तरफ देख रही हो।



अगले दिन! इंस्पेक्टर ठकरियाल ने सुबह-सुबह राजदान, देवांश और दिव्या को बन्दूकवाला सहित थाने में तलब किया। कारणा था कम्मो और बुग्गा की गिरफ्तारी। बन्दूकवाला ने पु टी की—कम्मो वही लड़की थी जिसने पार्किंग में उसकी ‘छिताई’ कराई थी और बुग्गा था उसका वह साथी जिसने मर्सडीज में टाइम बम फिट किया था। ठकरियाल ने काफी तत्परता के साथ उन दोनों को खोज निकाला था। उन्हें सामने देखते ही देवांश मारे गुस्से के मानो पागल हो उठा। वह यह जानना चाहता था उन्होंने उन्हें मारने की कोशिश क्यों की? पता लगो यह काम कम्मो और बुग्गा को मुनासिब फीस के साथ एक ऐसे नकाबपोश ने सौंपा था जो थोड़ा लंगड़ाकर चलता है। सवाल के जवाब में उन्होंने बताया—“वह नकाबपोश खुद ‘सवाया होटल’ स्थित हमारे कमरे में आया था।”

कम्मो-बुग्गा नकाबपोश के बारे में इससे ज्यादा जानकारी न दे सके। देवांश को ठाक था वे झूठ बोल रहे हैं। सच्चाई का पता लगाने के लिए उसने खुद सवाया होटल जाने का फैसला किया। हालांकि राजदान ऐसा नहीं चाहता था परन्तु देवांश पर हमलावर तक पहुंचने का जुनून सवार था।



उसके बाद देवांश नजर आता है—एक फाइव स्टार होटल के जानदार सुईट में। वह सिगरेट पी रहा है। शराब पी रहा है। साकी—एक सांवली परन्तु तीखे नाक-नकश वाली बेहद आकृति और सैक्सी लड़की। देवांश उसे ‘विनीता’ कह रहा है। उनकी बातचीत से स्पष्ट होता है कि—लंगड़ा नकाबपोश बनकर देवांश ही सवाया होटल गया था। उसी ने कम्मो और बुग्गा से सौदा किया था। वह टाइम बम दिया था जो बाद में उन्होंने मर्सडीज में रखा।

फिर देवांश खुद भी उसी मर्सडीज में क्यों बैठा? क्यों बम को फटने से ‘ऐन’ पहले उसने गाड़ी से बाहर फेंक दिया? इन सवालों के जवाब भी देवांश और कथित विनीता की बातचीत से ही मिलते हैं। दरअसल उनका उद्देश्य राजदान और दिव्या को दुनिया से उठा देना था ताकि उनके बाद सारी जायदाद देवांश की हो जाये परन्तु मर्सडीज में टाइम बम किसी की हत्या करने के लिए नहीं बल्कि ठीक वही ड्रामा प्लान्ट करने के लिए रखा गया था जो किया गया। और यह उपज थी देवांश के दिमाग की। वह जानता था राजदान और दिव्या के मरते ही पुलिस सीधा ठाक उसी पर करेगी, क्योंकि उनके बाद जायदाद का वारिस वही है ड्रामा रचा ही इसलिए गया था ताकि बाद में तब, जबकि किसी अन्य तरीके से वास्तव में राजदान और दिव्या का मर्डर हो तो देवांश इन तर्कों के साथ खुद को ठाक के दायरे में दूर रख सके कि अगर उनकी हत्याओं के पीछे वह होता तो खुद उस गाड़ी में क्यों बैठता जिसमें बम था? क्यों खुद ही बम को फटने से पहले गाड़ी के बाहर फेंक देता?

अर्थात् गाड़ी में टाइम बम वाली घटना को देवांश ने केवल अपनी ‘एलीबाई’ तैयार करने के लिए अंजाम दिया था। असल मर्डर तो अबे यानी आगे, किसी और तरीके से होना था। यहां मेरे पाठकों के दिमाग में यह सवाल कौंध सकता है कि जब देवांश अपने भैया और भाभी से इतना प्यार करता था तो वह जायदाद के लिए उनकी हत्या क्यों नहीं करनी चाहता था?

जवाब है—शराब और नृबाब।

ये दो चीजें अच्छे-भले आदमी को जहनी तौर पर अंधा बना देती हैं।

कठित विनीता ने देवांश को अपने नृबाब का ऐसा जलवा दिखाया कि वह उन बातों को सच मान बैठा जिनको जानता था कि झूठ हैं। जैसे—विनीता ने कहा—‘राजदान तुमसे वास्तविक प्यार नहीं करता, केवल दिखावा करता है। गौर करो—हर जायदाद या तो राजदान के नाम से खरीदी गई है या दिव्या के। अगर वे तुमसे प्यार करते तो क्या एक भी ‘प्लॉट’ तुम्हारे नाम से न खरीदते?’

किसी ओर ने, किसी और माहौल में यही बात कही होती तो मुमकिन है देवांश ने उसका मुंह थपेड़ दिया होता परन्तु कहने वाली हुस्न की मलिका थी। वह, जो उससे सच्चा प्यार करने का दम भरती थी। वह, जिसे अपनी बनाने के लिए देवांश मरा जा रहा था और वह, जिसने कहा था—‘मैं किसी फक्कड़ से नहीं, अरबपति से गद्दी कर सकती हूँ। और अरबपति तुम तब हो सकते हो जब राजदान और दिव्या इस दुनिया में न रहे।’ इस तरह—कथित विनीता के चंगुल में फंसा देवांश अपने भैया व भाभी का मर्डर करने के लिए तैयार था।



अब जरूरत थी एक योजना की! उस काम में उनकी मदद ‘वि।कन्या’ नामक एक किताब ने की। असल में यह किताब विनीता ही अपने साथ लाई थी। किताब में एक ऐसी वि।कन्या का जिक्र था जिसने अपने उरोजो के निष्पल पर घातक जहर का लेप किया और तिगड़म से उस राजा के बैडरूम में पहुंच गई जिसकी हत्या करनी चाहती थी। वह पहले से ही जानती थी राजा विलासी है। सब कुछ बहुत आसान था। सहवास से पूर्व और सहवास के दरम्यान कामतुर राजा ने स्वाभाविक रूप से उसके निष्पल चुसके और सहवास पूर्ण करने से पूर्व ही खुदा को प्यारा हो गया। उसका निर्जीवृरीर वि।कन्या के ऊपर पड़ा रह गया था।

देवांश ने किताब में तरकीब पढ़ने के बाद कहा—‘तरकीब तो वाकई लाजवाब है मगर ‘भैया’ पर कारगर नहीं होगी। वे विलासी नहीं है। ‘भाभी’ के अलावा किसी की तरफ देख तक नहीं सकते। तबें विनीता ने कहा—‘जहर दिव्या के ही निष्पल पर लगाया जायेगा। वह काम तुम्हें इस तरह करना होगा कि खुद दिव्या न जान सके तुम कब उसके निष्पल पर जहर लगा गये? इस तरह—विनीता उसे समझाने लगी कि किस तरह राजदान की हत्या करके न केवल दिव्या को उसमें फंसाया जा सकता है बल्कि यह भी साबित किया जा सकता है कि राजदान एसोसिएट्स का चीफ एकाउन्टेन्ट उसका आशिक है और यह काम उसने उसी के साथ मिलकर किया है। देवांश प्लान से सहमत था मगर यह बात उसकी समझ में न नहीं आ रही थी दिव्या की नॉलज में लाये बगैर वह उसके निष्पल पर जहर कैसे लगा सकेगा? विनीता उस वक्त उसे अपने बाबू के सागर में डुबोने का प्रयत्न कर रही थी जब अचानक इंस्पेक्टर ठकरियाल वहां पहुंच गया।’

उसे वहां देखकर जहां विनीता और देवांश के होश फाख्ता हो गय वहीं, ठकरियाल के तो उन दोनों की जुगलबंदी माना हलक में अटककर रह गई। उसने देवांश को थाने ले जाकर एकान्त में समझाया भी। कहा—‘मैं अच्छी तरह जानता हूँ। विनीता का असली नाम विचित्रा है। वह एक तवायफ की बेटी है। अगर तुम उसके मोहपोश में पड़े रहे तो निश्चित रूप से किसी बखेड़े में फंस जाओगे।’ मगर, सिर पर जब इश्क का भूत सवार हो तो ‘मरीज’ की समझ में कुछ नहीं आता। और तब तक तो देवांश न केवल विचित्रा के जिस्म का स्वाद चख चुका था बल्कि दिव्या के निष्पल पर जहर लगाने की तरकीब भी सोच चुका था।



वह घर पहुंचा। उस वक्त वहां बबलू और भट्टाचार्य भी थे। भट्टाचार्य राजदान के बचपन का दोस्त भी था और डाक्टर भी। राजदान को हल्का सा बुखार था। कुछ देर बाद वह दवा के असर से सो गया। भट्टाचार्य और बबलू अपने-अपने घर चले गये। देवांश अपने कमरे में। नींद नहीं आ रही थी उसे। दिमाग में लगातार वह ‘प्लान’ घूम रहा था जिसके तहत दिव्या के निष्पल पर जहर लगाना था। हालात का जायजा लेने रात के करीब दो बजे चारों की मानिन्द दबे पांव कमरे से निकला। ‘की-हॉल’ के जरिए राजदान के कमरे में झांका और दिव्या को बैड से गायब पाकर हैरान रह गया। राजदान वहां अकेला सोया पड़ा था। देवांश के दिमाग में सवाल कौंथा—रात के इस वक्त, अपने पति को यूं सोता छोड़कर दिव्या आखिर गई कहां है? कहीं सचमुच ही तो कोई आशिक नहीं पाल रखा है उसने? देवांश को ‘विला’ के एक हट्टे-कट्टे नौकर आफताब के साथ दिव्या के संबंधों का टुक हुआ। परन्तु उसके सभी कयास उस वक्त धरे रह गये जब दिव्या को खोजता किचन लॉन में पहुंचा और ठण्डे पानी के एक झरने के नीचे नहा रही दिव्या को देखा। ऐसा दृश्य था वह जिसने देवांश के होश उड़ा दिये। जिस दिव्या को उस दिन से पहले देवांश ने सचमुच हमेशा उस नजर से देखा था जिससे ‘मां’ को देखा जाता है, वही दिव्या—उस रात उसे ‘अप्सरा’ सी नजर आई। तीन कारण थे उसके। पहला—विचित्रा ने उसे औरत के जिस्म को किसी और नजरिए से देखने का चस्का डाल दिया था। दूसरा—विचित्रा की बातों के बाद उसकी नजर में दिव्या की इज्जत ‘मां’ वाली रह ही नहीं गई थी और तीसरा कारण था—सामने मौजूद, दिव्या का लगभग नग्न जिस्म। जिस्म पर मौजूद एकमात्र सफेद साड़ी झरने के पानी में गीली होने के कारण जिस्म से इस कदर चिपक गई थी कि सब कुछ नुमाईया हो रहा था।

बहके हुए युवा देवांश का जी तो जाने क्या-क्या चाहा परन्तु अपनी भावनाएं खुलकर दिव्या के समझ व्यक्त करने की हिम्मत नहीं जुटा सकता था। अतः चुपचाप वहां से खिसक लिया। उस घटना के बाद दिव्या के प्रति देवांश का नजरिया पूरी तरह बदल चुका था।



अगले दिन, तब जबकि राजदान ऑफिस जा चुका था। दिव्या शॉपिंग हेतु बाजार गई थी। देवांश उनके कमरे में पहुंचा। उसे दिव्या के उस खास पैन की तलाश थी जो सोने का बना था। जिस डायमण्ड्स जड़े थे। लाखों की कीमत का वह पैन दिव्या को राजदान ने भेंट किया था। देवांश और विचित्रा का प्लान था उस खास-पैन से 'वि।कन्या' नामक किताब ककी उन पंक्तियों को अण्डरलाइन करना जिनमें हत्या का यह विवरण था जिस तरीके से राजदान की हत्या होनी थी। उनके प्लान के मुताबिक वह किताब हत्या के बाद 'समरपाल' के घर से बरामद होनी थी जिससे यह साबित हो जाता कि समरपाल दिव्या का आशिक है और उन दोनों ने मिलकर किताब में लिख गये प्लान के मुताबिक राजदान को ईहलीला समाप्त की है। पैन की तलाश में जिस वक्त वह दिव्या की संपूर्ण ज्वेलरी बैड पर फैलाये हुए था उसी वक्त इत्तफाक से आफताब वहां घुस आया और इस घटना ने देवांश को इस कदर डरा दिया कि इस तरीके से राजदान का मर्डर करने का ख्याल ही उसके दिमाग से निकल गया। उसे लगा—अगर उसने यह मर्डर इस ढंग से किया तो बाद में आफताब का बयान उसे फंसा देगा। तभी, मोबाइल पर उसकी बात विचित्रा से हुई। विचित्रा ने समझाया कि वह बेवजह डर रहा है। बात पुनः देवांश की समझ में आ गई। अपने पूर्व प्लान पर आगे बढ़ गया वह। दिव्या का पैन तलाश किया। खास पंक्तियां अण्डरलाइन की और किताब को समरपाल के घर में छुपा भी आया। अब बाकी था—जहर दिव्या के निष्पल पर पहुंचाना। वह जहर जो उसने एक सपेरे से हासिल किया था।



रात नौ बजे के आसपास दिव्या को नहाने की आदत थी। देवांश दिन ही में बाथरूम की उस खिड़की की चटकनी अंदर की तरफ से गिरा आया था जो 'फ्रन्ट लॉन' की तरफ खुलती थी। अपने प्लान के मुताबिक उसी खिड़की के जरिए वह पौने नौ बजे बाथरूम में दाखिल हुआ तथा ड्रेसिंग में उस अलमारी के अंदर छुपकर खड़ा हो गया, जिसमें राजदान के कपड़े थे। दिव्या ड्रेसिंग में आई। अपनी अलमारी से वे कपड़े निकालकर ड्रेसिंग टेबल के टॉप पर रखे जो स्नान के बाद उसे पहनने थे। एक ब्रा, अण्डरवियर, झीना गाऊन और कोट। उन्हें निकालने के बाद स्नान हेतु वह बाथरूम में चली गई। बाथरूम और ड्रेसिंग के बीच अपारदर्शी कांच का एक दरवाजा था। देवांश छुपे स्थान से निकला। जहर की बूंदें ब्रा की कटोरियों पर ठीक वहां टपकाई जहां पहनी जाने के बाद दिव्या के निष्पल कोटारण लेनी थी।

तो यह था देवांश और विचित्रा का प्लान।

इस ढंग से जहर पहुंचाया गया दिव्या के निष्पल पर।

काम इतना आसान था कि बगैर किसी विध्वन-बाधा के करने के बाद वह पुनः अलमारी में आ छुपा। अब बस—उसे करना यह था कि जैसे ही स्नान के बाद दिव्या ड्रेसिंग टेबल के टॉप पर रखे कपड़े पहनकर बाथरूम से बाहर जाये, वह भी जिस खामोशी के साथ खिड़की के जरिए अंदर आया है, उसी खामोशी के साथ बाहर चला जाये परन्तु हमेशा वैसा होता कहां है जैसा आदमी ने सोचा होता है। अलमारी में छुपे देवांश की सांसे उस वक्त ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई जब कांच का दरवाजा खुला और दिव्या ने बाथरूम से ड्रेसिंग में कदम रखा। उफ्फ! पूरी तरह नग्न थी वह। कपड़े का एक रेशा भी तो नहीं था जिस्म पर! और होता भी क्यों? बहरहाल, एक औरत उस वक्त अपने नितान्त प्राइवेट बाथरूम में थी। किसी अन्य के वहां होने की कल्पना भी कैसे कर सकती थी वह। कैसे जान सकती थी अलमारी के किवाड़ों के बीच बनी झिरी से उसे कोई देख रहा है? उसने स्वच्छन्द और उन्मुक्त भाव से अपने गीले बालों को झटका। संगेमरमरी जिस्म पर सिर्फ और सिर्फ पानी की बूंदें झिलमिल रही थी। देवांश पागल हो उठा। इस कदर कि जब वह ड्रेसिंग टेबल की तरह बड़ी और झिरी से नजर आना बंद हो गई तो झिरी चौड़ी कर ली उसने। वह उस जिस्म को देखते रहने का उन्माद ही था जिसके तहत देवांश झिरी को इस कदर चौड़ी कर बैठा कि दिव्या को उसकी वहां मौजूदगी का अहसास हो गया और एहसास ही क्यों—दिव्या ने रंगे हाथ पकड़ ही जो लिया देवांश को। जहां दिव्या उसे वहां देखकर हतप्रभ रह गयी वहीं, देवांश के तो मानो होश ही उड़ गये। वासना का सारा नशा काफूर हो गया। दिव्या के कदमों में गिर पड़ा वह। रो पड़ा गिड़गिड़ाया—'गलती हो गई मुझसे। मेरी इस हरकत का जिक्र भैया से मत करना।' दिव्या इस कदर हैरान थी कि काफी देर तो कुछ समझ ही न सकी। होश आया तो उसने गुर्राकर देवांश को चुपचाप उसी रास्ते से चले जाने के लिए कहा जिससे आया था चुपचाप उसी रास्ते से चले जाने के लिए कहा जिससे आया था और देवांश यूँ भागा जैसे सिंहनी के पंजे से हिरन निकलकर भागा हो। बौखलाया हुआ उस वक्त वहट्टाहर की सुनसान पड़ी सड़कों पर कार दौड़ाये फिर रहा था। जब दिमाग ने कहा—'इन हालात में अगर राजदान दिव्या के निष्पल चुसककर मर गया तो दुनिया की कोई ताकत उसे फांसी के फंदे से नहीं बचा सकेगी। कल—जब राजदान की लाश के नजदीक खड़ा ठकुरियाल यह घोषणा करेगा, यह हत्या दिव्या के निष्पल पर लगे जहर से हुई है तो दिव्या वह दिव्या जो इस वक्त यह समझ रही है कि देवांश ड्रेसिंग में 'नीयत खराब' होने की वजह से था वहेसमझ जायेगी कि उसकी यहां मौजूदगी का असल कारण 'नीयत खराब' होना नहीं बल्कि 'यह' था—यह कि उसी ने जहर उसके निष्पल तक पहुंचाया और जब वह एक बयान ठकुरियाल को देगी तो ठकुरियाल को उसे हथकड़ी पहनाने में एक सेकण्ड नहीं लगेगी।

देवांश को लगा-सारा खेल बिगाड़ चुका है।

यह प्लान तब कामयाब था जब दिव्या उसे ड्रेसिंग में देखती नहीं। उस अवस्था में खुद उसे ही पता नहीं लग पाता उसके निप्पल पर जहर कहाँ से आ गया? ठकुरियाल जब उससे यह सवाल करता तो यही कहती-‘मुझे नहीं मालूम।’ और ठकुरियाल तो क्या, दुनिया का एक भी आदमी यह मानने को तैयार नहीं होता कि किसी औरत के निप्पल पर कोई जहर लगा गया और औरत को पता नहीं लगा अर्थात् पूरी तरह झूठी माना जाता दिव्या को। उसके बाद-समरपाल को लंगड़ाहट ठकुरियाल का ध्यान अपनी तरफ खींचती। उसके घर की तलाशी में ‘वि।कन्या’ मिलती और वह कहानी कम्पलीट हो जाती जो दिव्या और समरपाल को फंसाने के लिए देवांश और विचित्रा ने बनाई थी परन्तु दिव्या के देख लेने ने सारा काम बिगाड़ दिया था। अब उस ढंग से राजदान के मरने का मतलब था-उसे फांसी होना। बचने का एक ही रास्ता था-यह कि वह किसी भी तरह आज की रात दिव्या और राजदान को ‘हम बिस्तर’ होने से रोके। यह सोचकर वह कांप उठा कि वर्तमान हालात में दिव्या की नजरों का सामना कैसे कर सकेगा परन्तु जान बचानी थी तो सामना तो करना ही था।

सो, घर पहुंचा।

वहां एक ऐसी मुसीबत सामने आई जिसकी वह स्वप्न में कल्पना नहीं कर सकता था। वह मुसीबत थी-राजदान को उसके और विचित्रा के सम्बन्धों का पता लग जाना। उन सम्बन्धों के बारे में राजदान को देवांश के मोबाइल के बिल से पता लगा था। देवांश के होश उड़ गये और उस वक्त तो उसके पैरो तले से मानो धरती ही खिसक गई जब पता लगा कि वह विचित्रा और उसकी वेश्या मांतिबाई के इयंत्र का शिकार है। उनका उद्देश्य है-राजदान की दौलत हड़प कर जाना। राजदान बताता है-‘ऐसी एक कोशिश वह छः साल पहले भी कर चुकी है। उस वक्त विचित्रा ने ठीक उसी तरह मुझे अपने रूपजाल में फंसाया था जिस तरह इस वक्त तुम्हें फंसा रखा है। उसके जादू में फंसा मैं तुम्हें अपनी जायदाद से बेदखल तक करने को तैयार हो गया था। वह तो भला हो उस घटना का जिसके कारण मुझे उनकी हकीकत और असल इरादों का पता लग गया। वक्त रहते होश आ गया मुझे और उसके बाद मैंने इस इलाके के तत्कालीन इंस्पेक्टर को खुश करके न केवल उनकी तबियत दुरुस्त कराई बल्कि उनकी ब्लैकमेलिंग के जाल में भी निकला। उन्होंने उसी वक्त मुझसे बदला लेने की कसम खाई थी और अबेअपननी वही कसम पूरी करने के लिए उन्होंने तुम्हें फंसाया है। देवांश राजदान की कहानी पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। उसे लगा-राजदान ने उसे विचित्रा से दूर रखने के लिए मनघड़ंत कहानी सुनाई है लेकिन उस वक्त उसे इस कहानी की सत्यता पर विश्वास करना ही पड़ा जब राजदान ने उसे वे फोटो दिखाये जिनमे बूते पर विचित्रा और उसकी मां ने राजदान को ब्लैकमेल करना चाहा था। उन फोटों में विचित्रा, वह विचित्रा जिसे देवांश दूध की धुली समझता था, राजदान के साथ अभिसाररत नजर आ रही थी। देवांश की आंखें तो खुल गईं मगर राजदान का सम्भावित कत्ल अब भी नंगी तलवार की तरह उसकी गर्दन पर लटक रहा था क्योंकि दिव्या वही कपड़े पहने हुए थी जो उसने स्नान से पूर्व ड्रेसिंग टेबल के टॉप पर रखे थे। वक्षस्थल को उसी ब्रा ने कस रखा था जिसकी कटोरियों में उसने जहर टपकाया था अतः राजदान से छुपाकर उसने दिव्या से एकान्त में बात करने की इच्छा जाहिर की। वह दिव्या को यह इशारा देकर अपने कमरे में आ गया कि ‘भैया’ के साथ सोने से पहले उसे उसके कमरे में आना है। और उस वक्त एक नया ही गुल खिला जब दिव्या उसके कमरे में आई। उसके जिस्म पर झीना नाइट गाऊन, वही ब्रा और अण्डरवियर था। राजदान को नींद की गोली देकर आई थी वह। रात के उस वक्त, दिव्या को उस लिबास में अपने इतने नजदीक देखकर देवांश का विचलित होना स्वाभाविक था किन्तु अपने मनोभाव व्यक्त करने की हिम्मत नहीं थी उसमें। उस वक्त तो होश ही फाख्ता हो गये पट्टे के जब दिव्या उसी हालत में दौड़कर उससे आ लिपटी। थर-थर कांप रहा था देवांश। यह वैसी ही स्थिति थी जैसे आप किसी पेड़ पर लटके पके फल को ललचाई नजरों से देखें और उसी क्षण फल खुद टूटकर आपकी गोद में आ गिरे। सब कुछ उसकी आंखें देख रही हैं। वह सच है। मगर जा सच था वह सच था।



पता लगा-राजदान को एड्स है। कनाडा से वह यही बीमारी लेकर आया था। वह उसकी ब्लड रिपोर्ट थी जिसे देखने के बाद उस रात दिव्या के हलक से चीख निकल गई थी। तब से, दिव्या निरंतर प्यासी थी। उस प्यासी ने जब देवांश को अपनी तरफ आकर्षित पाया, अपने ड्रेसिंग में देखा तो स्वाभाविक रूप से उससे आ लिपटी। वासना के नशे में चूर देवांश उस वक्त यह भी भूल बैठा कि जिस औरत को पाने के लिए इस क्षण मरा जा रहा है। उसके निप्पल को कुछ देर पहले खुद उसी ने जहरयुक्त किया है। इस बात का ख्याल उसे तब आया जब खुद अपने हाथों से उसकी ब्रा खोल डाली। तब, जबकि दोनों उरोजों की चौंचों ने गर्दन उठाकर उसकी तरफ देखा। बरबस ही देवांश के होंठ उनकी तरफ बढ़ना चाहते थे कि उफ्फ! अचानक ख्याल आया। ये तो जहरयुक्त है। खुद को चुसकने वाले को ईश्वरपुरी पहुंचा देंगे। तबें कुछ इस तरह दिव्या कोट्टावर के नीचे ले गया वह कि दिव्या को लगा-देवांश उन्माद में है। वहां, उसके वक्षस्थल को देवांश ने रगड़-रगड़कर धोया। दिव्या गर्दन का आनन्द उठाती रही। समझती रही-वह देवांश का स्टार्डल है। उस हद तक गिर चुके दिव्या और देवांश को पतन की गर्त में गिरने से भला अब कौन बचा सकता था।



उधर, बुग्गा और कम्मो के मुताबिक उन्हें सुपारी देने वाला नकाबपोश लगड़ाकर चलता था। समरपाल की चाल में लंगड़ाहट देखकर इंस्पेक्टर ठकरियाल की तवज्जो उस पर गई। वह उससे मिला। बातचीत के बाद इस नतीजे पर पहुंचा नकाबपोश और भले ही चाहे जो हो लेकिन समरपाल नहीं है। वह जो भी है, कोई ऐसा टाक्स है जो बेगुनाह समरपाल को इस झमेले में फंसाना चाहता है। अतः ठकरियाल ने समरपाल से कहा—“तुम्हें किसी की हत्या के इल्जाम में फंसाने की कोशिश की जा रही है। खेरियत चाहते हो तो जैसे ही अपने आसपास कोई असामान्य बात देखी, बगैर समय गंवाये मुझे सूचित करना।”

बेचारा समरपाल।

भला यह एहसास किसे आतंकित नहीं कर देगा कि उसे हत्या के इल्जाम में फंसाने की कोशिश की जा रही है। बुरी तरह चौकस रहने लगा वह। चौंका उस वक्त जब अपने बैडरूम से ‘वि।कन्या’ मिली। तुरंत थाने पहुंच ठकरियाल से मिला। कहा—‘यह किताब मेरे बैडरूम में थी जबकि मैंने इसे कभी नहीं खरीदा।’ ठकरियाल ने किताब झपटी। उन पंक्तियों तक भी पहुंच गा। जिन्हें अण्डरलाईन किया गया था। तभी, रामोतार नामक सिपाही ने छह साल पुरानी घटना बताई। कहा—वह तब भी इसी थाने पर था जब विचित्रा और तृातिबाई ने राजदान को अपने जाल में फंसाकर ब्लैकमेल करना चाहा था परन्तु राजदान ने ब्लैकमेल होने की जगह तत्कालीन इंस्पेक्टर को पचास लाख रुपये दिये। बदले में इंस्पेक्टर ने मां-बेटी को सबक सिखया और उनसे वे फोटो बरामद करके राजदान को दे दिये जिनके बूते पर राजदान को ब्लैकमेल करने के ख्वाब देख रही थी। जैसे ही रामोतार के मुंह से ठकरियाल को पता लगा—उस वक्त अपनी हर चाल पिट जाने के कारण तिलमिलाई हुई विचित्रा और तृातिबाई ने राजदान से बदला लेने की कसम खाई थी, वैसे ही उसकी आंखों के समक्ष देवांश और विचित्रा को जुगलबंदी चकरा उठी। वह समझ गया—इन्हीं मां-बेटियों के फेर में फंसा देवांश राजदान और दिव्या की हत्या के मिशन पर काम कर रहा है। कोशिश वही, समरपाल को फंसाने की जा रही है और किताब बता रही थी—‘राजदान की हत्या’ वि।कन्या के उरोज चुसकने से होगी। ठकरियाल के सम्मुख लगभग सारा किस्सा खुल पड़ा था। केवल यह पता लगाना बाकी था कि ‘वि।कन्या’ कौन बनने वाली थी? केवल यह पता लगाने के लिए वह जा धमका—शांतिबाई के कोठे पर। यह वही रात थी जिस रात दिव्या और देवांश पवित्रता की दीवार तोड़कर पतन के गर्त में गिरे थे। विचित्रा और तृातिबाई ने चालाक बनने की बहुत कोशिश की। अपनी तरफ से कुछ नहीं बताया परन्तु ठकरियाल ताड़ गया है कि वि।कन्या दिव्या को बनना है। सारी बातें समझ में आते ही उसने विचित्रा और तृातिबाई को गिरफ्तार कर लिया।



सुबह! ठकरियाल राजदान विला पहुंचा। देवांश की तरफ व्यंग्यभरी मुस्कान उछाली। दिव्या के लिए उसकी आंखों में सहानुभूति थी। राजदान से कहा—‘मैं एकान्त में आपसे कुछ बातें करनी चाहता हूं। और एकान्त में—उस वक्त राजदान के पैरो तले से धरती खिसक गई जब ठकरियाल ने सुबूतों के साथ साबित कर दिया कि कम्मो और बुग्गा के हाथा मर्सडीज में बम रखवाने वाला नकाबपोश भी देवांश था और धोखे से दिव्या के निष्पल पर जहर पहुंचाकर उसकी हत्या का प्रयास करने वाला भी देवांश है।

ठकरियाल को उम्मीद थी—जब राजदान को यह हकीकत पता लगेगी तो मारे गुस्से के वह पागल हो उठेगा। कच्चा चबा जाना चाहेगा अपने छोटे भाई को, मगर उस वक्त इंस्पेक्टर को दंग रह जाना पड़ा जब उसकी सभी आशाओं के विपरीत राजदान ने कहा—‘देवांश ने जो भी किया या करना चाहता था उसमें उसका नहीं, विचित्रा और तृातिबाई का कुसूर है। उनका जहर है ही ऐसा कि इंसान के सिर पर चढ़कर बोलता है। एक बार मेरे सिर पर भी चढ़ा था। देवांश को अपनी जायदाद से बेदखल तक करने को तैयार हो गया था मैं। देवांश ही मेरे मर्डर की कोशिश कर बैठा तो कौन सी आश्चर्य की बात है? ठकरियाल हैरान रह गया। राजदान जैसा भाई देखना तो दूर, उसकी कल्पनाओं तक से परे था। जब उसने कहा—‘आपकी हत्या का प्रयास करने के इल्जाम में देवांश को गिरफ्तार तो करना ही पड़ेगा मुझे।’ तब राजदान गिड़गिड़ा उठा। बार-बार कहने लगा—वह ऐसा न करे। देवांश उसकी आरजुओं का आखिरी चिराग है। ठकरियाल राजदान की तरफ उन नजरों से देखता रह गया जिन नजरों से भक्त लोग भगवान की प्रतिमाओं को देखते हैं। फिर भी, ठकरियाल था तो एक थ ट पुलिसिया ही। देवांश को बखूने के उसने पचास लाख मांगे। राजदान तैयार हो गया। साथ ही कहा—‘तुम देवांश को कभी इल्म नहीं होने दोगे कि सब कुछ जानने के बाद तुम मुझे बता चुके थे और मैंने उसे बचाने के लिए रकम दी।’ तब, ठकरियाल ने कहा—विचित्रा और तृातिबाई के जरिए उसे हकीकत पता लग सकती है। राजदान ने ठकरियाल को पच्चीस लाख और दिये। यह रकम विचित्रा और तृातिबाई को ठिकाने लगाने के लिए दी गई थी और ठकरियाल जब उन्हें ठिकाने लगाने हेतु समुद्र के बीच में ले गया तो एक बार को, खुद उसकी

की जान के लाले पड़ गये। हालात ऐसे बने कि वह विचित्रा और ताँतिबाई की लाश न देख सका। खुद ही को बड़ी मुश्किल से बचा कर निकल सका। फिर भी उसे पूरी उम्मीद थी वे दोनों समुद्र में मर-खप गई होंगी।



राजदान ने बिस्तर पकड़ लिया। छुपाने की लाख चे टाओं के बावजूद उसे एड्स होने का राज ठकरियाल और भट्टाचार्य को भी पता लग गया। नहीं मालूम था तो सिर्फ बबलू को। वह दिन-रात राजदान की सेवा में लगा रहता। दूसरी तरफ दिव्या और देवांश एक बार अवैध सम्बन्ध की सड़ांध भरी दलदल में क्या गिरे कि उसी में लथपथ होकर रह गये। राजदान के खर्चीले इलाज में जमा पूंजी यूँ उड़ रही थी जैसे खुले में रखा पेट्रोल उड़ा करता है। व्यापार में मंदा था। सब कुछ चौपट होता जा रहा था। जिन फाइनेंसर्स ने राजदान एसोसिएट्स में पैसा लगा रखा था। उनका ब्याज तक नहीं पहुंच रहा था। इसलिए मूल की मांग करने लगे थे। छः महीने गुजर गये। इन छः महीने गुजर गये। इन छः महीने में दिव्या और देवांश इस कदर आर्थिक क्राईसेल का शिकार हो चुके थे कि उनका वश चलता तो जाने कब का राजदान का चल रहा महंगा इलाज बंद करा देते। इस मामले में उनकी नहीं चल रही थी। तो केवल भट्टाचार्य के कारण। उसके रहते वे राजदान का इलाज बंद नहीं करा सकते थे जबकि खुद राजदान नहीं चाहता था उसके इलाज के नाम पर इतना मोटा खर्चा हो। वह खूब समझता था उसके कारण दिव्या और देवांश आर्थिक संकट में फंसे हुए हैं। ऐसा वह नहीं चाहता था। वह तो स्वप्न में भी उन दोनों में से किसी को कट में नहीं देख सकता था। काश वह जानता होता कि दिव्या और देवांश अब वे दिव्या और देवांश नहीं रह गये हैं जा उसके इस 'अंधे प्यार' के हकदार थे। अब तो वे, दिव्या और देवांश हैं जो उतनी ही शिद्दत से उसकी मौत की कामना किया करते हैं। जितनी शिद्दत से एक बीमार बच्चे की मां ईश्वर से उसके ठीक हो जाने की कामना करती है। नई-नई बीमारियां लग गई थीं राजदान को। ऐसी-ऐसी कि दिव्या-देवांश को लगता, कहीं उनके जर्मस उनमें भी न समा जायें। उसके नजदीक जाने से बचते ही थे वे। ऐसा महसूस भी कर लिया था राजदान ने। अंदर ही अंदर चोट सी लगी थी उसे। मगर, प्यार तो वह उनसे बेइतिहा करता ही था। खुद चाहता था उन्हें उससे कोई बीमारी न लग जाये। दिव्या ने खुद ही कहा था उसने—तुम मेरे पास—इस कमरे में नहीं बल्कि बगल वाले कमरे में सोया करो। क्या मालूम था राजदान को कि वह दिव्या को उसकी मन मांगी मुराद दे रहा है? अकेला बबलू था जो बार-बार खुद राजदान के मना करने के बावजूद न केवल उसके पास आता था बल्कि खुद सेवा भी किया करता था। दोनों के बीच उस लड़की के बारे में भी बातें होती जिससे बबलू प्यार करता था। स्वीटी था उसका नाम। राजदान के अनुरोध पर एक बार बबलू उसे मिलाने के लिए लाया भी। सचमुच बड़ी स्वीट थी वह। जब उसने राजदान के लिए लम्बी उम्र की दुआएं की तो राजदान की आंखें भर आईं।

और वे, जिनके लिए राजदान ने अपनी जिन्दगी गला दी थी—वे दुआ कर रहे थे, वह घड़ी में मरता हो तो चौथाई में मर जाये। उनकी तो अब टेंशन ही राजदान का जिये चला जाना थी। एक रात दिव्या ने देवांश से कहा—‘अगर वह तीस अगस्त से पहले नहीं मरा, उसके बाद एक दिन के लिए भी जिया तो हमारे उद्धार का जो एकमात्र रास्ता है वह भी बंद हो जायेगा। देवांश चौंका। इस बात का मतलब पूछा। तब, दिव्या ने उसे एक बीमा पॉलिसी दिखाई। पांच करोड़ का बीमा था राजदान का। नोमिनी थी दिव्या। तीस अगस्त को प्रीमियम की अगली किस्त ड्यू थी। किश्त इतनी मोटी थी कि उसकी वर्तमान अवस्था में चाहकर भी जमा नहीं करा सकते थे। उस हालत में पॉलिसी लैप्स हो जानी थी अर्थात् यदि राजदान तीस अगस्त के बाद मरा तो फूटी कौड़ी नहीं मिलनी थी एल.आई.सी. से। अतः ज्यों-ज्यों तीस अगस्त नजदीक आता जा रहा था, उनकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। उन्हें लगा—राजदान का जो इलाज चल रहा है उसे फौरन बंद कर देना चाहिए ताकि उसके तीस अगस्त से पहले मरने के चांस बढ़ जायें। मगर, वे फैसला नहीं कर पा रहे थे भट्टाचार्य के रहते ऐसा कैसे हो सकता है? उधर राजदान भी अपनी मौत के लिए उतना ही बल्कि उनसे भी कहीं ज्यादा व्याकुल था। एक दिन उसने एकान्त में भट्टाचार्य को पकड़ लिया। कहा—‘देख दोस्त, मैं दिव्या और देवांश की वर्तमान आर्थिक हालत के बारे में अच्छी तरह जानता हूं। इलाज बंद में, क्या फर्क पड़ता है मुझ पर। परन्तु मेरी दिव्या और देवांश के भविष्य पर जमीन-आसमान का फर्क पड़ जायेगा।’ राजदान की विडम्बना तथा दिव्या और देवांश के पति उसका प्यार देखकर भट्टाचार्य फफक-फफक कर रो पड़ा था। एक हद तक राजदान को ठीक भी मानता था पर परन्तु डाक्टर होने के नाते भला कैसे दवायें बंद करके उसे मरने के लिए छोड़ सकता था? एक ही बात कही उसने—‘किसी को इस तरह मर्डर के इल्जाम में फांसी पर नहीं झूलना मुझे।’ जब राजदान को भट्टाचार्य पर एक न चली तो सीधे-सीधे दिव्या और देवांश को ही पकड़ा उसने। सब कुछ बताने के बाद कहा—‘उम्मीद है, तुम व्यर्थ की भावुकता दवायें लिखता भले ही रहे, उसे दिखाने के लिए भले ही तुम उन्हें खरीदते भी रहो मगर मैं खाऊंगा नहीं। इस काम में तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। तभी तीस अगस्त में पहले मर सकूंगा जो कि जरूरी है।’ सुनकर, बल्लियों उछलने लगे थे दिव्या और देवांश के दिल। मूर्ख खुद वह कह रहा था जो वे चाहते थे। नाराजगी का ड्रामा करते हुए उन्होंने राजदान को यह डिमांड मान ली मगर होनी को तो पता नहीं क्या मंजूर था। दवायें बंद होने के बावजूद राजदान के प्राण नहीं निकल रहे थे। तीस अगस्त नजदीक आता चला गया। जाहिर है—दिव्या और देवांश की बेचैनी बढ़ गई। अब चर्चा इस बात पर होने

लगी—वह तीस अगस्त तक नहीं मरा तो क्या होगा? उधर, राजदान अपनी मौत को लेकर उनसे कहीं ज्यादा बेचैन था। जब कोई और रास्ता नहीं मिला तो सुसाइड का फैसला कर लिया उसने।



दिव्या और देवांश के नाम एक लेटर लिखा। बहुत ही भावुक लेटर था वह और वही उसका सुसाइड नोट भी था। अपने कमरे के बाहर बाल्कनी में फांसी लगाकर मरने का प्लान बनाया था उसने। मरने ही वाला था कि उसने दिव्या और देवांश को एक-दूसरे की बांहों में देखकर लिया। उफ़फ़! दोनों में से एक के भी जिस्म पर कपड़े की एक कतर तक नहीं थी। हां, हाथों में जाम जरूर थे दोनों के। वे किचन लॉन में, एक झरने के नीचे थे। उस झरने के नीचे जिसे राजदान ने जाने कितने अरमानों के साथ दिव्या के लिए बनवाया था। पहले तो उस दृश्य को देखकर राजदान को अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ लेकिन सच्चाई को कब तक झुटला सकता है आदमी? जो सच था, वह था। और सच केवल इतना ही नहीं था। वे उसकी हत्या का प्लान बना रहे थे। राजदान ने अपने कानों से सुना, दिव्या नामक बोतल के नशे में चूर देवांश ने कहा—‘अगर उन्तीस की रात तक वह खुद नहीं मरा तो हमें करना पड़ेगा यह नामुराद काम। हत्या की आत्महत्या जाहिर करना हमारे लिए जरा भी मुश्किल नहीं होगा।’

राजदान को तो बस एक ही अफसोस था—उनके ऐसे ‘प्रवचन’ सुनकर उसके कानों के पर्दे क्यों नहीं फट गये? क्यों नहीं वह उस नंगे दृश्य को देखने के साथ ही अंधा हो गया? आखिर किन हालात में आदमी का ‘हार्टफेल’ होता है? इतना सब कुछ देखने—सुनने के बावजूद कैसे कैसे ठीक-ठाक धड़क रहा था उसका दिल? क्यों नहीं फट रही थी वह धरती? आसमान आखिर गिर क्यों नहीं रहा था? किसी सवाल का जवाब नहीं था उस पर।

जो चाहा—कूदकर उनके सामने पहुंच जाये। जाने क्या-क्या कहे उन्हें! मार, फिर लगों देवांश अभी, यही गला दबाकर उसकी ईहलीला समाप्त कर देगा और वह इतना कमजोर हो चुका है कि देवांश की मजबूत पकड़ के बीच एक मिनट से ज्यादा छटपटा तक नहीं सकेगा। अतः देवांश और दिव्या को वहां अपनी मौजूदगी का भान नहीं होने दिया उसने। उन्हें नहीं पता लगने दिया वह क्या देख और जान चुका है।

उसके बाद, दो दिन तक राजदान का व्यवहार बड़ा अजीब और रहस्यमय रहा।

ऐसा, जैसे वह किसी प्लान पर काम कर रहा हो।

जो अपनी बीमारी के कारण पिछले चार महीने से किसी से नहीं मिला था उसने समरपाल को विला पर बुला लिया। उससे मिला। बंद कमरे में जाने क्या बातें की उससे। मारे सस्पेंस के दिव्या का बुरा हाल था। उस वक्त वह उन बातों को जानने के लिए मरी जा रही थी जब विला में एक नया करेक्टर आ धमका। वकीलचंद था उसका नाम। वह नाम से ही नहीं, पेशे से भी वकील था। और बस—यह बात दिव्या के दिमाग को ‘भक्क’ से उड़ाये हुए थी कि राजदान ने वकील को क्यों बुलाया है जबकि राजदान का कहना था—वकीलचंद मेरे बचपन का दोस्त है। मिलने का मन था उससे। दिव्या का दिलो-दिमाग मानने को तैयार नहीं था कि बात बस इतनी सी है। रात के वक्त उसने देवांश से राजदान की दिन भर की गतिविधियों का जिक्र किया परन्तु देवांश ने कहा—‘बेवजह की बातें सोचकर अपना दिमाग खराब मत करो। वह जो करेगा हमारे अच्छे के लिए करेगा। हमारे खिलाफ कुछ करना तो दूर, सोच तक नहीं सकता वह।’ परन्तु अगले दिन, राजदान को बाहर जाने के लिए तैयार देखकर दिव्या हैरान रह गई। उसके बार-बार पूछने पर भी राजदान ने नहीं बताया कि वह कहां जा रहा था? दिव्या ने साथ चलने के लिए कहा। इसके लिए भी तैयार नहीं हुआ वह। अकेला गया। ड्राइवर के रूप में केवल बन्दूकवाला साथ था। करीब दो घंटे बाद लौटा दिया। दिव्या ने फिर पूछा कहां गया था। राजदान ने नहीं बताया और उस वक्त तो दिव्या की खोपड़ी बुरी तरह धूमकर रह गई जब उसने इस बारे में बन्दूकवाला से बात की। बन्दूकवाला ने बताया—मेरे साथ तो वे केवल जूहू बीच तक गये थे। वहां गाड़ी रूकवाई। एक टैक्सी पकड़ी। मुझे वहीं रूककर इंतजार करने के लिए कहा और टैक्सी में बैठकर जाने कहां चले गये? करीब डेढ़ घण्टे बाद दूसरी टैक्सी में लौटे। गाड़ी में बैठे और ‘यहां’ आ गये।’ बन्दूकवाला का यह बयान दिव्या के ही नहीं, देवांश के दिमाग में भी खलबली मचा देने के लिए काफी था। उस वक्त वह राजदान से उसकी रहस्यमय गतिविधियों के बारे में बात करने के बारे में सोच ही रहा था जब खुद राजदान ही ने उन दोनों को अपने कमरे में बुलवाया। एक लिफाफा दिया। उसमें करीब पचास लाख क्रेडिट्स थे। राजदान ने कहा—‘मेरे बैंक लॉकर में पड़े थे ये। आज ही दिन में निकालकर लाया हूं। कल समरपाल ने बताया था कि रामभाई ाह बार-बार अपनी रकम मांगकर तुझे परेशान कर रहा है। साईन कर दिये हैं मैंने। कल उसके कर्जे से मुक्त हो जाना।’ तब, देवांश ने दिव्या की तरफ ऐसी नजरों से देखा जैसे कह रहा हो—‘देखो, मैं न कहता था—वह ट्राक्स जो भी कर रहा होगा, हमारे फायदे के लिए कर रहा होगा।’

राजदान ने उन्हें एक रिवाल्वर भी दिखाया।

उसका लाइसेंस रिवाल्वर था वह। कहा—‘यह भी बैंक लॉकर में ही रख था।’

उसके बाद, राजदान ने जितनी बातें की उनसे एक ही बात ध्वनित हो रही थी। यह कि—वह उन्हें पांच करोड़ दिलाने के लिए समय रहते आत्महत्या करने वाला है। उसने उन्हें यह आभास भी दिया कि लॉकर से वह इसी इरादे को पूरा करने के लिए रिवाल्वर निकालकर लाया है। वास्तव में राजदान क्या खिचड़ी पका रहा था। इस बारे में वे तो वे सोच तक नहीं सकते थे।

और मैं, अर्थात् वेद प्रकाशर्मा सोचता है—‘शाकाहारी खंजर’ पढ़ना शुरू करने से पहले अगर आप ‘कातिल हो तो ऐसा’ के अंतिम दृश्य विस्तारपूर्वक पढ़ ले तो इस कथानक का भरपूर और वास्तविक आनन्द उठा सकेंगे।

तो प्रस्तुत हैं—‘कातिल हो तो ऐसा’ के अंतिम दो दृश्य, ज्यों के त्यों—



उनतीस अगस्त की रात।

यह वह रात थी जहां से दिव्या और देवांश की दुश्वारियों शुरू हुई।

दुश्वारियों भी ऐसी जैसी उनसे पहले किसी ने नहीं झेली होंगी। रात के करीब बारह बजे तक वे सोच भी नहीं सकते थे। हालात इस कदर पलटा खाने वाले हैं। वह रात भी उनकी अन्य रातों की तरह रंगीनियों से ही शुरू कर हुई थी।

कमरा दिव्या का बैडरूम था।

कम्बल के नीचे दोनों प्राकृतिक अवस्था में थे। एक बार सहवास के दौर से भी गुजर चुके थे। संतुष्टि होने के बाद अगल-बगल लेटे दोनों ने एक-एक सिगरेट सुलगा ली थी। दो-तीन कश लगाने के बाद दिव्या ने कहा था—“अब केवल चौबीस घण्टे बचे हैं देव। अगर वह कल इस वक्त तक नहीं मरा तो।”

“मरने के लिए एक क्षण चाहिए। सिर्फ एक क्षण।” देवांश ने उसकी बात काटकर कहा था—“और अभी पूरे चौबीस घण्टे बाकी हैं। मुझे पूरा विश्वास है वह समय रहते खुद को खत्म कर लेगा। वैसे भी, उसकी हर गतिविधि से जाहिर है—जीने का कोई इरादा नहीं है उसका।”

“मैं कुछ और ही सोच रही थी।”

“क्या?”

“कितनी मुश्किल में होगा वह? खुद को खत्म कर लेना इतना आसान नहीं होता।”

“बात तो एकदम दुरुस्त है।”

“अगर कोशिश के बावजूद वह खुद को नहीं मार सका तो?”

“इस ‘तो’ आगे की बात हम पहले ही सोच चुके हैं। हमें उठानी होगी वह जहमत। काम जरा भी मुश्किल नहीं है। सुसाईड नोट हमारे पास हैं। बस उसके उसके रिवाल्वर से, उसकी कनपटी पर गोली मारनी होगी। रिवाल्वर उसके हाथ में पकड़ा दिया जायेगा।” कहने के बाद थोड़ा रुका देवांश। एक कश लेने के बाद पूछा—“तुम्हें पता है उसने रिवाल्वर कहां रखा है?”

“ऐसा कभी हुआ है तुमने कुछ पता करने के लिए कहा हो, मैंने न किया हो?”

“कहां है?”

“सोफे की पुश्त और गद्दी के बीच जो गैप है रिवाल्वर उसने वहीं रख रखा है। अपनी समझ में उसने उसे वहां इसलिए रखा है ताकि मैं न ढूंढ सकूं जबकि मैंने उसे वहां रखते हुए ही देख लिया था। मैं तो यह भी देख चुकी हूं—छः की छः गोलियां हैं उसमें।”

“उस बेचारे के लिए तो आधी ही काफी होगी।” कहकर हंसा था देवांश।

दिव्या के कुछ कहने के पहले ही इंटरकॉम की घण्टी घनघना उठी।

दोनों चौंके।

एक-दूसरे की तरफ देखा।

देवांश ने दिव्या को रिसीवर उठाने का इशारा किया। दिव्या ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया। दूसरी तरफ से राजदान ने पूछा—“सो रही थी?”

“हां।” दिव्या ने अजसाये स्वर में कहा—“कहिए क्या बात है?”

“मुझे तुम्हारी जरूरत है।”

“इस वक्त?”

“हां! इसी वक्त।”

“लगता है नींद की गोलियों ने असर करना बंद कर दिया है।”

“आ रही हो न?”

“आती हूँ।” कहने के बाद रिसीवर काट से हटाकर वापस क्रेडिल पर रखने ही वाली थी कि राजदान की आवाज पुनः कान में पड़ी—“छोटे को भी ले आना।”

कांप सी उठी दिव्या।

क्या उसे मालूम देवांश यहीं है?

मुंह से केवल इतना ही निकल सका—“द-देवांश को?”

“हां। तुमसे पहले उससे ही सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश कर रहा था। उसके कमरे में लगातार बैल जा रही है पर उठा नहीं रहा। बहुत ही पक्की नींद में सोया लगता है पट्टा।”

“म-मगर।” उसने देवांश की तरफ देखते हुए पूछा था—“ऐसा क्या काम है जिसके लिए रात के इस वक्त हम दोनों की जरूरत है?”

“बस यूं समझो।” इतना कहने के बाद उसने थोड़ा विराम दिया, फिर बोला—“अंतिम बार जरूरत है तुम दोनों की। आज रात के बाद फिर कभी परेशान नहीं करूंगा।”

मन ही मन बल्लियों उछलती दिव्या ने अपने लहजे में शिकायत भरते हुए कहा—“कैसी बातें कर रहे हैं आप? कितनी बार कहा है—ऐसी बातें मत किया कीजिए।”

“छोटे को लेकर आ रहे हो न?”

“पांच मिनट में हाजिर होती हूँ।” कहने के बाद रिसीवर लगभग पटक दिया उसने। बड़बड़ाई—“पता नहीं मरने से पहले कितने ड्रामे करेगा कम्बख्त?”

“क्या हुआ?” देवांश ने पूछा।

“कपड़े पहनो। वह बुला रहा है।” कहने के बाद वह अपने नंगे जिस्म की परवाह किये बगैर कम्बल से निकली और बैड के चारों तरफ फर्श पर छितराये पड़े कपड़े उठा-उठाकर पहनने लगी। कपड़े पहनने के दरम्यान उसने राजदान से हुई बातें विस्तार से बता दीं।

अण्डरवियर और बनियान के ऊपर नाइट गाऊन डालते देवांश ने कहा—“बातों से लगता है वह घड़ी आ पहुंची है जिसका हमें इंतजार था मगर, यह बात समझ में नहीं आई, हमें क्यों बुला रहा है वह?”

“कहो तो है।” नाइट पहनती दिव्या के चेहरे पर झुंझलाहट के भाव थे—“चुपचाप मर भी नहीं सकता कम्बख्त। देख लेना—जरूर कोई नाटक करेगा।”

“मतलब तो यही है दोनों को बुलाने का।” देवांश ने नाइट गाऊन की डोरी बांध ली।

दिव्या ने कहा—“चलो।”

“यू?” देवांश उसकी तरफ देखकर मुस्कराया था—“यू चलोगी तुम?”

दिव्या ने अपने लिबास पर ध्यान दिया। हल्के आसमानी कलर की, बगैर बाजू वाली नाइट इतनी झीनी थी कि वक्षस्थल पर कसी ब्रा और गुप्तांग को ढके पेन्टी साफ नजर आ रही थीं। उसके जिस्म का रसास्वादन करते देवांश ने कहा—“अगर उसने देख लिया तुम इस लिबास में मुझे जगाने गई थीं तो जल-भूनकर राख हो जायेगा बेचारा। अंतिम समय पर उसे यह ‘शॉक’ देना किसी भी तरह जायज नहीं ठहराया जा सकता।”

दिव्या ने बगैर कुछ कहे कबर्ड से निकलकर रेशमी कपड़े का ऐसा गाऊन पहन लिया जिसने उसकी सारी नग्नता ढांप ली। गाऊन फुल बाजू का था। गिरेहबान के बटन बंद करती दरवाजे की तरफ बढ़ गई। यह सवाल दोनों को मथ रहा था—उसने उन्हें बुलाया क्यों है?

मरना भी चाहता है तो क्या उनके सामने?

आखिर क्या है उसके मन में?



राजदान के कमरे का दरवाजा उन्होंने कुछ ऐसी हड़बड़ाहट का प्रदर्शन करते हुए खोला जैसे उसके बुलावे पर लपक-झपककर आये हों परन्तु दरवाजा खोलते ही चौंक जाना पड़ा।

कमला सिगार के धुएं से भरा पड़ा था। सारी लाइटें ऑन थीं। इतना ज्यादा प्रकाश था कि वहां की कालीन पर पड़ी सुई को भी दूर से देखा जा सकता था। सोफे पर बैठा था वह। जिस्म पर था—“काली-सफेद पट्टियों वाला उसका पसंदीदा गाऊन। तरोताजा था वह। देखने ही से लगता था—कुछ ही देर पहले नहाया है। टोव भी बनाई थी उसने। सिगार के धुएं की बदबू के बीच आफ्टरशूव लोशन की भीनी-भीनी खुशबू फैली हुई थी। अंगुलियों के बीच फंसा अभी भी एक सिगार सुलग रहा था। चेहरे पर वेदना सही थी—चौंकाने वाली बात थी उसके सामने पड़ी सेन्टर टेबल पर व्हिस्की की बोतल, सोडे की बोतलें, आईस बैकित, काजू और बादाम की प्लेटें तथा एक ऐसा गिलास जिसमें आधा पैग अभी-भी था। कांच के बाकी दो गिलास खाली थे। वे उल्टे रखे थे।

उस दृश्य को देखकर दिव्या और देवांश ऐसे हकबकाये कि काफी देर तक मुंह से आवाज न निकल सकी। राजदान ने ही पूछा उनसे—“पियोगे?”

“अ-आप!” देवांश के मुंह से निकला—“भैया आप व्हिस्की पी रहे हैं?”

“बुराई है कुछ?” उसने हल्के सुरूर में झूमते हुए कहा था।

“ह-हम पहली बार देख रहे हैं।” दिव्या ने खुद को संयत रखने की भरपूर चेटा की थी।

राजदान ने कहा—“आखिर बार भी।”

“क्या मतलब?”

“बेकार केटूब्द मत बोलो। मतलब अच्छी तरह समझ में आ रहा है। ‘मरने’ की बात कर रहा हूं मैं। पहली और आखिरी बार पी रहा हूं। यह लाजवाब चीज। यह सोचकर कि जब ऊपर पहुंचूँ और इन्द्र देव पूछें—“मेरी प्रिय चीज कभी पी या नहीं? तो तुम से आंखें न झुक सकें मेरी।”

“बड़ी अजीब-अजीब बातें कर रहे हैं आप?”

“हां। कर तो रहा हूं। महसूस तो मुझे भी हो रहा है कुछ अजीब बातें कर रहा हूं। अब इसी को लो न—जब कोई कमरे में आता है तो मेजबान उससे बैठने के लिए कहता है। मगर मैंने नहीं कहा। सीधे-सीधे यही पूछ लिया—‘पियोगे?’ वाकई अजीब बात हुई।” कहने के बाद विचित्र ढंग से ठहाका लगाकर हंसने लगा वह। ठहाके के साथ कुछ ऐसी आवाज निकल रही थी मुंह से कि दिव्या और देवांश ने अपने जिस्मों में थरथराहट सी महसूस की। कोशिश के बावजूद वो कुछ बोली नहीं सके। हंसने के बाद राजदान ने कहा—“खैर! जवाब नहीं दिया तुमने। पियोगे?”

देवांश ने थोड़े नाराजगी भरे स्वर में कहा—“आप मुझे नशे में लगते हैं।”

“यानी कामयाब हो गया पीना? आदमी इसे पिये और नशे में न लगे। ये भी कोई बात हुई?”

“मगर क्यों?” देवांश गुर्गया—“क्यों पी रहे हैं आप?”

“पीनी पड़ी छोटे। क्या करता? जो कुछ करने वाला हूँ, कई रातों से करने की कोशिश कर रहा था मगर हौसला नहीं जुटा सका। किसी ने सुना था—हौसला जुटाने की यह सबसे उत्तम दवा है। और सच पाया है—देख। मैं पूरा हौसला महसूस कर रहा हूँ खुद मैं। विश्वास है मेरे अंदर, वो कर सकूंगा जो करना चाहता हूँ।”

“क्या करना चाहते हैं आप?”

“क्यान से देख मुझे। अभी-अभी नहाया हूँ, टोव बनाई है। कपड़े पहने हैं जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद है। क्या मुझे देखकर तुझे उस बकरे की याद नहीं आ रही जिसे ईद के दिन हलाल किया जाता है? इसी तरह नहलाया-धुलाया जाता है उसे। ओर बकरे को ही क्यों? हमारे धर्म में तो अंतिम संस्कार से पहले आदमी को भी नहलाया जाता है। इसीलिए नहाया हूँ। ताकि तुम्हें बाद में जहमत न उठानी पड़े। उस रात भी इसीलिए नहा रहा था। लेकिन तुम टपक पड़े। आज मैंने खुद बुलाया है। जानते हो क्यों? क्योंकि मैं जानता हूँ—कोशिश के बावजूद आज तुम मुझे बचा नहीं सकते। आज तो मरकर ही रहूंगा मैं। खुद करूंगा अपना कत्ल।”

“क्या आपने हमें यही बकवास सुनाने के लिए बुलाया था?”

“बकवास!” एक-एकटूब्द चबाया राजदान ने—“वाह छोटे वाह! बगैर पिये बड़ा हौसला पैदा हो गया यार तुझमें तो। मेरी बात को—अपने बड़े भाई की बात को बकवास कहने लगा।”

“जब तू कह रहा है तो ठीक ही कह रहा होगा। गलत तो तू कभी कह ही नहीं सकता। मान लेता हूँ—यकीनन बकवास ही कर रहा होऊंगा मैं।”

“प-प्लीज! समझने की कोशिश कीजिए।” दिव्या ने बात को संभालने की गर्ज से कहा—“इस वक्त आप जो कुछ बोल रहे हैं, आप नहीं टूराब बोल रही हैं।”

“करेक्ट! बिल्कुट करेक्ट! और इसीलिए वह बकवास है। क्यों छोटे?”

देवांश ने नाराजगी के उसी आलम में कहा—“मैं केवल यह जानना चाहता हूँ, आपने हमें बुलाया क्यों है?”

“बहुत याद आ रही थी तेरी। बल्कि तुम दोनों की।” भावुक स्वर में कहने के बाद उसने गिलास उठाया और पक्के टूराबी की तरह एक ही झटके में पीने के बाद वापस मेज पर पटक दिया। सिगार में जोरदार कश लगाया। उस वक्त उसके मुंह से निकला गाढ़ा धुआं छोटे-मोट बादल की तरह नशे के कारण तमतमा रहे चेहरे का ढके हुए था जब उसने कहना शुरू किया—“तुम्हें याद है दिव्या, कितना प्यार किया है मैंने तुम्हें? अनाथ आश्रम में पली-बढ़ी थी तुम। उन अभागों बच्चों में से एक थीं। जिनके मां-बाप का पता नहीं होता। उस वक्त ‘राजदान एसोसिएट्स’ अपने टूराब पर थी। एक से एक बड़ा सेठ अपनी लड़की का रिश्ता करने को तैयार था मुझसे परन्तु मैंने सोचा—मेरे लिए वह लड़की ठीक रहेगी जिसने बचपन से अभाव देखे हो। अपनों का प्यार न पा सकी हो। बहरहाल, मैं खुद भी तो ऐसा ही था। सो, इस बहाने एक और जिन्दगी को संवारने का ख्वाब देखा था मैंने। फिर उसे पूरा भी किया। अनाथ आश्रम की एक लड़की को इस महल को

रानी बना दिया। गहनो से लाद दिया। जिन्दगी का कोई सुख-चैन ऐसा नहीं था जो पैसे से खरीदा जा सकता था और तुम्हें हासिल नहीं था, परन्तु इस वक्त मैं उस सुख की नहीं बल्कि उन सबसे बड़े, उस सुख की बात कर रहा हूँ जो मैंने तुम्हें अपने दिल की पटरानी बनाकर दिया था। बोलो यह सुख मैंने तुम्हें दिया या नहीं?”

“मेरी समझ में नहीं आ रहा, आप कहना क्या चाहते हैं?”

“जवाब तो दो, मैंने तुम्हें अपने दिल की पटरानी बनाकर रखा या नहीं।”

“इससे कब इंकार किया मैंने?”

“क्या इससे ज्यादा भी एक लड़की को कुछ चाहिए?”

“नहीं।”

“कितना प्यार किया मैंने तुम्हें?”

“दिव्या चुप रही।”

“जवाब दो मेरी देवी।”

“बईतिहा।”

“इतना ज्यादा इतना ज्यादा कि कनाडा से लौटते ही मैंने तुम्हें अपने एड्स के बारे में बता दिया। केवल इसलिए क्योंकि ये जानलेवा बीमारी में तुममे प्रविष्ट करनी नहीं चाहता था। चाहता था तो तुम्हें भी उसी नर्क में घसीट सकता था। जिसमें खुद गिर चुका था मगर नहीं—मैंने ऐसा नहीं किया। यह थी मेरे प्यार की पराकांठा। मैं तुम्हें दुनिया के हर पति से ज्यादा प्यार करने का दावा तो नहीं करता मगर यह दावा जरूर कर सकता हूँ कि तुम्हें मैंने अपने जिस्म की आत्मा बना लिया था। वह, जो अगर जिस्म से जुदा हो जाये तो जिस्म निर्जीव हो जाया है, सड़ने लगता है। किसी काम का नहीं रहता।”

“समझ में नहीं आ रहा भैया, ये बातें क्यों छेड़ रहे हैं आप?”

“नहीं आयेगा छोटे। फिलहाल तेरी समझ में इन बातों का मतलब इसलिए नहीं आयेगा क्योंकि तू मौत की दहलीज पर नहीं खड़ा है। मरते हुए आदमी को वह सब याद आता है जो उसने किसी के लिए किया हो या किसी ने उसके लिए किया हो।” लम्बी सांस लेने के बाद वह कहता चला गया—“अब खुद ही को ले। मां-बाप नहीं रहे तो मैं तेरी मां भी बना, बाप भी बना। मैंने जो भी किया, वो सब मेरा एहसान नहीं है तुझ पर। वो सब तो तेरे प्रति अपने प्यार की खातिर किया मैंने औरें एक पराकांठा इस प्यार की भी थी। गवाह दिव्या खुद है। तेरी खातिर कभी बाप नहीं बना मैं। मां नहीं बनने दिया दिव्या को। अपने प्यार का इससे बड़ा सबूत एक बड़ा भाई छोटे भाई को और क्या दे सकता है?”

“सबूत की जरूरत उसे होती है भैया जो मान न रहा हो। मैंने तो हमेशा दिल से माना है—दुनिया का कोई बड़ा भाई छोटे भाई को उतना प्यार नहीं दे सकता जितना आपने मुझे दिया है।”

दांत भींचे राजदान ने झटके से एक सोड़ा खोला।

रात के सन्नाटे में वह आवाज ऐसी गूंजी जैसे गोली चली हो। बोतल से थोड़ी व्हिस्की गिलास में डाली। सोड़ा मिलाया। बर्फ डाली और एक घूंट पीने के बाद कड़वा सा मुंह बनाया। बोला—“यानी तुम दोनों मानते हो—मैंने जो कहा, सच कहा कहीं कोई झूठ नहीं है उसमें?”

“पता नहीं आप यह सब हमारे मुंह से कुबूल कराकर क्या कहना चाहते हैं?”

“मैंने किया है और तुम्हें कुबूल करते ही कट हो रहा है। हां तो कह मेरे बच्चे। हां तो कह। सुकून मिलेगा मुझे।”

“ह-हां।”

“तो फिर वो।” कहते वक्त राजदान की आंखों के सामने वह दृश्य चकरा उठा जिसे उसने केवल एक पल के लिए देखा था—“वो पत्थर के पीछे वाला दृश्य क्यों दिखाया तुमने मुझे?”

पलक झपकते ही मानो बिजली गिर गई दोनों के दिलो-दिमाग पर।

सिहरन सी दौड़ थी जिस्मों में।

हक्के-बक्के से खड़े राजदान को देखते रह गये वे।

ठीक से समझ नहीं पा रहे थे क्या राजदान वही कहना चाहता है जो वे समझ रहे थे? दिव्या से पहले देवांश ने अपने होशो-हवाश समेटे। बोला—“बात समझ में नहीं आई। कौन से दृश्य की”

“प-प्लीज! प्लीज छोटे।” राजदान दांत भींचकर उसकी बात काटकर उठा। साफ नजर आ रहा था वह जबरदस्ती खुद को रोने से रोकने की कोशिश कर रहा है—“झूठ बोलने की कोशिश करके जख्मों पर नमक मत छिड़क मेरे। किचन लॉन में मैंने तुम्हें एक-दूसरे से जाम टकराते देखा है। एक भी कपड़ा नहीं था। तुममें से किसी के जिस्म पर। ऐसा दृश्य था वह जिसे देखने से बेहतर मेरे जैसे एक्स को अपनी आंखें फोड़ लेनी चाहिए। पता नहीं ये कान आज भी बाहरी आवाजों को सुनने की क्षमता कैसे रखते हैं जिन्होंने तुम्हें मेरी हत्या का प्लान बनाते सुना है।”

राजदान के उपरोक्तृब्धों के बाद जैसे किस्सा ही खत्म हो गया। कम से कम दिव्या और देवांश के पास तो कहने के लिए कुछ रह नहीं गया था। दिव्या यूँ कांप रही थी जैसे इस वक्त भी राजदान के सामने नंगी खड़ी हो। कपड़े का एक रेशा भी न हो जिस्म।

राजदान ने एक बार फिर गिलास उठाकर खाली किया। मेज पर पटका और जुनूनी अंदाज में उसी मेज पर जोर-जोर से मुक्के मारता हुआ कहता चला गया—“क्यूँ किया? क्यूँ किया? क्यूँ किया ऐसा? अरे ऐसा ही करना गी तो मेरी मौत के बाद कर लेते। चैन से मर तो जाने देते मुझे। कम से कम मेरी आंखों को तो न दिखाते वह मंजर?” कहने के बाद वह सचमुच फूट-फूटकर रोने लगा था। सोफे पर बैठे ही बैठे झुककर उसने अपना चेहरा सेन्टर टेबल के टॉप में छुपा लिया था।

जड़वत् से खड़े रह गये दिव्या और देवांश।

न कुछ बोलते बन पड़ा रहा था, न करते।

हद तो ये है एक-दूसरे की तरफ देखने तक का मनोबल भी नहीं रह गया था उनमें।

आंखें केवल जार-जार रो रहे राजदान पर केन्द्रित थीं।

जी भरकर रोने के बाद उसने चेहरा ऊपर उठाया। आंसुओं से तर था यह। जर्रे-जर्रे पर केवल ही वेदना लिए उसने अपनी लाल आंखें दिव्या पर टिका दीं। बोला—“मैंने इतना बड़ा महल बनवाया—सिर्फ तुम्हारे लिए। परिस्तान बनवाया—सिर्फ तुम्हारे लिए। इस कल्पना के साथ कि मैं तुम्हारे साथ वहां सैर किया करूंगा। क्या तुम सोच सकती हो—करोड़ों रुपये खर्च करके बनवाये गये उस झरने के नीचे तुम्हें किसी और के नीचे पड़ी सिसकारियां लेती देखकर मेरे दिल पर क्या गुजरी होगी?”

पत्थर की मूर्ति की मानिन्द खड़ी थी दिव्या।

“दिव्या।” बड़े ही मार्मिक स्वर में पूछा था राजदान ने—“उन लम्हों के बीच क्या तुम्हें एक लम्हें के लिए भी यह ख्याल नहीं आया कि ऐशो-आराम का हर वह सामान जिसके बीच पड़ी तुम अपनाटूरीर किसी और को सौंप रही हो उस पर उस आदमी का हक है जिसने वह सब करोड़ों रुपये खर्च करके तुम्हें मुहैया कराया है?”

“बस, भैया। बस।” देवांश कह उठा—“बहुत हो चुका। अब आप और ज्यादा जलील नहीं करेंगे भाभी को।”

“भ-भाभी?” कहकर बड़े ही वेदनायुक्त अंदाज में हंसा राजदान। जैसे पागल हंसा हो। बोला—“भाभी क्यों कहता है गधे? डार्लिंग कह। जानेमन बोल इसे। जब सारे पर्दे सरक ही गये हैं तो अब काहे कीटर्म रह गयी?” आ!” कहने के साथ उसने उल्टे रखे कांच के गिलास सीधे किये। उनमें व्हिस्की डालता हुआ बोला—“इसीलिए तो बुलाया था तुम्हें। पहले ही से गिलास मंगाकर रखे हैं। वैसे भी, पीने का मजा अकेले कहां है? तुम दोनों के साथ ‘चियर्स’ करूंगा मैं।”

“बस मिस्टर राजदान। बस! बहुत जलील कर चुके हमें।” एकाएक दिव्या जहरीली नागिन सी नजर आने लगी—“अब अगर एक लफ्ज भी मुंह से निकाला तो अच्छा नहीं होगा।”

“क्या अच्छा नहीं होगा? जितना दिखा चुकी हो उससे ज्यादा ओर क्या दिखा सकती हो मुझे?”

“देखना चाहते हो?” वह गुर्गई—“देखना चाहते हो मैं क्या दिखा सकती हूँ तो देखो।” कहने के साथ उसने एक झटके से वह गाऊन उतारकर फेंक दिया जिसने झीनी नाइटी और उसके पार चमक रही ब्रा और पेन्टी के साथ उसके जिस्म को भी ढक रखा था। बाहें देवांश की तरफ फैलाई उसने। कहा—“आओ देवों! आओ।”

बौखला उठा देवांश। लगा—दिव्या पागल हो गयी है।

“डरो नहीं देव।” उसने कहा—“वह कुछ नहीं बिगाड़ सकता हमारा। है ही क्या इसमें जो कुछ कर सके। आओ। बांहों में समा जाओ मेरी।”

“द-दिव्या।” देवांश के मुंह से निकला—“हो क्या गया है तुम्हें? क्या कह रही हो ये?”

“हिचको मत देव! जब कुछ खुल ही चुका है तो उससे कैसा पर्दा जो मरने वाला है।” कहने के बाद वह खुद आगे बढ़ी और देवांश को बांहों में भर लिया।

पीड़ा से छटपटाते राजदान ने कसकर आंखें बंद कर ली थी।

देवांश दिव्या के अजीबो-गरीब व्यवहार पर बौखलाया हुआ था। वह बहुत ही धीमे स्वर में उसके कान में फुसफुसाई—“समझने की कोशिश करो देव। इसे ऐसा दृश्य दिखाना है कि हार्टअटैक से मर जाये। भले ही सहवास करना पड़े इसके सामने। यह बात अभी-अभी मेरे दिमाग में आई है—अगर ये गोली से मरा तो सैकड़ों सवाल उठ सकते हैं लेकिन हार्ट अटैक से मरा तो स्वाभाविक मौत होगी। कहीं कोई सवाल नहीं उठेगा।”

बिजली सी कौंध गई देवांश के दिमाग में।

वाह, कितना गानदार आइडिया था?

राजदान हार्ट फेल हो जाने के कारण मरा पाया जायेगा। होठों पर जहरीली मुस्कान लिए राजदान की तरफ देखा उसने। उसकी तरफ जिसने अभी तक कसकर आंखें बंद कर रखी थी। चेहरे पर हर तरफ पीड़ा ही पीड़ा थी। जैसे जबरदस्ती अपने सीने से उठने वाले दर्द

को रोकने की कोशिश कर रहा हो। उसकी इस हालत को देखकर देवांश को लगा—ठीक ही कह रही है दिव्या। हार्ट अटैक से मरने के बहुत करीब है वह अतः अंतिम प्रहार करने की गर्ज से बोला—“आंखें क्यों बंद कर लीं राजदान? देखना ही चाहता है तो देख। हम तेरे साथ व्हिस्की ही नहीं पियेंगे, सहवास भी करेंगे तेरे सामने।” कहने के साथ उसने दिव्या के जिस्म पर मौजूद झीनी नाइटी एक झटके से उतारकर एक तरफ फेंक दी।

नाइटी असहनीय पीड़ा से तड़प रहे राजदान के चेहरे से जाकर टकराई थी।

उसे उसने अपने कांपते हाथों से हटाया।

कब तक आंखें बंद रख सकता था वह? खोलीं—तो दिव्या और देवांश को एक-दूसरे की बांहों में पाया। होठों पर जहरीली मुस्कान लिए दोनों उसकी तरफ उन नजरों से देख रहे थे जो कलेजे को चीरकर चाक-चाक कर देती हैं। जब तक भी दिव्या ने उसे मरते नहीं देखा तो नजरें उसी पर टिकाये देवांश से बोली—“देर मत करो देव! ब्रा उतार लो मेरी। आग लग रही है जिस्म में।”

“न-नहीं! नहीं छोटे!” हलक फाड़कर रो पड़ा राजदान।

जवाब में दिव्या खिलखिलाकर हंसी।

सैक्स से भरपूर थी वह खिलखिलाहट। ऐसी—कि जहरीले नश्वर बनकर राजदान के दिलो-दिमाग में घुसती चली गई। देवांश ने उसकी तरफ इस तरह देखा था जैसे गंदे नाली में रेंग रहा घृणित कीड़ा हो। होठों पर उसके लिए तिरस्कार ही तिरस्कार लिये हाथ दिव्या की पीठ पर ले गया। पलक झपकते ही ब्रा का हुक खोल दिया उसने। वहशियाना अंदाजा में हंसते हुए एक झटके से ब्रा दिव्या के जिस्म से अलग कर दी।

दिव्या के गोल और पुट उरोज उसकी छाती पर नाच से उठे। दिव्या ने अपनी छाती देवांश की तरफ तान दी। देवांश ने उन पर अपना चेहरा झुकाया। कनखियों से राजदान की तरफ देखा। मुंह खोला। बायें उरोज के निप्पल की तरफ बढ़ाया।

“स्टॉप इट! स्टॉप इट!” पूरी ताकत से दहाड़ने के साथ राजदान ने जेब से रिवाल्वर निकालकर उन पर तान दिया।

जहां से तहां रुक गये दोनों।

जाहिर था—रुकने का कारण उसका चीखना नहीं। अपनी तरफ तना रिवाल्वर था। अगर वह सिर्फ चीखा होता तो अब तक तो बहुत आगे बढ़ चुका होता देवांश।

सुख था राजदान का चेहरा। बुरी तरह भभक रहा था। गुस्से की ज्यादाती के कारण सारा जिस्म सूखे पत्ते की तरह कांप रहा था। मगर आश्चर्य—उस हाथ में कोई कंपन नहीं था जिसमें रिवाल्वर था। रिवाल्वर के भाड़ से मुंह को अपनी तरफ तनता देखकर दिव्या और देवांश की न केवल सारी मस्ती झड़ गई बल्कि चेहरे पीले पड़ गये थे।

उसे हार्ट अटैक से मारने की धुन में रिवाल्वर को तो भूल ही गये थे वे। रिवाल्वर भी वह जिसमें पूरी छः गोलियां थी। यह तो कल्पना भी नहीं की थी उन्होंने कि रिवाल्वर का इस्तेमाल आत्महत्या की जगह वह उनकी हत्या करने के लिए भी कर सकता है।

अपनी बेवकूफी के कारण इस वक्त वे उसके सामने खड़े थरथर कांप रहे थे।

“ये तो मैं जान ही गया था तुम जलील हो।” राजदान ने दांत भींचकर कहा—“मगर ये तब भी नहीं जान सका था कि नीच भी हों। इतने नीच! जे चाहता है अपने हाथों से तुम दोनों की खोपड़ियों खोल दूं। इस काम को करने से इस वक्त दुनिया की कोई ताकत मुझे रोक भी नहीं सकती। मगर नहीं इतनी आसान सजा नहीं दे सकता मैं तुम्हें। तुम्हारे गंदे खून से अपने हाथ रंगने का मैं जरा भी ख्वाहिशमंद नहीं हूं। जो गुनाह तुमने किया है उसकी सजा इतनी आसान नहीं हो सकती कि दो धमाके हों और तुम्हें हर मुसीबत से निजात मिल जाये। यह अंत नहीं छोटे, यह तो शुरूआत है। तुम्हारे अंत की शुरूआत। और दिव्या बाईं चौको मत ‘बाई’ सुनकर। तांतिबाई और विचित्रा से कहीं ज्यादा घृणित वेश्या हो तुम। वे कम से कम कोठे पर तो बैठी थीं। तुम तो मेरे दिल में बैठकर अपनी गोद में किसी और को बैठाये रहीं। तुम जैसी तवायफ के लिए यह सजा कोई सजा नहीं कि मैं गोली मारूं और तुम्हारा गंदारीर मेरे कदमों में आ गिरे। तुम्हारी सजा तो वो है वो जो मैंने मुर्कर की है। जो कदम-कदम पर तुम्हें मारेगी। याद रखना मेरी बात—मरने के बाद अगर मैंने तुम्हें तड़प-तड़पकर मरने पर मजबूर नहीं कर दिया तो मेरा नाम राजदान नहीं।”

होश फाख्ता थे दोनों के। आंखों में वीरानियां। चेहरों पर खाक उड़ रही थी। राजदान ने जो भी कुछ कहा, उसका मतलब समझ में नहीं आकर दे रहा था उनकी। बस एक ही बात समझ में आ रही थी। यह कि—इस वक्त वह अपनी अंगुली के हल्के से इशारे से उनकी लाशें बिछा सकता है मगर कह रहा है ऐसा नहीं करेगा।

फिर क्या करेगा वह?

क्या करना चाहता है? जानने की जबरदस्त जिज्ञासा थी उनमें मगर सवाल करने की हिम्मत नहीं थी। राजदान की तरफ यूं देख रहे थे जैसे वे साक्षात् यमराज की तरफ देख रहे हो।

थोड़े विराम के बाद राजदान ने फिर कहना शुरू किया—“तुम यही चाहते थे न कि मैं इस रिवाल्वर से आत्महत्या कर लूँ? मैंने सारी जिन्दगी वही किया तो तुमने चाहा। फिर अपनी जिन्दगी के इस आखिरी लम्हें में वो कैसे कर सकता हूँ जो तुम नहीं चाहते। वही होगा छोटे जो तुम चाहते थे, जिसके लिए मरे जा रहे थे तुम दोनों। मैं इस रिवाल्वर से अपनी हत्या करने वाला हूँ।”

रोमांचित हो उठे दिव्या और देवांश।

क्या वह सच कह रहा है?

क्या वास्तव में वह आत्महत्या करने वाला है?

वहें जो इस वक्त बड़ी आसानी से उन्हें मार सकता है?

ऐसी स्थिति में भला आत्महत्या क्यों करेगा कोई?

पागल ही कर सकता है ऐसा।

यकीनन वह झूठ बोल रहा है।

और अगर यह सच है तो भले ही वह पूरा पागल न हो किसी न किसी हद तक दिमाग जरूर हिल गया है उसका। जो एक्स अपने दुश्मनों को मारने की स्थिति में है वह आत्महत्या की बात करे तो कैसे उसका दिमाग ठीक माना जा सकता है?

जो बात उनके दिमागों में घुमड़ रही थी, वही कहा राजदान ने—“मैं जानता हूँ इस वक्त तुम मुझे पागल समझ रहे होंगे। मगर पागल मैं नहीं तुम हो। अपना कत्ल करने से पहले मैं तुम्हें एक बात बतानी चाहता हूँ। सिर्फ एक बात।”

मुंह से आवाज वे अब भी नहीं निकाल सके।

“बीमा कम्पनी को मैं एक लेटर लिख चुका हूँ। वह कल उन्हें मिल जायेगा। उसमें लिखा है—‘अगर मैं सुसाइड कर लूँ तो पांच करोड़ की रकम किसी को अदा न की जाये। सुन रहे हो न, उस रकम में से एक पाई भी तुम्हें नहीं मिलेगी जिसके लिए मेरी आत्महत्या चाहते थे।’”

राजदान कृष्ण गड़गड़ाती हुई बिजली की मानिन्द उनके दिलो-दिमाग पर गिरे थे। अगर यह कहा जाये तो गलत नहीं होगा कि उन चंद हीट्टाबों ने उन्हें उस बंद कमरे में तारे दिखा दिये थे। पहली बार उनकी हालत का लुत्फ लेते राजदान ने कहा—“मगर घबराओ मत! तुम चाहें जितने कमीने सही लेकिन मैं इतना निरुर नहीं हूँ कि पांच करोड़ तक पहुंचने के तुम्हारे सारे दरवाजे बंद कर जाऊँ। एक रास्ता खुला रखा है मैंने। थोड़ी सी मेहनत करोगे तो पांच करोड़ रुपये तुम्हें जरूर मिलेंगे। हराम में तो आजकल कोई किसी को दो वक्त की रोटी भी नहीं देता फिर मैं पांच करोड़ कैसे दे सकता हूँ। मेहनत तो करनी पड़ेगी उनके लिए। पूछो-पूछो क्या करना पड़ेगा मेहनत के नाम पर?”

बोल अब भी दोनों में से किसी के मुंह से न फूट सका।

जुबान नाम की चीज मानों मुंह में थी ही नहीं।

“कमाल है। गूंगे हो गये तुम तो।” राजदान हंसा—“खैर, बताये देता हूँ। ध्यान से सुनो—मैंने बीमा कम्पनी को लिखा है—“अगर मैं स्वाभाविक मौत मरू या किसी के द्वारा मेरी हत्या कर दी जाये तो पांच करोड़ मेरी पत्नी को मिलें। उसे, जो पॉलिसी में मेरी नोमिनी है।”

दिमाग घूमकर रह गये दोनों के।

“आया कुछ समझ में?” पूछते वक्त राजदान के होठों पर जहरीली मुस्कान थी—“मैं इस रिवाल्वर से इस ढंग से आत्महत्या करूंगा कि दुनिया की कोई ताकत उसे स्वाभाविक मौत साबित नहीं कर सकती। अब तुम्हें केवल एक स्थिति में पांच करोड़ मिल सकते हैं। तब, जब मेरी आत्महत्या को किसी और के द्वारा की गई हत्या साबित करो। याद रहे—अगर कोई इन्वेस्टीगेटर पकड़ गया ये हत्या नहीं आत्महत्या है तो कंगले के कंगले रह जाओगे।” रामभाई गह जैसे फाईनेंसर्स गोश्त नौच-नौचकर खा जायेंगे तुम्हारा।”

दिव्या और देवांश उसके चक्रव्यूह को समझने की कोशिश कर रहे थे।

“उम्मीद है, पूरी स्थिति को अच्छी तरह समझ लिया होगा तुमने।” राजदान कहता चला गया—“मामला थोड़ा उल्टा है। क्राइम को दुनिया में लोग हत्या करके कानून से बचने के लिए उसे आत्म हत्या साबित करने हेतु कसरत करते हैं। मगर तुम्हें, आत्महत्या को हत्या सिद्ध करने के लिए पापड़ बेलने होंगे। बहरहाल, सवाल पांच करोड़ का है। मुझे पूरी उम्मीद है—यह कोशिश तुम जरूर करोगे।”

वे दोनों डरी सहमी आंखों से उसे देखते रहे।

“अब तुम कहोगे, ये तो जुल्म है तुम पर। भला इतनी जल्दी आनन-फानन में मेरी आत्महत्या को कैसे और किसके द्वारा की गई हत्या साबित कर सकते हो। टाइम तो मिलना ही चाहिए। ताकि सोच सको। समझ सको। प्लानिंग बना सको अपनी। गोली चलने का धमाका हुआ तो अभी दौड़ चले आयेंगे लोग यहां। कुछ करने का टाइम ही नहीं मिलेगा, इसलिए।” कहने के साथ उसने दूसरा हाथ जेब में डाला। साइलेंसर निकाला। उसे रिवाल्वर की नाल पर फिअ करता बोला—“अब ठीक है, मैं मर भी जाऊंगा और कानो-कान किसी को खबर भी नहीं होगी। कम से कम बाकी रात तो मिलेगी ही तुम्हें प्लानिंग बनाने के लिए।”

सकापकाये देवांश के मुंह से इतना ही निकाल सका—“तुम ऐसा नहीं करोगे।”

“गधे हो तुम। गधे ही रहे। देखो—ऐसा ही कर रहा हूँ मैं।” कहने के बाद उसने साइलेंसर लगी रिवाल्वर की नाल अपने मुंह में घुसेड़ ली।

“न-नहीं।” हलक फाड़कर देवांश उसकी तरह लपका।

परन्तु!

श्राजदान ट्रेगर दबा चुका था।

गर्म खून के छींटे देवांश को सराबोर कर गये। जहां का तहां खड़ा रह गया वह।

दिव्या के हलक से चीख निकल गई थी।

‘पिट’ की हल्की सी आवाज के बाद राजदान की खोपड़ी बीसवीं मंजिल से गिरे तरबूज की तरह फट गई थी। चेहरे सहित चिथड़े उड़ गये उसके। अगर उसने यह सब उनके सामने न किया होता तो याद लाश को पहचान भी न पाते।

धड़ सोफे की पुश्त से जा टिका था। गर्दन से ऊपर के हिस्से के चिथड़े यूँ बिखरे हुए पड़े थे। जैसे फटने के बाद पटाखे के अवशेष। चारों तरफ खून ही खून! गोشت ही गोشت।

रिवाल्वर अभी भी बगैर चेहरे वाली लाश के दोनों हाथों में था।

दिव्या और देवांश फटी-फटी आंखों से उस दृश्य को देख रहे थे। चेहरे ऐसे नजर आ रहे थे जैसे वॉर्न से पीलिया के रोगी हो। दांगे यूँ कांप रही थीं जैसे अब गिरे कि अब गिरे।

दिमाग सांय-सांय कर रहे थे।

लाश सामने पड़ी थी। फिर भी यकीन नहीं आ रहा था राजदान मर चुका है।

अभी वे इसी सदमे से नहीं उबर पाये थे कि बुरी तरह चौंक पड़े।

चौंकने का कारण था—किसी के द्वारा बंद दरवाजे पर दी गई दस्तक।

दोनों की नजरें एक झटके से आवाज की दिशा में घूमिं। आंखें बाथरूम के दरवाजे पर स्थिर हो गयीं। दरवाजा कमरे की तरफ से बंद था। दिव्या और देवांश के दिल धड़-धाड़ करके बज रहे थे। चेहरों पर हवाईयां उड़ रही थीं। मारे खौफ के बुरा हाल था। अभी वे सोच ही रहे थे—‘दस्तक की आवाज उन्होंने वास्तव में सुनी थी या वह उनका भ्रम था’ कि—दरवाजा पुनः बाथरूम की तरफ से बहुत ही आहिस्ता से खटखटाया गया। मारे खौफ के दिव्या के हलक से चीख निकलने वाली थी कि देवांश ने झपटकर अपना हाथ उसके मुंह पर जमा दिया।

दरवाजा एक बार फिर बाथरूम की तरफ से खटखटाया गया।



देवांश ने उसका मुंह न भींच रखा होता तो दिव्या यकीनन अब तक फर्श पर गिरकर बेहोश हो चुकी होती। खुद देवांश का भी सारा वजूद सूखे पते की मानिन्द कांप रहा था।

फटी-फटी आंखों से दोनों बाथरूम के बंद दरवाजे की तरफ देख रहे थे। यह बात उनकी समझ में आकर नहीं दे रही थी वहां आखिर है कौन? कौन हो सकता है? वह बंद बाथरूम में क्यों हैं?

वे करीब एक घण्टे से इसी कमरे में थे।

बाथरूम तभी से कमरे की तरफ से बंद था।

वहां जो भी था, उसने अपने दरवाजा क्यों नहीं खटखटाया?

क्यों राजदान की मौत के तुरंत बाद ऐसा करना शुरू किया?

औरें दरवाजा खटखटाया भी कुछ इस तरह जा रहा था जैसे चोरी की जा रही हो। जैसे खटखटाने वाला चाहता हो तो उस आवाज को कमरे में मौजूद दुख्स के अलावा कोई न सुन सके।

क्यों था ऐसा?

क्या रहस्य था?

कौन था वहां?

देवांश का जी चाहा—चीखकर पूछे परन्तु ऐसा करने का मतलब था, बाथरूम में जो भी है उसे यह बता देना कि उस पल वे उस कमरे में हैं। उस पलें जिस पल कमरे में राजदान की लाश पड़ी है।

इस बार दरवाजा के दूसरी तरफ से मुस्कराहट उभरी।

जैसे किसी ने कहा हो—‘राजदान साहब!’

देवांश ने आवाज पहचानने की कोशिश की परन्तु फुसफुसाहट इतनी धीमी थी कि वह किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सका। अब ज्यादा देर यहां ठहरना देवांश को बेवकूफी लगी अतः दिव्या का मुंह उसी तरह दबोचे उसे अपने साथ घसीटता सा कमरे के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ा।

गैलरी में पहुंचकर दिव्या के मुंह से हाथ हटा लिया।

दिव्या कांपती आवाज में कह उठी—“क-कौन है यहां?”

“बेवकूफी भरे सवाल मत करो।” कांपती आवाज में देवांश गुर्रा उठा—“जितनी अंजान तुम हो उतना ही मैं भी हूं। संभालो खुद को, वरना अब तक का किया धरा सब चौपट हो जायेगा।”

“अगर वो कमरे में पहुंच गया, उसने लाश देख ली तो क्या होगा?”

“कैसे पहुंच जायेगा। कमरे में? दरवाजा अंदर से बंद है औरें।” कुछ कहते-कहते बिजली सी कौंधी देवांश के दिमाग में। दिव्या को वहीं छोड़कर तेजी से गैलरी में एक तरफ को दौड़ा। एक पल के लिए तो दिव्या उसकी इस अजीबो-गरीब हरकत पर हकबकाई सी वहीं खड़ी रह गई मगर अगले पल यह सोचकर वह भी उसके पीछे लपक पड़ी कि याद जल्द से जल्द वहां से दूर हो जाने में ही ‘बचाव’ है।

बड़ी तेजी से सीढ़िया चढ़ता देवांश विला के टैरेस पर पहुंचा। उसका रुख राजदान के बैडरूम की छत की तरफ था। किनारे पर पहुंचकर वह पेट के बल लेट गया। अभी उखड़ी सांसों को नियंत्रित करने की कोशिश कर ही रहा था कि अब गिरी कि अब गिरी वाले अंदाज में दौड़ती दिव्या भी वहां पहुंच गई। हांफते हुए उसने पूछा—“यहां क्यों आये हो तुम?”

देवांश ने मुंह से जवाब देने की जगह उसका हाथ पकड़ा। हल्का सा झटका दिया और अपने नजदीक छत पर गिरा लिया, साथ ही गुर्राया—“चोंच बंद रखो।”

दिव्या उसके नजदीक पड़ी हांकती रही।

विला का फ्रन्ट लॉन उनकी आंखों के सामने फैला पड़ा था।

हर तरफ सन्नाटा था।

अंधकार।

केवल एक बल्ब परेशान था। लम्बे-चौड़े लॉन में छाये अंधेरे को दूर करने में पूरी तरह असक्षम। कहीं कोई हलचल, कोई आवाज नहीं थी। जैसे विला के पेड़-पौधों को अपने मालिक की मौत का एहसास हो गया था।

वातावरण बड़ा ही डरावना सा लग रहा था उन्हें।

यह एहसास थर्राये हुए था कि बैडरूम में राजदान की लाश पड़ी है और बाथरूम में कोई अंजान नृत्य मजबूत है। दिव्या का ऊपरी जिस्म इस वक्त भी पूरी तरह नग्न था, इस बात को न केवल दिव्या पूरी तरह भूली हुई थी बल्कि देवांश को भी एहसास तक नहीं था। उस देवांश को जो एक दिन इसी जिस्म को देखने की ललक के कारण दिव्या द्वारा रंगे हाथों पकड़ा गया था।

कुछ देर बाद देवांश फुसफुसाया—“मैं समझ चुका हूं। वह जो भी है, उसी रास्ते से बाथरूम में पहुंचा होगा जिस रास्ते में एक दिन मैं पहुंचा था। जब उसके लाख खटखटाने और आवाजें लगाने के बावजूद दरवाजा नहीं खुलेगा तो उसी रास्ते से वापस निकल जाने पर मजबूर हो जायेगा औरें यहां से हम उसे आसानी से देख सकेंगे।”

“ल-लेकिन अगर उसने दरवाजा तोड़ दिया?”

“न-नहीं! ऐसा नहीं करेगा वह?”

“क्यों नहीं कर सकता?”

“उसके खटखटाने और राजदान को पुकारने का अंदाज चोरों वाला था। दरवाजा टूटने पर जोरदार आवाज होगी, जिसे याद वह नहीं करना चाहेगा।”

“म-मगर देव! अब होगा क्या? वो कम्बख्त तो मरता-मरता भी हमारे साथ खेल-खेल गया। आत्महत्या कर ली उसने। कह रहा था—आत्महत्या पर बीमा कम्पनी कोई पैसा नहीं देगी। जीते जी मर गये हम दोनों तो।”

“वो सब बाद में सोचेंगे। फिलहाल इस मुसीबत से निपटना जरूरी है।”

“आखिर करोगें?”

देवांश ने उसका वाक्य पूरा होने से पहले ही जोर से हाथ दबाया। यह इशारा चुप रहने के लिए था। खुद दिव्या की नजर भी उस साये पर पड़ चुकी थी जो अभी-अभी बाथरूम की खिड़की से बाहर निकला था।

सांस रोके दोनों उसे देखते रहे।

वह विला के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ गया।

लाख कोशिशों के बावजूद दोनों में से कोई उसे पहचान नहीं पा रहा था।

ठीक उसी क्षण दोनों पर एक साथ बिजली गिरी जिस क्षण वह एकमात्र रोशन बल्ब के प्रकाश दायरे में पहुंचा। दोनों के मुंह से एक साथ निकला—“ठकरियाल।”

“इस वक्त यहां क्या कर रहा है?” देवांश बुदबुदाया।
दिव्या बड़बड़ाई—“चोरो की तरह कमरे में क्यों पहुंचना चाहता था?”
“वह तो मुख्य द्वार की तरफ बढ़ रहा है, आखिर है किस चक्कर में?”



मुख्य द्वार पर पहुंचकर ठकरियाल ने कालबैल के स्वीच पर अंगूठा रख दिया।
अंदर कहीं घंटी बजी जिसकी आवाज रात के सन्नाटे को चीरती खुद उसके कानों तक भी पहुंची। ऐसा एक बार नहीं, वो या तीन बार नहीं बल्कि पूरे सात बार हुआ।

थोड़े-थोड़े अंतराल से, वह बार-बार बैल बजाता रहा मगर दरवाजा था कि खुलने का नाम ही नहीं ले रहा था। आठवीं बार जब उसने हाथ स्वीच की तरफ बढ़ाया तो अंदर से ‘कट’ की आवाज उभरी। साथ ही, दरारों से रोशनी ने झांकना शुरू किया। ठकरियाल ने ऐसी सांस जी जैसी तेनसिंह और हिलेरी ने एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचकर ली होगी।

“कौन है?” अंदर से पूछा गया।

“कोने में नहीं, सामने ही खड़े हैं देवांश बाबू। पट खोलकर देखों तो सही।”

“त-तुम?” तुम इस वक्त यहां?” दरवाजा खोलने के साथ देवांश का हैरान स्वर उसके कानों में पड़ा। चेहरे से भी हैरान नजर आ रहा था वह। जिस्म पर इस वक्त वे कपड़े नहीं थे जो राजदान के खून से सराबोर हो चुके थे बल्कि एक दूसरा ही नाइट गाऊन पहने हुए था। सवाल का जवाब देने की जगह ठकरियाल उसक तरफ यूँ देख रहा था। जैसे ताजमहल को निहार रहा हो जबकि देवांश के मन का चोर उसकी लाख चे टाओं के बावजूद बार-बार चेहरे पर काबिज होने की कोशिश कर रहा था। उसी की छुपाने के प्रयास में उसने पूछा—“ए-ऐसे क्या देख रहे हो?”

“पहचानने की कोशिश कर रहा हूँ—ये तुम हो या तुम्हारा प्रेत?”

“म-मैं समझा नहीं।”

“लग तो ऐसा ही रहा था जैसे मैं कब्रिस्तान की घंटी बजा बैठा हूँ।”

“ओह! ये मतलब था तुम्हारा।” देवांश खुद को सामान्य दर्शने की भरक चे टा के साँक कहता चला गया—“रात के इस वक्त अचानक जाकर किसी के घर की घंटी बजाओगे तो ऐसा ही लगेगा। गहरी नींद समय है।”

“सो तो है।” ठकरियाल ने कहा—“अब सोचो, क्या नसीब पाया है टेकचंद ठकरियाल ने। जिस वक्त तुम! तुम ही नहीं बल्कि सारा जूहर बिस्तर में घुसा खरोंटे मार रहा है। उस वक्त ये नाचीज घंटियां बजाता घूम रहा है।”

“वही तो जानना चाहता हूँ मैं। यहां क्यों आये हो?”

“आपके भ्राता श्री ने बुलाया है।”

“भ-भैया ने?”

“जी हां!”

“र-रात के इस वक्त!”

“जी।” वह अपनी रिस्टवॉच पर नजर डालता हुआ बोला—“बीस मिनट लेट हूँ। वैसे लेट हुआ नहीं था। एक्यूरेट टाइम पर पहुंच गया था वहां जहां आपके भ्राता श्री ने पहुंचने के लिए कहा था परन्तु एन्ट्री नहीं मिली। तब से एन्ट्री के लिए भटक रहा था जो अब, आपके कपाट खोलने पर मिली है।”

“पता नहीं तुम क्या कहना चाहते हो?”

“समझा दूंगा। समझाना ही तो कारोबार है मेरा। एन्ट्रीकम्पलीट तो होने दो।”

“मतलब?”

“अंदर आने दो हुजूर। तुम तो बैरियर बनकर अड़े पड़े हो दरवाजे पर।”

देवांश बड़ी मुश्किल से अपने मनोभाव ठकरियाल से छुपा पा रहा था। यह इन्फार्मेशन उसे अंदर तक हिलाये हुए थी कि रात के इस वक्त ठकरियाल को राजदान ने बुलाया था। वह भी बाथरूम के रास्ते चोरों की तरह। क्यों? क्यों किया था राजदान ने ऐसा? आखिर खेल क्या था ये? यही सब सोचता वह बेध्यानी में दरवाजे के बीच में हटा तो अंदर कदम रखते ठकरियाल ने कहा—“अब जाकर हुई है एन्ट्री पूरी। मगर तुम—तुम यहां मौजूद नहीं जान पड़ते देवांश बाबू। कहां चले गये अचानक? नींद में टहलने की बीमारी तो नहीं है?”

“ओह न-नहीं।” देवांश चौंका—“द-दरअसल मैं यह सोचने लगा था, रात के इस वक्त भैया ने तुम्हें क्यों बुलाया? वे तो नींद की गोली लेकर सो रहे होंगे।”

“नींद की गोली लेकर?”

“यह उनका हर रात का रूटीन है।”

“अब आई बात ‘समझन’ में।” ठकरियाल अजीब ढंग से मुंडी हिलाता बोला—“मैं भी तो कहूँ—इतनी ठोक-पीट को दरवाजे में। इतना पुकारा उन्हें मगर कमरे के अंदर से चूँ-चा तक की आवाज नहीं आई। आती भी कैसे—वे तो नींद की गोलियों के नशे में अंटगाफिल हुए पड़े होंगे।”

“मगर मेरी समझ में बात बिल्कुल नहीं आई। कौन से दरवाजे में ठोक-पीट की तुमने? कब और कहां से पुकारा उन्हें?”

“यहां, अर्थात् इमारत के मुख्य द्वार पर पधारने से पहले हम राजदान साहब के बाथरूम में गये थे। वहां से उनके दरवाजे को ठोका-पीटा था औरें

“ब-बाथरूम में?” ठकरियाल का वाक्य काटकर देवांश ने चौंकने की खूबसूरत एक्टिंग की—“वहां क्यों गये थे तुम? भला ये किसी के कमरे में जाने का कैसा रास्ता हुआ औरें बाथरूम में पहुंच कैसे गये? उनकी खिड़की?”

“खुली हुई थी।”

“खुली हुई थी?”

“बल्कि खोलकर रखी गयी थी।”

“किसने किया ऐसा?”

“आपके भ्राता श्री ने।”

“भ-भैया ने? मगर क्यों? आखिर क्या पहेलियां बुझा रहे हो तुम?” देवांश के चेहरे पर उलझन नजर आ रही थी।

“बात जब मेरी ही समझदारी में नहीं घुसी तो तुम्हारी चूहेदानी में कैसे फंसेगी?”

“क्या मतलब?”

“किस्स आज रात आठ बजे से शुरू होता है।” ठकरियाल ने ऐसे अंदाज में कहना शुरू किया जैसे सब कुद बताने की टान ली हो—“उस वक्त मैं थाने से घर जाने की तैयारी कर रहा था जब अचानकें



फोन की घण्टी बजी।

ठकरियाल ने यह बुदबुदाते हुए बुरा सा मुंह बनाया कि ‘अब किसकी अम्मा मर गई।’ रिसीवर उठाकर कहा—“हलो!”

“हमें इंस्पेक्टर ठकरियाल से बात करनी है।” दूसरी तरफ से कहा गया।

“जी फरमाइये। इत्तफाक से ठकरियाल ही पकड़ में आ गया है आपकी।”

“हम राजदान बोल रहे हैं।”

“ओह! राजदान साहब।” ठकरियाल अचानक मुस्तैद नजर आने लगा था—“जी बोलिए। जितना जी चाहे बोलिए। खादिम का तो निर्माण ही सुनने के लिए हुआ है।”

“तुम्हें आज रात एक बजे हमसे मिलने विला पहुंचना है।”

“एक बजे?”

“ठीक एक बजे। न एक मिनट इधर न उधर।”

“रादजान साहब, मुलाकात का ये मुहुर्त किसी ज्योति में से निकवाया है क्या?”

“मैं नहीं चाहता हमारी मुलाकात के बारे में किसी को पता लगे।”

“किसी से मतलब?”

“हमारा मतलब विशेष रूप से दिव्या और देवांश से है।”

“ऐसी क्या बात है जिसे आप अपनी जान से प्यारी जीवन साथी और उस भाई से छुपाना चाहते हैं जिसे असल में खुद से भी ज्यादा प्यार करते हैं?”

“यहां आओगे तो बात भी पता लग जायेगी।”

“आ जाऊंगा राजदान साहब। कोई ओर बुलाता तो आता न आता आप बुला रहे हैं तो जरूर हाजिर हो जाऊंगा। बहरहाल, सोने के अंडे देने वाली मुर्गी हैं आप। क्या पता, रात के बड़े अंडे टपकाने लगें।”

“एक बात याद रखना।” राजदान ने चेतावनी सी दी—“तुम्हें हमारे बैडरूम में मुख्य द्वार से नहीं, बाथरूम के रास्ते से पहुंचना है। चोरों की तरह।”

“ठकरियाल की खोपड़ी घूम गई। बोला—“आप क्यों पुलिस वाले को चोर बनाने पर तुले हैं राजदान साहब।”

“बात ही कुछ ऐसी है, यहां आओगे तो पता लगेगी।”

“आप तो मारे सस्पेंस के खोपड़ी फाड़े दे रहे हैं मेरी। जी चाह रहा है, पलक झपकते ओर रात का एक बज जाये ताकि आपसे रुबरु हो सकूं।”

उसकी बात पर ध्यान दिये बगैर राजदान ने पूछा—“तुम्हें मालूम है न, हमारे बाथरूम की खिड़की लॉन में किस तरफ है?”

“बिल्कुल मालूम है साहब। तभी से मालूम है जब विचित्रा और तृतिबाई के बयाने के बाद इन्वेस्टिगेशन करते आपके पहुंच सको।”

“धन्यवाद।”

“लेकिन बाथरूम और बैडरूम के बीच का दरवाजा बन्द रहेगा। तुम ठीक एक बजे उसे खटखटाओगे, हमें आवाज भी दे सकते हो मगर याद रहे, तुम्हारे पैदा की जाने वाली कोई भी आवाज ऐसी न हो जिसे हमारे कमरे के अलावा कहीं और सुना लगे।”

“किसी से मतलब?”

“हमारा मतलब विशे। रूप से दिव्या और देवांश से है।”

“ऐसी क्या बात है जिसे आप अपनी जान से प्यारी जीवन साथी और उस भाई से छुपाना चाहते हैं जिसे असल में खुद से भी ज्यादा प्यार करते हैं?”

“यहां आओग तो बात भी पता लग जायेगी।”

“आ जाऊंगा राजदान साहब। कोई और बुलाता तो आता न आत मगर आप बुला रहे हैं तो जरूर हाजिर हो जाऊंगा। बहराल, सोने के अंडे देने वाली मुर्गी हैं आप। क्या पता, रात के एक बजे अंडे टपकने लगे।”

“एक बात याद रखना।” राजदान ने चेतावनी सी दी—“तुम्हें हमारे बैडरूम में मुख्य द्वार से नहीं बाथरूम के रास्ते से पहुंचना है। चोरों की तरह।”

ठकरियाल की खोपड़ी घूम गई। बोला—“आप क्यों पुलिस वाले को चोर बनाने पर तुले हैं राजदान साहब।”

“बात ही कुछ ऐसी है, यहां आओगे तो पता लगेगी।”

“आप तो मारे सस्पेंस के खोपड़ी फाड़े दे रहे हैं मेरी। जी चाह रहा है, पलक झपकते ओर रात का एक बज जाये ताकि आपसे रुबरु हो सकूं।”

उसकी बात पर ध्यान दिये बगैर राजदान ने पूछा—“तुम्हें मालूम है न, हमारे बाथरूम की खिड़की लॉन में किस तरफ है?”

“बिल्कुल मालूम है साहब। तभी से मालूम है जब विचित्रा और तृतिबाई के बयानों के बाद इन्वेस्टिगेशन करते आपके बाथरूम में जा धमके थे।”

“खिड़की तुम्हें खुली मिलेगी ताकि आराम से बाथरूम में पहुंच सको।”

“धन्यवाद।”

“लेकिन बाथरूम और बैडरूम के बीच का दरवाजा बन्द रहेगा। तुम ठीक एक बजे उसे खटखटाओगे, हमें आवाज भी दे सकते हो मगर याद रहे, तुम्हारे द्वारा पैदा की जाने वाली कोई भी आवाज ऐसी न हो जिसे हमारे कमरे के अलावा कहीं और सुना जा सके। तुम्हारे द्वारा पैदा की जाने वाली कोई भी आवाज ऐसी न हो जिसे हमारे कमरे के अलावा कहीं और सुना जा सके। तुम्हारे खटखटाते ही हम दरवाजा खोज देंगे।”

हालांकि आपकी कोई भी बात हमारी समझदानी में घुस नहीं रही है। बावजूद इसके हम आयेगे। कारण वही है—सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी को बात न मानने का पाठ नहीं पढ़ा हमने।”

“याद रहे, ठीक एक बजे। मैं तुम्हारा इंतजार करूंगा।” कहने के बाद रिसीवर रख दिया गया।



खोपड़ी घूम गई देवांश की।

उसे मालूम था—उस वक्त एक बनजे के मुश्किल से दो मिनट थे जब राजदान ने खुद कोलूट किया और ठीक एक बजे उसने ठकरियाल से दरवाजा खटपटाने के लिए कहा था। क्यों? ऐसा क्यों किया है उसने?

वह ठकरियाल से वास्तव में कुछ बातें करनी चाहता था। यों या उसे मालूम था ठीक दो मिनट पहले वह मर चुका होगा। उस वक्त वह और दिव्या उसकी मौत के कारण वहां हकबकाये खड़े होंगे।

क्या यह सब एक प्लान था। प्लान के तहत राजदान ने एक बनजे से दो मिनट पहले अपनी हत्या की ताकि दरवाजा खटखटाये जाने पर उसकी और दिव्या की वह हालत हो जो हुई। ऐसा क्यों चाहता था राजदान? सीधी सी बात है—जो कुछ उन्होंने उसके साथ किया, वह उसका बदला लेना चाहता होगा परन्तु बदला लेने का यह कौन सा स्टार्डिल था? क्या उसने खुद मरकर बदला लेने का प्लान बनाया था? क्या इस ढंग से भी सोच सकता है कोई कि मैं मरने के बाद अपनी मौत को फलां-फलां के लिये बबाले जाने बना दूंगा?

देवांश ने जितना सोचा उसे यही लगा, ठकरियाल से कोई बात नहीं करनी थी। राजदान को। उसने पहले से ही निर्धारित कर लिया था। कि वह एक बनजे में दो मिनट पहले मर जायेगा और ठीक एक बजे ठकरियाल दरवाजा खटपटायेगा ताकि उसकी और दिव्या की हालत खराब हो जाये। जो हुआ राजदान के सोचे समझे प्लान के तहत हुआ।

उसे राजदान के अंतिम वृद्ध याद आये। उसने कहा था—“जो चाहता है अपने हाथों से तुम दोनों की खोपड़िया खोल दूँ। इस काम को करने से दुनिया की कोई ताकत इस वक्त मुझे रोक भी नहीं सकती। मगर नहीं इतनी आसान सजा नहीं दे सकता मैं तुम्हें। तुम्हारे गंदे खून से अपन हाथ रंगने का मैं जरा भी ख्वाहिशमंद नहीं हूँ। जो गुनाह तुमने किया है। उसकी सजा इतनी आसान नहीं हो सकती कि दो धमाके हो और तुम्हें हर मुसीबत से निजात मिल जाये। यह अंत नहीं छोटे, यह तो शुरूआत है। तुम्हारे अंत की शुरूआत। तुम्हारी सजा तो ‘वो’ हैं वो, जो मैंने मुर्कर की है। जो कदम-कदम पर तुम्हें मारेगी। याद रखना मेरी बात—मरने के बाद अगर मैंने तुम्हें तड़प-तड़पकर मरने पर मजबूर नहीं कर दिया तो मेरा नाम राजदान नहीं।”

इन वृद्धों को याद करने के बाद देवांश को लगा—राजदान ने पूरा प्लान बनाने के बाद आत्महत्या की थी। मौत के तुरन्त बाद ठकरियाल का दरवाजा खटखटाना उसके प्लान का पहला ‘चिन्ह’ था। ठकरियाल ठीक एक बजे ऐसा करे—यह इन्तजाम वह पहले ही, रात आठ बजे कर चुका था। उन्हें फंसाने के लिए और क्या-क्या इंतजाम करने के बाद मरा है वह? यह सवाल बड़ी तेजी से जहरीला सर्प बनकर देवांश के दिमाग में रेंगा। मगर जवाब दूर-दूर तक नहीं था। केवल एक ही बात स्पष्ट थी—यह कि वह उसके लिए कोई जाल बिछाकर गया है। कैसा जाल वह? कैसे-कैसे पैतररे सामने आने वाले हैं?

अभी देवांश इसी किस्म के सवालो में उलझा था कि ठकरियाल की आवाज हथोड़े की तरफ कानों के पदों से टकराई—“आप फिर नींद में कहीं मटरगश्ती करने चले गये देवांश बाबू!”

“ओ! हां!” देवांश चौंका।

“मेरी बातें सुनकर तो जैसे लकवा ही मार गया आपको। ऐसे गुम हो गये जैसे कूदकर सीधे ‘आठ बजे’ पर पहुंच गये हो।” ठकरियाल ने उसे बहुत गौर से देखते हुए पूछा था—“क्या मैं जान सकता हूँ—ऐसी हालत क्यों हो गई आपकी?”

“क-कमाल है।” शुरूआती हकलाहट के बाद देवांश ने खुद को संभाल लिया—“मैं यह सोचकर हैरान हूँ, भैया तुम्हें ऐसा क्या बात बताना चाहते थे। जिसे उन्हें मुझसे और भाभी से छुपाने को जरूरत पड़ी? कम से कम हम दोनों को तो यही विश्वास है, वो हम से कुछ नहीं छुपाते थे। और तुम्हें रात के एक बजे, चोरों की तरह आने के लिए कहना। बात सिर से ही समझ में नहीं आ रही।”

“इसकी अलावा समझन” मैं न आने वाली एक बात और है।”

“व-वह क्या?” देवांश बड़ी मुश्किल से पूछा सका।

“तुमने बताया—वे नींद को गोली गटककर सोते हैं।”

“यह सच है।”

“फिर भी मुझसे एक बजे आकर दरवाजा खटखटाने के लिए कहा। यह भी कहा, मेरे खटखटाते ही वे दरवाजा खोल देंगे। मतलब साफ है—कम से कम आज की रात उनका नींद की गोली गटककर अंटगाफिल होने का इरादा नहीं था।”

देवांश को कहना पड़ा—“लगता तो ऐसा ही है।”

“बावजूद इसके वे अंटगाफिल हुए पड़े हैं, वरना दरवाजा जरूर खोलते।”

“बात तो ठीक है—अगर उन्होंने तुम्हें बुलाया था तो गोली नहीं खानी चाहिए थी और अगर गोली नहीं खाई तो दरवाजा क्यों नहीं खोला?”

“राम-नाम सत्य तो नहीं हुई पड़ी उसकी?”

“ज-जी?” भरसक चे टा के बावजूद देवांश भरभराकर पसीने से नहा गया।

“एड्स के मरीज हैं बेचारे। क्या पता किस पल ‘हैडमास्टर’ का बुलावा आ जाये।”

“प-प्लीज! प्लीज।” देवांश ने खुद को भाई से अत्यधिक प्यार करने वाला जताया।

“ऐसा मत कहो। उनकी मौत की कल्पना तक मेरे लिए असहनीय है। मगरें

“मगर नाम का जानकार हमेशा पानी में रहता है। हम दोनों की बातों के बीच कहां से आ टपका?”

उसे चकित नजरो से देखते देवांश ने पूछा—“तुम्हें कैसे मालूम भैया को एड्स

“ओह! अच्छा! यहा अटक गये तुम।” ठकरियाल उसका सेन्टेन्स काटकर कह उठा—“पुलिस इंस्पेक्टर हैं जनाब, घसियारे नहीं। उड़ती चिड़िया के पंख गिन सकते हैं।”

“फिर भी तुम्हें एड्स के बारे में कैसे मालूम? इस बारे में केवल चार आदमियों को पता था। मुझे, भाभी को, खुद भैया और डॉक्टर भट्टाचार्य को। तुम्हें किसने बताया?”

“खुद राजदान साहब ने।”

“भैया ने?”

“जी।”

“मगर क्यों? भैया तो खुद हम सबसे इस बात को छुपाने के लिए कहते थे।”

“इस बात को छोड़ो प्यारे। आदमी कभी-कभी इतना भावुक हो जाता है कि सब कुछ उसे बता बैठता है जिसे कभी कुछ नहीं बताना चाहता। कुछ ऐसे ही क्षणों में राजदान साहब एक दिन मुझसे ‘खुल’ गये थे। बस यूँ समझो—मुझे मालूम था, वे मौत के एन्ट्री गेट पर खड़े हैं।”

देवांश ने खामोश रहकर अपने चेहरे पर ‘वेदना’ कायम करने में भी भलाई समझी।

“पर एक बात खटक रही है मुझे।” अचानक ठकरियाल का सुर बदला।

गड़बड़ा सा गया देवांश—“क-क्या?”

“क्या दिव्या जी भी नींद की गोली गटककर सोती हैं?”

“न-नहीं तो।”

“फिर उनकी नींद में खलल क्यों नहीं पड़ा?”

“ओहो! वे उस कमरे में नहीं सोती।”

सुकड़ गई ठकरियाल की आंखें—“पति के साथ नहीं सोती?”

“खुद भैया ने उनसे दूसरे कमरे में सोने के लिए कहा था।”

“क्यों?”

“अपनी बीमारी के कारण।”

“पति ने कहा और वे अलग सोने लगीं।” ठकरियाल ने इस तरह कहा जैसे कहने के साथ-साथ कुछ सोचता भी जा रहा हो—“खैर, क्या मैं जान सकता हूँ वे कहीं

देवांश ने उसका वाक्य पूरा होने से पहले कहा—“भैया के एकदम बराबर वाले कमरे में।”

“और आपका यान कक्ष?”

“गैलरी के दूसरे छोर पर।” देवांश ने जल्दी से कहा। वह जानता था—ठकरियाल उसके और दिव्या के सम्बन्धों पर तब स्तब्ध करता है जब वास्तव में उनके बीच वे सम्बन्ध थे भी नहीं जो आज हैं। देवांश समझता था—अगर ठकरियाल को जरा भी इल्म हो गया तो जिस अवस्था में उसे लाश मिलने वाली थी, उसमें वह कूदकर उन्हें ही राजदान का कातिल समझ बैठेगा और यह स्थिति उनके लिए भयावह होगी।

“क्या यह बात कम आश्चर्यजनक नहीं है कि मेरे बार-बार बल्कि सात चार घंटी टनटनाये जाने के बावजूद तुम्हारी तरह दिव्या जी की नींद नहीं टूटी जबकि वे नींद की गोलियां लेकर भी नहीं सोती?”

“मैं यही हूँ मिस्टर ठकरियाल।” देवांश के कुछ कहने से पहले वहां दिव्या की आवाज गूंजी—“तुम्हारी सारे बातें सुन रही हूँ।”



दोनों ने एक साथ आवाज की दिशा में देखा—दिव्या नाईट गाऊल के ऊपर फर का एक कोट डाले हुए थी। नाईट गाऊन भी वह नहीं था जो उसने राजदान की मौत के वक्त पहन रखा था।

ठकरियाल ने कहा—‘कमाल है। औरत के बावजूद आप इतनी देर तक केवल सुनती रहीं, बोली नहीं कुछ। मैंने तो सुना था औरतों की जुबान में खुजली होने लगती है।’

“जरूरत हो नहीं पड़ी बोलने की। जो सवाल मेरे दिमाग में घुमड़ रहे थे वे सब एक-एक करके देवांश पूछ रहा था और तुम जवाब दे रहे थे।” कहने के साथ धीरे-धीरे चहलकदमी करती वह उनके नजदीक पहुंच गई। उसके चेहरे पर जो दृढ़ता और लापरवाही थी उसने देवांश को हैरान कर दिया। बड़ी ही खूबसूरत एक्टिंग कर रही थी वह। चेहरे पर मौजूद किसी भी चिन्हे से नहीं लगता था उसे राजदान के बैडरूम में पड़ी उसकी लाश के बारे में जानकारी है। इस क्षण से पहले जितनी नर्वस वह थी, उसे देखकर देवांश को हर पल वह चिंता सता रही थी कि दिव्या किसी भी इन्वेस्टिगेशन का सामना कैसे कर सकेगी। कहीं उसे भी न ले डूबे। परन्तु इस वक्तों इस वक्त की दिव्या

को देखकर उसे लगा—उससे कोई गलती होने वाली नहीं है। उल्टा वही, भरसक चे टा के बावजूद खुद को उतना नार्मल नहीं दिखा पा रहा था, जितनी दिव्या नजर आ रही थी।

“यानी आपको अपने हर सवाल का जवाब बगैर सवाल किये मिल गया है?”

“केवल एक सवाल को छोड़कर जिसे देवांश ने अब तक नहीं पूछा।”

“आप पूछ डालिये।”

“जब ‘उन्होंने’ तुमसे यह कहा था, तुम्हें चोरों की तरह उनसे मिलना है। खासतौर पर मुझसे और देवांश से छुपकर, तो उनके दरवाजा न खोलने पर मेनगेट का रास्ता क्यों पकड़ा? इतनी जोर-जोर से घंटी बजाकर विला में आने का फैसला क्यों किया कि मेरी ओर देवांश की नींद खुल गई। साथ ही वह सब बता भी दिया जो उन्होंने हमें पता न लगने की हिदायत दी थी। क्या मैं जान सकती हूँ इंस्पेक्टर—उनकी हिदायत के ठीक उल्टा क्यों चले तुम?”

“क्या करता?” ठकरियाल ने कहा—“जब बार-बार की कोशिश के बावजूद बाथरूम और बैडरूम के बीच का दरवाजा नहीं खुला तो ठीक यहीं यही सोचा मैंने कि अब क्या किया जाये? खूब सोच-समझकर मेनगेट पर पहुंचने और घंटी टनटनाने का निश्चय किया। कारण एक ही था—यह कि कही राम नाम सत्य तो नहीं हुई पड़ी है। राजदान साहब की? काफी कोशिश के बावजूद इसके अलावा उनके द्वारा द्वार न खोलने का और कोई कारण नहीं सोच सका मैं। और यह कारण ऐसा था कि चुपचाप लौट जाना बेतुका लगा।”

“फिर, भी जो कुछ उन्होंने हमसे छुपाने के लिए कहा था वह बताने की क्या तुक हुई?”

“अगर आप यहीं थी तो जरूर देखा-सुना होगा—दरवाजा खोलते ही देवांश बाबू ने अपने सवालियों के मिसाइल इस तरह दागने शुरू कर दिये थे जैसे ‘टाईगर हिल’ से पाकिस्तानी सेना के गोले भारतीय गांवों पर गिर रहे हों। उनसे बचने का एक ही रास्ता था मेरे पास। यह कि सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र बनकर इनके हर सवाल का जवाब देता चला जाऊं। सच न बोलता तो इस एक ही सवाल के साथ ये मेरी बखिया उधेड़ देते कि रात के इस वक्त आखिर मैं यहां कर क्या रहा था? कम्पनी गार्डन तो यह था नहीं जहां टहलने का बहाना मारकर बरी हो जाता।”

उसके जवाब के बाद काफी देर तक खामोशी छाई रही।

अचानक ठकरियाल ने कहा—“आप लोगों की इजाजत हो तो राजदान साहब के कमरे में जाकर यह जानने की कोशिश कर ली जाये, वे नींद की गोली के नशे में अंटगाफिल हुए पड़े हैं या राम नाम सत्य हो चुकी है?”

सुरसुरी सी दौड़ गई दिव्या और देवांश के जिस्मों में।

वे जानते थे—ठकरियाल के वहां कदम पड़ते ही खेल शुरू हो जायेगा। क्या वहां वे स्थिति देखकर वह उसी नतीजे पर पहुंचेगा जिस पर वे उसे पहुंचाना चाहते हैं यह कुछ ओर ही कुछ ऐसा सोच बैठेगा जिसकी वे कल्पना नहीं कर सके हैं। कहीं इस पहली ही सीढ़ी पर पांच करोड़ कमाने की उनकी योजना पर पानी तो नहीं फिर जाने वाला है? ऐसी सैकड़ों आशंकाएं उनके दिमाग में घुमड़ रही थीं।

उन तीनों के अलावा एक ह्यूक्स और था वहां। वह, जो फर्स्ट फ्लोर की बॉल्कनी के एक पिलर की बैक में छुपा सब कुछ सुन रहा था। वह, जिसके गल में एक साधारण कैमरा और हाथों में वीडियो कैमरा था। वह, जिस पर ठकरियाल, दिव्या और देवांश में से किसी को नजर नहीं पड़ सकी थी। और, वह जिसने खुद को उनके सामने लाने की कोई कोशिश नहीं की।



दरवाजे पर पहुंचते ही ठकरियाल इस तरह खड़ा रह गया जैसे किसी अज्ञात ताकत ने जकड़ लिया हो। आंखें लाश पर चिपकी रह गई थी। दिव्या और देवांश ने पूर्व निश्चयानुसार पहले चौकने का फिर रोने-पीटने का नाटक शुरू कर दिया।

बिलखते हुए उन्होंने लाश की तरफ कहना चाहा।

ठकरियाल के जिस्म में मानो बिजली भर आई।

एक ही जम्प में अदरक की गांठ जैसा वह ह्यूक्स उनके ओर लाश के बीच में जा खड़ा हुआ। बोला—“लाश को ही नहीं, यहां मौजूद किसी भी वस्तु को सोलह साल की कन्या समझ छेड़ने की कोशिश नहीं करोगे तुम।”

आंखों में आंसू। चेहरों पर वेदना और होठों पर सिसकारियों लिये वे ठकरियाल की तरफ देखते रह गये। कुछ देर बाद बिलखते से देवांश ने कहा—“ल-लेकिन, ये हो क्या गया इंस्पेक्टर? ये तोये तो हत्या की है किसी ने।”

“वही समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि ये हुआ तो हुआ क्या है। यहां तो सचमुच राम-नाम सत्य हुई पड़ी है राजदान साहब की मगर उस तरह नहीं जिस तरह मैंने कल्पना की थी।” लाश पर नजरें टिकाये ठकरियाल कहता चला गया—“यहां तो कत्ल हुआ पड़ा है। कत्ल भी ऐसा जैसे राजदान साहब की रजामंदी से हुआ हो।”

ठकरियाल की पहली ही प्रतिक्रिया दिव्या और देवांश की सभी कल्पनाओं से भिन्न थी। अतः अंदर ही अंदर चकरा से गये वे। चेहरे पर चौंकने के से भाव लाते देवांश ने कहा—“क-कैसी बातें कर रहे हो इंस्पेक्टर, भला कत्ल भी कहीं मरने वाले की रजामंदी से होते होंगे?”

“बिल्कुल नहीं होते। इसलिए तो अजीब लग रहा है यह कत्ल। कम से कम मैंने भी अपनी पिछली लाइफ में ऐसा कोई कत्ल नहीं देखा जो मकतूल को मर्जी से हुआ हो। मगर ये लाश कह रही है, राजदान साहब की हत्या उनकी मर्जी से हुई है।”

“कह किस बेस पर रहे हो यह सब?”

“ध्यान से देखो लाश और उसके आसपास के माहौल को।” ठकरियाल एक-एक चीज का निरीक्षण करता कहता चला गया—“कमरे में सिगार के धुंवे की बदबू, एश्ट्रे में सिगार के टुकड़े। सेंटर टेबल पर मौजूद सामान, नहाये-धोये मिस्टर राजदान। ऐसा लगता है जैसे वे दुनिया के हर फिक्र से बरी होकर ड्रिंक कर रहे थे। अब आते हैं लाश पर—धड़ सोफे की पुश्त पर टिका हुआ है। चेहरे और सिर के चीथड़े उड़ गये हैं। चारों तरफ खून और गोشت बिखरा पड़ा है। साफ जाहिर है—फायर रिवाल्वर की नाल राजदान साहब के मुंह में डालकर किया गया। हाथापाई का कहीं कोई लक्षण नहीं है तो क्या इन्होंने खूब मुंह खोल दिया था ताकि हत्यारा आराम से उसमें नाल डालकर ट्रेगर दबा दे? बात कुछ जम नहीं रही। इस तरह—मुंह में रिवाल्वर की नाल घुसेड़कर तो लोग आत्महत्या किया करते हैं।”

“अ-आत्महत्या?” देवांश के मुंह से निकला।

“हां।” दिव्या बोली—“कर तो सकते हैं ये आत्महत्या। बहुत परेशान थे नर्क हो चली अपनी जिन्दगी से। कई बार इन्होंने ऐसा बातों की जिनसे मुझे लगें

“मगर आत्महत्या की होती तो यह रिवाल्वर कहां चला जाता जिससे इन्होंने यह महान काम किया है।” ठकरियाल कहता चला गया—“रिवाल्वर इनके हाथों में होना चाहिए था या लाश के आसपास कहीं, जबकि वह पूरे कमरे में नहीं है। इसीलिए अजीब वाक्या लग रहा है यह मुझे। एक मात्र रिवाल्वर का गायब होना कह रहा है ये हत्या है जबकि बाकी सारी सिच्चेसन आत्महत्या बता रही है।”

दिव्या और देवांश में से किसी ने कुछ नहीं कहा, इसलिए कुछ देर के लिए खामोशी छा गई। अंदर ही अंदर ठकरियाल की काबलियत का लोहा मानना पड़ा उन्हें। आत्महत्या को हत्या साबित करने के लिए उन्होंने रिवाल्वर को मौकाये वारदात से हटाने के अलावा लाश या उसके आसपास की सिच्चेसन से कोई छेड़छाड़ नहीं की थी और वही बात ठकरियाल ने पकड़ ली। ठकरियाल की इस काबलियत को महसूस करके अंदर ही अंदर कांप उठे दोनों। दिमागों में सवाल रेंगा—“क्या इतने काबिल पुलिसिये से वे वह सुचवा सकेंगे जो चाहते थे? जो उनके फेवर में था? जिसके बाद पांच करोड़ उनके हाथ आने थे?” अभी वे इसी किस्म के सवालों में उलझे थे कि ठकरियाल ने सवाल ठोका—“क्या आप दोनों में से किसी ने गोली चलने की आवाज सुनी थी?”

“नहीं।” देवांश ने पूर्व निर्धारित जवाब दिया।

ठकरियाल बड़बड़ाया—“आश्चर्य।”

“क-कैसा आश्चर्य?”

“गोली चली मगर तुमने आवाज नहीं सुनी।”

वे किसी साईलेंसरयुक्त रिवाल्वर से फायर होने की संभावना व्यक्त करके व्यर्थ ही खुद को ओवर स्मार्ट दर्शाने की बेवकूफी करने को तैयार नहीं थे। जानते थे—यह सवाल ठकरियाल के दिमाग में केवल तब तक रहेगा जब तक रिवाल्वर बरामद नहीं कर लेता। रिवाल्वर के बराबद होते ही इस सवाल का जवाब उसे खुद मिल जायेगा। अतः कम से कम प्वाइंट उनके लिए खतरनाक बनने वाला नहीं है, इस बात के प्रति पूरी तरह आश्वस्त दिव्या ने कहा—“आश्चर्य तो मुझे भी है। इतनी पक्की नहीं है मेरी नींद कि गोली की आवाज से न टूट जाये और फिर बगल वाले कमरे ही तो सोई हुई थी मैं।”

कालीन पर पड़े खून से बचता ठकरियाल उस सोफे की परिक्रमा सी करता बोला जिस पर लाश पड़ी थी—“यह बात पक्की है न कि तुम लोगो ने गोली की आवाज नहीं सुनी?”

“एकदम पक्की।” दिव्या ने कहा।

देवांश बोला—“सुनी होती तो हम उसी वक्त न जाग जाते?”

“ठीक बात है। सुनी होती तो उसी वक्त जाग जाते तुम लोग। मुमकिन है दबोच भी लेते हत्यारे को।” कहने के साथ वह उस सोफा चेयर के पीछे पहुंच गया जिस पर राजदान की लाश पड़ी थी। झुका। औरें दिव्या, देवांश केवल इतना देख सके—उसने कालीन से कोई चीज उठाकर फुर्ती के साथ अपनी जेब में डाल ली थी।

“क-क्या उठाया तुमने?” देवांश ने चौंके हुए स्वर में पूछा।

होठों पर धूर्त मुस्कान बिखरते ठकरियाल ने कहा—

“अठन्नी?” दोनों चकरा गये।

“शेरशाह सूरी के जमाने की है। पुराने सिक्के जमा करने का गौक है मुझे। जहां कोई सिक्का पड़ा नजर आता है, उठाकर जेब में डाल लेता हूं।” कहने के साथ उसने पुनः सोफा चेयर की परिक्रमा शुरू कर दी थी।

“तुम झूठ बोल रहे हो।” दिव्या ने कहा।

“मोहतरमा, भला मुझे क्या पड़ी है। आपसे झूठ बोलने की?”

“सच-सच बताओ इंस्पेक्टर।” देवांश बोला—“वहां से तुमने क्या उठाकर जेब में डाला है?”

“अठन्नी नहीं तो चवन्नी होगी। घर जाकर गौर से देख लूंगा। मगर तुम उस फेर में मत पड़ो। औरें

“इंस्पेक्टर!” दिव्या उसका सेन्टेन्स काटकर गुर्रा उठी—“बात तो घुमाने की कोशिश मत करो। हमें बताओ तुमने वहां से क्या उठाकर जेब में डाला है?”

“थोड़ा सा मजाक क्या कर लिया मोहतरमा, आप तो पतिदेव ही समझने लगीं मुझे अपना—जिसे पत्नी चाहे जब डपट सकती है।” बड़े ही कठोर और चुभते हुए स्वर में कहा ठकरियाल ने—“कत्ल हुआ पड़ा है यहां। आपके संज्ञान के लिए बता दूं—ऐसे स्थान की हर वस्तु पर पुलिस का अधिकार होता है। जाने कब कौन सी वस्तु फांसी के फंदे में तब्दील होकर हत्यारे की गर्दन में जा पड़े। औरें घर के लोगों को यह तक जानने का अधिकार नहीं होता कि इन्वेस्टीगेटर ने घटनास्थल से क्या बरामद किया है क्या पता, घर के लोग भी हत्यारे हो और वे किसी भी तरह बरामद सुबूत को रफा-दफा करने की कोशिश करें।”

एक बार को तो सन्नाटा सा छा गया दिव्या और देवांश के दिलो-दिमाग पर। फिर थोड़ा साहस करके देवांश ने पूछा—“क्या तुम्हें वहां से कोई ऐसी चीज मिली है जिससे हत्यारे की पहचान हो सकती है?”

“कहा न, घर जाकर देखूंगा। इस फेर में मत पड़ो।” कहता हुआ वह परिक्रमा पूरी करके पुनः उनके सामने आ खड़ा हुआ था—“बेमतलब की बातों पर ध्यान दे रहे हो तुम। उन बातों पर ध्यान नहीं दे रहे जिन पर दिया जाना चाहिए।”

“मतलब?”

“काफी देर हो चुकी है हम लोगों को इस कमरे में आये लेकिन एक असामान्य बात पर तुम लोगों ने अभी तक हैरत व्यक्त नहीं की।”

दिव्या और देवांश ने एक-दूसरे की तरफ देखा—दोनों की आंखों में यह जानने की तीव्र जिज्ञासा साफ नजर आ रही थी कि ठकरियाल की जेब में आखिर है क्या? मगर, दोनों समझ चुके थे—कम से कम पूछने पर ठकरियाल उसके बारे में कुछ बताने वाला नहीं है। अतः उससे ध्यान हटाकर दिव्या ने पूछा—“कौन सी असामान्य बात की बात कर रहे हो तुम?”

ठकरियाल के कुछ कहने से पहले देवांश कह उठा—“मेरे ख्याल से तुम्हारा इशारा सेन्टर टेबल की स्थिति की तरफ है जो बता रही है—मौत से पूर्व भैया व्हिस्की पी रहे थे जबकि असल में वे व्हिस्की पीते ही नहीं थे।”

“यह बात गलत है देवांश।” दिव्या ने कहा।

ठकरियाल ने पूछा—“मतलब?”

“कभी-कभी पी लेते थे। लेकिन केवल यहां, अपने बैडरूम में। तब, जबकि हम दोनों अकेले होते थे। वैसे तुम सहित सारी दुनिया यही जानती थी ये नहीं पीते।”

“तब तो आप भी इनके साथ एकाध पैग मार लिया करती होंगी?” पूछने के साथ ठकरियाल ने उसकी आंखों में झांका।

दिव्या ने सावधानीपूर्वक जवाब दिया—“नहीं, मैंने कभी ऐसा नहीं किया।”

“ऐसा करने के लिए राजदान साहब ने कभी कहा नहीं?”

“नहीं।”

“क्या आपके अलावा कोई और भी ऐसाट्रक्स है जिसे राजदान साहब के पौने का राज मालूम हो? अथवा इनके साथ पीता रहा हो?”

“मैं ऐसे किसीट्रक्स को नहीं जानती।”

“जबकि ऐसाट्रक्स होना चाहिए।” ठकरियाल कहता चला गया—“बल्कि एक नहीं, दोट्रक्स होने चाहिए ऐसे।”

“शायद यह बात तुम मेज पर रखे उन दो गिलासों को देखकर कह रहे हो जिनमें अभी तक व्हिस्की भरी हुई है।”

“कमाल है देवांश बाबू। तुम्हें तो सी.बी.आई. प्रमुख होना चाहिए था।” देवांश को बहुत ध्यान से देखता ठकरियाल बोला—“वे गिलास बता रहे हैं, राजदान साहब ने किन्हीं दो मेहमानों के लिए उनमें व्हिस्की डाली थी मगर यूज नहीं हो पायी।”

“कम से कम मेरी नॉलिज में तो आज रात इनका कोई मेहमान आने वाला नहीं था।” दिव्या अपने मुंह से एक-एक लफ्ज सोच-समझकर निकाल रही थी—“वैसे भी, पहले ही बता चुकी हूं—पीने के मामले में मेरे अलावा इनका कोई राजदान नहीं था। मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकती थी किन्हीं दो आदमियों के साथ पीने वाले थे।”

“एक तो तुम्हीं आने वाले थे इंस्पेक्टर।” देवांश ने कहा।

“करेक्ट। एक तो मुझ ही को बुलाया था। इन्होंने साथ ही यह भी कहा था—तुम लोगों को पता न लगे। मुमकिन है ऐसा ही किसी और से भी कहा हो।”

“तो क्या इन्होंने तुम्हें अपने साथ पीने के लिए बुलाया था?”

“करेक्ट। एक तो मुझे ही को बुलाया था इन्होंने। साथ ही यह भी कहा था—तुम लोगों को पता न लगे। मुमकिन है ऐसा ही किसी और से भी कहा हो।”

“तो क्या इन्होंने तुम्हें अपने साथ पीने के लिए बुलाया था?”

“कहा तो नहीं था ऐसा लेकिन संभव है मुझे और किसी एक और को बुलाते वक्त यही सोचा हो—‘मुझे उनसे जो बातें करनी हैं, जाम से जाम टकराते हुए करूंगा।’

“ऐसी क्या बातें करनी चाहते थे ये?”

“इनकी मौत के बाद अबूायद भगवान ही जानता होगा।”

“आने वाला वह दूसरा आदमी कौन था? आया क्यों नहीं?”

“कौन जानता है आया या नहीं?”

“मतलब?”

“मुमकिन है आया हो और वह वही हो तो इनको राम नाम सत्य कर गया।”

“कैसे बातें कर रहे हो इंस्पेक्टर? भला कोई ऐसा टूक्स इनकी हत्या क्यों करेगा जिसे इन्होंने खुद बुलाया हो।”

“ऐसे काम अक्सर वही करते हैं जिन पर हमें सबसे ज्यादा विश्वास होता है और यहां तो लाश की पोजीशन भी यही बता रही है, हत्यारा राजदान साहब का विश्वासपात्र होना चाहिए। बहरहाल, राजदान साहब ने बगैर किसी हील-हुज्जत के अपना मुंह खोल दिया, हत्यारे को पूरा मौका दिया वह रिवाल्वर की नाल इनके मुंह में डालकर गोली चला सकें

“तुम्हारी यह अजीब बात किसी भी तरह मेरे हलक से नीचे नहीं उतर रही।” देवांश बोला—“भैया की छोड़ो—भला कोई भी टूक्स खुद हत्यारे को ऐसा मौका कैसे दे सकता है?”

“इतना तो मानते हो न, गोली इनके मुंह में रिवाल्वर की नाल डालकर चलाई गई है?”

“वो तो लाश ही बता रही है।”

“यही लाश यह भी बता रही है कि मरने से पूर्व राजदान साहब ने कोई संघर्ष नहीं किया। हत्यारे ने जबरदस्ती इनके मुंह में नाल घुसेड़ी होती तो संघर्ष का कोई न कोई चिन्ह जरूर होता। उस चिन्ह का न होना क्या मुझे वही करने पर मजबूर नहीं कर रहा जो तुम्हारे हलक से नीचे नहीं उतर रहा?”

“समझ में नहीं आ रही बात। ऐसा हो कैसे सकता है कि

दिव्या देवांश का वाक्य पूरा होने से पहले बोली—“हत्यारा अपनी चालाकी से कर सकता है ऐसा।”

“मतलब?”

“मुमकिन है उसने किसी और बहाने से इनका मुंह खुलवाया हो। इससे पहले कि ये कुछ समझ पाये हो, उसने जेब से रिवाल्वर निकालकरें

“करेक्ट! सोलह आने करेक्ट।” ठकरियाल ने कहा—“यही हुआ होगा।”

दिव्या अंदर ही अंदर यह सोचकर खुश थी कि वह ठकरियाल को एक ‘लाइन’ देने में कामयाब हो गई थी। उस ठकरियाल को जो महज इसी प्वाइंट के कारण मौजूदा घटना को ‘आत्माहत्या’ के एंगिल से देख रहा था—दरअसल घटना का आत्महत्या साबित होना हो तो उनकी बर्बादी था। उनका काम था—ठकरियाल की सोचो को खींचकर इस एंगिल से दूर ले जाना। वही किया था दिव्या ने—जिस ठकरियाल को इस सवाल का जवाब नहीं मिल रहा था कि राजदान ने हत्यारे को सुविधा हेतु अपना मुंह क्यों खोला उस ठकरियाल को वह यह समझाने में कामयाब थी कि मुंह हत्यारे ने चालाकी से खुलवाया।” ठकरियाल कहता चला गया—“यकीनन हत्यारे ने राजदान का मुंह चालाकी से खुलवाया और धोखे से नाल मुंह में डालकर गोली चला दी। एक बात और साबित होती है इस बात से।”

“वह क्या?”

“हत्यारा जो भी हो, है राजदान साहब का परिचित।”

“केवल परिचित नहीं, मेरे ख्याल से तो यह भैया का विश्वासपात्र होना चाहिए।” देवांश कहता चला गया—“तभी तो भैया ने उकसे कहने पर मुंह खोला होगा?”

“बात में कई किलो वजन है, मगरें

अपना वाक्य स्वयं ही अधूरा छोड़ दिया ठकरियाल ने। उस अधूरे वाक्य के कारण दिव्या और देवांश की धड़कने फिर असामान्य हो गई। नजरे मिली। दोनों के दिमागों में एक ही सवाल था—‘अब कहां अटक रहा है ये खुर्रांट पुलिसिया?’

देवांश ने पूछा—“मगर क्या?”

“हत्यारे ने इनकी ईहलीला नाल मुंह में डालकर ही क्यों खत्म की?”

झुंझला सा उठा देवांश—“यह भी कोई सवाल हुआ? हत्यारे को इन्हें मारना था सो जैसे उसे सुविधा हुई मार दिया। गोली इनके सीने में लगी होती तो क्या तुम इस बात पर सिर खपाई करने लगते कि सिर ही में क्यों मारी गई? पेट में क्यों नहीं मारी?”

“हां! सोचता तो मैं जरूर इस बात को।”

“तुम्हारे बारे में ठीक ही कहते थे भैया। तुम काम की बातों में कम, बेकार की बातों में ज्यादा दिमाग खपाते हो। यह सोचने की जगह कि हत्यारा कौन हो सकता है यह सोच रहे हो उसने गोली मुंह के अंदर ही क्यों मारी? कहीं और क्यों नहीं मारी? भला ये भी कोई बातें

“जासूसी करने का तरीका है अपना-अपना।” अदरक की गांठ जैसे ग़ख्स के होठों पर उसे झुंझलाता देखकर अजीब सी मुस्कान थी—“जब किसी के सीने में बायीं तरफ गोली लगी हो तो मैं फट से इस नतीजे पर पहुंच जाता हूँ, हमलावर ने अपने शिकार को हन्डरेड परसेन्ट मार डालने के इरादे से गोली चलाई थी। गोली पेट में लगी हो तो हत्यारे ने सोचा था—मारना हो तो, बचता हो बचचे। मेरा उल्लू सीधा होना चाहिए। गोली अगर टांगों में लगी हो तो मैं सोचूंगा शिकार मर भले ही गया हो परन्तु हमलावर का इरादा उसे मारने का नहीं था।”

“तो मुंह खुलवाकर गोली चलाने से किस नतीजे पर पहुंचे?” देवांश भुनभुना रहा था।

“शायद इस हत्या को आत्महत्या साबित करना चाहता था हत्यारा।”

“मतलब?”

“नाल मुंह में डालकर लोग आत्महत्या करते हैं। जानते हो क्यों?”

“ताकि बचने की कोई गुंजाईश न रहे। हन्डरेड परसेन्ट भर जाये ओर तड़पने की पीड़ा से बच सके।”

“मतलब क्या हुआ इस बकवास का?”

“सोचने वाली बात है—क्या हत्यारा ऐसा चाहता था?”

दोनों में से किसी को कहने के लिए कुछ नहीं सूझा।

“अगर ‘हां’ तो ऐसा क्यों चाहता था वह?” अपनी ही धुन में ठकरियाल कहता चला गया—“हत्यारे की मंश यह तो हो सकती है उसका शिकार हन्डरेड परसेन्ट मर जाये परन्तु उसे तड़पने की पीड़ा से बचाने में कोई इन्ट्रेस्ट नहीं हो सकता उसे। फिर उसने ऐसा क्यों किया? अगर उसकी मंशा राजदान साहब को हन्डरेड परसेन्ट मार डालना ही था तो इसके लिए वह इसके दिल पर गोली मार सकता था। सिर का ‘भिन्यास’ उड़ा सकता था। मुंह खुलवाने की तकलीफ क्यों फरमाई उसने। बहरहाल, अपने शिकार का मुंह खुलवाना, हत्या करते वक्त हत्यारे के लिए एक एक्सट्रा काम हुआ। क्यों किया उसने यह एक्सट्रा काम?”

देवांश का धैर्य जवाब देने लगा था। फिर भी, खुद को काफी हद तक संयत रखे उसने पूछा—“इस सब पर इस ढंग से विचार करके तुम पहुंचना किस नतीजे पर चाहते हो?”

“अब तक तुम मुझे आधा पागल समझ रहे होंगे।” ठकरियाल की मुस्कान गहरी हो गई—“अगर वह बता दिया जो मैं सोच रहा हूँ जो तू याद पूरा ही पागल समझने लगे।”

“क्या सोच रहे हो?”

“यह हत्या नहीं, आत्महत्या है।”

धाड़! धाड़! धाड़ की आवाजों के साथ ठकरियाल के कूब हथोड़े बनकर दिव्या और देवांश के दिमागो से टकराये। वह वही कह रहा था जिससे वे उसे दूर खींच ले जाना चाहते थे। अपने सारे सपने, सारे इरादे उन्हें उन्हें उसी तरह बिखेरते नजर आये जैसे विस्फोट के बाद बारूद बिखर जाता है।

चेहरे फीके पड़ गये थे।

लाश के चेहरों से निस्तेज।

एक पल—सिर्फ एक पल के लिए उन्होंने सूनी-सूनी आंखों से एक-दूसरे की तरफ देखा। कोशिश के बावजूद दोनों में से किसी के मुंह से बोला न फूट सका। और उस वक्त तो उन्हें अपने पूरे प्लान का महल भरभराकर गिरता दिखाई दिया जब ठकरियाल ने कहा—“आत्महत्या भी ऐसी जिसे कोई हत्या साबित करनी चाहता है।”

मूर्खों की तरह वे ठकरियाल का चेहरा देखते रह गये।

देवांश से पहले दिव्या ने संभालता खुद को। बोली—“बड़ी अजीब बात कर रहे हो इन्स्पेक्टर। लोग कानून से बचने के लिए हत्या करके उसे आत्महत्या साबित करने की कोशिश करते हैं और तुम बिल्कुल उल्टी बात कर रहे हो। भला इतना बड़ा मूर्ख दुनिया में कौन होगा जो अच्छी भली आत्महत्या को हत्या साबित करने की कोशिश करेगा।”

“ऐसा करने से भला किसी को क्या लाभ?” देवांश ने दिव्या की ताल से ताल मिलाई।

“मुमकिन है वह ग़ख्स किसी को राजदान की हत्या के इल्जाम में लपेटना चाहता हो।”

ऐसा कहकर ठकरियाल ने उनके रहे-सहे हौसले भी परस्त कर दिये।

पट्टा पूरी ही बात समझ गया था। यह भी कि वे किसी को फंसाना चाहते हैं।

ठकरियाल जो सोच रहा था, उसे उसने हटाने की अंतिम कोशिश सी करते देवांश ने कहा—“मैं समझ नहीं पा रहा, यह विचित्र बात तुम किस बेस पर कह रहे हो?”

“बस स्प ट है देवांश बाबू।” ठकरियाल अपनी सोचों से हटने को तैयार नहीं था—“हत्या ये इसलिए नहीं होनी चाहिए क्योंकि किसी भी हत्यारे का इन्टेंस्ट इस बात में बिल्कुल नहीं हो सकता कि मरते वक्त उसके शिकार को पीड़ा का एहसास न हो। हत्यारा भला क्यों अपने शिकार का मुंह खुलवाने जैसे एक्सट्रा काम करेगा? इससे ज्यादा सुविधाजनक तो उसके लिए राजदान साहब के दिल या सिर में गोली मार देना था। सुविधाजनक रास्ता छाड़कर क्यों कोई एक्स्ट्रा पंगा लेगा, इन्हीं सब कारणों से यह आत्महत्या लगती है। अगर लाश के हाथ में रिवाल्वर मौजूद होता तो अंधा भी समझ सकता था राजदान साहब ने सुसाइड कर ली है और अब मुझे लगता है—आत्महत्या को हत्या साबित करने के लिए किसी ने केवल एक काम किया है—रिवाल्वर ले गया यहां से। इससे ज्यादा कुछ करने का ट्रायद उसे टाइम ही नहीं मिल पाया।”

धड़कते दिल से देवांश ने पूछा—“कौन कर सकता है ऐसा? भैया की हत्या के इल्जाम में किसे फंसाने की मंशा रही होगी उसकी?”

“यह मुझे तुम बताओगे।”

“म-मैं?” देवांश मिमिया उठा।

“या आप।” ठकरियाल की आंखें दिव्या के फेस पर जम गईं।

हलक सूख गया दिव्या का। पलक झपकते ही उसके चेहरे पर हवाईयां उड़ती आने लगीं। बड़ी मुश्किल से कह सकी—“भ-भला मैं इस बारे में क्या कह सकती हूं।”

“नहीं कहोगी तो आप फंस जायेंगी।”

“म-मैं फंस जाऊंगी?” पसीने-पसीने हो गई दिव्या—“व-वह भला क्यों?”

“क्योंकि वह जो भी है, आपको फंसाना चाहता है।”

“देवांश को लगा—ठकरियाल वह नहीं सोच रहा जो वे समझ रहे हैं बल्कि वह तो फेवर में सोच रहा है उनके। यह सोच रहा है किसी ने हमें फंसाने की कोशिश की है, न कि यह कि हम किसी को फंसाने की कोशिश कर रहे हैं। इस सोच ने देवांश को बल दिया। उसकी रूकी हुई सांसे पुनः सामान्य गति से चलने लगीं। थोड़ा हौंसला समेटकर कहा—“भ-भला भैया का कत्ल करके भाभी को कोई क्यों फंसाना चाहेगा।”

ठकरियाल के होठों पर मुस्कराहट उभर आई। बहुत ही गहरी नजरों से देखा उसने देवांश को। हालांकि मुंह से कुछ नहीं कहा मगर, वे नजरें—वह मुस्कराहट साफ-साफ ऐसा कुछ कह रही थी जिसने पलक झपकते ही देवांश को पहले से ही ज्यादा बौखला डाला। वह हकलाकर कह उठा—“ए-ऐसा हरगिज नहीं है इंसपेक्टर। बहुत ही वाहियात बात सोच रहे हो तुम?”

“क्या सोच रहा हूं मैं?”

“य-यह कि भाभी को फंसाने के लिए यह काम मैंने किया है।”

“कहा तो नहीं मैंने ऐसा।” ठकरियाल की मुस्कान औरें। और ज्यादा रहस्यमय हो उठी।

“मुंह से भले ही न कहा हो परन्तु तुम्हारी नजरें, यह मुस्कान। सब यही कह रही हैं। यकीन मानो—भैया की हत्या के इल्जाम में भाभी को फंसाने से ‘अब’ मुझे कोई फायदा नहीं होने वाला ट्रायद तुम जानते नहीं हो किं

“मैं जानता हूं।” ठकरियाल ने उसकी बात काटी—“तुम्हारे बताने से पहले ही सब कुछ जानता हूं मैं। राजदान साहब की बीमारी तुम लोगों को कंगले ही नहीं, कर्जमंद बना चुकी है। फर्नीचर सहित यह विला और राजदान ऐसोसिएट्स का आ फिस तक गिरवी पड़ा है। रामभाई ग्राह जैसे लोगो के कर्जमंद हो सो अलग। भला ऐसी अवस्था में अपनी भाभी को फंसाकर राजदान साहब का उत्तराधिकारी बनने से तुम्हें मिलेगा क्या? और जब कुछ मिल नहीं रहा होता तो किसी को किसी का उत्तराधिकारी बनने में कोई दिलचस्पी नहीं होती। हालात अगर उल्टे होते अर्थात् दिव्या जी को फंसाकर तुम्हारे हाथ कुछ लग रहा होता तो मैं उस एंगिल से जरूर सोचता जिससे तुम्हें लगा कि मैंने सोचा। इसलिए बस इतना ही कहूंगा—मेरी नजरों और मुस्कान से तुम्हें जो लगा, गलत लगा।”

“त-तो फिर क्या मतलब था तुम्हारी उन नजरों और मुस्कान का?”

“केवल यह, तुम और दिव्या जी तुम दोनों इस वक्त एक ही नाव पर सवार हो।”

एक बार फिर गड़बड़ा गये दोनो। दिव्या ने कहा—“इस बात का क्या मतलब?”

“वह जो भी कोई है, तुम दोनों को फंसाना चाहता है।”

“द-दोनों को!” देवांश ने चौंककर कहा—“ऐसा तुम कैसे कह सकते हो।”

“मेरी जगह अगर कोई और पुलिस इंसपेक्टर इस वक्त यहां खड़ा होता तो तुम दोनों के हाथों में सरकारी कंगन पहना चुका होता।”

“क-किस बेस पर?”

“गोली चली। राजदान साहब का सिर बीसवीं मंजिल से गिरा तरबूज बन गया और तुम दोनों महानुभावों में से किसी ने आवाज नहीं सुना। किसी पुलिस इंस्पेक्टर के लिए किसी की गर्दन नापने हेतु अपना बेस काफी होता है।”

“त-तो फिर तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?”

“क्योंकि मैं ‘मैं’ हूँ। इंस्पेक्टर टेकचंद ठकरियाल। दुनिया के हर पुलिस वाले से जुदा। अनूठा! अनोखा और अद्भुत। वह केवल मैं हूँ जो यह अनुमान लगा सका कि यह हत्या नहीं आत्महत्या है। ऐसा-गैरा पुलिसिया होता तो हत्या ही समझतसा इसे और तुम्हें हवालात में डालकर अब तक बीवी के पहलू में जाकर सो गया होता। तुम पर टाक न करने का मेरे पास सबसे बड़ा कारण ये है कि तुम जानते थे—राजदान साहब को एड्स था। एड्स भी ऐसी स्टेज पर जहाँ एकाध दिन में इनकी राम-नाम सत्य वैसे ही हो जाने वाली थी औरें और वैसे भले ही तुम चाहे जो हो मगर इतने बेवकूफ नहीं हो सकते कि उस ट्राक्स के खून से अपने हाथ रंगो जिसके बारे में जानते हो एकाध दिन में खुद हैडमास्टर के दरबार में हाजिरी बजाने वाला है।”

दोनों ने एक साथ राहत की लम्बी सांस ली। सचमुच यह तर्क उन्हें किसी भी जंजाल में नहीं फंसने दे सकता था। उनके फेवर में तो इतनी तगड़ी एलीबाई मौजूद थी कि वे फंस नहीं सकते थे।

“ठकरियाल ने पूछा—“क्या तुम्हें किसी पर टाक है?”

“श-शक।”

“मेरा मतलब—क्या तुम ऐसे किसी आदमी को जानते हो जो तुम्हारा बंटधार करने का ख्वाहिशमंद हो?”

दोनों का जी चाहा—तत्काल अपने शिकार का नाम बता दें।

नजरें मिली।

जैसे एक-दूसरे से पूछ रहे हो—“क्या इस स्टेज पर नाम लेना मुनासिब होगा?”

दोनों के दिमागों में कहा—“नहीं!”

अपने शिकार का नाम उसी वक्त सामने लाये तो बेहतर होगा जिस वक्त सामने लाने का वे पहले ही निश्चय कर चुके हैं।

वैसे भी, उनके कहने मात्र से तो ‘वह’ फंसने वाला था नहीं। उनके बयान की पुष्टि करने वाले सुबूत भी तो चाहिए थे और वे अभी तक प्लान्ट नहीं हो सके थे।

तभी तो देवांश ने कहा—“नहीं। मैं ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में नहीं सोच पा रहा।”

“आप?” ठकरियाल दिव्या ने मुखातिब हुआ।

“समझ में नहीं आ रहा। किसी का हम फंसाकर क्या मिलेगा?”

“यानी आप दोनों मेरी कोई मदद नहीं कर सकते। अपनी मदद खुद ही करनी होगी मुझे। ठीक भी है, जो खुद अपनी मदद नहीं कर सकता उसकी मदद कोई नहीं करता।” बड़बड़ाता सा वह बाथरूम के बंद दरवाजे की तरफ बढ़ा। नजरें कमरे में बिछे कीमती कालीन पर जमी हुई थीं।

“क्या तलाश रहे हो?” देवांश ने पूछा।

“वह जो भी था, कमरे में आया किधर से था। मुख्य द्वार से या इस रास्ते से जिससे मैं आने वाला था। अगर उसे राजदान साहब ने बुलाया था, जैसा कि गिलास बता रहे हैं तो वह इसी रास्ते से आया होगा। बंद दरवाजे के डंडाले पर उसकी अंगुलियों के निशान होने चाहिए।” कहने के साथ वह झुककर डंडाले को इस तरह देखने लगा जैसे नंगी आंखों से ही अंगुलियों के निशानों को देख लेने की क्षमता रखता हो। कुछ देर तक उसी तरह डंडाले को देखता रहा। फिर सीधा हुआ और उनकी तरफ पलटकर बोला—“जरा देखने क कोशिश करो, कमरे से कुछ गायब तो नहीं है?”

“जी?”

“हालांकि उम्मीद नहीं है ऐसी मगर फिर भी, चैक तो करना ही पड़ेगा। मगर ध्यान रहे, हाथ नहीं लगाना किसी चीज को। केवल नजरों का इस्तेमाल करो।”



दिव्या और देवांश की नजरें मिलीं। उनके लिए अपने प्लान के दूसरे हिस्से पर अमल करने का वक्त आ पहुंचा था। आंखों ही आंखों में दोनों के बीच सहमति हुई देवांश ने चौंके हुए स्वर में कहा—“अरे, वह पेन्टिंग बैड पर कैसे रखी है भाभी?”

“हाय राम! मेरे जेवर!” दिव्या के हलक से चीख सी निकल गई। वह इस तरह बैड की तरफ लपकी जैसे अभी-अभी जख्मी हुए बेटे की तरफ मां लपकी हो।

कूदकर एक बार फिर अदरक की गांठ जैसा खस उसके और बैड के बीच में आ अड़ा। वह कह रहा था—“मैंने पहले ही फरमाया था छूना नहीं किसी वस्तु को। इस कमरे की हर वस्तु सोलह साल की कन्या है।”

“ल-लेकिन इंस्पेक्टर! मेरे जेवर।” दिव्या लाजवाब एक्टिंग कर रही थी—“अगर वह उन्हें ले गया होगा तो बरबाद हो जाऊंगी मैं। तबाह हो जाऊंगी। उनके अलावा और बचा ही क्या है मुझ पर? जहर खाने तक को एक फूटी कौड़ी नहीं है।”

“चाबी लॉकर के ‘की-हॉल’ में लगी है भाभी।” देवांश ने अपना पार्ट प्ले किया।

“हे भगवान! क्या वह सब कुछ ले गया?” दिव्या की मानो जान निकली जा रही थी—“इंस्पेक्टर! प्लीज—जल्दी चैक करो लॉकर को। मेरा दिल बैठा जा रहा है।”

“समझ में तो आये बात। आखिर किस्सा क्या है?”

देवांश ने लॉकर की तरफ इशारा करके कहा—“वह लॉकर जिसके ‘की-हॉल’ में चाबी लगी है, हमेशा उस पेन्टिंग से ढका रहता है जो इस वक्त बैड पर रखी है। लॉकर में भाभी के बचे-कुचे जेवर हैं। पेन्टिंग का पलंग पर होना, चाबी की ‘की-हॉल’ में मौजूदगी से लगता है—उसे खोला गया है।”

“कुछ नहीं होगा। अब उसमें कुछ नहीं होगा देवांश। वहां तक पहुंचने के बाद उसमें क्यों छोड़ने लगा कोई कुछ? दर-दर के भिखारी बन गये। बरबाद हों

“मिसेज राजदान!” एकाएक ठकरियाल गुरा उठा।

दिव्या ने कैची सी चलती जुवान इस तरह रुक गई जैसे किसी गानदार वाहन का पावर ब्रेक लग गया हो। आंखें फाड़े ठकरियाल की तरफ देखती रही गई वह। लुट-पिट चुकी औरत की गानदार एक्टिंग कर रही थी।

देवांश अपनी भूमिका अदा करने आगे बढ़ा। दिव्या के कंधे पर हाथ रखकर बोला—“भाभी प्लीज! संभालो खुद को।”

“क-कैसे संभालू?” अगर वह मेरे जेवर ले गया होता तो

“मैंने पहली बार महसूस किया दिव्या जी जितना प्यार राजदान साहब आपसे करत थे, आप उनसे उतना नहीं करती।”

“म-मतलब?”

“इतनी हलकान तो आप राजदान साहब को लाश देखकर भी नहीं हुई थी जितनी इस संभावना से हुई कि लॉकर में जेवर नहीं होंगे। इसका मतलब राजदान साहब से कहीं ज्यादा प्यारे तो आपको जेवर हैं।”

सकपका गई दिव्या।

उसे लगा—“एक्टिंग की डोज ओवर हो गई है। आराम।”

बात देवांश ने संभालने की कोशिश की—“तुम हमारी स्थिति ठीक से समझ नहीं पा रहे इंस्पेक्टर। हर चीज का अपना महत्व होता है। लॉकर में जेवर नहीं हैं तो तो आराम हम पर इतने पैसे भी नहीं होंगे कि ठीक से भैया का अंतिम संस्कार भी कर सके।”

“फिर भी, यह जाने बगैर कि लॉकर से जेवर गायब है या नहीं, इतना हंगामा मचा देने की वजह मेररी समझदानी में नहीं घुसी।”

“पेन्टिंग का बैड पर होना। ‘की-हॉल’ में चाबी। इस सबके बाद बचता ही क्या है। लॉकर में कुछ होने की संभावना नहीं है। वहां तक पहुंचने के बाद भला कोई नहीं

ठकरियाल ने उसकी बात काटकर पूछा—“तुम में से तो किसी ने नहीं छेड़ा पेन्टिंग को?”

“ह-हम में से। भला हम क्यों छेड़ने लगे?”

ठकरियाल देखता रह गया। उसकी तरफ। इस बार बोला कुछ नहीं।

दिव्या ने अपने चेहरे पर ऐसे भाव इकट्ठे कर रखे थे जैसे पति की मौत और पूरी तरह लुट जाने के कारण अपने होशो-हवाश खो चुकी हो। देवांश ने ठकरियाल से कहा—“प्लीज इंस्पेक्टर। ऐसा कुछ मत कहो जिससे भाभी को दुख हो।”

ठकरियाल ने विचित्र सी मुस्कान के साथ कहा—“यह तो कह सकता हूं—अगर रिवाल्वर गायब करने वाले ने ही यह पेन्टिंग दीवार से उतरकर लॉकर खोला है तो वह, वह भूल कर चुका है जिसकी मुझ जैसे इन्वेस्टिगेटर को दरकार होती है।”

“क-क्या मतलब?”

“बाथरूम के दरवाजे के डंडाले पर उसकी अंगुलियों के निशान हों, न हों मगर इन पेन्टिंग, चाबी और लॉकर के अंदर जरूर होंगे जो उसके गले का फंदा बनने जा रहे हैं।”

देवांश का जी चाहा—जोर से ठहाका लगाये। कहे—“कोशिश करो इंस्पेक्टर! करो कोशिश। तुम्हारे फरिश्ते तक को एड़ी से चोटी तक का जोर लगाने के बावजूद वहां से वैसा कुछ नहीं मिलेगा जिसकी तुम जैसे इन्वेस्टिगेटर को दरकार होती है। यही पाओगे तुम, उसे खोलने वाले ने ग्लब्स पहन रखे थे।”

परन्तु!

ऐसा कुछ कहा नहीं उसने।

कह भी नहीं सकता था।

कहा दिव्या ने—“प्लीज इंस्पेक्टर, खोलकर देखो तो सही उसे।”

ठकरियाल बगैर कुछ कहे बैड की तरफ मुखातिब हुआ। कुछ देर तक गौर से उस पर बिछी बैडशीट को देखता रहा। विशेष रूप से उस स्थान को जहां लॉकर खोलने के लिए खड़ा होना जरूरी था।

देवांश और दिव्या समझ समझ सकते थे—वह लॉकर खोलने वाले फुट स्टेप्स तलाश कर रहा है। उन्होंने कनखियों से एक-दूसरे की तरफ देखा। होठों के अंदर ही अंदर अपनी सफलता पर मुस्कराये। जो चीज ठकरियाल तलाश कर रहा था उस वे दोनों पहले ही न केवल विचार कर चुके थे बल्कि अपने पैरों के निशानों को साफ भी कर चुके थे।

वहां से कुछ नहीं मिलता था ठकरियाल को।

वही हुआ।

“वह जो भी था, खेला-खाया था।” कहता हुआ ठकरियाल बैड पर चढ़ गया। जेब से रुमाल निकाला।

उसे हाथ में लपेटकर ‘की-हाल’ में फंसी चाबी घुमाई।

दराज जैसे लॉकर को बाहर खींचा।

“कुछ है?” दिव्या ने इसलिए चीखकर पूछा क्योंकि जहां वह थी वहां से दराज के अंदर के दृश्य को नहीं देखा जा सकता था।

दराज खाली थी। सो, ठकरियाल की गर्दन इस तरह हिली जैसे किसी डॉक्टर ने लाश की नब्ज देखने के बाद हिलाई हो।

दिव्या पर मानो बिजली गिर पड़ी। इस कदर रोने, पीटने और कलपने लगी वह कि देवांश को संभालना भारी हो गया। एक बार को तो खूब उसे लगा, दिव्या के जेवर सचमुच चोरी चले गये हैं परन्तु ठकरियाल पर कोई असर नहीं था। वह इस तरह पलंग से उतरा जैसे जानता हो कमरे में कुछ और भी चल रहा है।

बाथरूम के दरवाजे की तरफ बढ़ा। नजदीक पहुंचा।

रुमाल वाले हाथ से डंडाला खोला। ठिठका और फिर पलटकर देवांश से बोला—“मैं ड्रेसिंग और बाथरूम चेक करने जा रहा हूं। हो सकता है। वहां मेरे अलावा किसी और के निशाने भी मिल जाये। मेरे लौटने तक तुम्हें वहीं खड़े रहना है जहां हो। याद रहे—छेड़ना नहीं किसी चीज को।”

देवांश न कुछ कहने के लिए मुंह खोला मगर बगैर कुछ कहे बंद कर लिया। कुछ भी कहने का कोई फायदा नहीं था।

जवाब का इंतजार किये बगैर ठकरियाल न केवल बाथरूम में जा चुका था बल्कि दरवाजा बंद भी कर चुका था। केवल दरवाजा ही बंद हुआ होता तो याद वे न चौंकते परन्तु उस वक्त उनके दिमागो में सैकड़ों सवाल कौंध उठे जब बाथरूम की तरफ से बाकायदा चटकनी चढ़ाये जाने की आवाज आई।



पलटकर दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

सहमी हुई आंखें पूछ रही थीं—“क्या चक्कर है ये?”

दिव्या की जीभ में खुजली हुई तो फुसफुसाये बगैर न रह सकी—“दरवाजा क्यों बंद कर लिया उसने?”

देवांश केवल ‘मालूम नहीं’ वाले अंदाज में कंधे उचकाकर रह गया। चेहरे पर हवाईया उड़ रही थीं।

“बात समझ में नहीं आई।” दिव्या को बेचैनी दूर होने का नाम नहीं ले रही थी—“अगर उसे केवल जांच-पड़ताल करनी है। तो दरवाजा अंदर से बंद करने की क्या तुक हुई?”

“हमें हर बात को इतनी गहराई से नहीं सोचना चाहिए।” देवांश फुसफुसाया—“व्यर्थ ही घबराहट हावी होगी। यह इन्वेस्टिगेशन करने का उसका स्टाईल भी हो सकता है।”

“कैसा स्टाईल हुआ ये?”

“कहा न, बाल की खाल में मत घुसो।” इस बार थोड़े झुंझलाये हुए स्वर में बोला देवांश—“केवल इतना याद रखो—वह हम पर टूक नहीं कर रहा क्योंकि उसकी नॉलिंग में हम एड्स के बारे में जानते थे। वजह पुरख्ता है—वह आदमी क्यों किसी ऐसे टूक की हत्या करने लगा जिसके बारे में उसे मालूम है किं

“तुमने यह नहीं सोचा, जब उसे पॉलिसी के बारे में पता लगेगा तो क्या होगा?”

“क्या होगा?”

“वह वजह मिल जायेगी उसे जिसकी वजह से हम इसी रात राजदान की हत्या के ख्वाहिशमंद हो सकते हैं।”

देवांश को लगा—बात ठीक है।

पॉलिसी को तो देर-सवेर सामने आना ही है।

बहरहाल, उन्हीं पांच करोड़ के लिए तो वे इतने पापड़ बेल रहे हैं और पॉलिसी के सामने आने का मतलब है उस 'एलीबाई' का खुद-ब-खुद ध्वस्त हो जाना जो फिलहाल उन्हें ठकरियाल के कूक के दायरे से बाहर रखे हुए हैं। उस अवस्था में ठकरियाल पलक झपकते ही समझ जायेगा जो भी हुआ है, पांच करोड़ की खातिर उन्होंने ही किया है।

लगा-लक्ष्य हासिल करना उतना आसान नहीं है जितना वह सोच रहा था।

ठकरियाल उनके रास्ते में चट्टान बनकर अड़ने वाला है।

और यह सच है-देवांश ने जितना सोचा, हलकान होता चला गया।

सवाल सैकड़ों थे, जवाब एक का भी नहीं।

बोल दिव्या भी कुछ नहीं रही थी। गायद वह भी लगभग उन्हीं सवालों में उलझी हुई थी जो खुद उसके दिमाग को मथ रहे थे वरना, हर समय चबड़-चबड़ करती रहने वाली दिव्या ने उसे पुकारा हो। उसने उसने दिव्या की तरफ देखकर 'हुंकारा' भरा। वैसा ही 'हुंकारा' ठीक उसी क्षण दिव्या ने भी भरा था। पता लगा-किसी ने किसी को नहीं पुकारा था।

भ्रम हुआ था दोनों को।

इंसान जब अपनी ही सोचों से घिरकर डरने लगता है तो ऐसी ही भ्रम होते हैं।

डरावनी सोचों के कारण दोनों के चेहरे पर खौफ नाच रहा था।

गायद अपनी ही सोचों से बचने के लिए दिव्या ने धीमे स्वर में पूछा-"क्या सोच रहे हो देव?"

"जो हम कर रहे हैं, क्या वह ठीक है?" देवांश ने दिल की बात कह दी।

"मतलब?"

"अपनी कब्रें तो नहीं खोद रहे हम?"

"देव!" दिव्या की आवाज कांप रही थी-"क्यों डरा रहे हो मुझे? आखिर कहना क्या चाहते हो? साफ-साफ कहो न।"

"मुझे राजदान के आदर याद आ रहे हैं।"

"कौन से आदर?"

"उसने कहा था-'सवाल पांच करोड़ का है। मुझे पूरी उम्मीद है-मेरी आत्महत्या को हत्या साबित करने की कोशिश तुम जरूर करोगे।'

"हां! कहा तो था।"

"कितना दुरुस्त कहा था उसने। ठीक वही कर रहे हैं हम।"

"तो?"

"किसी जाल में तो नहीं फंसे जा रहे?"

"कैसा जाल?"

"ऐसा लगता है-जैसे वह हमारी नस-नस से वाफिफ था। उसे मालूम था हम कब क्या करेंगे और उसी सब को ध्यान में रखकर उसने कोई जाल बिछाया है। पता नहीं मुझे क्यों लग रहा है-जो हम सोच रहे हैं, वह पहले ही सोच चुका था कि हम यही सोचेंगे। यह सब सोचकर मेरा दिल चाहता है, वह न करें जो कर रहे हैं। बेवकूफी होगी यह।"

"यह न करें तो क्या करें?"

"जो हुआ है, उसे वैसा का वैसा ही-बगैर कुछ छुपाये ठकरियाल को बता दें।"

"क्या तुम मेरे और अपने संबंधों को बात कर रहे हो?"

"नहीं।"

"फिर?"

"मैं केवल यहां हुई वारदात की बात कर रहा हूँ। हमें ठकरियाल को बता देना चाहिए, राजदान ने अपनी नर्क जैसी जिन्दगी से आजिज आकर आत्महत्या कर ली है। रिवाल्वर और जेवर किसी और ने नहीं, हमने गायब किये हैं। हम ही हैं वे जो अच्छी भली आत्महत्या को हत्या का रंग देने की कोशिश कर रहे हैं।"

"पांच करोड़ का क्या होगा?"

"समझने की कोशिश करो दिव्या-हम उसी लालच में फंसे रहे हैं जिसमें राजदान हमें फंसा गया है।"

"क्या तुमने यह भी सोचा है पांच करोड़ के अभाव में हमारी जिन्दगी किस कदर नर्क बन जायेगी?"

"भले ही बन जाये, जिन्दगी रहेगी तो सही।" देवांश कहता चला गया-"जबकि जिस रास्ते पर हम निकल आये हैं मुझे लगता है-उसका अंत फांसी के फंदे पर होगा।"

“फांसी के फंदे की नौबत कहां से आ जायेगी?” दिव्या कहती चली—“असल में देखो तो किया ही क्या है हमने? कत्ल तो कर नहीं दिया राजदान का।”

“इसके बावजूद अगर भविष्य में यही साबित हो गया तो?”

“ए-ऐसा कैसे साबित हो जायेगा?” हकला गई दिव्या।

“होने को तो पता नहीं कब क्या हो जाये लेकिन मेरे ख्याल से वही साबित हो जाना कम खतरनाक नहीं होगा जो हमने किया है या करने वाले हैं।” देवांश मानो अपनी ही सोचो से बुरी तरह डर चुका था—“सोचो दिव्या—एक आदमी आत्महत्या करता है। हम घटनास्थल पर मौजूद सुबूतो से छेड़छाड़ करके उसे हत्या साबित करने की कोशिश करते हैं। हमारा मकसद उस हत्या के इल्जाम में किसी बेगुनाह को फांसाना है। क्या ये छोटा जुर्म है? मेरे ख्याल से तो किसी की हत्या करने जितना ही बड़ा गुनाह ये। फांसी नहीं तो उम्र कैद जरूर हो जायेगी हमें।”

“तब, जबकि यह सब किसी को पता लगेगा।” दिव्या ने कहा—“तुम भूल रहे हो ऐसी कोई संभावना नहीं है। सॉलिड स्कीम बनाई है हमने। वही होगा जो हमने सोचा है।”

“मैंने बड़ी-बड़ी स्कीमों को धराशायी होते देखा है।”

“देव! संभालो खुद को। जरूरत से ज्यादा डर गये हो तुम।”

“मैंने पहले ही कहा था—बात की खाल में न खुद घुसो, न मुझे घुसने दो। अब जबकि मेरा दिमाग पर प्वाइंट पर गौर कर चुका है तो इसी नतीजे पर पहुंचा हूं, हम जो भी कर रहे हैं, अपने नहीं—राजदान के प्लान के मुताबिक कर रहे हैं। और तो औरें सुसाइड के ठीक दो मिनट बाद ठकरियाल का यहां पहुंच जाना तक राजदान के प्लान का हिस्सा है। खुद ठकरियाल के मुंह से सुन चुकी हो तुम—एक बजे आने के लिए उसे राजदान ने कहा था। साफ जाहिर है—यहां जो कुछ जो रहा है, हमारे प्लान के मुताबिक नहीं बल्कि उस प्लान के मुताबिक हो रहा है जिसकी इस वक्त यहां लाश पड़ी है। मुझे तो लगता है—हम सोच तक भी सिर्फ और सिर्फ वही रहे हैं जो मरने से पूर्व राजदान चाहता था कि उसकी बात के बाद सोचें।”

पहली बार दिव्या के चेहरे पर भी खौफ के वैसे ही भाव उभरे जैसे देवांश के चेहरे पर काफी पहले काबिज हो चुके थे। बोली—“तुम तो मुझे भी डराये दे रहे हो देव। प्लीज—हौसला बोली—“तुम तो मुझे भी डराये दे रहे हो देव। प्लीज—हौसला बनाये रखो, ऐसी बातें मत करो।”

“एक रिक्वेस्ट करनी चाहता हूं तुमसे।”

“रिक्वेस्ट?”

“लालच के भूत को अपने दिमाग से निकाल फेंको। वही मत करो जो मरने से पूर्व राजदान समझता था कि हम करेंगे।”

“पांच करोड़ के बगैर हमारी जिन्दगीं

“जो खुश रहते हैं, उन सभी के पास पांच करोड़ नहीं होते दिव्या।” उसकी बात काट कर देवांश भावुक स्वर में कह उठा—“मैं तुम्हें उतने ऐशो-आराम के साथ रखने का वादा तो नहीं कर सकता जितने ऐशो-आराम में अब तक रही हो मगर इतना वादा जरूर कर सकता हूं—खुश रखूंगा, प्यार से रखूंगा। मेहनत करूंगा मैं—कोशिश करूंगा बिजनेस के उस ‘क्राइसेज’ से निकलने की जिसको वहज से आज हमारी आर्थिक स्थिति ‘ये’ है। वक्त बदलते देर नहीं लगती—क्या पता कल मैं गिरवी रखी गई हर चीज को छुड़ा लूं। कर्ज भी चुका दूं रामभाई ग्राह जैसे लोगों का औरें मान लो ऐसा कुछ नहीं कर पाता। तब भी, अगर मेरा विश्वास तुममें और तुम्हारा विश्वास मुझमें बना रहा तो अभावों में भी, झोंपड़ी में भी हम अपनी बाकी जिन्दगी हंसते गाते बिता सकते हैं करोड़ों लोग बिता रहे हैं। लेकिन अगर हम लालच नहीं छोड़ पाये। उसी रास्ते पर बढ़ चले जिस पर पहला कदम रख सके हैं तो जाने क्यों, मुझे विश्वास हो चला है—या तो फांसी के फंदे पर लटकना पड़ेगा या बाकी जिन्दगी जेल में एड़िया रगड़ते-रगड़ते गुजरेगी। हम दोनों के लिए इसी सबका इन्तजाम कर गया है राजदान।”

“ल-लेकिनें”

“पता नहीं कहां अटकी हुई हो तुम।” एक बार फिर देवांश ने उसे बोलने का मौका नहीं दिया—“इस रास्ते पर मुझे हम दोनों की बरबादी साफ नजर आ रही है।”

“क्या ठकरियाल हमें माफ कर देगा?” दिव्या ने पूंका जाहिर की।

झूम उठा देवांश। दिव्या के छोटे से वाक्य से जाहिर था—वह कन्विंस हो गई। अब पूंका है तो केवल यह—ठकरियाल का रुख क्या होगा? उत्साह से भरा देवांश कह उठा—“उसकी तुम चिन्ता मत करो। मैं मना लूंगा। भले ही उसके पैर पकड़ने पड़े। वैसे ही अब तक हमने जो कुछ किया है उससे किसी का कोई नुकसान नहीं हुआ है। बड़ी आसानी से लौटाया जा सकता है उस सबको। हम उसे रिवाल्वर और जेवर बराबद करा देंगे। दुनिया के सामने वही आयेगा जो सच है अर्थात्—आत्महत्या कर ली है राजदान ने। ठकरियाल से कहेंगे—पांच करोड़ ने कुछ देर के लिए हमारी वृद्धि खराब कर दी थी। उसी कारण रिवाल्वर और जेवर घटनास्थल से हटा दिये थे परन्तु वक्त रहते अक्ल आ गई है। ठकरियाल ऐसा आदमी नहीं है जो इतने सबके बाद हमारा अहित चाहे।

दिव्या बस इतना ही कह सकी—“जैसा तुम चाहो।”

“आओ मेरे साथ।” वह उसका हाथ पकड़कर तीन-चार कदमों में ही बाथरूम के दरवाजे पर पहुंच गया।

दस्तक दी।

पुकारा ठकरियाल को।

मगर!

अंदर कोई प्रतिक्रिया नहीं।

देवांश ने कुछ और जोर से दरवाजा पीटा। थोड़ी ऊंची आवाज में कहा—“बाहर आ जाओ इंस्पेक्टर। अब किसी इन्वेस्टिगेशन की जरूरत नहीं है। हम सब कुछ बताने का तैयार हैं।”

देवांश की आवाज में कोई लोच, कोई कंपकपाहट नहीं थी। बल्कि एक अजीब किस्म की दृढ़ता थी। वह, जो हर सच्चे और तनावहीन आदमी की आवाज में होती है। झूठे और तनावग्रस्त आदमी के मुंह से कभी वैसी आत्मविश्वास भरी आवाज नहीं निकल पाती।

परन्तु!

जवाब में बाथरूम के अंदर से इस बार भी कोई आवाज नहीं उभरी।

सन्नाटा छाया रहा।

दिव्या और देवांश ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

चारों आंखों में एक ही सवाल था—“क्या चक्कर है? बोल क्यों नहीं रहा ठकरियाल?”

“इंस्पेक्टर! इंस्पेक्टर!” पुकारने के साथ देवांश ने जोर से दरवाजा भड़भड़ाया।

जवाब अब भी नदारद।

“अरे! कहां गया ये? खोल क्यों नहीं रहा?” बड़बड़ाने के साथ जो उसने चीख-चीखकर ठकरियाल को पुकारने ओर दरवाजा पीटने का प्रारंभ किया तो दो मिनट तक लगातार चलता रहा।

पूरी तरह सन्नाटा छाया रहा दूसरी तरफ।

जैसे कोई था ही नहीं।

दिव्या और देवांश के जो चेहरे कुछ देर पहले पूरी तरह तनावमुक्त हो चुके थे उनकी नसें पुनः तन गईं। अजीब सी दहशत काबिज होती चली गई उन पर।

दिल धाड़-धाड़ की आवाज के साथ पसलियों से सिर टकराने लगे थे।

दिमाग में अनेक सवाल पूरे जोर-शोर से कुश्तियां लड़ने लगे।

कहां चला गया ठकरियाल?

क्या चक्कर है ये?

किस फिराक में है वह?

क्या उसने किसी इड्यंत्र के तहत बाथरूम का दरवाजा उस तरफ से बंद किया था?

डसकी इस अजीबो-गरीब हरकत के पीछे कहीं राजदान ही की तो कोई साजिश नहीं है?

वह कर क्या रहा है अंदर?

खोल क्यों नहीं रहा दरवाजा?

इस किस्म के सैकड़ों सवालों ने दिव्या और देवांश को मानों पागल करके रख दिया।

चेहरों पर हवाइया उड़ने लगीं।

रंग पीले।

जहन में ख्याल—क्या ये किसी जाल में फंस चुके हैं।

जब कुछ समझ में नहीं आया तो दिव्या का हाथ पकड़कर देवांश कमरे के मुख्य दरवाजे की तरफ लपका। उसकी तरफ जो गैलरी में खुलता था। जिसके जरिए वे वहां आये थे ओरों उस वक्त तो उनके रहे-सहे होश भी फाख्ता हो गये जब उस दरवाजे को भी गैलरी की तरफ से बंद पाया।

पता नहीं उसे कब और किसने बंद कर दिया था।

कुछ देर के लिए तो अवाक रह गये वे।

काटो तो खून नहीं।

दिमाग जाम होकर रह गया था।

बातें कर रहा था कुछ।

क्या हो गया ये?
कैसे हो गया?
हुआ क्यों है?
चेतना लौटी तो दरवाजा पीटना शुरू किया।
हलक फाड़-फाड़कर वे ठकरियाल को पुकार रहे थे।
मगर!

ज्वाब में कहीं से कोई आवाज नहीं उभरी।

टपने ही द्वारा पैदा की जाने वाली आवाजें घूम-घामकर वापस उनके कानों तक पहुंच रही थीं। ऐसा लगता था—जैसे ठकरियाल विला में कभी आया ही नहीं था। अब तो कमरे में पड़ी राजदान की लाश भी उन्हें डराने लगी थी। सारे कमरे में यूँ फड़फड़ाते फिर रहे थे वे जैसे अचानक पिंजरे में जा फंसी चिड़िया फड़फड़ाता करती हैं।



पगलाया सा देवांश उस वक्त चौथी या पांचवीं बार कमरे के मुख्य द्वार पर अपने कंधे का हमला करने के लिए लपका था जब अचानक एक झटके से दरवाजा खुल गया।

झोंक में वह गैलरी में काफी दूर तक लड़खड़ाता चला गया।

गनीमत रही, गिरा नहीं।

संभलकर पलटा।

नजर दरवाजे के नजदीक खड़े ठकरियाल पर पड़ी।

उधर, दिव्या भी ठकरियाल ही को देख रही थी। आंखों में खौफ था उसकी। चेहरे पर आतंक हो आतंक। ऐसी दहशत जैसे गैस चेम्बर में फंसे व्यक्ति के चेहरे पर होती है। कुछ कहते नहीं बन पड़ रहा था उस पर। कोशिश के बावजूद मुंह से आवाज नहीं निकाल पाई। लगभग ऐसी ही, बल्कि इससे भी बदतर अवस्था देवांश की थी। डरा हुआ होने के साथ 'मेहनत' करने के कारण वह हांफ रहा था। अपने हमलों से दरवाजे को इस अवस्था में पहुंचा चुका था कि ठकरियाल ऐन टाईम पर खोल न देता तो टूटकर गैलरी के फर्श पर जा गिरता। जब काफी देर तक भी कोशिश के बावजूद के बावजूद अपने मुंह से आवाज न निकाल सका, हांफता हुआ ठकरियाल की तरफ केवल देखता भर रहा तो ठकरियाल ने कहा—“हो क्या गया है तुम्हें? क्यों कुश्ती लड़ रहे थे दरवाजे से?”

“क-कहां चले गये थे तुम?” दहशत युक्त स्वर में चीख पड़ा देवांश और पुनः सांस के मरीज की मानिन्द हांफने लगा।

जवाब ठकरियाल ने मुंह से नहीं, केवल होठों से दिया।

भद्दे होठों पर रहस्या मुस्कान बिखेरकर।

देवांश को लगा—सामने दैत्य खड़ा मुस्करा रहा है।

देवांश को ही क्यों? दिव्या को भी ऐसा ही लगा था। ऐसा—जैसे अभी वह अपने लम्बे-लम्बे दांत किटकिटाता उसकी तरफ बढ़ेगा और उसे यूँ चबा जायेगा जैसे मगरमच्छ छोटी-छोटी मछलियों को चबा जाता है।

खुद को दहशत की ज्यादाती से आजाद करने की मंशा से वह चीख पड़ी—“जवाब क्यों नहीं दे रहे इन्स्पेक्टर? कहां चले गये थे तुम?”

“म-मैं? मैं तो यहीं था। तुम लोग इतने हलकान क्यों हो रहे हो?”

“कहां थे यहां? कितना चीखे हम? कितना पुकारा तुम्हें?” कितना पीटा ये और बाथरूम का दरवाजा!” देवांश चीखता चला गया—“पलटकर कहीं से भी तुम्हारी आवाज नहीं आई।”

ठकरियाल का मुस्कान गहरी हो गयी—“यानी अंजाने में मैंने रिवेंज ले लिया?”

“र-रिवेंज?”

“यह रिवेंज नहीं तो और क्या हुआ?” ठकरियाल हंस रहा था—“मैं कॉलबेल बजा रहा था, तुम लोगों ने एक साल बाद दरवाजा खोला। उतना टाइम तो टूटा यद मैंने अब भी नहीं लिया। लेकिन हलकान जरूरत से ज्यादा हो रहे हो।”

“हलकान न हो तो क्या करें? यहां जान निकली जा रही थी, तुम्हें मजाक सूझ रहा है। अचानक हमें इस कमरे में बंद कर गये तुम। एक लाश के साथ।”

“मेरी समझ में नहीं आता, लोग लाश से इतना डरते क्यों हैं?” ठकरियाल उनकी अवस्था का मजा लूटता नजर आ रहा था—“जबकि जानते हैं, उठकर टहलना तो दूर, लाश पलकें तक नहीं झपका सकती।”

“हम लाश से नहीं डरे थे।”

“फिर?”

“हरकत से डर गये तुम्हारी।”

“मेरी हरकत से? मैंने ऐसा क्या कर दिया?”

“किया ही नहीं कुछ! पहले बाथरूम अंदर से बंद किया। खिड़की के रास्ते लॉन में पहुंचे। लॉन से मुख्य दरवाजे पर। खुला हुआ वह था ही। विला के अंदर आ गये। वहां से गैलरी में और फिर, यह दरवाजा भी गैलरी की तरफ से इस तरह बंद कर दिया कि कमरे में मौजूद होने के बावजूद हमें भनक तक नहीं लगी।”

“कुछ भी कहो देवांश बाबू, हो कमाल की चीज। मेरे बगैर बताये सब कुछ समझ गये। वह सब कुछ जो मैंने किया?”

“मगर किया क्यों? दिव्या चीख पड़ी—“क्या मिला हमें डराकर?”

ठकरियाल ने अजीब प्रस्ताव रखा—“क्यों न हम लोग आराम से बैठकर बातें करें?”

अभी दोनों में से कोई कुछ कह भी नहीं पाया था कि “आओ” कहता हुआ ठकरियाल कमरे के अंदर प्रविष्ट हो गया। उसने यह देखने या जानने की कतई कोशिश नहीं की वे उसके आ रहे हैं या नहीं?

जैसे जानता हो—उन्हें आना ही पड़ेगा।



कालीन पर बिखरे खून से बचता हुआ ठकरियाल ‘माम से एक सोफा चेयर पर जा गिरा। साथ उनसे बोला—“बैठो! मगर ध्यान से। खून पर पैर न पड़ पाये। जवाब देना भारी पड़ जायेगा।”

न वे बैठ सके, न कुछ बोल सके।

ठिठके से खड़े केवल देखते रहे ठकरियाल को। उस ठकरियाल को जिसने कुछ देर इंतजार करने के बाद इस बार सामने पड़े सोफे की तरफ इशारा करते हुए हुक्म सा दिया—“वहां बैठ जाओ।”

उसकी आवाज में ऐसा कुछ था कि दोनों में से कोई विरोध न कर सका।

इच्छा न होने के बावजूद सोफे पर बैठ गये। राजदान की लाश उनके बेहद नजदीक सोफा चेयर पर लुढ़की पड़ी थी।

ठकरियाल ने अपनी जेब में हाथ डालकर सिगरेट का पैकेट निकाला। एक सिगरेट खुद निकालकर होठों पर लटकाने के साथ पैकेट देवांश की तरफ बढ़ाता बोला—“इस वक्त तुम्हें इसकी सख्त जरूरत है।”

पैकेट उसी के ब्रांड की सिगरेट का था।

देवांश को लगा—सचमुच उसे एक सिगरेट की सख्त जरूरत है।

सो, हाथ बढ़ाकर सिगरेट निकाल ली।

“और आपको भी।” कहने के साथ ठकरियाल ने पैकेट दिव्या की तरफ बढ़ा दिया।

बुरी तरह बौखला गई दिव्या। बोली—“म-मैं-मैं सिगरेट नहीं पीती।”

“झूठ बोल रही हैं आप।” बड़े ही विश्वास भरे स्वर में कहा ठकरियाल ने।

पलक झपकते ही दिव्या का चेहरा ऐसा हो गया जैसे एक ही झटके में सारा खून निचोड़ लिया गया हो। कॉन्फिडेंस भरी मुस्कान के साथ ठकरियाल ने कहा—“मैं न केवल यह जानता हूं आप स्मोकिंग करती हैं बल्कि यह भी जानता हूं आपका ब्राण्ड भी यही है। [मार्माइये मतों! लीजिए।”

सहमी हुई नजरों से दिव्या ने देवांश की तरफ देखा।

“दिव्या जी तुम्हारी परमीशन चाहती हैं देवांश बाबू।” ठकरियाल ने गर्म लोहे पर चोट की—“अब इस नाटक का कोई फायदा नहीं। मैंने कहा मैं जानता हूं तो समझ लो वास्तव में जानता हूं। इनसे कहो—सिगरेट ले लें ताकि बात आगे बढ़े।”

खुद देवांश के होश फाख्ता थे।

दिव्या का हाथ पैकेट की तरफ बढ़ा। वह सौ साल की बूढ़ी के हाथ की मानिंद कांप रहा था। नजरें तो मिला ही नहीं पा रही थी ठकरियाल से। ज बवह सिगरेट ले चुकी तो ठकरियाल ने पैकेट वापस जेब में रख लिया।

पहले अपनी सिगरेट सुलगाई फिर जलती हुई तीली लेकर उठा। देवांश और दिव्या की सिगरेटें सुलगाने के बाद वापस अपनी सोफा चेयर पर आकर बैठ गया।

पहला कश लगाने के साथ देवांश ने कहा—“इंस्पेक्टर! हम तुमसे कुछ कहना चाहत हैं।”

“पहले मैं।” ठकरियाल बोला—“मुझे भी बहुत कुछ कहना है तुम दोनों से।”

देवांश ने दिव्या की तरफ देखा। जैसे पूछ रहा हो—“पहले इसे बोलने का मौका दिया जाये या वह कह दिया जाये जो कहने का वे निश्चय कर चुके हैं?”

दिव्या ने एक नजर उस पर डालने के बाद सीधे ठकरियाल से कहा—“सबसे पहले यह जानना चाहते हैं, तुमने हमें इस कमरे में क्यों बंद किया?”

“उस पर भी आऊंगा लेकिन थोड़ा धूमकर।”

“मतलब?”

“पहले वो सुनो जो मैं कहना चाहता हूं।”

“क्या कहना चाहते हो?”

“एक नम्बर के मूर्ख हो तुम।”

“क-क्या मतलब?” दोनों एक साथ हकला उठे।

“खास तौर पर तुम।” ठकरियाल की आंखें देवांश पर जम गईं।

हालत खराब हो गई देवांश की। काटो तो खून नहीं। हलक से हकलाहट निकली—“म-मतलब क्या है तुम्हारा?”

“सीरियल देखते हो जासूसी?”

“ह-हां।”

“उपन्यास पढ़ते हो?”

“पढ़ता तो हूं।”

“किसके?”

“वेद प्रकाशदर्मा के।”

“इसके बावजूद तुमने इस बात पर गौर नहीं किया कि मैंने अब तक वह नहीं किया जो कोई भी पुलिस इंस्पेक्टर घटनास्थल पर पहुंचने के बाद सबसे पहले करता है।”

“ज-जी?”

“जवाब दो! घटनास्थल पर लाश पाते ही इंस्पेक्टर क्या-क्या करता है?”

“अपने थाने फोन करता है। अफसरान को फोन करके वारदात की सूचना देता है। पोस्टमार्टम पर फिंगर प्रिंट्स डिपार्टमेंट के लोगों को बुलाता है। जरूरत पड़े तो डॉग स्कैं

“मैंने इसमें से कुछ किया?” ठकरियाल ने उसकी बात काटी।

“नहीं।”

“क्यों नहीं किया? सोचो!”

चकराकर रह गया देवांश।

समझ रह गया देवांश।

समझ नहीं पा रहा था—वह कहना क्या चाहता है। सूनी-सूनी आंखों से ठकरियाल की तरफ देखता रहने से ज्यादा वह कुछ नहीं कर सका। ठकरियाल ने एक गहरा कश लगाने के बाद कहा—“खैर! मुझे लगता है तुम नहीं सोच पाओगी। इतना सोचने की क्षमता होती तो वह बेवकूफी करते ही नहीं जिसने मेरी सोई पड़ी दिमाग की नसों को जगा दिया।”

अधीर हो उठा देवांश। लगभग चीखकर पूछा—“अ-आखिर क्या कहना चाहते हो तुम?”

“मेरे लिए विला का दरवाजा खोलने के कुछ ही देर बाद तुमने कहा था—‘कमाल है।...मैं यह सोचकर हैरा हूं कि भैया तुम्हें ऐसी क्या बात बताना चाहते थे।’ गौर करो—‘थे’ थे कहा था तुमने। जिसने उसी क्षण मुझे बता दिया था अब राजदान इस दुनिया में नहीं है और यह बात तुम्हारी नॉलिज में है। न होती तो तुम ‘थे’ नहीं ‘हैं’ कहते। परन्तु, जाहिर तुम...बल्कि तुम दोनों ऐसा कर रहे थे जैसे राजदान के ‘है’ से ‘थे’ हो जाने की जानकारी न हो और यही बात मेरे सिरदर्द का कारण बन गई। जो शख्स एड्स का मरीज था। किसी भी क्षण मर सकता था। वह अगर मर भी गया था तो तुम लोग छुपा क्यों रहे थे? यही जानना चाहता था मैं। आखिर क्या सस्पेंस है ये? अगर उस वक्त की मेरी कुछ बातों पर गौर करो तो तुम पाओगे थोड़ी व्यर्थ की सी नजर आने वाली बातें कर रहा था मैं। लम्बी खींच रहा था छोटी बातों को। एकाध बार राजदान की रामनाम सत्य हो जाने वाले बात भी की। उद्देश्य सबका एक ही था—यह जानना, तुम लोग राजदान की मौत से अंजान क्यों बन रहे हो? अगर ‘है’ की जगह ‘थे’ नहीं कहा होता मैं तुम्हारे देर से दरवाजा खोलने की वजह ‘नींद’ समझ सकता था परन्तु उस ‘थे’ की रोशनी में वह देर भी खटकने लगी थी और जब कोई बात मुझे खटकने लगती है तो दिमाग अटककर रह जाता है। वही हुआ—मुझे उसी वक्त पूरा विश्वास हो गया, राजदान के अंत के पीछे कोई राज है और वह राज क्या है, इस पर से पर्दा उठा मेरे इस कमरे के दरवाजे पर पहुंचते ही। स्वाभाविक मौत नहीं थी यह। एड्स से नहीं मरे थे राजदान

साहब। शुरू-शुरू में बड़ा ही उलझन पूर्ण दृश्य था यह मेरे लिए। लाश बता रही थी राजदान साहब ने आत्महत्या की है। मगर रिवल्वर कहीं था नहीं। पहले मैंने सोचा कहीं कातिल हत्या करके इसे हात्महत्या तो सिद्ध नहीं करनी चाहता था? फिर अपने ही बेवकूफाना ख्याल पर हंसी आ गई। अगर कोई हत्या को आत्महत्या बनने के फेर में होता तो रिवल्वर अपने साथ नहीं ले जाता बल्कि राजदान साहब के हाथों के बीच फंसारक जाता। राजदान साहब के। तब मुझे सूझा—ये मामला तो उल्टा है। पूरी तरह उल्टा। तुममें से किसी ने कहा भी था—‘लोग कानून से बचने के लिए हत्या को आत्महत्या साबित करने की कोशिश करते हैं। भला आत्महत्या को हत्या साबित करने की बेवकूफी कौन और क्यों करेगा? जब उसी वक्त मैंने दिया भी था—‘शायद कोई राजदानसाहब की हत्या के इल्जाम में किसी को फंसाना चाहता है।’ कहने को कह तो दिया मैंने, आखिर मुंह फट आदमी हूं परन्तु ‘कुछ सुलगते सवाल खुद ही मेरे दिमाग में टहल रहे थे। जैसे ‘कोई क्यों करेगा ऐसा? क्या फायदा होने वाला है उसे? उस वक्त मैंने कहा था—‘कोई तुम्हें फंसाना चाहता है।’ इस वक्त बता दूं—‘तुम्हें चकता देने के लिए पूरी तरह उल्टी बात कही थी मैंने। उसी वक्त समझ गया था—‘असल में तुम किसी को फंसाने की कोशिश कर रहे हो।’ इस समझ का कारण था, तुम्हारा वही—‘थे’। तुम्हारे द्वारा राजदान की मृत्यु से अंजान बनने की कोशिश और ये अप्राकृतिक मौत। मेरे लिए यह सब दो और दो जोड़कर चार बनाने जितना आसान था। अब सवाल रह गया था तो केवल ये कि तुम ऐसा कर क्यों रहे हो? फायदा क्या है तुम्हें? उस वक्त मैं। बातें चाहे जो कर रहा था परन्तु असल में दिमाग इसी सवाल का जवाब चाहता था। उसके बाद तुमने लॉकर से जेवर गायब होने का नाटक शुरू किया। उस वक्त मैं यह दर्शाये रखने पर मजबूर था कि तुम्हारे नाटक को हकीकत समझ रहा हूं। वही करता रहा।”

“यानी तुम...

“बीच में मत बोलो देवांश बाबू। पहले मेरी भभक पूरी हो लेने दो उसक बाद जी भरकर अपनी भड़ास निकाल लेना।” कहने के बाद लम्बी सांस ली ठकरियाल ने और पुनः शुरू हो गया—“तुम्हारे नाटक को हकीकत समझने का नाटक मैं इसलिए करता रहा क्योंकि एक ही बात सीखी है पुलिस ट्रेनिंग के दरम्यान। यह कि केवल शक के आधार पर तुम किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अगर किसी पर शक हो जाये तो उसे किसी भी हालत में उस पर जाहिर मत करो। इससे वह सतर्क हो जायेगा। वह आगे गलतियां न करके तुम्हारा रास्ता बंद कर सकता है। बल्कि ठीक इसके विपरीत ऐसा ‘शो’ करो जैसे वह तुम्हारे शक के दायरे से कोसों दूर है। वैसा ही—यह कहकर मैंने किया भी कि वह शख्स राजदान की हत्या कर ही नहीं सकता जिसे उनकी बीमारी के बारे में मालूम था। नतीजा वही हुआ जो होना चाहिए था। खुशियों के अनार छूट पड़े तुम्हारे दिलो-दिमागों में। मेरा सिद्धान्त एक्यूज पर तब हाथ डालने का है जब मेरे पास उसके खिलाफ इतने सुबूत हों कि वह किसी भी रास्ते से बचकर न निकल सके। वैसे ही सुबूत जुटाने की खातिर बाथरूम का दरवाजा उस तरफ से बंद करके यहां से फरार हुआ।”

इतना कहने के बाद ठकरियाल ने सिगरेट में एक लम्बा कश मारा।

अगर दिव्या और देवांश पहले ही अपना गुनाह कुबूल करने का निश्चय न कर चुके होते तो जितनी बातें ठकरियाल ने कही थीं उन्हें सुनकर छक्के छूट गये होते उनके मगर, जो पहले ही सरेण्डर का मन बना चुके थे उन्हें उसकी बातें उतना न डरा सकीं जितना उत्सुकता जरूर थी, उनके बगैर बताये ठकरियाल हकीकत जान कैसे गया? उसी उत्सुकता को शान्त करने की खातिर देवांश ने कहा—“तो इस वक्त तुम्हारे पास हमारे खिलाफ इतने सुबूत हैं कि हम किसी भी रास्ते से बचकर नहीं निकल सकते?”

“कोशिश करके देखो।” ठकरियाल लके लहजे में चैलेंज सा था।

“ऐसा कोई इरादा नहीं है हमरा।”

“फिर?”

“केवल यह जानने के लिए उत्सुक हैं, हमें इस कमरे में बंद करने के बाद तुमने किया क्या? कहां से जुटाये वे सुबूत जिनके बारे में तुम्हारा दावा है कि वे ‘अकाट्य’ हैं। उन सुबूतों को हम देखना चाहेंगे।”

“मेरे ख्याल से अभी तक तुम्हें कई बार समझ जाना चाहिये था कि तुम्हें इस कमरे में बंद करके मैंने तुम्हारे कमरे चैक किए होंगे।”

“ओह!”

“ठीक उसी तरह जिस तरह तुम मेरे सात बार बैल बजाये जोन के दरम्यान रिवॉल्वर और जेवर को छुपा रह थे। राजदान के खून से लथपथ कपड़े चेंज कर रहे थे।”

“तो तुम उस सब तक पह

चुंच गये?”

“जब उन कमरों तक पहुंचा तो सामान तक पहुंचान जरा भी मुश्किल नहीं था। बहरहाल, हड़बड़हट और जल्दी के कारण उस सारे सामान को दिव्या जी के कमरे में ‘छुपाया’ नहीं जा सका था, बस डाल भर दिया गया वहां। वैसे भी तुम्हें मेरे वहां पहुंच जाने की उम्मीद नहीं होगी। सोचा होगा—मेरे जाने के बाद आराम से सामान से निपटा जा सकता है। वहां जेवर भी मौजूद हैं, वह रिवॉल्वर भी जिसने राजदान साहब की ईहलीला समाप्त की और राजदान साहब के खून से सना देवांश बाबू का नाईट गाऊन इनके कमरे के बार्डरों में ठुंसा पड़ा है। केवल देख भर है मैंने उन सबको। हाथ लगाने की बेवकूफी नहीं की। और हां, शायद यहीं मेरा यह बता देना

भी मुमासिब होगा मैडम दिव्या कि मुझे आपके 'स्मोकर' होने का पता कैसे लगा। आपके बैड की दराज पर रखी ऐश्ट्रे में सिगरेटों के जो फिल्टर वाले टोटें पड़े हैं उनमें से कुछ पर लिपिस्टिक लगी है, कुछ पर नहीं। जाहिर है—जिन पर लगी है उन्हें आपने और वह पैकेट भी आपके कमरे से बरामद आप ही का है जिससे निकाली गई तीन सिगरेटें अभी-भी हमारे हाथों में सुलग रही हैं।" इतना सब कहने के बाद ठकरियाल चुप हो गया। वह केवल चुप हो गया बल्कि ऐसी सांसें लेने लगा जैसे लगातार बोलता रहने के कारण थक गया हो।

देवांश ने शान्त स्वर में पूछा—"तुम कह चुको जो कहना था?"

उसके ख्याल से वे बातें सुनने के बाद उनके होश उड़ जाने चाहिये थे। या तो उन्हें विरोध में चीखना-चिल्लाना चाहिये था या पैर पकड़ लेने चाहिए थे उसके। बख्श देने की भीख मांगते नजर आने चाहिए थे मगर, तभी आशाओं के विपरीत वे पूरी तरह सामान्य बने हुए थे। इसी बात पर हैरान था ठकरियाल। आज तक उसने जितने भी मुर्जरिम पकड़ थे, अंततः उसके पैरों में पड़कर गिड़गिड़ाते नजर आये थे। वैसी कोई प्रतिक्रिया उन पर नहीं हुई। इस पहेली को ठकरियाल सुलझा नहीं पा रहा था।

देवांश ने पूछा—"अब हम भी कुछ कहें?"

"कहो।"

"जो तुमने जाना है, हम पहले ही वह सब बताने का निश्चय कर चुके हैं।"

"मतलब?" होले से चौंका ठकरियाल।

"इंसपेक्टर! लालच में फंसकर हमने यह सब कर तो दिया मगर उस वक्त जब हमारी समझ में तुम बाथरूम के अंदर थे, दोनों ने ही 'रिलाईज' किया—जो हमने किया है या करना चाहते हैं वह गलत है। अभी तक हमारे किये से किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ है। हमें लगा—अभी हमारे पास आत्मस्वीकारोक्ति का वक्त है। सो, हमने तुम्हें सब कुछ बता देने के लिए ही बाथरूम का दरवाजा खटखटाना शुरू किया था।"

उन्हें बहुत ध्यान से देखते ठकरियाल ने पूछा—"क्या बताना चाहते थे?"

"वहीं, जो तुमने अपने टेलेंट से खुद मालूम कर लिया।"

दिव्या बोली—"यह कि इन्होंने वास्तव में आत्महत्या की थी। वे हम हैं जिन्होंने आत्महत्या को हत्या का रंग देने की कोशिश की। रिवाल्वर और जेवर गायब किये।"

जिस वक्त वे सब कह रहे थे उस वक्त ठकरियाल बारी-बारी से दोनों के चेहरों को बहुत ध्यान से देख रहा था। सचमुच उसे वे चेहरे पश्चाताप की अग्नि में सुलगते नजर आये और अब जाकर उसके दिमाग में उलझी यह पहेली भी सुलझ गई कि उसके मुंह से सब कुछ सुनने के बावजूद होश क्यों नहीं उड़ गये थे उनके।

स्पष्ट हो गया—उनके सामान्य रहने का राज यही थी, वे सचमुच मानसिक रूप से आत्मसमर्पण करने को तैयार हो चुके थे। अच्छी तरह यह समझ जाने के बावजूद कि वे सच बोल रहे हैं, ठकरियाल ने कहा—"शानदार ड्रामा कर रहे हो।"

"ड्रामा?"

"जब तुमने यह देख लिया—पकड़े तो जा ही चुके हैं। बच निकलने का कोई रास्ता नहीं बचा है तो सबसे अच्छा फैसला यही है—यह कहो, हम तो खुद ही सब कुछ बताने को तैयार थे। कम से कम सहानुभूति तो मिलेगी इंसपेक्टर की।"

"नहीं इंसपेक्टर, ऐसा मत सोचो।" देवांश ने कहा—"सचमुच हम तुम्हें सब कुछ बताने का फैसला पहले ही कर चुके थे।"

"कैसे विश्वास हो मुझे"

दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा। जैसे पूछ रहे हों—"कैसे यकीन दिलाया जाये ठकरियाल को?" फिर वापस देवांश ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा—"तुम्हीं बताओ, कैसे विश्वास करोगे?"

एक पल कुछ सोचा ठकरियालने, फिर जेब से 'ऐश्ट्रे' निकाल। यह वह ऐश्ट्रे थी जो दिव्या के कमरे में रखी रहती थी। इस वक्त वह खाली थी। सिगरेट का अंतिम सिरा उसने ऐश्ट्रे में कुचला और उसे सेन्टर टेबल पर रखता बोला—"मैंने केवल यह जाना है, तुमने आत्महत्या को हत्या बनने की कोशिश की। इसके लिए घटनास्थल से रिवाल्वर गायब किया। जेवर हटाये। जहां तक मैं समझता हूँ—तुम यह स्टोरी प्लान्ट करना चाहते थे किसी ने जेवरों के लालच में राजदान की हत्या कर दी। अब सवाल ये रह जाते हैं, यह सब हुआ कैसे? अर्थात् वारदात की डिटेल क्या है और इस हत्या के जुर्म में तुम फंसाना किस चाहते थे?...अगर यह सब मुझे जरा भी झूठ बोले बगैर बता दोगे तो समझूंगा तुम लोग वाकई गिल्टी हो।"

"हम तैयार हैं।"

"हो जाओ शुरू।" कहने के साथ उसने जेब से एक और सिगरेट निकाल ली, उसे सुलगाने के बाद बोला—"अभी बता दूं, अपनी-अपनी सिगरेट खत्म होने पर इस ऐश्ट्रे में डालना, उसमें नहीं जो राजदान के सिगारों से भरी पड़ी है। बाद में यह ऐश्ट्रे यहां से हटा दी जायेगी।"

“क्यों न हम किसी और कमरे में चलकर बातें करें?”

सिगरेट एशट्रे में कुचलती दिव्या ने कहा।

“पहले ही कह चुका हूं मोहतरमा, आदमी को जिन्दा आदमी से डरना चाहिए। पता नहीं वह कब क्या कर डाले? चलन साला उल्टा है। लोग लाश से डरते हैं। उससे—जो चाहकर भी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकती बल्कि...चाह भी नहीं सकती कुछ।”

फिर भी, अजीब सा लग रहा है मुझे।

“छोड़ो उसे। तुम उधर देखो ही मत।” अभी तक दिव्या को ‘आप’ कह रहा ठकरियाल ‘तुम’ पर उतर आया था। देवांश से बोला—“शुरू हो जाओ उस्ताद।”

“सच्ची बात ये है इंसपेक्टर कि लाश की वजह से मैं भी थोड़ी असुविधा महसूस कर रहा हूं। आगे की बातें हम कहीं और ही करें तो बेहतर होगा।”



“उस वक्त हम दोनों दिव्या के कमरे में इस बात पर विचार विमर्श कर रहे थे कि भइया को अमेरिका ले जाने के लिए पैसों का प्रबन्ध कहां से करें जब इन्टरकॉम पर उन्होंने हमसे सम्पर्क स्थापित किया।”

“उन्होंने से मतलब राजदान साहब से है न?”

“जी।”

“काफी अच्छा टाईम चुना आपने राजदान साहब को अमेरिका ले जाने पर विचार विमर्श करने हेतु।” ठकरियाल के लहजे में छुपा व्यंग्य उनमें से किसी से छुप नहीं सका—“रात के करीब बारह और एक बजे के बीच का।”

देवांश ने ऐसा जाहिर किया जैसे उसके व्यंग्य को समझ नहीं सका ह। दरअसल ऐसा करना ही उसके लिए सुविधाजनक था। घटना के वक्त वह अपने कमरे में नहीं बल्कि दिव्या के बैडरूम में था, यह स्वीकार करना मजबूरी थी। अगर वह पहले ही न जान चुका होता कि ठकरियाल उस कमरे में रखी एशट्रे से उसके और दिव्या द्वारा पी गई सिगरेटों के टोटे बरामद कर चुका है तो निश्चित रूप से उसे वही कहना था कि उस वक्त दिव्या अपने कमरे और वह अपने कमरे में था क्योंकि रात के बारह और एक बजे के दरम्यान देवर का भाभी के कमरे में होना सचमुच संदिग्ध था परन्तु वर्तमान हालात में उसके वहां होने से मुकरने की कोई गुजाईश नहीं थी। सो, बोला—“तुम जो भी समझो, मगर वार्ता हम इसी सम्बन्ध में कर रहे थे।”

“उसके बाद?”

“भैया ने इन्टरकॉम के जरिये हमें यहां बुलाया।”

“यानी वे जानते थे उस वक्त तुम अपने कमरे में नहीं बल्कि यहां हो, अपनी भाभी के पास?”

“हां।”

“इस सम्बन्ध में कुछ पूछा नहीं उन्होंने?”

“नहीं।”

“मेरा मतलब—यह नहीं पूछा, रात के उस वक्त तुम भाभी के बैडरूम में क्या कर रहे थे?”

ठकरियाल को ‘क्रॉस’ करने का जैसे मौका मिल गया देवांश को। बोला—“एक ही बात कहूंगा इंसपेक्टर, यह बात तुम्हें खटक सकती है क्योंकि हमारे सम्बन्धों को लेकर तुम्हारे दिलो-दिमाग में पहले ही से गन्दगी भरी है मगर भैया के लिए मेरा किसी भी वक्त भाभी के कमरे में होना खटकने की बात नहीं थी। उन्हें हम पर विश्वास था।”

“सो तो है।” ठकरियाल के लहजे में अब भी व्यंग्य था—“विश्वास तो वे तुम पर कानून की देवी की तरह आंखों पर पट्टी बांध कर करते थे। फिर भी, मैं समझता हूं यह एक साधारण बात थी कि राजदान साहब रात के उस वक्त तुम्हारे कमरे में होने का कारण पूछते और तुम इस दुविधा में फंस जाते क्या जवाब देते। क्योंकि यह तो उन्हें बताया नहीं जा सकता था कि तुम लोग उन्हें अमेरिका ले जाने पर विचार विमर्श कर रहे थे।”

“ठीक सोच रहे हो तुम। ग र वे पूछते तो सचमुच जवाब देना भरी पड़ जाता मगर इस सम्बन्ध में उन्होंने कुछ नहीं पूछा।”

“आश्चर्य की बात है।”

“वह कैसे?”

“स्वाभाविक सवाल नहीं पूछा उन्होंने।”

“स्वाभाविक सवाल आदमी तब पूछता है जब सामान्य अवस्था में हो।”

“अर्थात्?”

“भैया उस वक्त सामान्य मानसिक अवस्था में नहीं थे।”

“फिर किस अवस्था में थे?”

जवाब देने से पहले एक पल के लिए रुका देवांश।

दरअसल उसे अपने और दिव्या के सम्बन्धों को छुपाये रखकर राजदान द्वारा आत्महत्या करने की वारदात को बताना था। जितनपा सब ठकरियाल को पता लग गया था उसकी रोशनी में यह काम बहुत ही मुश्किल नजर आ रहा था उसे। इसलिए, एक-एक शब्द को नाप-तौलकर बोला—“कमरे में घुसते ही हम दोनों चौंक पड़े। बल्कि यह कहा जाये तो ज्यादा मुनासिब होगा, पैरों तले से धरती खिसक गई हमारे। दृश्य ही ऐसा था।”

“क्या दृश्य था वह?”

“उनके हाथ में रिवाल्वर था। तुम समझ सकते हो, हमारी क्या हालत हुई होगी। एक पल के लिए तो हम जहां के तहां, अवाकू खड़े रह गये। जाम हो गये। जिस्म ही नहीं, दिमाग भी समझ न सके आखिर क्या होने वाला है? तब, भैया ने बहुत ही दृढ़ स्वर में कहा—‘अब मैं इस नर्क को और नहीं भोग सकता। जा रहा हूं।’ उनका इरादा भांपते ही मैं ‘भैया’ चीखता हुआ उनकी तरफ लपका मगर बचा नहीं सका उन्हें। जब तक करीब पहुंचा तब तक नाल अपने मुंह में डालकर फायर कर चुके थे। एक पल का बल्कि... पल के भी शायद सौंवे हिस्से का खेल था वह। जहां का तहां खड़ा रह गया मैं। जो शख्स अभी-अभी जीवित था, वह अब नहीं था। पलक झपकते ही उनके फेस और सिर के चीथड़े उड़ चुके थे।”

ठकरियाल ने कहा—“आत्महत्या को हत्या का रंग देने की बात तुम्हारे दिमाग में कब और क्यों आई?... बंदे को जानने का हकदार समझते हो तो कर दो यह एहसान भी।”

इस सवाल का जवाब देवांश पहले ही तैयार कर चुका था अतः चालू हो गया—“जैसे ही हमारे दिमागों ने इस कठोर सच्चाई को स्वीकार कि भैया अब नहीं रहे और सुबह यहां पुलिस ही पुलिस होगी तो मैंने भाभी से कहा, जो उस वक्त अपने हाथों से चेहरा छुपाये रो रही थी—‘भाभी, जो होना था—हो चुका है। और... शायद ठीक ही किया भैया ने। जरा उनके प्वाइंट ऑफ व्यू से भी सोचो—कब तक नर्क हो चली अपनी जिन्दगी से जूझते? आज नहीं तो कल, उन्हें मरना ही था।’ दूसरी तरफ—उन्हें यह गम भी साल रहा था कि उनकी बीमारी हमें कर्जे में डुबोती चली जा रही है। सम्भव है—उन्हें यह भनक भी लग गई हो कि हम उन्हें अमेरिका ले जाने पर विचार कर रहे हैं। उन्होंने सोचा हो—यदि वे इंकार करेंगे तो हम मानेंगे नहीं और अगर हमने वह किया जो सोच रहे हैं तो पूरी तरह बरबाद हो जायेंगे। शायद हमें उस बरबादी से बचाने के लिए ही उन्होंने एड्स से मरने का इन्तजार करने की जगह गोली मारकर खुद को खत्म कर लिया।”

“यानी तुम जानते थे—काफी हद तक ठीक कहा तुमने। राजदान साहब को तुम्हारी भलाई के बारे में सोचने के अलावा और कुछ सूझता ही नहीं था।”

“मुझे लॉकर में रखे भाभी के जेवरों का ख्याल आया। मेरा एक्सपीरियेंस कहता था—सुबह जब पुलिस आयेगी तो अपनी कार्यवाही के दरम्यान या तो इस कमरे में मौजूद हर वस्तु को अपने कब्जे में ले लेगी अथवा सील कर देगी। उस अवस्था में, कोर्ट से ज्वेलरी रिलीज होने के तक हमें उससे महरूम होना पड़ सकता था। उससे—जो सचमुच हमारी अंतिम पूंजी है। हमने फैसला किया—वह ज्वेलरी हमें लॉकर से निकाल लेनी चाहिए। इस फैसले के साथ लॉकर खोला। उसमें से ज्वेलरी के साथ हमारे हाथ एक पॉलिसी भी लगी।”

“पॉलिसी?”

“भैया की बीमा पॉलिसी।”

“ओह।”

“पांच करोड़ की पॉलिसी है वह।”

“यानी राजदान साहब की मौत के बाद तुम लोगों की पौ बारह होने वाली है।”

“अब नहीं।” दिव्या ने इस तरह कहा जैसे अभी रो देगी।

“क्यों?”

“सुसाईड की अवस्था में बीमा कम्पनी क्लेम नहीं देगी।” देवांश ने कहा।

“बात घुसी नहीं खोपड़ी में।... ऐसा क्यों?”

“इसी बात ने तो दिमाग खराब किया था हमारा। पॉलिसी के साथ भैया के हाथ के लिखे एक लेटर की कार्बन कॉपी भी लगी है। लेटर पर डेट पड़ी हुई है। यह लेटर उन्होंने कल ही बीमा कम्पनी को लिख है। उसमें लिखा है—अगर मैं सुसाईड कर लूं तो पॉलिसी का क्लेम किसी को न दिया जाये लेकिन यदि मैं स्वाभाविक मौत मर जाऊं अथवा कोई मेरा कत्ल कर दो तो क्लेम नोमिनी को दे दिया जाये जो कि मेरी पत्नी दिव्या है।”

“ये क्या बात हुई? ऐसा लेटर उन्होंने बीमा कम्पनी को क्यों लिखा?”

“काफी दिमाग घुमाया लेकिन बात समझ में नहीं आ पाई।”

देवांश कहता चला गया—“मगर, इस बंद कमरे मे तारे जरूर नजर आ गये हमें। यह कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, पांच करोड़ की पॉलिसी पर नजर पड़ते ही हमारी बांछें खिल गई थीं। इतनी बड़ी रकम न केवल हमारे सारे दिलद्वर दूर कर सकती थी बल्कि एक ही झटके में भैया की बीमारी से पहले वाली आर्थिक स्थिति में पहुंचा सकती थी, परन्तु संलग्न लेटर को पढा तो होश उड़ गये। सुसाईड की अवस्था में क्लेम नहीं मिलना था और सुसाईड ही की थी इन्होंने। इन हालात ने हमें लालच में फंसाया। सोचा—अब एक ही स्थिति में हमारा उद्धार हो सकता। तब जबकि आत्महत्या को हत्या साबित कर दें। निश्चय किया ही था कि बाथरूम की तरफ से दरवाजा खटखटाया गया। होश उड़ गये हमारे। यह तो बाद में पता लगा वह तुम थे। मगर....

“कब...और कैसे पता लगा?”

देवांश ने वह घटना ज्यों की त्यों बता देने में कोई बुराई नहीं समझी। अर्थात्—बता दिया कि उन्होंने कमरे की छत से उसे बाथरूम की खिड़की से बाहर निकलकर विला के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ते देखा था। वह सारा वृत्तांत बताने के बाद देवांश कहता चला गया—“उधर तुम घन्टी बजा रहे थे। इधर हम हड़बड़ाये हुए थे। समझ सकते हो—उस वक्त क्या हालत रही होगी हमारी। जल्दी-जल्दी में आत्महत्या को हत्या बनाने की दिशा में केवल रिवाल्वर और ज्वेलरी ही गायब कर सके। कपड़े चेंज कर सकें उतने कम टाईम में इससे ज्यादा और किया भी क्या जा सकता था? जबकि तुम लगातार घन्टी बजा रहे थे। दरवाजा खोलना हमारी मजबूरी थी और.. दरवाजा खोलते ही सामना करना पड़ा तुम्हारे चुभते सवाल को। तुमने महसूस किया होगा—हम तुम्हें भैया के बैडरूम तक नहीं आने देना चाहते थे। वहीं से टरका देने की कोशिश कर रहे थे। चाहे यह कहकर कि भैया नींद की गोली लेकर सोये हैं या किसी और बहाने से। मगर, तुम किसी भी हालत में टलने को तैयार नहीं थे। दूसरी तरफ—यह सवाल हमारे दिमाग के भिन्यास उड़ाये हुये था कि रात के उस वक्त तुम यहां आये क्यों थे? खास तौर पर चोरों की तरह बाथरूम का दरवाजा क्यों खटखटाया था। जब तुमने इस सवाल का जवाब दिया तो एक ही जगह सैकड़ों सवाल दिमाग को मथने लगे। भैया ने तुम्हें क्यों बुलाया था? क्यों चोरों की तरह बाथरूम के रास्ते से आने को कहा था और...

“क्यों मेरे आने से पहले आत्महत्या कर ली थी?” बात ठकरियाल ने पूरी की।

“ये और ऐसे ही अनेक सवाल हालांकि अभी तक अनुत्तरित हैं परन्तु भैया की लाश पर नजर पड़ते ही जो कुछ तुमने कहा और फिर जिस ढंग से तुमने बाथरूम अंदर से बंद किया उसने हमारी हिम्मत तोड़ दी। लगा—किसी भी तरीके से हम तुम्हें धोखा नहीं दे पायेंगे। बल्कि...उन्ते भैया की हत्या के जुर्म में फंस सकते हैं। सो, हमने तुम्हें सब कुछ बता देने का निर्णय ले लिया। हालांकि—जिस आर्थिक क्राईसेज के हम शिकार हैं उनमें पांच करोड़ का लालच छोड़ना बहुत बड़ी बात है। और अब।” कहने के साथ देवांश ने ऐसी सांस ली जैसे बोलता-बोलता थक गया हो। कुछ देर ठहकर वह फिर बोला—“अब सब कुछ तुम्हारे हाथ में है ठकरियाल। इतना ही कह सकते हैं—इस स्वीकारोक्ति से पहले लालच में फंसकर हमने तुम्हें चकमा देने की मंशा से जितनी सफल-असफल कोशिशें की उन्हे हमारी नादानियां या बेवकूफियां समझकर माफ कर दो। भूल जाओ उन सबको ओर इस केस को दुनिया के सामने वैसा का वैसा ही ले आओ जैसा ये है।”

“अर्थात् किसी को यह न बाताऊं तुमने इस आत्महत्या को हत्या का रंग देने की कोशिश की थी।”

“यही रिक्वेस्ट है तुमसे। वैसी भी, इससे किसी को कोई फायदा नहीं होने वाला।”

“फिर।” दिव्या बोली—“कम से कम अभी तक हमारे किसी कृत्य से किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ है। अर्थात्—इस घटना को यूं कहा जा सकता है कि बेटी अभी बाप के घर है। समय रहते अक्ल आ गई है हमें। इस लिहाज से, हमारा अब तक का गुनाह तुम जैसे सहृदय व्यक्ति के लिए क्षमा योग्य है।”

बड़े ही अजीब लहजे में कहा ठकरियाल ने—“तुम्हें यह इन्फार्मेशन किसने दे दी है मैं एक सहृदय व्यक्ति हूं?”

दिव्या समपका गई।

देवांश ने कहा—“हम क्या तुम्हें आप से जानते हैं?”

“जब से भी जानते हो लेकिन—मैं स्पष्ट शब्दों में कह सकता हूं, कम से कम पहचान तो रत्तीभर नहीं सके मुझे।” बड़े ही सपाट लहजे में ठकरियाल कहता चला गया—“सहृदय की बात तो छोड़ ही दो, दिल नाम की चीज तक नहीं मेरे सीने में। दूसरी बात अपनी प्रशंसा सुनकर साधु-संत और देवी-देवता खुश होते होंगे खुश होकर वे ही अपने भक्तों को सद्प्रसाद देते होंगे। मैं इसे चापलूसी समझता हूं। जब कोई मेरे मुंह पर मेरी प्रशंसा करता है तो मैं फोरन समझ जाता हूं ये शख्स चापलूस किस्म का है और...दुनिया में अगर मैं किसी से सबसे ज्यादा नफरत करता हूं तो केवल चापलूस से। मेरे ख्याल से आप मेरे कथन का मतलब समझ गई होगी दिव्या जी।”

देवांश और दिव्या के चेहरे उतर गये।

ठकरियाल के मुंह से इतने नंगे शब्द की कल्पना नहीं कर पाये थे वे।

लगा—ये आदमी उनके काबू में आने वाला नहीं है।

हलक सूख गया देवांश का। बड़ी मुश्किल से कह सका—“तो क्या हम यह समझें, तुम हमें जरा भी कॉपरेट नहीं करोगे?”

“सामने वाला हमें कॉपरेट करे या नप करे, यह उस पर नहीं खुद हम पर निर्भर होता है।”

“म-मतलब?”

“अगर तुम सामने वाले को धोखा देने की कोशिश करते रहोगे तो उससे कॉपरेशन पाने की उम्मीद बेवकूफाना ही हुई न?”

“ह-हम आपको धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं? कहते वक्त देवांश का लहजा कांप रहा था। ठकरियाल के प्रति वह ‘तुम’ से ‘आप’ पर पहुंच गया था।”

“इस बात में जरा भी शक नहीं है मुझे।” एक-एक शब्द पर जोर देते ठकरियाल ने कहा।

कोशिश के बावजूद देवांश के मुंह से कोई लफ्ज न निकल सका। दरअसल वह समझ ही नहीं पा रहा था कि कहे तो क्या कहे। यूँ देखता रह गया ठकरियाल की तरफ जैसे गूंगा होने के कारण गुड़ का स्वाद न बता पा रहा हो।

दिव्या की हालत उससे भी बदतर थी।

उसे लग रहा था—ये आदमी उन्हें जेल भेजे बगैर नहीं मानेगा।

जब काफी देर तक भी उनमें से कोई कुछ न बोल सका तो ठकरियाल ने कहा—“जब तुम लोगों ने आत्मस्वीकारोक्ति की बात की थी तो मैंने यही सोचा था किस्से को यहीं खत्म कर दूंगा। क्योंकि वाकई तुम्हारी अब तक की किसी हरकत से किसी बेगुनाह का कुछ नहीं बिगड़ा है। कोई पहाड़ नहीं टूट पड़ेगा मेरे द्वारा माफ कर दिए जाने पर परन्तु....

“परन्तु?”

“अब-जबकि तुमने अपना किस्सा सुनाकमर पूरा किया है तो इस नतीजे पर पहुंचा हूं—तुम इस दुनिया के सबसे बड़े धूर्त हो! कमीने! जलील और खुदगर्ज।”

“य-ये तुम क्या कह रहे हो?” दोनों के चेहरे पीले पड़ गये।

“पूछो क्यों?” ठकरियाल गुर्राया—“क्यों नवाजा मैंने तुम्हें अलंकारों से?”

“क-क्यों?” दिव्या बड़ी मुश्किल से पूछ सकी।

“क्योंकि अब भी तुमने मुझे पूरा सच नहीं बताया। बड़ी सफाई से अपने किसी बड़े गुनाह को छुपाने की कोशिश की है।”

दोनों की जुबान तालु मे जा छुपी।

“और इसलिए।” ठकरियाल ने एक-एक शब्द चबाया—“मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं—तुम जैसे हरामियों को जेल की चक्की पीसनी चाहिए।”

होश फाख्ता हो गये दिव्या और देवांश के।

अपने चारों तरफ उन्हें अंधेरा ही अंधेरा नजर आ रहा था।



आंखों के सामने से अंधेरा छंटा तो दीन-हीन में दिव्या ने पूछा—“ठकरियाल साहब, ऐसी क्या गलती हो गयी हमसे?”

“यही तो है सबसे बड़ी गलती। अभी तक मुझ ही से गलती पूछ रहे हो।”

“क-क्या मतलब?” देवांश हकला उठा।

“मतलब सरल रेखा की तरह सीधा है मिस्टर देवांश। सच पूछो तो मुझे तरह आ रहा है तुम दोनों की बुद्धि पर। तुम बेवकूफ तो अभी तक यह भी नहीं समझ पाये, ठकरियाल को गच्चा देना कम से कम तुम्हारे बूते की बात नहीं है।” उत्तेजित स्वर में ठकरियाल कहता चला गया—“सारी जिन्दगी जिस शख्स की एक ही कोशिश रही, यह कि—तुम दोनों को कभी किसी मुसीबत या क्राईसेज से न गुजरना पड़े वह शख्स ठीक उससे अगले दिन सुसाईड क्यों करता है जिस दिन उसने बीमा कम्पनी को इस आशय का खत लिख कि सुसाईड की अवस्था में किसी को क्लेम न दिया जाये। बीमा कम्पनी को ऐसा लेटर लिख ही क्यों उसने और फिर आत्महत्या क्यों की? जैसा शख्स वह था—उसे तो बाकायता तुम्हारे लिए पांच करोड़ का इन्तजाम करक मरना चाहिए था। कर गया बिल्कुल उल्टा—यह कि तुम उसकी मृत्यु के उपरान्त भी पांच करोड़ न पा सको। पा भी सको तो तब जब उसकी आत्महत्या को हत्या सिद्ध करने के लिए पापड़ बेलो। दूसरी तरफ—वह ठीक एक बजे मुझसे बाथरूम में पहुंचने की लिए कहता है लेकिन उससे कुछ ही देर पहले आत्महत्या कर लेता है। साफ जाहिर है—राजदान साहब ने जो किया, खूब सोच-समझकर, मुकम्मल प्लान के साथ किया। वे चाहते थे—पांच करोड़ के लालच में फंसे तुम जिस वक्त उनकी आत्महत्या को हत्या का रंग देने की कोशिश कर रहे हों, ठीक उसी वक्त मैं यहां पहुंच जाऊं ताकि तुम्हारे होश फाख्ता हो जायें। अनेक किस्म की मानसिक यंत्रणाओं से गुजरो तुम। ऐसा लगता है—जैसे वे तुम्हें तुम्हारे किसी गुनाह की सजा देने पर कटिबद्ध थे। जैसे रिवेंज लेना चाहते थे तुमसे। रिवेंज भी तुम्हारे किसी ऐसे गुनाह का जिसने उनके विश्वास

की धज्जियां उड़ा दी थीं। ऐसा न होता तो वे कदापि ऐसा षड्यंत्र न रचते जिसमें तुम्हारे लिए दूर-दूर तक रहम का कोई खाना नजर नहीं आ रहा। हालात बताते हैं—अपने अंतिम क्षणों में वे तुम दोनों का उसमें भी ज्यादा बुरा चाहते थे जितना सारी जिन्दगी भला चाहते रहे। क्या तुम बता सकते हो—ऐसा क्यों था? क्या गुनाह किया था तुमने?”

मानों दोनों को सार्प सूँघ गया।

जुबान तालू से जा चिपका।

मुह से आवाज निकालने की भरसक चेष्टा के बावजूद वे एक लफ्ज बोलने में कामयाब न हो सके। उन्हें लग रहा था—इस खुर्राट पुलिसिये से वे किसी भी तरह पार नहीं पा सकेंगे।

ठकरियाल ने आगे कहा—“तुम अभी भी मुझसे अपने उसी गुनाह को छुपाने की कोशिश कर रहे हो जिससे आहत होकर राजदान जैसे नेक इंसान ने तुम्हारी बरबादियों का जाल बिछाया और...मुझ ही से सहयोग की अपेक्षा कर रहे हो। ये है तुम्हारी बेवकूफी?”

दोनों के दिमाग में आया—‘क्या वे अपने अवैध सम्बन्धों के बारे में उसे बता दें?’

दिल कांप गये उनके।

कैसे नंगे हो जायें उसके सामने?

भविष्य में वह, उन्हें सारी दुनिया के सामने नंगा करेगा।

थू-थू हो जायेगी।

ये दुनिया, ये जहान...कैसी घृणित नजरों से देखेगा उन्हें।

उन्होंने जितना सोचा। लगा—वे जीवित नहीं रह सकेंगे।

राजदान की तरह ही आत्महत्या करनी पड़ेगी उन्हें।

तो क्या....तो क्या उनके लिए यही सजा मुकर्रर कर गया था राजदान?

यह कि—उन्हें भी उसी की तरह आत्महत्या करने पड़े?

अवैध सम्बन्धों का भेद खुलने के बाद, मरने के अलावा और रास्ता ही क्या बचेगा उन पर?

“हां! हां...पागल हो गई हूं मैं।” दिव्या ने सचमुच पागलों की तरह चिल्लाते हुए खुद को ठकरियाल से छुड़ाया—“बगैर कपड़ों के देखना चाहते हो न मुझ? और ये...ये भी यही चाहता है ताकि कानून की गिरफ्त से बचा रहे।....तो लो—लो—देखो मुझे बर्गैर कपड़ों के।” कहने के साथ उसने एक झटके से अपने तन पर मौजूद का कोट उतार फेंक दिया। उसके बाद नाईट गाऊन।

नाईट गाऊन के नीचे ब्रा नहीं थी।

जिस्म का ऊपरी हिस्सा आवरण हीन हो उठा।

‘वी’ शेष का केवल एक अण्डरवियर रह गया जिस्म पर।

देवांश बौखलाया हुआ था। उसी अवस्था में दिव्या के नग्न जिस्म को देख रहा था वह। जबकि उसी नग्न जिस्म को देखते हुए ठकरियाल ने कहा—“अरे! तुम्हारे हसीन जिस्म पर खून के ये छींटे कैसे हैं मोहतरमा ये तो...ये तो राजदान का खून हैं! तो क्या तुम उस वक्त बिल्कुल नंगी थी जब राजदान ने खुद को गोली मारी? उस वक्त तुम्हारे जिस्म पर कपड़े होते तो खून के छींटे कपड़ों पर होने चाहिए थे। क्या मैं जान सकता हूं—तुम ऐसी अवस्था में उस वक्त राजदान के इतने नजदीक क्या कर रही थीं?”

दिव्या ने बौखलाकर अपने जिस्म को देखा।

देवांश भी खून के उन्हीं छींटों को देख रहा था जिन्हें देखकर ठकरियाल ने उपरोक्त शब्द कहे थे। अभी वे विचारों में ही गुम थे कि...

“हा-हा-हा-हा—!” कमरे में किसी के ठहाका लगाने की आवाज गूंजी।

किसी के क्यों?

खुद राजदान की आवाज थी वह।

हां। राजदान हंस रहा था।

यूं—जैसे पागल हो गया हो।

दिव्या और देवांश उस आवाज को लाखों में पहचान सकते थे।

सारा कमरा राजदान के खिलखिलाकर हंसने से गूंज रहा था।

बौखलाकर उन्होंने लाश की तरफ देखा।

वह ज्यों की त्यों सोफा चैयर पर लुढ़की पड़ी थी। खून से लथपथ। चेहरे और सिर पर भिन्यास उड़ा हुआ था। जरा भी तो हरकत नहीं थी उसमें। बावजूद इसके—कमरा उसके कहकहीं से सराबोर था।

मारे दहशत के बुरा हाल हो गया दिव्या और देवांश का।

टांगें तिनकों की तरह कांप रही थीं।

दिमाग हवा।

होश फाख्ता।

फिर ठहाकों के साथ राजदान के शब्द उनके कानों से टकराये—“लाश की तरफ क्या देख रहे हो कमीनों। मर चुका हूँ मैं। तुम्हारे सामने मरा गी। मगर मरने के बाद भी तुम्हें छोड़ूंगा नहीं। ठकरियाल...वो हाल कर देना है इनका कि इन इनकी गिनती ज़िंदों में रहे, न मरों में। ये दोनों इंसान नहीं, दरिन्दे हैं! दरिन्दे। तुम जानते हो, शायद तुमसे बेहतर कोई नहीं जानता मैं इन्हें कितना प्यार करता था मगर देखो...देखो क्या हालत बना दी है इन्होंने मेरी। तुम मेरे इस मोहरे से बच नहीं पाओगी दिव्या। और देवांश...तुझे बरबाद करके रख देगा ठकरियाल।”

शब्द समाप्त हुए तो पुनः राजदान के ठहाके गूँजने लगे।

वे दोनों बुरी तरह बौखलये हुए थे।

कभी इधर देख रह थे, कभी उधर। पता नहीं लगा पा रहे थे आवाज किधर से आ रही है। जबकि आवाज आ लगातार रही थी। पसीने-पसीने हो चुके थे वे।

चेहरे ऐसे नजर आ रहे थे जैसे बार-बार कोल्हू के पाटों से निकले गन्ने।

और उस वक्त तो पीलिया के मरीज से नजर आने लगे वे जब ठकरियाल ने अपनी जे ए से एक छोटा-सा टेपरिकार्ड निकाल। हौले-हौले चल रहा था वह।

राजदान के हंसने की आवाज उसी से आ रही थी।

फिर।

ठकरियाल ने टेपरिकार्ड ऑफ कर दिया।

राजदान के ठहाकों की आवाज बंद हो गयी।

दिव्या और देवांश उसकी तरफ आंखें फाड़े इस तरह देख रहे थे जैसे वह अजूबा हो। समझ नहीं पा रहे थे—राजदान की आवाज का टेप उसके पास कैसे?

वह आवाज उन्हें क्यों सुनाई थी उसने?

बहुत देर तक कमरे में ऐसी खामोशी छाई रही जैसे वहां कोई था ही नहीं।

कारण था—कोशिश के बावजूद दिव्या और देवांश के मुंह से किसी किस्म की आवाज का न निकल पाना और...ठकरियाल को तो उनकी हालत का लुत्फ उठाने से ही फुरसत नहीं थी तो बोलता क्या? पकड़े जाते बहुत अपराधी देखे थे उसने। उनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्हें गुनाह करते वक्त रंगे हाथे पकड़ा गया था परन्तु उतने निचुड़े हुए चेहरे कभी नहीं देखे थे जैसे इस वक्त उसके सामने थे।

काफी लम्बी खामोशी के बाद ठकरियाल ने पूछा—“समझ में आया कुछ?”

“न-नहीं।” बड़ी मुश्किल से देवांश बस इतना ही का सका।

“वही बोलो।” ठकरियाल मजे ले रहा था—“क्या समझ में नहीं आया?”

“यह टेप तुम्हारे पास कैसे है?” देवांश ने हिम्मत करके अवाल करने शुरू किये—“कैसे है इसमें भैया की आवाज?...और यह सब तुमने हमें क्यों सुनाया?”

“ऐसा ही हुक्म हुआ था राजदान साहब का।”

“भ-भैया का हुक्म?” देवांश चकरा गया।

“तारीफ करनी पड़ेगी राजदान साहब के दिमाग की। महत्वपूर्ण यह नहीं है उन्होंने जो किया, पूरा प्लान बनाकर किया बल्कि ये है कि—मरने से पूर्व वे बहुत अच्छी तरह से जानते थे उनकी मौत के बाद कौन से स्पॉट पर क्या होगा। मैं खुद हैरान हूँ—कदम-कदम पर वही हुआ।”

“हम समझे नहीं, क्या कहना चाहते हो तुम?”

“बात को यूँ समझो—फोन पर हुई वार्ता के मुताबिक जब मैं एक बजे बाथरूम में पहुंचा तो सचमुच नहीं जानता था उन्होंने मुझे क्यों बुलाया है। मगर पहुंचा। वे अच्छी तरह जानते थे मैं पहुंचूंगा। बहरहाल, दुनिया में ऐसा कौन है जो बार-बार सोन के अंडे पाना न चाहता हो।” ठकरियाल कहता चला गया—“बाथरूम से मुझे सोने के अंडे अर्थात् पांच लाख रुपये और एक लेटर मिला। पढ़ना चाहोगे उस लेटर को?”

“हां-हां।” देवांश के मुंह से ऐसी आवाज निकली जैसे किसी अज्ञात शक्ति ने बोलने के लिए मजबूर किया हो।

ठकरियाल ने एक कागज निकालकर देवांश की तरफ बढ़ा दिया।

सस्पेंस में फंसे देवांश ने कागज की तहें खाली। दिव्या भी सरककर उसके नजदीक पहुंच गई। न केवल नजदीक पहुंच गई बल्कि उस

कागज पर झुक गई जिसे देवांश खोल चुका था।

राजदान के लेटर पैड का कागज था वह।

राजदान की राईटिंग पहचानने में किसी किस्म की दिक्कत पेश नहीं आई।

लिख था—

इंस्पेक्टर ठकरियाल, रुपये और ये लेटर तुम्हें बाथरूम से मिलेंगे। पांच लाख रुपये उस काम की फीस है जो तुम मेरे लिए करने वाले हो। कमरे की तरफ से बंद बाथरूम के दरवाजे को उसी तरह खटखटाओगे जिस तरह मैंने फोन पर समझाया था। मेरा नाम पुकारकर एकाध जावाज भी लगा सकते हो परन्तु अभी बताये देता हूँ—दरवाजा नहीं खुलेगा। जबरदस्ती नहीं करनी है तुम्हें। कुछ देर बाद खिड़की के रास्ते बाहर निकल जाना। मेनगेट पर पहुंचना बाकायदा कॉलबेल बजा देना। चौकीदार को मैंने एक हफ्ते की छुट्टी पर उसके गांव भेज दिया है। निश्चित रूप से दरवाजा खुलने में काफी देर लगेगी। दिव्या और देवांश यह भी चाह सकते हैं तुम थक-हाकर चले जाओ मगर याद रहे—देर चाहे कितनी हो जाये तुम्हें उन्हें दरवाजा खोलने पर मजबूर करना है। दरवाजा खोलते ही वे रात के उस वक्त तुम्हारी वहां मौजूदगी के बारे में पूछेंगे। यह एक स्वाभाविक सवाल होगा। जवाब में तुम उन्हें मेरे और अपने बीच आठ बजे हुई फोन वार्ता को ज्यों की त्यों बता दोगे। ध्यान रहे—यहां इस लेअर के बारे में कुछ नहीं बताना है। उसके बाद बैडरूम में तुम्हें जो कुछ देखने को मिलेगा, चाहूं तो इसी लेटर में लिख सकता हूँ मगर नहीं, मैं तुम्हारी क्यूरोसिटी कम नहीं करना चाहता। मेरे आगे के निर्देश उस सोफा चेयर के पीछे पड़े मिलेंगे जिस पर मैं खुद 'विराजमान' होऊंगा। उन्हें इस तरह उठाकर तुम्हें अपनी जेब में रखना है कि वे तुम्हारी हरकत को तो साफ-साफ देख सकें परन्तु यह न देख सकें वह था क्या? चाहे वे जितना पूछें, कम से कम यहां तुम्हें वहां से बरामद सामान के बारे में कुछ नहीं बताना है। उसके बाद तुम मुझ सहित उन दोनों को कमरे में छोड़कर बाथरूम में चले जाओगे। दरवाजा बाथरूम की तरफ से बंद कर लो। फुर्ती के साथ खिड़की के रास्ते से लॉन में पहुंचोगे। वहां से मेन गेट द्वारा वापस मेरे बैडरूम के मुख्य द्वार पर। यह सारा काम इतनी तेजी से होना है कि दिव्या और देवांश को कुछ समझने का मौका न मिले। कमरे का मुख्य दरवाजा तुम इस तरह गैलरी की तरफ से बंद कर दोगे कि उस वक्त कमरे में मौजूद किसी भी व्यक्ति को तुम्हारी हरकत का पता न लग सके। इतना काम करने के बाद दिव्या के बैडरूम में जाओगे जो ठीक मेरे कमरे की बगल में है। मैं जानता हूँ—उस वक्त तक तुम काफी कुछ समझ चुके होंगे। उसका आधार पर दिव्या और देवांश के कमरों की तलाशी भी लो। देवांश का कमरा गैलरी के दूसरे छोर पर है। जो कुछ वहां से मिलेगा वह तुम्हें बहुत कुछ समझ देगा। बाकी निर्देश सोफे के पीछे से मिल ही चुके होंगे। वहां तुम उनका अध्ययन कर सकते हो।

तुम्हारा राजदान

पूरा लेटर पढ़ने के बाद दिव्या और देवांश की खोपड़ी घूम कर रह गई।

उनकी नजरें कागज से हटते ही ठकरियाल ने कहा—“सोचो, इसे पढ़कर मेरी क्या हालत हुई होगी। राजदान ने यह नहीं लिखा उसके बैडरूम में मेरा सामना उसकी लाश से होगा। उस प्वाइंट को बड़ी खूबसूरती से घुमा गया वह। पढ़ने के बावजूद मैं समझ नहीं पा रहा था आखिर क्या खेल है ये? क्या चाहता है राजदान? क्यों मेरे और तुम्हारे साथ खिलवाड़ कर रहा है? इस सबके बावजूद तुम जानते हो मैंने वही किया जो इसमें लिखा है। बहरहाल, फीस हासिल कर चुका था, खेल को जानने की जिज्ञासा भी थी।”

दिव्या ने पूछा—“क्या अब भी नहीं बताओगे—सोफा चेयर के पीछे से तुम्हें क्या मिला था?”

“कैसेट सहित यह छोटा सा टेप और एक और लेटर।”

“क्या लिखा है उसमें?”

“खुद बांच लो।” कहने के साथ उसने एक और कागज उनकी तरफ बढ़ा दिया।

वह भी राजदान के लेटर पैड पर, उसके हाथ का लिखा लेटर था। लिखा था—

ठकरियाल, जितने ब्रिलियेनट तुम हो—उसके आधार पर मैं समझ सकता हूँ, तुम समझ गये होंगे मैंने आत्महत्या कर ली है तथा देवांश और दिव्या इस वारदात को हत्या का रंग देने की कोशिश कर रहे हैं।

बात अगर यहीं तक सीमित होती तो मैं यह सोचकर यकीनन उन्हें माफ कर देता कि जिन हालात में वे फंसे हैं, उनसे निकलने के लिए और बेचारे कर भी क्या सकते हैं परन्तु...

मैं यह भी जान गया हूँ, इन कमीनों ने मां-बेटे के रिश्ते को कलंकित कर दिया है।

अवैध सम्बन्ध कामय कर बैठे हैं एक-दूसरे से। उफ्फ! मैं कभी सोच भी नहीं सकता था—हाड़-मांस के इंसान इतने नीचे भी गिर सकते हैं। नहीं—ये इनाम के नहीं सजा के हकदार हैं। सजा भी ऐसी जो इन्हें तिल-तिल करके जलाये।

सोच लिया है—सुसाईड की तैयारी करने के बाद दिव्या और देवांश को अपने कमरे में बुलाऊंगा। वह सब कुछ साफ-साफ बता दूंगा जो मैं जान चुका हूँ। जाहिर है—उनके पैरों तले से जमीन खिसक जायेगी।

ये आत्महत्या को हत्या साबित करने की कोशिश जरूर करेंगे।

ठकरियाल, चाहता मैं ये हूँ कि ये भी उतनी ही जलालत से गुजरें जितना जलील इन्होंने मुझे किया। कदम-कदम पर आतंक और दहशत से सामना हो इनका।

पांच लाख इसीलिए दिये हैं तुम्हें—ताकि इनक चारों तरफ ऐसा माहौल क्रियेट कर दो कि जीने से आसान इन्हें मौत लगने लगे। मैं जानता हूँ—तुम एक ब्रिलियन्ट आदमी हो।

बड़ी खूबसूरती के साथ कर सकते हो जो मैं चाहत हूँ।

यह भी जानता हूँ—फीस लेकर काम करने वाले नाशुक्रे नहीं हो तुम।

टेप में एक केसिट और मौजूद है। सच ठकरियाल—तुम सोच तक नहीं सकते उस वक्त इसी कमरे में भटक रही मेरी रूह को कितना सुकून मिलेगा। दिव्या को घबराई हुई हिरनी की मानिन्द इधर-उधर देखता देखकर सचमुच मेरी आत्मा उसी तरह हंस रही होगी जिस तरह इस टेप में हंसा हूँ। देवांश के चेहरे पर मौत का खौफ देखकर मुझे वैसा ही सुकून मिलेगा जैसा भूखे को भरपेट खाना मिलने पर मिलता है।

सुना है—ऊपर वाले ने हर आदमी की एक उम्र निर्धारित की होती है। सबके खाते में साफ-साफ लिखा होता है, किस जीवात्मा को किस तरह मरना है। जाने क्यों मुझे विश्वास है—उसके खाते के मुताबिक मुझे एड्स से मरना था। अभी कुछ और दिन थे मेरे एकाउन्ट में और...जितने दिन अभी मेरी जिन्दगी के बाकी थे, उतने दिन शायद मेरी रूह इन दोनों कमीनों के आस-पास भटकती रहे।

यह भी सुना है—बगैर शरीर के आत्मा चाहे भी तो कुछ नहीं कर सकती।

इसलिए अपना काम तुम्हें सौंपा है मैंने। वो हालत बना देना इनकी कि झोली फैला-फैलाकर भीख मांगे मौत की मगर मरने नहीं देना। मौत तो इन्हें हर सजा से दूर ले जायेगी। जिन्दा रहना ही, अपनी नर्क जैसी जिन्दगी को भोगते रहना ही इनकी सजा है। इन्होंने मुझे बहुत सताया है ठकरियाल। बहुत सताया है मुझे। शायद तुमसे बेहतर कोई नहीं जानता मैं इन्हें कितना प्यार करता था। अपने लिये तो मैंने कभी कोई सांस ली ही नहीं। हर सांस में ये ही बसे थे। शायद तुम समझ सकते हो इन हालात में इनके सम्बन्धों के बारे में जानकर मुझ पर क्या गुजरी होगी।

मेरी इस बात से शायद तुम भी सहमत होंगे—क्षमा योग्य नहीं हैं ये। बल्कि 'आसान' सजा के भी हकदार नहीं हैं। इन्हें तो ऐसी सजा मिलनी चाहिये जिसके बारे में जानकर तब कोई दिव्या और देवांश किसी राजदान से बेवफाई करने के बार में सोच तक न सकें।

एक सवाल हो सकता है तुम्हारे दिमाग में। यह कि—अगर ये मेरा मर्डर करने पर आमादा थे और मैं मरने कमे लिए तैयार था तो आत्महत्या क्यों की? मर्डर क्यों नहीं करने दिया इन्हें अपना? उससे तो सीधे-सीधे फांसी के फंदे पर पहुंच जाते थे।

और बस—यही मैं नहीं चाहता।

इस तरह तो एक ही झटके में अपनी सभी दुश्वारियों से निजात मिल जायेगी इन्हें।

मैं चाहता हूँ—अपनी जिन्दगी को ये तिल-तिल करके गलते अपनी आंखों से देखें। ऐसा तब होगा जब मैं आत्महत्या करूं और ये उस वारदात को हत्या का रंग देने की कोशिश करते तुम्हारे द्वारा रंगे हाथों पकड़े जायें। इस जुर्म में कानून इन्हें फांसी की सजा नहीं देगा, जिसे मैं इनके लिए सजा नहीं, 'निजात' समझता हूँ। इस जुर्म में इन्हें लम्बी सजा हो सकती है। उम्र-कैद तक। यही मेरी तमन्ना है।

एक मरते हुए शख्स की अंतिम तमन्ना।

इन्हें जी भरकर सताने, डराने, आतंकित करने और जलील करने के बाद तुम उसी जुर्म में गिरफ्तार कर लोगे जो इन्होंने किया है। सुबूत तुम्हारे पास होंगे ही। सबसे बड़ा सुबूत है, मेरा ये लेटर। चाहता हूँ—जब तुम इस ड्रामे का पटाक्षेप करो तो यह लेटर इन्हें दिखा दो। पढ़ा दो। ताकि ये जान सकें—एक शख्स मरने के बाद भी अपने दुश्मनों से मनचाहा बदला ले सकता है। पता तो लगे इन्हें—जिस शख्स ने सारी जिन्दगी इनसे बेईन्ताह मुहब्बत की वह मरते वक्त कितनी घृणा करता था इनसे।

ठकरियाल, जो काम मैं तुम्हें सौंपकर जा रहा हूँ—हालांकि उसके लिए पांच लाख की रकम बहुत छोटी है। बहरहाल, मेरे बाद तुम्हें ही राजदान बनकर इन्हें जेल के सीखियों के पीछे पहुंचाना है परन्तु...मजबूर हूँ दोस्त। इससे ज्यादा पैसे मेरे पास हैं ही नहीं। निभा लेना। यह सोचकर कि कुछ काम माकूल रकम न मिलने पर भी करने पड़ते हैं। आशा है तुम रकम पर ध्यान नहीं दोगे। उस काम को पूरा करोगे जो मैं तुम्हें सौंपकर जा रहा हूँ।

तुम्हारा राजदान।

दोनों की निगाहें पत्र से हटते ही ठकरियाल ने कागज उनके हाथ से खींच लिया।

कुछ इस तरह, जैसे डर हो—वे उसे फाड़ न दें।

मगर!

उन बेचारों को भला ऐसा कुछ करने का होश कहां था?

उनके दिमागों में तो सांय-सांय हो रही थी। देवांश सोच रहा था—आखिर वही ठीक निकला जो उसे लग रहा था। राजदान ने जो किया, खूब सोच-समझकर—उन्हें अपने मनचाहे जाल में फंसाने का पूरा प्रबन्ध करके किया था।

उस वक्त ठकरियाल कागज की तह बनाकर वापस जेब में रख चुका था जब दिव्या ने कहा—“इसका मतलब तुम हमारे सम्बन्धों के बारे में पहले ही जान चुके थे?”

“अब इसमें भी कोई शक रह गया मोहतरमा?”

“फिर खिलवाड़ा सा क्यों कर रहे थे हमारे साथ?” देवांश ने पूछा—“हम बेकार इतनी देर तक अपने सम्बन्धों को छुपाये रखने की खातिर सकसरतें करते रहे। झूठ-सच बोलते रहे। शुरू में ही बता देते तो...”

“तुम लोग अभी-अभी पढ़े इस लेटर का मजमून भूल रहे हो।”

“क्या मतलब?”

“राजदान साहब ने मुझे तुम लोगों को सताने, हड़काने, डराने और हलकाने करने का काम सौंपा था।” ठकरियाल कहता चला गया—“वही कर रहा था बंदा। हलाल तो करने ही थे न पांच लाख मगर...”

“मगर?”

“इजाजत बख्शों तो एक और सवाल दाग दूँ?”

“अब क्या बाकी रह गया है?” देवांश ने पूछा।

“असली सवाल तो साला शुरू से ही बाकी पड़ा है।”

“वह क्या?”

“प्लान क्या था तुम्हारा...किसके सिर पर फोड़ना चाहते थे राजदान साहब की हत्या का घड़ा?”

“क्या फायदा उसका नाम लेने से?” देवांश ने कहा—“अब तो बस एक ही रिक्वेस्ट है तुमसे—हो सक तो इस वारदात को राजदान द्वारा की गई सीधी-सीधी आत्महत्या का केसा बनाकर दुनिया के सामने पेश कर दो।”

“कर तो सकता हूँ मैं ये मेहरबानी। मगर...”

“मगर?”

“दिव्यक्त ये ही फ्री-फण्ड में कोई काम करने का मैंने कभी पाठ ही नहीं पढ़ा।”

“तुम तो जानते हो।” देवांश ने कहा—“किसी को कुछ देने के लिए हमारे पास है ही क्या? होती...तो सारे जहाँ की दौलत दे देते तुम्हें।”

“मेरे पास ज्वेलरी है।” दिव्या बोली—“उसे ले सकते हो।”

ठकरियाल ने बुरा सा मुँह बनाया।

“और क्या...दे सकते हैं हम तुम्हें?”

“गधे हो तुम दोनों।” कहते वक्त ठकरियाल के होंठों पर धूर्त मुस्कान थी—“पांच करोड़ की पॉलिसी को बिल्कुल ही भुलाये बैठे हो।”

“क-क्या?” दोनों के हलकों से एक साथ चीख निकल गई—“क-क्या कहना चाहते हो तुम?”

ठकरियाल एक सिगरेट सुलगाने में व्यस्त हो गया था।



दिव्या और देवांश ठकरियाल की तरफ इस तरह देख रहे थे जैसे अचानक उसके सिर पर सींग नजर आने लगे हों जबकि सिगरेट सुलगाने के गाद ठकरियाल ने बहुत ही गहरा कश लगाया।

मुँह बंद कर लिया।

धुर्वें का एक भी कण उसने बाहर नहीं निकलने दिया था।

उसे मुँह में ही भरे चहलकदमी करने लगा।

साफ नजर आ रहा था—पूरी गम्भीरता के साथ वह कुछ सोच रहा है।

“धाड़! धाड़! धाड़!!

दिव्या और देवांश के दिल पसलियों से सिर टकरा रहे थे।

एक-दूसरे की तरफ देख उन्होंने।

जैसे पूछ रहे हों—“ठकरियाल के अंतिम वाक्य का आखिर मतलब क्या हुआ?”

क्या वही, जो उन्हें लग रहा है?

जवाब किसी के पास नहीं था।

काफी लम्बी खामोशी के बाद हिम्मत करके देवांश ने पूछा—“क्या सोच रहे हो इन्स्पेक्टर?”

“तुम क्या सोच रहे हो?” ठकरियाल ने एक ही झटके में सारा धुवां सोच उगल दिया।

“क-क्या तुम्हारे कहने का मतलब वही है जो हमें लग रहा है।”

“क्या लग रहा है तुम्हें?”

“य-यही कि—यह कि तुम सोच रहे हो—क्या सचमुच इस वारदात को किसी के द्वारा की गई हत्या साबित किया जा सकता है?” डरा हुआ देवांश बुरी तरह हकलाता हुआ, बड़ी मुश्किल से कह सका।

“करेक्ट! यही सोच रहा हूँ मैं।” ठकरियाल ने कहा—“इसीलिए पूछा था—तुम लोग किसे फंसाना चाहते थे?”

“क-क्या तुम सचमुच राजदान के लिखे लेटर की अवहेलना कर दोगे?” दिव्या ने पूछा।

“नहीं। अवहेलना करने जैसी कोई बात नहीं है। उसने मुझे दो काम सौंपे थे। पहला—तुम्हें डराना, धमकाना, आतंकित करना और जलील करना। दूसरा—तुम्हें गिरफ्तार करके जेल भेज देना। उसने खुद कुबूल किया है—दोनों कामों के लिए पांच लाख माकूल रकम नहीं थी। पहला काम कर चुका हूँ। अर्थात् पांच लाख हलाल हो गये। उस रकम में बस इतना ही हो सकता था। बाकी रहा तुम्हें जेल भेजने वाला काम। उसका मेहनताना मुझे नहीं मिला है। और...बता चुका हूँ। फ्री का चंदन घिसने का पाठ नहीं पढ़ा मैंने। पार्टी चाहे जो हो, काम वही करता हूँ जिसका पारिक्षमिक मिले।”

“य-यानी-यानी तुम हमें जेल नहीं भेज रहे हो?” मारे खुशी के दिव्या मानो पागल हुई जा रही थी।

“अभी इतना फुदकने की जरूरत नहीं है मोहतरमा।” ठकरियाल बोला—“तुम्हें जेल भेजना है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर है, मैं जो सोच रहा हूँ वह परवान चढ़ सकता है या नहीं?”

दिव्या भूल चुकी थी कुछ देर पहले उसकी क्या हालत थी। अपने भविष्य के प्रति निराशा के कितने गहरे गर्त में डूब चुकी थी वह। इस वक्त तो ऐसा लग रहा था जैसे डूबते-डूबते अचानक किनारे आ लगी हो। ठकरियाल ने चंद ही शब्दों में उसे रोशनी की किरन नहीं बल्कि सूर्यलाईटें नजर आने लगी थीं। अति उत्साह में भरी, चहकती सी कह उठी—“जरूर चढ़ेगा। जो तुम सोचोगे वह जरूर परवान चढ़ेगा।”

“पहले बताओ—तुम्हारा प्लान किसे फंसाने का था?”

“बबलू को।”

“क्या वही बबलू जो सामने वाली बिल्डिंग के एक फ्लैट रहता है?”

“हां।”

“शिकार के रूप में उसका नाम दिमाग में आने की कोई खास वजह?”

“वह गरीब है। राजदान की ‘शै’ के कारण बगैर रोक-टोक यहां आता है। पेन्टिंग के पीछे छुपे लॉकर की भी जानकारी है उसे। यह भी जानता है वहां मेरी ज्वेलरी रखी रहती है। मुझे और देव को हमेशा लगता था—किसी न किसी दिन वह जरूर लॉकर पर हाथ साफ कर देगा। (डिटेल जानने के लिय पढ़ें—‘कातिल हो तो ऐसा’) इन्हीं सब वजहों से दिमाग में उसका नाम आया था।”

“उकसी उम्र तो सोलह साल के आसपास है न?”

“हां।” कहने के साथ दिव्या को लगा, बबलू को प्लान्ट किया जाना उम्र के कारण शायद ठकरियाल को जंचा नहीं है। कहीं उसका विचार न बदल जाये इसलिये तुरन्त ही आगे कहा—“अगर तुम्हें नहीं जंच रहा तो अभी इस दिशा में कुछ कि नहीं गया। किसी और को प्लान्ट किया जा सकता है। उसे, जो तुम्हें जंचता है।”

“उम्र के हिसाब से शिकार बिल्कुल ठीक है। आजकल ऐसे क्राइम कच्ची उम्र के लड़के ही ज्यादा करते हैं। खर्चे अनाप-शनाप बढ़ गये हैं उनके। घर से पैसा मिलता नहीं है।”

“तब तो जो कुछ यहां हुआ है, वह बबलू के लिय सबसे आसान था।”

“वह कैसे?”

“बहुत फेथ करते थे राजदान साहब उस पर। वह आगर यह कहता—‘चाचू, जरा मुंह खोलना।’ तो बगैर यह सोचे-समझे मुंह खोल देते कि वह ऐसा क्यों कह रहा है? अर्थात् उनके मुंह में गोली मारना बबलू के लिये जरा भी मुश्किल नहीं हो सकता।”

“फंसाना कैसे था उसे?”

“सोचा था—रात ही रात मे देव रिवाल्वर और ज्वेलरी उसक कमरे में छुपा आयेगा। सुबह जब पुलिस आयेगी, लाश के साथ लॉकर खुला पायेगी तो मैं रोती-कलपती बबलू पर शक जाहिर करूंगी। कहूंगी—‘बाहर का एक मात्र वही शख्स था जिसपेन्टिंग के पीछे लॉकर होने की जानकारी थी।’ मेरे बयान के आधार पर पुलिस बबलू को चैक करेगी। उसके घर की तलाशी लेगी। रिवाल्वर और

ज्वेलरी के वहां से बरामद होने के बाद कोई शक नहीं रह जायेगा जो हुआ है, उसी ने किया है।”

“अच्छा है।” ठकरियाल सारे मामले पर गौर करता बोला—“काफी हद तक ठीक सोचा था तुमने।”

“अगर वहीं कोई कमी हो तो उसे तुम खुद दुरुस्त कर सकते हो।” दिव्या अब ऐसा कोई भी प्वाइंट नहीं छोड़ना चाहती थी जिस पर अटककर ठकरियाल अपना विचार बदल सके।

“केवल एक प्वाइंट ठीक है।” ठकरियाल ने सिगरेट एश्ट्रे में कुचलते हुये कहा—“रिवाल्वर उसके घर से बरामद नहीं होना चाहिये। सवाल वही उठेगा जो मैंने शुरू में उठाया था। बबलू ने मुंह के अंदर गोली क्यों मारी? क्यों हत्यारा एक एक्स्ट्रा काम करेगा?”

“फिर?”

“रिवाल्वर यहीं से मिलना चाहिए। राजदान के हाथों से। उसे लाश के हाथों में तुम्हें ठीक उसी ढंग से फंसाना है जिस ढंग से वास्तव में था।”

“इससे तो वही लगेगा जो असल में हुआ है।”

“मतलब?”

“उस पोजीशन को देखकर कोई भी बता देगा—राजदान साहब ने आत्महत्या की है।”

“यही।...बिल्कुल यही लगना चाहिए।”

दिव्या के चेहरे पर निराशा फैल गई। बोली—“इससे क्या फायदा होगा?”

“फायदा इसी से होगा मोहतराम। मेरे दिमाग में पूरा प्लान बन चुका है।” मारे खुशी के झूमता सा ठकरियाल कहता चला गया—“अब बस उस पर अमल करना है। कहीं कोई छेद, कोई लोच नहीं है। सारी दुनिया वही सोचेगी जो मैं सुचवाऊंगा।”

“यानी तुम तैयार हो?” खुशी के मारे दिव्या पागल सी हुई जा रही थी।

“स्टाम्प पेपर पर ऐग्रीमेंट करना चाहती हो क्या?”

“न-नहीं।” दिव्या अपनी खुशी छुपा नहीं पा रही थी—“व-वो बता नहीं है। असल में मुझे यकीन ही नहीं आ रहा—एक ही पल में हमारी किस्मत इतना बड़ा पलटा खा गयी। अभी, एक ही पल पहले मुझे लग रहा था—बाकी जिन्दगी जेल की चारदीवारी में गुजरने वाली है और अब...एक ही पल बाद अपने लिए स्वर्ग के दरवाजे खुलते नजर आ रहे हैं। पांच करोड़ में सचमुच जन्मत धरती पर आयेगी।”

“पांच करोड़ नहीं मोहतरमा! केवल ढाई करोड़ की बात की।”

ठकरियाल ने आकाश में परवाज कर रही दिव्या को जमीन पर ला पटका—“केवल ढाई करोड़ की।”

“म-मतलब?”

“धर्मादा नहीं खोल रखा है मैंने कि कमाई मेरी वजह से हो और मालकिन तुम बन जाओ। पूरे पांच करोड़ की। बराबर-बराबर के दो हिस्से होंगे।”

“ब-बात तो ठीक है।” दिव्या सम्भली—“हिस्सा तो होना चाहिए तुम्हारा मगर...”

“जरा सी जान क्या पड़ी अगर-मगर करने लगीं तुम तो।”

वह देवांश की तरफ देखती हुई बोली—“हिस्से तीन होने चाहियें।”

“क्यों भला?”

“मेरा, तुम्हारा और देवा का।”

“लो-मैं तो गलत ही समझ रहा था अब तक।”

“क्या समझ रहे थे?”

“यही कि तुम दोनों ‘दो जिस्म एक जान’ बन चुके हो।”

ठकरियाल मजे लेने वाले लहजे में बोला—“इसीलिए तो उसे इस लफड़े में।”

“तो बात लगह है ठकरियाल। बेशक हम एक-दूसरे से प्यार कर रहे हैं लेकिन ये मैटर अलग है। हिस्से तीन होने चाहिए। कायदे में तुम तीसरे हिस्से के हकदार हो।”

“एक ही सांस में दो बातें नहीं चलेंगी मोहतरमा। या तो ये कहो—दोनों एक हो। या ये कि अलग-अलग हो। ताकि आगे की बातें उसी खाके को दिमाग में रखकर करूं।”

दिव्या ने देवांश की तरफ देखा। सोचा—शायद वह कुछ कहंगा। दरअसल यह सौदा उसे बहुत महंगा लग रहा था। ठकरियाल को आधा हिस्सा नहीं देना चाहती थी वह।

महसूस किया—देवांश बहुत देर से चुप है। उस खुशी का भी कोई लक्षण नहीं था उसके चेहरे पर जो अचानक पलटा ख गये हालात के कारण होना चाहिए था। बोला—“तुम चुप क्यों हो देव? बोलते क्यों नहीं कुछ?”

“दिव्या।” उसका लहजा बहुत गम्भीर और शांत था—“मेरे ख्याल से ठीक वही था जो हम तब सोच रहे थे जब ठकरियाल को बाथरूम में बंद समझ रहे थे।”

“क्या मतलब?” दिव्या के मस्तक पर बल पड़ गये।

“हमें इस लफड़े से दूर रहना चाहिए।”

“लो।” ठकरियाल बोला—“यह पट्टा तो अपना हिस्सा वैसे ही छोड़ने को तैयार बैठा है। मतलब ढाई करोड़ पीटने का गोल्डन चांस।”

“देव।” दिव्या ने कहा—“पागल हो गये हो क्या? भला हाथ आये इतने सुनहरे मौके को भी कोई यूँ गंवाता है? वह तब की बात थी जब ठकरियाल की इन्वेस्टीगेशन के कारण लग रहा था—हमारे मंसूबे परवान नहीं चढ़ सकेंगे। इस वक्त हालात पूरी तरह बदले हुए हैं। बीमे की रकम हासिल करना हमारे लिए उतना ही आसान है जितना चुटकी बजा लेना।”

“जाने क्यों, मुझे लग रहा है—अगर हम इस लफड़े में पड़े तो और गहरे फंस जायेंगे। इस वक्त तो निकलने का रास्ता भी नजर आ रहा है। आगे शायद सभी रास्ते बंद हो जायें।”

“कैसे फंस जायेंगे देव? सोचो तो सही—जिस शख्स को इस केस की इन्वेस्टीगेशन करनी है, वह हमारे साथ है बल्कि पार्टनर है हमारा। फिर कौन हमें किस लफड़े में फंसा देगा?”

“कुछ सोच नहीं पा रहा हूँ मैं।”

“अब तक की घटनाओं से जरूरत से कुछ ज्यादा ही पित्ते ढीले कर दिये हैं देवांश बाबू के।” बड़ी ही जानदार मुस्कान के साथ ठकरियाल कह उठा—“वैसे अच्छा ही है। मोहतरमा, क्यों कन्विन्स करने की कोशिश कर रही हो इन्हें? इनका दिल गवाही नहीं दे रहा तो न रहें साथ। दूर रहें लफड़े से।”

“देव।” दिव्या ने कहा—“आखिर हो क्या गया है तुम्हें? कोशिश क्यों नहीं कर रहे समझने की? अब कारण ही क्या है पीछे हटने का?”

“कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा।” देवांश बोला—“बस ऐसा लग रहा है—जैसे सही रास्ते पर जाते-जाते हम भटककर फिर उसी रास्ते पर मुड़ रहे हैं जिस पर मरने से पहले राजदान चाहता था कि हम चलें।”

“एक परसेन्ट भी सहमत नहीं हूँ मैं तुमसे।” दिव्या ने अपने हर लफ्ज पर जोर देते हुए कहा—“और अब वक्त भी नहीं है बहस करने का। ‘हां’ या ‘ना’ में जवाब दो—तुम इस मिशन में हमारे साथ हो या नहीं?”

झटका सा लगा देवांश के दिला-दिमाग को।

दिव्या की तरफ देखता रह गया वह।

उस दिव्या की तरफ जिसके रोम-रोम से इस वक्त बीमा कम्पनी से रकम हासिल करने का जुनून टपक रहा था। उसके द्वारा कहे गये ‘हमारे’ शब्द पर देवांश का दिमाग भटककर रह गया।

उसकी छाती पर धूँसे की तरह लगा था यह शब्द।

दिव्या ने ठकरियाल को अपने साथ जोड़कर ‘हमारे’ कहा था।

तो अब ठकरियाल हो गया था उसका?

सच्ची बात ये है, दिल अब भी ‘हां’ कहने के लिए नहीं कर रहा था परन्तु साफ-साफ महसूस कर रहा था, उसके इंकार करने की सूरत में भी दिव्या मानने वाली नहीं थी। उसे ठकरियाल के साथ आगे निकल जाना था। सारे हालात पर गौर करने के बाद बोला—“समझने की कोशिश करो दिव्या, अब हम एक-दूसरे से अलग रहकर कुछ नहीं कर सकते।”

“यानी साथ हो?”

देवांश को कहना पड़ा—“रहना पड़ेगा।”

“वैरी गुड।” ठकरियाल कह उठा—“अच्छा हुआ जल्दी फैसला कर लिया। मगर, तुम साथ रहो, न रहो—ये बात पक्की है मेरा हिस्सा ढाई करोड़ रहेगा। कारण साफ है—तुम मानो न मानो, मैं तुम्हें एक मानता हूँ।...दो जिस्म, एक जान।”

“ऐसा नहीं होगा ठकरियाल।” देवांश ने जब साथ करने का फैसला कर ही लिया तो अपने हक के लिए बोला—“मामला जब पैसों का होता है तो पति-पत्नी को भी ‘एक’ नहीं ‘दो’ माना जाता है।”

“दुरुस्त फरमाया तुमने। ये पैसा कम्बख्त चीज ही ऐसी है—बीच में आया नहीं कि सीधे-सीधे रिश्ते भी टेढ़े-मेढ़े होने लगते हैं। तुम्हारा रिश्ता तो पहले ही से आड़ा-तिरछा है। दुनिया की नजरों में मां-बेटे हो लेकिन हो असल में पति-पत्नी।”

उसके शब्दों में ऐसी धार थी कि दिव्या और देवांश को अंदर तक चीरती चली गयी।

लगा—वह धमकी दे रहा है, अगर उन्होंने बात नहीं मानी तो वह उनके सम्बन्धों को सार्वजनिक कर देगा। उस स्थिति को सचमुच दोनों में से कोई भी फेस करने को तैयार नहीं था। फिर भी, देवांश ने कहा—“तुम कायदे की बात नहीं कर रहे ठकरियाल।”

“आदमी अपने रंग गिरगिट से भी ज्यादा तेजी के साथ बदलता है मिस्टर देवांश। कुछ देर पहले तुम जेल न जाने की कीमत के रूप में सारे जहां की दौलत मुझे देने को तैयार थे। दिव्या देवी अपने गहने वार-फेर कर रही थीं मुझ पर और...पांच करोड़ मिलने की किरणें जगमगाईं नहीं कि मोल भाव करने लगे। पलटी खाकर एक से दो हो गये तुरन्त।”

ठकरियाल तुम...

“मैं इस बहस को लम्बी खींचने के मूड में नहीं हूं।” दिव्या की बात काटकर ठकरियाल शुष्क स्वर में कहता चला गया—“सौ बातों की एक बात मैं इस मिशन पर काम करूंगा तो सिर्फ और सिर्फ ढाई करोड़ की गंगा में हाथ धोने के लिए।”

“हम तैयार नहीं हुये तो एक पैसा भी हाथ नहीं आयेगा तुम्हारे।”

“कोई गम नहीं। सोच लूंगा—इस केस पर काम करते वक्त मेरे दिमागे-शरीफ में बीमा कम्पनी की रकम ऐंठने का ख्याल कभी आया ही नहीं था। मेरा क्या है, मैं तो हूं ही ऐसे पेशे में, ऐसे मौके अक्सर आते रहते हैं। सोचना तुम्हें है, क्योंकि तुम्हारी लाईफ में आने वाला अगर ये पहला नहीं तो आखिरी मौका जरूर है। तुम्हारे इंकार की सूरत में मुझे वही करना पड़ेगा जो एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ पुलिस इंस्पेक्टर को करना चाहिये। जेल भेज दूंगा तुम्हें। सारी दुनिया तुम्हारे सम्बन्धों के बारे में जान जायेगी। डिपार्टमेन्ट से ‘गुड वर्क’ के लिए ईनाम नहीं झटक सका तो अपने अफसरों की शाबासी तो लूटही लूंगा। दूसरी तरफ-यह बोझ भी नहीं रहेगा मेरी अन्तरात्मा पर कि मैंने राजदानके उस विश्वास की ‘बघिया बैठा दी जो वह मुझमें व्यक्त करके मरा था। पीठ ठोकूंगा खुद की। कहूंगा—‘नहीं ठकरियाल, तू ऐसा है ही नहीं कि किसी के विश्वास को जरा भी ठेस पहुंचा सके। गऊ है तू तो। राजदान के विश्वास का पूरा प्रतिफल दिया है तूने उसे।...वैसे तुम्हारे लिए मेरी सलाह ये है, यह मत समझो—तुम्हारी वजह से मैं ढाई करोड़ कमा रहा हूं बल्कि ये समझो—मेरी वजह से तुम्हारी जिन्दगी में बहार आ रही है। ढाई करोड़ तो बोनस के तौर पर दे रहा हूं तुम्हें। समझने की कोशिश करो मेरी शराफत को। जरा भी चलता-पुर्जा होता तो कहता—‘पांच करोड़ मेरे होंगे। उनकी एवज मैं तुम्हें मिलेगी, तुम्हारी इज्जत से भरपूर जिन्दगी।’ मैं जानता हूं तुम्हें यह भी कुबूल करना पड़ता। जानते-बूझते ढाई करोड़ देने को तैयार हूं। तुम्हें तो कायल होना चाहिए मेरी शराफत का। चरण धो-धोकर पीने चाहिये मेरे।”

दोनों में से कोई कुछ नहीं बोला।

एक-दूसरे की तरफ देखकर रह गये केवल। वे जानते थे—ठकरियाल ने जो भी कहा, अक्षरशः सच है। काफी लम्बी खामोशी के बाद दिव्या को कहना पड़ा—“हमें मंजूर है।”

“क्या मंजूर है?”

“दो हिस्से होंगे। ढाई करोड़ तुम्हारे ढाई करोड़ हमारे।”

“मुझे मालूम था—तुम मजाक कर रहे थे।” ठकरियाल हंसा—“आओ। अब कुछ सीरियस बात हो जायें। टाईम कम रह गया है।”



प्रिय बबलू।

रात के इस मेरा लेटर पाकर हैरान तो बहुत होंगे कि चाचू को आखिर हो क्या गया है परन्तु हालात ही ऐसे हैं, यह लेटर मैं इसी वक्त तुम्हारे पास पहुंचाने पर मजबूर हूं। याद रहे—यह जानने की कोशिश बिल्कुल मत करना लेटर तुम्हारे पास किसने पहुंचाया है।

मम्मी-पापा को भी इसके बारे में कुछ मत बताना।

स्वीटी की कसम है तुम्हें।

लेटर को पढ़ते ही अपने घर से निकल पड़ो।

चुपचाप।

चोरों की तरह।

तुम्हें विला में आना है। मेरे कमरे में। लेकिन मुख्य द्वार से हरगिज नहीं।

विला के बायीं तरफ जो ‘सर्विसलेन’ है। वहां एक पेड़ है। तुम उस पेड़ पर चढ़ जाना। पेड़ की एक शाख विला की बाउन्ड्रीवॉल के ऊपर से होती हुई अंदर तक आ गयी है। उस शाख से विला में कूद जाना। मैं जानता हूं—पूरे शैतान हो तुम। मुकम्मल कामयाबी के साथ इस काम को कर लोगे।

इसके बाद का काम और भी आसान है।

बड़े आराम से खुद को अंधेरे में छुपाये रखकर मेरे बाथरूम की उस खिड़की पर पहुंच जाना जो लॉन की तरफ खुलती है। वह

अंदर से बंद नहीं होगी। हाथ का जरा सा दबाव पड़ते ही खुल जायेगी। तुम्हें बाथरूम में आना है। बाथरूम से ड्रेसिंग में। ड्रेसिंग और मेरे बैडरूम का दरवाजा बैडरूम की तरफ से बंद मिलेगा।

तुम उसे खटखटाओ।

बहुत आहिस्ता से।

मेरे अलावा उस आवाज को कोई दूसरा न सुन सके।

मैं दरवाजा खोल दूंगा।

बस।

आगे की बातें वहीं होंगी।

जानता हूँ—तुम्हें सस्पेंस वाले टी. वी. सीरियल देखने का बहुत शौक है। मगर यह लेटर तुम्हें ऐसे सस्पेंस में फंसा देगा जैसे सस्पेंस से तुम्हारा वास्ता अब तक देखे गये किसी भी सीरियल में नहीं पड़ा होगा। किसी और माध्यम से इस सस्पेंस की सुलझाने की कोशिश बिल्कुल मत करना क्योंकि मैं अपने कमरे से तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ।

तुम्हारा चाचू—आर. के. राजदान

पूरा पत्र पढ़ के बाद देवांश ने ठकरियाल की तरफ देखा। देवांश के साथ ही पत्र दिव्या ने भी पढ़ लिया था।

“कैसी रही?” ठकरियाल ने पूछा।

“हम कुछ समझे नहीं।” देवांश ने कहा।

“इस पत्र को पढ़कर बबलू क्या करेगा?”

“मेरे ख्याल से कुछ भी नहीं करेगा।”

“क्यों?”

“बबलू राजदान के जितना निकट था, मैं नहीं मान सकता वह राईटिंग नहीं पहचानता होगा। यह लेटर राजदान ने नहीं, तुमने लिखा है मेरे ख्याल से राईटिंग को देखते ही बबलू समझ जायेगा पत्र राजदान का है ही नहीं।”

“बिल्कुल गलत ख्याल है तुम्हारा।”

“कारण?”

“पहली बात—लेटर राजदान के लेटर पैड के कागज पर लिखा गया है। दूसरी बात—कुछ हद तक मैंने अपनी राईटिंग को राजदान की राईटिंग से मिलाने की कोशिश की है।”

“जिसमें तुम पचास परसेन्ट भी कामयाब नहीं हो सके।”

ठकरियाल ने अजीब मुस्कान के साथ कहा—“चालीस परसेन्ट कामयाब मानते हो या नहीं?”

“हां।” दिव्या ने नजरें लेटर पर जमाये रखकर कहा—“इतने तो हो।”

“मेरे ख्याल से इतना काफी होगा।”

“अर्थात्।”

“जिसे हम अच्छी तरह जानते हैं बल्कि जिसके साथ चौबीस घण्टे रहते हैं, जरूरी नहीं उसकी राईटिंग से भी परिचित हों। यानी, पहली स्टेज पर मैं ये मानता हूँ—बबलू का राजदान की राईटिंग से बाकिफ होना जरूरी नहीं है। अगर थोड़ा-बहुत परिचित हुआ भी तो अचानक नींद से जागने पर जब राजदान का लेटर पैड देखेगा तो उसी का लेटर समझेगा इसे। यह सोचने का उसे मौका ही नहीं मिलेगा कि लेटर नकली भी हो सकता है। बकौल तुम्हारे ही, चालीस परसेन्ट-राईटिंग तो मैंने मिला ही दी है। लेटर का मजमून उसक दिलो—दिमाग में इतनी क्यूरोसिटी पैदा कर देगा कि हर हाल में ठीक उसी तरह उसे ‘यहां’ पहुंचने पर विवश कर देगा जिस तरह लेटर में लिखा है।”

एक क्षण के लिए कमरे में खामोशी छा गई। फिर दिव्या ने कहा—“चलो मान लिया उसे यह भ्रम हो जायेगा उसे राजदान ने बुलाया है। ...तो?”

“आयेगा या नहीं?”

“भ्रम होने पर तो हन्डरेड परसेन्ट आयेगा।” देवांश ने कहा।

“बस।” ठकरियाल कह उठा—“यही मैं चाहता हूँ।”

“मगर क्यों? उसक बाद तुम क्या करने वाले हो?”

“जो होगा, बहुत ही मजेदार होगा और तुम्हारे सामने होगा।” ठकरियाल अपनी स्कीम पर खुद मंत्रमुग्ध सा होता बोला—“फिलहाल तुम्हें इस लेटर को उस तक पहुँचाने का कष्ट फरमाना है।”

“म-मुझे?” देवांश हकला उठा।

ठकरियाल ने कहा—“हां! तुम्हें ढाई करोड़ कमाने के लिए इतने पापड़ तो बेलने ही होंगे।”



देवांश के दिमाग को हजारों शंकाओं ने घेर रखा था मगर, उसमें से कुछ भी नहीं हुआ जिसका उसे डर था। हुआ तो वह हुआ, जिसकी कल्पना वहीं नहीं—दिव्या और ठकरियाल भी स्वप्न तक में नहीं कर पाये थे। जिसने देवांशके होश उड़ा दिये।

एक बार फिर उसे ऐसा लगा जैसे इस झमेले में पड़कर अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल कर रहा है।

विला से बाहर निकलने पर उसने देखा—आकाश पर बादल छाये हुए थे।

हर तरफ अंधकार।

सन्नाटा।

ठण्डी हवा भांय-भांय कर रही थी।

वृक्ष झूम रहे थे।

बावजूद इसके—देवांश पसीने से नहाया हुआ था।

उसने केवल सुना ही था, लोग रेन वॉटर पाईप पर चढ़ जाते हैं। कई फिल्मों में भी देखा था ऐसा दृश्य, परन्तु यह अनुमान बिल्कुल नहीं लगा सका था—यह काम इतना कठिन होगा। इतना कठिन कि फर्स्ट फ्लोर पर पहुंचते-पहुंचते वह बुरी तरह थक गया।

हांफने लगा।

बाकी जिस्म पर उभर आये पसीने को तो वह झेल सकता था परन्तु वर्तमान अवस्था में पसीने के कारण भीगी हुई हथेलियां उसकी सबसे बड़ी प्रॉब्लम थी।

ग्लब्स पहने होने के बावजूद हाथ पाईप से फिसले जा रहे थे।

लग रहा था—अब गिरा, कि अब गिरा।

और यह सच है—एक बार में तो वह हरगिज थर्ड फ्लोर पर नहीं पहुंच सकता था।

गनीमत रही—फर्स्ट से सैकिण्ड फ्लोर पर चढ़ते वक्त उसकी नजर सैकिण्ड फ्लोर की खिड़की के ऊपर बने ‘रेन शेड’ पर पड़ गई। पाईप ठीक उसकी बगल से गुजर रहा था। दिमाग में ख्याल आया—उस शेड पर वह कुछ देर आराम कर सकता है। इस विचार ने काफी राहत पहुंचाई।

लक्ष्य फिलहाल थर्ड फ्लोर की खिड़की नहीं, सैकिण्ड फ्लोर की खिड़की के ऊपर बना शेड बन गया था। वही किया उसने, मगर वही जानता है वहां तक पहुंचते-पहुंचते क्या हालत हो गयी थी। पाईप से एक पैर हटाकर जब उसने शेड के किनारे पर रखा तो तेज हवा के बीच फंसे तिनके की तरह कांप रहा था।

फिर, एक जम्प सी लेकर शेड पर पहुंच गया।

कुछ ऐसी घुमेर सी आई कि लगा—वह गिरने वल्ला है।

घबराकर शेड पर बैठ गया।

ग्लब्स उतारे।

कमर दीवार से टिका दी।

आंखें बंद कर लीं।

काफी देर तक उखड़ी सांसों को नियंत्रित करता रहा।

सामान्य होने में करीब पांच मिनट लग गये। इस बीच कई बार अपनी हथेलियों को जींस पर रगड़कर शुष्क कर चुका था। नीचे झांका तो चक्कर सा आने लगा।

नजर फर्स्ट फ्लोर की खिड़की के ऊपर बने शेड पर पड़ी।

वह भी ठीक वैसा ही था जैसा इस वक्त वह बैठा था।

असे आश्चर्य हुआ। उस शेड पर पहले, अर्थात् ग्राउन्ड फ्लोर से फर्स्ट फ्लोर पर चढ़ते वक्त उसकी नज क्यों नहीं पड़ी? पड़ जाती तो जिस तरह वह इस वक्त यहां ‘सुस्ता’ रहा था, उसी तरह वहां भी सुस्ता सकता था। यह सफर शायद उतना कठिन न लगता नजर तो पड़ी थी मगर ख्याल नहीं आया था इस तरह सुस्ताने का।

उस वक्त तो उसे सिर्फ और सिर्फ थर्ड फ्लोर की खिड़की नजर आ रही थी।

शायद वहां तक पहुंचता-पहुंचता वह इतना थका भी नहीं था, इसीलिए सुस्ताने का ख्याल नहीं आया। इसी को कहते

हैं—आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

अब जब वह उतरेगा तो दोनों शेड्स पर सुस्ताना जायेगा। तब उतना नहीं थकेगा जितना 'यहां' तक पहुंचता थक गया था।

फिर अचानक दिमाग में ख्याल उभरा—'अगर इस वक्त मुझे यहां कोई देख ले। इस सवाल के जवाब में, जितने जवाब दिमाग में घुमड़े उन्होंने अंदर ही अंदर हिलाकर रख दिया देवांश को। वे जवाब कम, शंकाएं ज्यादा थीं और उन सभी शंकाओं का केवल एक ही समाधान सूझा उसे—जो कर रहा है, उसे जितनी जल्दी निपटा ले उतना अच्छा है। किसी की नजर पड़ गई तो हंगामा मच जायेगा।

वह उठा।

एक बार फिर दोनों हाथ जींस पर रगड़े। ग्लब्स पहने और पाईप पर जमा दिये।

बंदर की तरह उछलकर एक बार फिर पाईप के इर्द-गिर्द सिमट गया।

सफर शुरू हुआ।

पहले जितना कठिन नहीं था वह।

मगर।

खिड़की के नजदीक पहुंचते-पहुंचते एक और ख्याल दिमाग में उभरा जिने उसे बेचैन कर दिया।

वह ख्याल था—खिड़की अंदर से बंद हुई तो?

कैसे करेगा वह काम जिसकी लिए इतने पापड़ बेल रहा है?

यह बात गारंटी से दिव्या ने कही थी कि बबलू के कमरे की खिड़की खुली हुई होगी।

उसका दावा था—एक बार उसने बबलू को राजदान से कहते सुना था—'चाचू, मैं अपने कमरे की खिड़की हमेशा खोलकर सोता हूं। नींद ही नहीं आती बंद करके। दम सा घुटने लगता है।'।

बस।

दिव्या के इसी दावे के आधार बनाकर सारा प्लान बनाया गया था।

और।

दिव्या का दावा शत-प्रतिशत सही निकला।

पाईप पर लटके ही लटके जब उसने खिड़की के जाली वाले पल्ले पर हाथ रखा तो वह इस तरह खुलता चला गया जैसे मारबल के फर्श पर रुकी पड़ी कांच की गोली हवा के नामालूम से झोंके से 'चलायमान' हो जाती है।

रबर की गेंद की मानिन्द उछलते दिल पर काबू पाने का असफल प्रयत्न करने के साथ बहुत आहिस्ता से कमरे में झांका। ग्रीन क्लर के नाईट बल्ब का प्रकाश बिखरा हुआ था।

बैड पर सोया पड़ा बबलू साफ दिखाई दिया। केवल चेहरा चमक रहा था उसका। बाकी जिस्म चादर से ढका हुआ था।

नाक बज रही थी।

जैसे हौले-हौले खरटि ले रहा हो।

उस दृश्य को देखकर देवांश के हौसले में कई गुना ज्यादा वृद्धि हो गयी।

आत्मविश्वास से भरकर एक हाथ जेब में डाला।

अगले पल हाथ में कांच का एक गोल पेपरवेट नजर आ रहा था। पेपरवेट पर लेटर लिपटा हुआ था जिसे ठकरियाल ने तैयार किया था।

लेटर के ऊपर दो रबर-बैंड कसे हुए थे।

एक बार उसने पेपरवेट को अपने हाथ में तोला और फिर...निशाना ताककर बैड की तरफ उछाल दिया।

पेपरवेट बबलू के पेट से जाकर टकराया।

बबलू को उसे हड़बड़ाकर उठते देखा।

और बस।

तेजी से पाईप के सहारे नीचे उतरना शुरू कर दिया।

ऐसी आवाज हुई जैसे कोई छोटा सा पत्थर पक्के फर्श पर लुढ़कता चला गया हो।

बरबस ही उसका चेहरा इमारत के टैरेस की तरफ उठ गया।

आवाज उसी तरफ से उभरकर देवांश के कानों से टकराई थी।

उसी क्षण, टैरेस की बाउन्ड्रीवॉल के नजदीक एक इंसानी साया नजर आया।

देवांश अभी कुछ समझ भी नहीं पाया था कि वातावरण में 'क्लिक' की आवाज उभरी।

क्षण के सौवें हिस्से के लिए तेज फ्लश लाइट से आंखें चूंधिया गई उसकी।

यह समझ में आते ही देवांश के देवता कूच कर गये कि उसका फोटो खींच लिया गया है।
फोटो खींचने के बाद वह बान्‌उड्रीवॉल क नजदीक से इस तरह गायब हो गया जैसे कभी था ही नहीं।
मारे घबराहट क देवांश का जी चाहा चीख पड़े—“कौन है वहां?”

परन्तु।

ऐसा कर कैसे सकता था।

भला चोर भी कहीं शोर मचाता है?

मारे पसीने के ऐसी हिलत हो गयी जैसे अभी-अभी स्वीमिंग पूल से बाहर निकला हो। पलक झपकते ही दिमाग शून्य में जा फंसा।
कुछ समझ में नहीं आया उसकी।

इतना ज्यादा आतंकित हो उठा कि...कि पाईप पर फिसलता हुआ कब और जमीन पर जा टकराया, खुद न जान सका। वह तो यह भी नहीं जानता था, पाईप पर फिसलकर जमीन पर पहुंचता था अथवा वहीं से जमीन पर टपक पड़ा था जहां फोटो खींचा गया था।

आंधी-तूफान की तरह उसने खुद को विला की तरफ दौड़ते पाया था।



“क-क्या हुआ? क्या हुआ देव? तुम कुछ बताते क्यों नहीं?” बुरी तरह अधीर दिव्या ने उसे झंझोड़ते हुए तीसरी बार पूछा।
देवांश अभी तक खुद को जवाब देने की पोजीशन में नहीं ला पाया था।

बुरी तरह हांफ रहा था वह।

चेहरा ऐसा नजर आ रहा था जैसे किसी अज्ञात ताकत ने हल्दी पौत दी हो।

कुछ ऐसे अंदाज में भाता-दौड़ता पहुंचा था वहां मानो अंसख्य भूत पीछे लगे हों।

चौंका ठकरियाल भी था। कम से कम दो बार वह भी पूछ चुका था ‘आखिर हो क्या गया है?’

जब इस बार भी देवांश कोशिश के बावजूद मुंह से आवाज न निकाल सका तो ठकरियाल ने शंका व्यक्त की—“बबलू ने तुम्हें देख लिया क्या?”

देवांश ने इंकार में सिर हिलाया।

“पेपरवेट उसे लगा था या नहीं?” दिव्या ने पूछा।

वह इशारे से ‘हां’ कह सका।

“उसकी चोट ने उसे जगा दिया था।”

देवांश का सिर पुनः ‘हां’ में हिला।

“तो फिर बात क्या है?” ठकरियाल गुर्ग उठा—“बकते क्यों नहीं?”

“क-किसी ने मेरा फोटो खींच लिया है।” हलक सूखा होने के कारण वह बड़ी मुश्किल से कह सका।

“फ-फोटो?” दोनों के हलकों से एक साथ चीख निकल गई।

वह पुनः बड़ी मुश्किल से कह सका—“हां।”

“क-किसने?” अब जैसे ठकरियाल के भी होश फाख्ता हुए—“कहां खींचे लिया तुम्हारा फोटो?”

“ज-जब मैं रेन वाटर पाईप पर लटका हुआ था। ठीक उसके कमरे की खिड़की के नजदीक।”

“क-क्या बकवास कर रहे हो? भला वहां कौन तुम्हारा फोटो खींच लेगा?”

“मुझे नहीं मालूम वह कौन था, मगर था। बिल्डिंग टैरेस पर। मैंने पत्थर लुढ़कने की आवाज सुनी। उस तरफ देखा और...उसी वक्त टैरेस से फोटो खींच लिया गया। अब तो...अब तो मुझे ऐसा लग रहा है जैसे वह आवाज जानबूझकर पैदा की गई थी ताकि चौककर उस तरफ देखूं और मेरे चेहरे का साफ फोटो लिया जा सके। यदि वह आवाज नहीं हुई होती तो मैं उस तरफ देखता ही क्यों? उस अवस्था में, फोटो लिया भी जाता तो चेहरा साफ नहीं आता मेरा। यकीनन उसने साफ फोटो लेने के लिए...”

“तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है देवांश। वहम हो गया लगता है तुम्हें। मुमकिन है बिजली चमकी हो। आकाश पर बादल छाये हुए हैं। भला रात के इस वक्त वहां तुम्हारा फोटो कौन लेगा? कोई कैसे अनुमान लगा सकता है तुम उस वक्त वहां होगे?”

“व-वही। वही कह रहा हूं मैं।” अभी तक डरा हुआ देवांश कहता चला गया—“ऐसा लगता है जैसे टैरेस पर छुपा वह, काम निपटाकर मेरे उस प्वाइंट पर पहुंचने की प्रतीक्षा कर रहा था। जैसे ही उपयुक्त मौका मिला। उसने आवाज पैदा की और...मेरे ऊपर देखते ही फोटो खींच लिया।”

“अब तक तो मुझे केवल शक था मगर अब यकीन हो गया है।” ठकरियाल की बात पर जरा भी ध्यान दिये बगैर देवांश कहता चला गया—“मरने से पहले हमारे चारों तरफ कोई बहुत ही गहरा जाल बिछा गया है राजदान। और...और दिव्या, वह जाल ठकरियाल पर खत्म नहीं हो जाता। हम जो यह सोच रहे थे वह ठकरियाल को हमें सताने, डराने, जलील और आतंकित करके जेल में ठूसने का काम सौंपकर मरा है, गलत है। उसका प्लान इससे आगे, शायद बहुत आगे तक कुद और है।”

“कहना क्या चाहत हो तुम” ठकरियाल की पेशानी पर बल पड़ गये—“क्या यह कि राजदान पहले ही बयान कर चुका था एक स्पॉट विशेष पर आकर मैं उसका काम पूरा करने की जगह तुम लोगों से मिल जाऊंगा?”

“क-क्यों नहीं हो सकता ऐसा? बल्कि...मुझे तो पूरा विश्वास है—ऐसा ही है।”

“कौड़ी जरा दूर की है।”

“पिछली घटनाओं पर गौर करें तो राजदान के लिए जरा भी दूर की नहीं लगती।”

“मतलब?”

“याद करो! तुम्हीं ने बताया था।” देवांश बोला—“इन पांच लाख से पहले वह तुम्हें एक मोटी रकम देकर, कोई काम करा चुका था। उसी के कारण उसे विश्वास था पांच लाख रुपये की खातिर तुम हमारे साथ वह करोगे जो वह चाहता था। अर्थात्...वह जानता था तुम एक ऐसे पुलिसिये हो जो पैसों की खातिर गैर-कानूनी काम भी कर सकते हो। अब सोचो—क्या उसने यह कल्पना नहीं कर ली होगी कि पांच करोड़ की ‘अर्निंग’ की सम्भावना कर सकता है। तुम्हारा रुख क्या होगा? मैं दावे से कह सकता हूँ ठकरियाल, जैसे वह यह बात अच्छी तरह जानता था हम पांच करोड़ की खातिर आत्महत्या को हत्या बनाने की कोशिश जरूर करेंगे वैसे ही यह भी जानता था तुम वह शख्स नहीं हो जो पांच करोड़ का लालच छोड़कर केवल इसिलिये हमें जेल में ठूसने की बेवकूफी करो क्योंकि ऐसा करने के लिए उसने अपने लेटर में लिखा था। उसे अच्छी तरह मालूम था—बीमे की रकम से हिस्सा हथियाने की खातिर तुम वही करोगे जो कर रहे हो।”

“अर्थात् वह जानता था मैं भी तुम्हारी राहों का राही बन जाऊंगा?”

“पक्की बात है ठकरियाल। पक्की बात ये। आदमी की बहुत अच्छी पहचान थी उसे। भगवन की तरफ से हर आदमी को कोई न कोई ‘गॉड गिफ्ट’ होती है। उसे यही गॉड गिफ्ट थी। आदमी को बहुत अंदर तक बहुत जल्दी पहचान लेता था वह। अपने इसी गुण के कारण फुटपाथ से उठकर राजदान ऐसोसियेट्स जैसी जागी खड़ी कर सका। बबलू के बारे में जब एक बार मैंने और दिव्या ने कहा—‘यह चोरी कर सकता है।’ तो बड़ी दृढ़ता के साथ कहा था उसने किसी हालत में यह लड़का चोरी नहीं कर सकता। आदमी को पहचानने का गुण पैदा करो अपने अंदर। जिसमें यह गुण होता है वह आश्चर्यजनक रूप से तरक्की करता है। यकीनन वह समझ गया होगा—तुम जैसा दौलत का दीवाना शख्स किसी हालत में इतनी आसानी से मिलती नजर आने वाली दौलत का लालच छोड़कर वह करने वाला नहीं जो उसने लेटर में लिखा है। अपना आगे का जाल उसने इस बात को अच्छी तरह समझने के बाद ही बिछाया होगा।”

“बड़ी आश्चर्यजनक और दिलचस्प बात कह रहे हो तुम।” ठकरियाल के होठों पर अजीब मुस्कान उभरी थी—“हालांकि मुझे बिल्कुल विश्वास नहीं है राजदानद ऐसा सोच पाया होगा मगर, यदि सचमुच इसने यह सब सोच लिया था तो...”

“तो?”

“मजा भी आयेगा इस मरे हुए आदमी से टकराने में।” कहने के साथ उसने सोफा चेयर पर लुढ़की पड़ी राजदान की लाश की ताफ देखा। एक और सिगरेट सुलगाई। चहलकदमी सी करता उसकी तरफ बढ़ता बोला—“वहा! सोचने ही में मजा आ रहा है। इस बार मेरी टक्कर एक लाश से है उस शख्स के दिमाग से जो मर चुका है। अपनी अब तक की जिन्दगी में ठकरियाल जिन्दा लोगों से बहुत टकराया है और...कभी किसी से शिकस्त नहीं खाई। लाश से टकरान का यह पहला मौका है। बल्कि...मैं तो कहूंगा—हमसे पहले दुनिया का कोई भी शख्स किसी लाश के दिमाग से नहीं उलझा होगा।”

“पता नहीं तुम क्या बके चले जा रहे हो। हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा।”

“सबसे पहले अपने खोपड़े से लौफ नाम की कीड़े को निकालकर फैंको मिस्टर देवांश, उसका बाद समझ सकोगे मेरी बात। ये कीड़ा आदमी के सोचने-समझने की सभी शक्तियों को ‘चट्ट’ कर जाता है। मैं ये कह रहा हूँ—अगर तुम्हारी बात सच है, यानि—यदि यह शख्स मरने से पहले न केवल यह समझ चुका था तुम क्या करोगे बल्कि यह भी समझ चुका था ठकरियाल क्या करेगा और उसी के आधार पर अपना जाल बिछा गया है तो वास्तव में कमाल करके मरा है ये आदमी। इस कमाल को मुझे देखना होगा। घुसना पड़ेगा इसके चक्रव्यूह में ताकि देख सक—कितनी दूर तक सोच चुका था ये करामाती शख्स।”

“त-तुम—तुम।” देवांश हकला उठा—“तुम मुझे पागल हो गये लगते हो।”

बड़ी ही मोहक मुस्कान उभरी ठकरियाल के होठों पर—“इस खुशफहमी की वजह?”

“वही करते चले जाना पागलपन नहीं तो और क्या है जो ये मरा हुआ शख्स चाहता था कि हम करें।”

“अगर तुम्हारी नजर में यह पागलपन है तो ऐसे पागलपन ठकरियाल ने हमेशा पसंद किये हैं।”

“यानी तुम अब भी इस आत्महत्या को हत्या साबित करने की कोशिश करोगे?”

“बढ़े हुए कदम न मैंने पहले कभी वापस लिए हैं, न अब लूंगा। बहरहाल, तुम इतनी मेहनत करके वहां पेरपरवेट के साथ लेटर फेंककर आये हो।”

“नहीं।...हम इस पागलपन में तुम्हारे साथ नहीं दे सकते।” कहने के साथ देवांश ने समर्पण की उम्मीद में दिव्या की तरफ देखा। उस दिव्या की तरफ जो काफी देर से खामोश खड़ीउनपकी बहस सुन रही थी। चुप्पी का राज था—वह फैसला नहीं कर पा रही थी, आगे क्या करे? देवांश ने कहा—“तुम चुप क्यों हो दिव्या, बोलती क्यों नहीं कुछ?”

“तुम्हारे कहने का मतलब है—फोटो खींचने वाला जो भी था, उसे राजदान ने अपनी मौत से पहले ही इस काम पर नियुक्त कर दिया था?”

“हन्डरेड परसेन्ट। राजदान उसे भी ठीक उसी तरह खास काम पर नियुक्त करने के बाद मरा है जिस तरह ठकरियाल को हमें आतंकित आदि करने का काम सौंपा था।”

“अर्थात् राजदान जानता था—हम हत्या के जुर्म में किसी औरको नहीं बल्कि सिर्फ और सिर्फ बबलू को फंसाने की कोशिश करेंगे?”

“हकीकत यही है।”

“यानी राजदान यह भी जानता था—तुम उसके कमरे में लेटर फेंकने जाओगे?”

“लेटर की कल्पना भले ही न कर सका हो मगर इतना तो वह समझ ही गया होगा कि बबलू को फंसाने के लिये हममें से किसी को एक बार उस खिड़की पर पहुंचना होगा। लेटर फेंकने न जाता तो जेवर और रिवाल्वर प्लान्ट करने जाता।”

देवांश कसमसा रहा था—“कौड़ी देखने-सुनने में भले ही दूर की लग रही है। लेकिन असल में राजदान के लिये जरा भी दूर की नहीं थी। सोचो—‘यह’ जानता था हम बबलू से चिड़ते हैं। हमें शक रहता है बबलू मौका लगते ही लॉकर पर हाथ साफ कर सकता है। ऐसी अवस्था में इसने बड़ी आसानी से अनुमान लगा लिया होगा, जब हम आत्महत्या को हत्या साबित करने पर आमादा होंगे तो हत्यारे के रूप में स्वाभाविक रूप से दिमाग में बबलू का नाम आयेगा। रही टैरेस पर फोटोग्राफर की जरा भी अस्वाभाविक नहीं रहा होगा क्योंकि वह जानता था—तुम जानती हो कि बबलू अपने कमरे की खिड़की खोलकर सोता है। उसने सोच लिया होगा—अपनी इसी जानकारी का लाभ उठाती हुई तुम रिवाल्वर या ज्वेलरी को उसी रास्ते से बबलू के कमरे में पहुंचाने की कोशिश करोगी। जैसा कि पहले हमारा प्लान था भी।”

“बात में जान है।” दिव्या ठकरियाल की तरफ पलटती हुई बोली—“बात में वाकई जान है ठकरियाल। देव की बातें सुनने के बाद लगता है—राजदान के लिये इन सब घटनाओं का पूर्वानुमान लगा लेना उतना ही आसान था जितना दो और दो को जोड़ना।”

“क्या तुम भी यही कहना चाहती हो हम इस सिलसिले को यहीं रोक दें? आगे न बढ़ें?”

“फायदा क्या बढ़ने से?”

“मतलब?”

“जिस प्लान के तहत हमने बबलू को राजदान का हत्यारा सिद्ध करने के मंसूबे बनये हैं वह उस फोटो के कोर्ट में पहुंचते ही धराशाही हो जायेगा।”

“उत्साहित देवांश ने कहा—“ने केवल प्लान धराशाही हो जायेगा बल्कि यह भी सिद्ध हो जायेगा बबलू को फंसाने की कोशिश हमने की है।”

“फोटो अगर खींची ही गया है तो उसे अब वैसे भी किसी ऐसी जबह पहुंचना ही है जहां हमारे लिए मुसीबत बन सके।” ठकरियाल बोला—“लिहाजा, हमें धबराकर अपने कदम वापस खींचने की जगह उस फोटो और फोटो खींचने वाले से निपटने के बारे में सोचना चाहिये।”

“जब हम कानून के समक्ष ‘एक्सेप्ट’ ही कर लेंगे की—‘हां, हमने आत्महत्या को हत्या और बबलू को हत्यारा सिद्ध करने की कोशिश की है।’ तो...उसके बाद, हमारा वहां क्या बिगाड़ लेगा वह फोटो? रास्ता यही ठीक है दिव्या—हमें अपनाप गुनाह कुबूल करके शांति के साथ जेल चले जाना चाहिये। बेटे अभी भी बाप के घर है। हमारे किसी कृत्य से किसी का कुछ बिगड़ा नहीं है। यदि लालच में घुसे रहे, आत्महत्या का हत्या सिद्ध करने के इस मिशन पर काम करते रहे तो मुझे विश्वास हो गया है—ऐसे फसेंगे कि निकलते न बन पड़ेगा।”

एकाएक ठकरियाल का लहजा थोड़ा कठोर हो गया—“निकल तो तुम अब भी नहीं सकते।”

“म-मतलब?” देवांश हकला गया।

“अब भी, और आगे भी—केवल दो रास्ते हैं तुम पर।” ठकरियाल एक-एक शब्द पर जोर देता कहता चला गया—“पहला—समाज के सामने सम्बन्धों का खुलासा करके जेल चले जाओ। दूसरा—मेरे साथ पांच करोड़ कमाने के मिशन

पर आगे बढ़ो। काम करो।”

दिव्या ने कहा—“तुम हमें जेल भेज दोगे। उसेक लिए हम तैयार हैं। इसमें समाज के सामने सम्बन्धों का खुलासा होने की बात कहां से आ गई?”

“मैं करूंगा ऐसा।”

“त-तुम?”

“जी।”

“क्यों?”

“क्योंकि तुम मेरा साथ नहीं दे रहे।”

“त-तुम्हारा साथ?”

“अब ये मिशन तुम्हारा नहीं, मेरा है मिस्टर देवांश। पर्सनल मेरा।” ठकरियाल कहता चला गया—“और मैंने आज तक जिन्दा लोगों के सामने घुटने नहीं टेके।... इस लाश के पैतरो के सामने तो टेकूंगा क्या?”

सन्नाटा छा गया दिव्या और देवांश के दिमांगो पर। एक नपजर एक-दूसरे को देखा, फिर देवांश ने कहा—“मुझे लगता है, बीमे की रकम हमें कम—तुम्हें ज्यादा आकर्षित कर रही है।”

“ये सच तो है, मगर पूरा नहीं—आधा सच है।”

“मतलब?”

“आकर्षित तो यह रकत तुम्हें भी उतना ही कर रही है जितना मुझे। फर्क केवल ये है, एक तो तुम पहले ही से डरे हुए थे—ऊपर से फोटोग्राफर ने रहे-सहे हौसले भी पस्त कर दिये हैं जबकि मैं।” कहने के बाद वह थोड़ा ठिठका, पुनः बोला—“मैं जानता हूं, मरे हुए इस शख्स द्वारा खड़ी की जाने वाली सभी बाधाओं को तोड़ता हुआ बीमे की रकम तक पहुंच जाऊंगा।”

“लेकिन जब हम ही प्लान परन काम करने के लिए तैयार नहीं हैं तो कैसे बीमे की रकम तक पहुंच जाओगे तुम?” देवांश ने कहा—“बहरहाल, नोमिनी दिव्या है। किसी भी हालत में रकम अगर मिली भी तो दिव्या को मिलेगी।”

“इसीलिए तो मजबूर हूं तुम्हें अपने साथ चिकाये रखने पर।”

“नहीं... अब हम हरगिज इस प्लान पर काम नहीं करेंगे।”

“करना पड़ेगा।”

एकदम से जवाब नहीं दे सका देवांश। घूरता रह गया उसे।

फिर बोला—“जबरदस्ती है कोई?”

“यूं भी कह सकते हो। मगर... कोशिश करो समझने की। अहम् बात ये है—कोर्ट में मुजरिम द्वारा खुद किसी जुर्म को कुबूलकरने अथवा किसी दूसरे माध्यम से साबित होने पर कोई फर्क नहीं पड़ता। सजा वही होती है जो उस जुर्म के करने पर भारतीय दंड विधान में लिखी है। अर्थात् तुम्हारे द्वारा अपने कृत्य को आज ‘एक्सेप्ट’ कर लेने या कल किसी और माध्यम से साबित हो जाने से स्थिति पर बाल बराबर फर्क पड़ने वाला नहीं है। ऐसी अवस्था में घबराकर आज ही घुटने टेक देने से कोई फायदा होने वाला नहीं है। कल हम अपने प्रयासों से इस मरे हुए आदमी के जाल को तोड़ भी सकते हैं। उस अवस्था में एक तरफ हमारा बाल तक बांका नहीं होगा। दूसरी तरफ पांच करोड़ हमारे कदम चूम रहे होंगे।”

“उफ्फ!” कसमसाता सा देवांश दांत भीचकर कह उठा—“तुम लोग समझ क्यों नहीं रहे। असल में यही लालच हमारा बंटधार करने वाला है।”

“दूसरा फायदा।” ठकरियाल उसके शब्दों पर जरा भी ध्यान यि बगैर कहता चला गया—“कल किसी और माध्यम से कलई उतरी तो केवल इतनी उतरेगी कि तुमने आत्महत्या को हत्या सिद्ध करने और उस जुर्म में बबलू को फंसाने की कोशिश की जबकि आज ‘एक्सेप्ट’ करके मेरी नाराजगी खरीद बैठोगे। जिसका सीधा नुकसान यह होगा कि—मैं तुम्हारे सम्बन्धों को सार्वजनिक कर दूंगा। लोगों को बता दूंगा तुम कैसे देवर-भाभी हो।”

यूं—समझाते-समझाते उसने अपनी बात ‘धमकी’ के नोट पर समाप्त की। यह धमकी ऐसी थी कि दोनों में से कोई पलटकर तुरन्त कुछ न कह सका। उस वक्त वे एक-दूसरे को देख रहे थे जब ठकरियाल ने गर्म लोहे पर चोट की—“अब सबसे बड़ी बात—सोचो, मैं क्यों हाथ डाल रहा हूं इस काम में? जाहिर है—बेवकूफ नहीं हूं। अभ्यस्त हूं इस किस्म की पैतरेबाजियों का। मुझे साफ नजर आ रहा है—जरा सी मेहनत के बदले पांच करोड़ कमाये जा सकते हैं।”

“बात में दम है देव।” सारी स्थिति पर गौर करने के बाद दिव्या कह उठी—“जो आज होना है, वही कल होना है। फिर क्यों न एक चांस लिया जाये? मुमकिन है कामयाब हो ही जायें, जैसी कि ठकरियाल को उम्मीद है। न भी हो सके तो कम से कम ठकरियाल की नाराजगी तो मोल नहीं लेंगे जिसका हमें फायदा मिलेगा।”

“समझने की कोशिश करो दिव्या। यह आदमी यह सब इसलिये कह रहा है क्योंकि हमारे साथ काफी हद तक खुद भी फंस चुका है।” देवांश ने कहा—“हमारे इस वक्त सिरेन्डर कर देने का मतलब है—उस लेटर कसा सामने आ जाना जिसे मैं बबलू के कमरे में फेंककर आया हूँ। राजदान के नाम से उसे इसने लिखा है। सोचो—वह इसके अफसरों को बता देगा, बीमा कम्पनी की रकम हड़पने पर हम ही नहीं यह भी काम कर रहा था।”

“सोहल आने सही बात मिस्टर देवांश।” दिव्या के कुछ कहने से पहले खुद ठकरियाल कह उठा—“इस स्टेज पर तुम्हारा टूट जाना मेरे लिये भी मुसीबत का वायस बन जायेगा। इसलिये, तुम्हें टूटने नहीं दूंगा मैं। टूटे...तो मेरा चाहे जो हो, तुम्हें लम्बा लाद दूंगा। असल पूछो तो आब कदम वापस खींचने की स्टेज ही नहीं रही। बीच रास्ते पर हिम्मत हारने वाले मर भी सकते हैं और मंजिल को पा भी सकते हैं। मंजिल पने की कोशिश करने के अलावा अब हमारे पास कोई रास्ता नहीं है।”

दोनों चुप रहे गये।

चेहरे के भाव साफ बता रहे थे—वे कोई फैसला नहीं कर पा रहे हैं।

“बबलू आने वाला होगा।” चुप्पी का लाभ उठाते ठकरियाल ने अपनी रिस्टवॉच पर नजर डाली—“हमें उसके स्वागत की तैयारी कर लेनी चाहिये।”

दिव्या और देवांश अब भी कुछ न बोल सके।

उनकी परवाह किये बगैर ठकरियाल ने लाईट के स्वीच ऑफ करने शुरू कर दिये।

दिलो-दिमाग में तो पहले ही अंधेरा छा चुका था, कमरे में भी छा गया।



दरवाजा बहुत आहिस्ता से खटखटाया गया।

एक बार! दो बार!

तीसरी बार आवाज भी उभरी—“चाचू।”

आवाज बबलू की थी।

ठकरियाल के भद्दे होठों पर मुस्कान फैल गई। उसके जिस्म पर इस वक्त राजदान की वार्डरोब से निकला नाईट गाऊन था। सिर पर फैल्ट हैट। हैट के एक कोने ने चेहरे पर झुककर लगभग सारा ही चेहरा छुपा रखा था।

ठीक उस सोफा चेयर के ‘इधर’ एक आदमकद टेबल लैम्प रखा था जिस पर राजदान की लाश लुढ़की पड़ी थी। कमरे की सारी लाईट ऑफ थीं। केवल उस लैम्प के शीर्ष पर बहुत ही तेज रोशनी बाला बल्ब ऑन था। उसकी सारी रोशनी उधर पड़ रही थी जहां बैड था। चकाचौंध रोशनी के कारण बाथरूम के दरवाजे अथवा बैड की तरफ से लैम्प के पीछे का अर्थात् जहां लाश थी, वहां का दृश्य नहीं देखा जा सकता था।

ठकरियाल ने खुद बाथरूम के बंद दरवाजे के नजदीक ठिठककर लैम्प के पास देखने की कोशिश की। गहरे अंधकार के अलावा उस दिशा में कुछ नजर नहीं आ रहा था। जबकि वह जानता था—दिव्या और देवांश लैम्प के पीछे मौजूद हैं।

बल्ब का फोकस इसी दिशा में होने के कारण आंखें चुंधियां रही थीं।

उसने अपना हाथ आंखों के सामने अड़ाकर अर्थात् सीधी आंखों में घुसी जा रही प्रकाश किरणों से लड़ने की कोशिश करते हुए लैम्प के पीछे का दृश्य देखने का प्रयास किया।

कुछ ने देख सका वह। अंधकार ही अंधकार था।

अंधेरे में खड़े दिव्या और देवांश उसे साफ देख सकते थे।

इस बीच दूसरी तरफ से दरवाजा खटखटाने के साथ बबलू कई बार फुसफुसाकर ‘चाचू’ कह चुका था। संतुष्ट होने के बाद ठकरियाल ने दरवाजा खोला।

बबलू की आंखें बुरी तरह चुंधिया गईं। इस कदर कि वह केवल है देख सका—सामने कोई खड़ा है। चेहरा देखने का कोई साधन नहीं था उसके पास। अपना हाथ आंखों के सामने अड़ाने की कोशिश करते कहा—“ये क्या चाचू। इतनी तेज रोशनी क्यों कर रखी है कमरे में?”

ठकरियाल ने झपटकर उसका मुंह दबोच लिया। बहुत ही धीमे आवाज में फुसफुसाकर कहा—“जोर से मत बोल बबलू। आवाज उन तक पहुंच गई तो गजब हो जायेगा।”

बबलू मुंह आजाद करने के लिये कुलमुलाया।

ठकरियाल उसे उसी पोजीशन में, लगभग घसीटता हुआ बैड की तरफ ले गया। अपना हाथ मुंह से हटाने से पहले

फुसफुसाया—“इस वक्त हमें बातें कम, काम ज्यादा करना है।”

“चाचू।” मुंह आजाद होते ही बबलू ने कहा—“तुम्हारी आवाज को क्या हुआ?”

ठकरियाल ने आवजा बदलने की काफी कोशिश की थी। इसीलिये वह फुसफुसाकर बहुत ही आहिस्ता से बोल रहा था। बावजूद इसके, बबलू ने टोक ही दिया। ठकरियाल को उसी अंदाज में कहना पड़ा—“हल्का नजला-जुकाम है लेकिन बबलू, हमारे पास बेकार की बातों में गंवाने के लिये समय नहीं है। ये लो चाबी और जल्दी से पेन्टिंग के पीछे वाले लॉकर को खोलो।” कहने के साथ उसने जेब से चाबी निकालकर उसके हाथ में टूंस दी।

“लेकिन चाचू...

“प्लीज बबलू। जल्दी करो।” ठकरियाल ने उसे हैले से बैड की तरफ धकेला। थोड़ा-सा लड़खड़ाने के बाद बबलू सम्भला। ठकरियाल की तरफ देखने की असफल कोशिश की। असफल इसलिये क्योंकि खुद उसका चेहरा बल्ब के फोकस पर था और ठकरियाल की पीठ थी बल्ब की तरफ। इस बार फिर बबलू ने कुछ कहना चाहा परन्तु ठकरियाल ने इशारे से लॉकर खोलने के लिये कहा।

बबलू बैड पर चढ़ गया।

पेन्टिंग उतारकर बैड पर रखी।

चाबी लॉकर के ‘की हॉल’ में फंसाई। दराज जैसा लॉकर बाहर खींच लिया।

उसमें एक साईलेंसर युक्त रिवाल्वर और थोड़ा सा जेवर रखा था।

अभी बबलू यह सवाल करने हेतु पलटने ही वाला था ‘क्या करना है?’ कि ठकरियाल ने कहा—“जो भी है, सब निकाल ले।” बबलू ने वैसा ही किया।

“ला।” ठकरियाल ने दस्ताने युक्त हाथ फैलाते हुए कहा—“सब कुछ मुझे दे दे।”

बबलू ने पुनः हुकम का पालन किया।

बहुत सावधानी से रिवाल्वर को गाऊन की जेब में सरकाता ठकरियाल बोला—“लॉकर बंद करने के बाद पेन्टिंग टांग दे।”

बबलू ने वह भी कर दिया।

अब वह पलटकर ठकरियाल के नजदीक आया। ठकरियाल हर पल खुद को ऐसे कोण पर रखे था कि बबलू उसक पीछे अर्थात् वहां न देख सके जहां राजदान की लाश पड़ी थी।

देवांश और दिव्या थे। धड़कते दिल से वे सारे दृश्य को साफ देख रहे थे।

बैड से उतरकर बबलू ने कहा—“चाचू! तुम तो जासूसी सीरियल के रहस्यमय करेक्टर से नजर आ रहे हो। बातें भी वैसी ही कर रहे हो। चक्कर क्या है?”

“चक्कर सुबह समझाऊंगा। फिलहाल तू ये जेवर लेकर यहां से निकल जा।” कहने के साथ उसने सारे जेवर पुनः उसके हाथों में टूंस दिये।

“नहीं चाचू। मैं सुबह तक इंतजार नहीं कर सकता।” बबलू ने जिद की—“अभी बताओ क्या चक्कर है? कमरे में इतनी तेज रोशनी क्यों कर रखी है? क्यों मुझे लेटर लिखकर यहां बुलाया? वो कौन-था जिसने पेपरवेट मेरे कमरे में फैंका? मैंने खिड़की से उसे विला में कूदते देखा था।”

“चल! यह बता देता हूं। वह आफताब था। उसे मैंने ही भेजा था। मगर, माना नहीं तू शैतानी किये बगैर। मैंने लेटर में लिखा था—लेटर पहुंचाने वाले के बारे में जानने की कोशिश मत करना।”

“लेटर तो बाद में पढ़ चाचू। खिड़की पर तो मैं यह समझ में आते ही झपट पड़ा था कि किसी ने वहां से मेरे ऊपर कुछ फैंका है। उस वक्त वह इस कदर भागता हुआ विला में कूदा था जैसे ‘आहट’ में भूत से डरे लोग दौड़ा करते हैं।”

“लेटर कहां है?”

“ये रहा।” बबलू ने दिखाया। वह इस वक्त भी रबर बैण्ड के जरिये पेपरवेट पर लिपटा हुआ था।

“इसका काम खत्म हुआ।” कहता हुआ ठकरियाल ने पेपरवेट उसके हाथ से लेकर गाऊन की दूसरी जेब में सरका लिया।

“चक्कर तो समझाओ चाचू। क्यों कर रहे हो यह सब?”

“कह तो चुका हूं। पूरा चक्कर समझाने का टाईम नहीं है। इस वक्त बस इतना समझ ले—किसी ने मेरे विश्वास को धोखा देने की कोशिश की है। उसी को सबक सिखा रहा हूं।”

“किसने?”

“कहा न, सुबह बताऊंगा।”

बबलू ने आंखें तरेरकर कहा—“मगर मैं समझ गया।”

“क्या समझ गया?”

“वे देवांश अंकल और दिव्या आंटी हैं न?” बबलू कहता चला गया—“मैं पहले ही कहता था। जितना प्यार तुम उन्हें करते हो, उतना प्यार वे तुम्हें नहीं करते।”

“तू फिर बक-बक करने लगा। निकल यहां से बरना मेरे पूरे प्लान पर पानी फिर जायेगा। सुबह बात करेंगे। जेवर अपने पास रखना।” कहने के साथ उसने बबलू को बाथरूम के दरवाजे की तरफ धकेला।

बबलू ने पुनः कुछ कहने की कोशिश की।

ठकरियाल ने उसे यह कहते हुए बाथरूम में धकेलकर दरवाजा वापस बंद कर लिया कि सुबह उसे तब तक यहां नहीं आना है जब तक खुद वही न बुलाय।



फोन की घंटी बजी।

रिसीवर खुद एस. एस. पी. पुलिस ने उठाया। कहा—“रणवीर राणा हीयर।”

“जय हिन्द सर।” दूसरी तरफ से आवाज उभरी—“इंस्पेक्टर ठकरियाल बोल रहा हूं।”

“बोलो इंस्पेक्टर।”

“सर, आर. के. राजदान को तो आप जानते ही होंगे?”

“क्या तुम राजदान एसोसियेट्स के मालिक की बात कर रहे हो?”

“यस सर।”

“क्या कहना चाहते हो उनके बारे में?”

“थाने पर उनके भाई का फोन आया है। उन्होंने सुसाईड कर ली है।”

“क-क्या?” रणवीर राणा चौंक पड़ा।

“शहर के प्रतिष्ठित आदमी थे। इसलिये फोन किया। शायद आप वहां पहुंचना चाहें।”

“हम पहुंच रहे हैं। तुम इस वक्त कहां हो?”

“अभी थाने में ही हूं सर। बस निकलने ही वाला था।”

“ओ. के.। वहीं मिलते हैं।” कहने के बाद राणा ने रिसीवर रख दिया।



चारों तरफ पुलिस ही पुलिस नजर आ रही थी। उनमें हवलदार रामोतार भी था।

फोटोग्राफर अलग-अलग कोणों से लाश के फोटो ले रहा था। फिंगर प्रिन्ट्स डिपार्टमेंट के लोग अपना काम कर रहे थे।

लाश ज्यों की त्यों सोफा चैयर पर लुढ़की पड़ी थी। हाथों में साईलेंसर युक्त रिवाल्वर था। सेन्टर टेबल पर सिगार के टोटों से भरी एशट्रे। व्हिस्की की बोतल, आईस बैकेट, ड्राई फ्रूट्स की प्लेटें, सोड़े की बोतलें और वह गिलास जिसमें राजदान ने पी थी।

वे दोनों ऐस्सट्रॉ गिलास कहीं नजर नहीं आ रहे थे जो बता सकते थे राजदान किन्हीं और के साथ व्हिस्की पीने वाला था और न ही वह आदकमद लैम्प कमरे में कहीं था जिसके पार बबलू नहीं देख सका था।

दिव्या और देवांश आंखों में आंसू लिये एक कोने में खड़े थे।

आफताब और दीनू काका भी एक अन्य नौकर और भात्रगवंती के साथ वहीं थे।

एक बात—जो सबसे अलग थी, वह यह थी कि बैडरूम के मुख्य दरवाजे की चटकनी टूटी पड़ी थी जो गैलरी में खुलता था। साफ नजर आ रहा था—दरवाजे पर बाहर की तरफ से इतने धक्के मारे गये हैं कि बंद चटकनी टूट गई।

तब कहीं दरवाजा खुल सका।

राणा का पहला सवाल उसी से कनेक्टिड था। उसने पूछा—“लाश पर सबसे पहले किसकी नजर पड़ी? अर्थात् कमरे में पहले कौन आया?”

“आना तो मैं चाहती थी मगर न आ सकी।” दिव्या ने कहा।

“क्यों?”

“दरवाजा अंदर से बंद था।”

“फिर?”

“मैं चौक पड़ी। माथा तो उसी समय टनक गया था मेरा।”

“कारण?”

दिव्या ने उस सबको अपने दिमाग में व्यवस्थित किया जो ठकरियाल ने समझाया था और कहना शुरू कर दिया—“पिछले तीन महीने से ‘ये’ अपने बैडरूम का दरवाजा अंदर से बंद नहीं करते थे।”

“क्यों?”

“ताकि मैं रात के किसी भी वक्त आकर इनकी कुशल क्षेम देख जाऊं और ये डिस्टर्ब भी न हों।”

“ओह।”

“यह सिलसिला उसी दिन से शुरू हुआ था जिस दिन इन्होंने मुझसे अलग कमरे में सोने के लिए कहा। बोले थे—‘दिव्या, मुझे ऐसी-ऐसी बीमारियों ने घेर लिया है जो तुम्हें भी लग सकती हैं। मैं ऐसा हरगिज नहीं चाहता।’ मैंने भरपूर विरोध किया। ये जिद पर अड़ गये। उस वक्त मेरी एक न चली जब इन्होंने मुझे अपनी कसम दे दी। तब मैंने शर्त रखी—ठीक है, वही होगा जैसा आप चाहेंगे मगर मेरी भी एक शर्त है।’ इन्होंने पूछा—‘क्या? मैं दरवाजा अंदर से खुला रखने की शर्त रखी ताकि जब चाहूं, इनकी खैरियत के बारे में जान सकूं।’”

“यानी आप रात को इन्हें चेक करती रहती थी?”

“रोज तो नहीं लेकिन अक्सर चैक करती थी। आंख खुलने पर तो जरूर ही आती थी यहां। किसी रात आंख न खुलती तो नहीं भी आती थी और...पिछली रात उन्हीं मनहूस रातों में से एक थी।”

“आज सुबह आप किस वक्त सोकर उठीं?”

“सात बजे। तब, जब आफताब दीनू काका और भागवती ने बैल बजाई। अपने कमरे से निकलकर, मैंने सबसे पहले इनके लिए विला का मुख्य दरवाजा खोला। यह रोज का रूटीन है। नौकर लोग सुबह सात बजे ही विला में आते हैं। मैंने अपनी और राजदान साहाब की चाय बनाने के लिये कहा तथा इस कमरे की तरफ बढ़ गई। खोलने के लिये दरवाजे पर दबाव डाला तो चौंकी। यह अंदर से बंद था। मैं चकरा गई। दरवाजा खटखटाया। आवजें लगाईं। अंदर से कोई जवाब नहीं मिल रहा था। मैं घबरा गई। जोर-जोर से आवजें देने लगी। पीटने लगी दरवाजे को। शोर की आवज सुनकर किचन से आफताब आदि और अपने कमरे से हड़बड़ाये हुए देवांशा गैलरी में पहुंचे। मेरी प्रॉब्लम पूछी। ये लोग भी डर गये। मेरा साथ देने लगे। जब तब भी अंदर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो हम सबने दरवाजे पर प्रहार करने शुरू कर दिये। चटकनी टूट गई। दरवाजा स?खुला और इस दृश्य को देखते ही सबकी चींख निकल गई।”

“होश सम्भालने के बाद मैंने थाने फोन किया।” बात देवांश ने पूरी की।

“यानी खुद को गोली मारने से पहले इन्होंने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया था।”

कोई कुछ नहीं बोला।

राणा दिव्या और देवांश के नजदीक पहुंचा। बोला—“क्या तुम बता सकते हो, राजदान साहब ने ऐसा क्यों किया?”

“अपनी बीमारी से परेशान थे भैया।” देवांश ने वही कहना शुरू किया जो ठकरियाल ने पढ़ाया था—“शायद उसी से निजात पाने के लिये...”

सेन्टेन्स अधूरा छोड़कर वह रो पड़ा।

कुछ देर खामोश खड़ा रणवीर राणा उसे देखता रहा। फिर दिव्या की तरफ पलटकर सवाल किया—“बीमारी क्या थी राजदान साहब को?”

जवाब देने से पहले दिव्या उस वक्त ‘अटकने’ का नाटक कर रही थी जब भट्टाचार्य ने कमरे में कदम रखते हुए कहा—“एस. एस. पी. साहब, राजदान को एड्स था।”

“एड्स?” राणा चौंका। उधर, ठकरियाल ने भी अपने चेहरे पर ऐसे भाव आमंत्रित किये जैसे यह भेद अभी-अभी पता लगा हो। राणा ने भट्टाचार्य से पूछा—“आपका परिचय?”

“राजदान का डॉक्टर कम, दोस्त ज्यादा।” कहते वक्त उसने लाश की तरफ देखा।

चेहरे पर विषाद के भाव थे। बड़बड़ाया—“आखिर चला ही गया तू?”

“मेरे ख्याल से ज्यादा गहराई में जाने की जरूरत नहीं बची है सर।” ठकरियाल ने कहा—“सब कुछ शीशे की तरफ साफ है। ‘फ्रेश्वेशन’ में फंसे राजदान साहब ने...”

“एक मिनट!” राणा ने उसकी बात काटी—“एक मिनट इंसपेक्टर!” कहते वक्त राणा की नजर बाथरूम के दरवाजे के डंडाले पर स्थिर थी। वह आहिस्ता आहिस्ता उसकी तरफ बढ़ा। नजदीक पहुंचकर ठिठका और तेजी से पलटकर फिंगर प्रिन्ट्स एक्सपर्ट से कहा—“सारे काम छोड़कर सबसे पहले इस डंडाले पर से अंगुलियों के निशान उठाओ।”

“यस सर!” कहकर वह बाथरूम के दरवाजे की तरफ लपका।

किसी और की समझ में आ रहा हो या न आ रहा हो मगर ठकरियाल अच्छी तरह जानता था इस वक्त एस. एस. पी. के दिमाग में क्या घुमड़ रहा है?

वही!

ठीक वही हो रहा था जो वह चाहता था।

जिसके बीज उसने बोये थे।

जी चाहा—जोर से ठहाका लगाये।

दिल खोलकर हंसे।

मगर।

ऐसा किया नहीं उसने।

फिर भी, रोकने की भरसक चेष्टाओं के बावजूद एक धूर्त सी मुस्कान भदे होठों पर आखिर उभर ही आई। होठों ही होठों में वह उस मुस्कान को छुपाये रहा।

फिंगर प्रिन्ट्स एक्सपर्ट अपना काम कर रहा था।

राणा के एक साथ दिव्या, देवांश और नौकरों पर नजरें गड़ाकर कहा—“अच्छी तरह याद करके बताओ—जब तुम दरवाजा तोड़कर कमरे में आये, क्या तब भी यह डंडाला। इसी पोजीशन में था, छेड़ा तो नहीं था इसे किसी ने?”

“नहीं।” देवांश ने कहा।

आफताब बोला—“हममें से किसी को इतना होश ही कहां बचा था साब। साब की लाश पर नजर पड़ते ही घिग्घी बंध गई। हाथ-पांव कांपने लगे थे हमारे।”

फिंगर प्रिन्ट्स सक्सपर्ट अपना काम पूरा करके दरवाजे के नजदीक से हटा।

रणवीर राणा ने तब भी डंडाले को नहीं छुआ। अपने जूते के हल्के से प्रेशर से दरवाजा खोला। ड्रेसिंग में कदम रखने से पहले ठिठका और फिर किसी को भी अपने पीछे न आने की चेतावनी देने के बाद दरवाजे के पीछे गुम हो गया।

कमरे में खामोशी छाई रही।

दिव्या और देवांश ने चोर नजरों से ठकरियाल की तरफ देखा।

उसके होठों पर मुस्कान देखकर सकपका से गये दोनों।

क्या आदमी था कम्बख्त। जरा भी तो टेंशन में नजर नहीं आ रहा था।

यह सही है, अभी तक हर कदम पर सिर्फ और सिर्फ वही हो रहा था जिसके बारे में ठकरियाल पहले ही बता चुका था कि होगा एस. एस. पी. फलां-फलां सवाल पूछेगा और उन्हें ‘ये-ये’ जवाब देने हैं। बावजूद इसके यह सोचकर अंदर ही अंदर हिले हुए थे दोनों कि जाने किस स्पॉट पर क्या गड़बड़ हो जाये परन्तु ठकरियाल दूर-दूर तक ऐसी किसी टेंशन में नजर नहीं आ रहा था।



कुछ देर बाद रणवीर राणा ने वापस कमरे में कदम रखा।

उसके चेहरे पर वही चमक थी।...वही, जो ठकरियाल की प्लानिंग के मुताबिक उस क्षण उसके चेहरे पर होनी चाहिये थी। रणवीर राणा की मुस्कान साफ बता रही थी उसने कोई ‘तीर मार’ लिया है। ठकरियाल की तरफ देखते हुए उसने घोषणा कर दी—“राजदान साहब मे सुसाईड नहीं की।”

“ज-जी?” ठकरियाल ने अपने हलक से चीख निकाली।

रणवीर राणा ने धमाका करने वाले अंदाज में कहा—“इनका मर्डर किया गया है।”

“य-ये आप क्या कह रहे हैं सर?” ठकरियाल की एक्टिंग देखने लायक थी।

“सच यही है इंसपेक्टर।” राणा के चेहरे पर मौजूद भव साफ बता रहे थे वह ठकरियाल को ‘हैरान’ करके अंदर ही अंदर मारे खुशी के झूम रहा है—“काफी चालाकी से मर्डर किया है हत्यारे ने। ऐसे अंदाज में कि देखने पर आत्महत्या लगे और इसमें शक नहीं, पहली नजर में हम भी धोखा खा गये थे।”

ठकरियाल ने मन ही मन कहा—‘धोखा तो तू अब खा रहा है गधे के बच्चे। आई. पी. एस. की कक्षा पास कर लेने का ये मतलब नहीं हुआ की तू इंसपेक्टर ठकरियाल से ज्यादा ब्रिलियेंट हो गया। तुम जैसे जाने कितने ‘कप्तानों’ को पानी पिला चुका हूं मैं। तू सोच भी नहीं सकता, जिसे ‘तीर-अंदाजी’ समझ रहा है, वह तेरी कितनी बड़ी बेवकूफी है।’

मगर!

यह सब कहा नहीं उसने।

कह भी कैसे सकता था?

कहा, तो यूँ कहा—“कमाल कर रहे हैं सर आप। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। आखिर किस बेस पर मर्डर बता रहे हैं इस वारदात को?”

रणवरी राणा ने कुछ कहा नहीं मगर, होठों पर ऐसी मुस्कान को उभरने दिया जो कह रही थी—‘अभी तुम बच्चे हो इंस्पेक्टर।’ अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने की गर्ज से उसने कुछ देर और सस्पेंस बनाये रखने हेतु फोटोग्राफर और फिंगर प्रिन्ट्स सक्सपर्ट से कहा—“तुम लोग बाथरूम में जाओ। हाथ मत लगाना किसी चीज को। ड्रेसिंग और बाथरूम के बीच एक दरवाजा है। उसके हैंडिल से फिंगर प्रिन्ट्स लो। बाथरूम की लॉन की तरफ खुलने वाली खिड़की खुली पड़ी है। फोटो लो उसका। निशान उठाओ।”

वे दोनों ‘यस सर’ कहकर बाथरूम में चले गये।

दिव्या और देवांश हैरान नजर आ रहे थे। असल में वे इसलिये हैरान थे क्योंकि बाथरूम से बाहर आकर राणा ने थोड़े बहुत शाब्दिक हेरफेर के साथ बात ठीक वही कही थी जो ठकरियाल पहले ही बता चुका था, वह कहेगा जबकि राणा उनकी अवस्था देखकर इस खुशफहमी के कारण झूम रहा था कि वे भी, उसकी कार्यप्रणाली पर हैरान हैं।

भट्टाचार्य, आफताब, दीनू काका और भागवती आदि सचमुच इसी कारण चकित थे।

“मगर सर!” ठकरियाल राणा की ‘ईगो’ को तारा बनाकर आकाश की बुलन्दियों पर टांगने में लगा था—“आप आखिर ताड़ कैसे गये यह मर्डर है?”

“याद इंस्पेक्टर। राणा ने इस तरह कहना शुरू किया जैसे ट्रेनिंग के दरम्यान रंगरूटों को पढ़ा रहा हो—“अगर तुम्हें कमरे के अंदर कोई लाश ऐसी पोजीशन में मिले जिसे देखकर लगे मरने वाले ने आत्महत्या की है तो सबसे पहले यह देखो—कमरा हर तरफ से बंद है या नहीं क्योंकि सौ में से नब्बे आत्महत्या करने वाले खुद को कमरे में बंद करके मारते हैं। इस कमरे का मुख्य द्वार अंदर से बंद होन के कारण शुरू में हम धोखा खा गये मगर, कमरे की तरफ से खुले बाथरूम के दरवाजे पर नजर पड़ते ही माथा ठनका। ..और जब बाथरूम की लॉन में खुलने वाली खिड़की देखी तो पक्का हो गया, दाल में कुछ काला है। उसके बाद—हमने खिड़की की चौखट को ध्यान से देखा—वहां जूते का निशान मौजूद है। लॉन की मिट्टी लगी है।

जाहिर है, उस रास्ते से कोई आया है। किसी का आना और अंदर लाश का पड़ा होना स्पष्ट कर देता है, लाश चाहे जिस स्थिति में हो असल में वह मर्डर है।”

“लेकिन क्यों?” दिव्या चीख सी पड़ी—“कोई क्यों हत्या करेगा इनकी?”

“वही कारण तलाश जायेगा अब।” जाहिर है, इस वक्त राणा खुद को शरलॉक होम्स से कम नहीं समझ रहा था—“और यदि कारण पता लग जाये तो हत्यारे का पता लगने में कोई खास मुश्किल पेश नहीं आती।”

सब चुप रहे।

“क्यों इंस्पेक्टर, क्या तुम अब भी इसे आत्महत्या कह सकते हो?”

“सवाल ही नहीं उठता सर। अगर आपको यहां किसी के आने के चिन्ह मिले हैं तो सौ प्रतिशत मर्डर है। ऐसा मर्डर जिसे हत्यारा सुसाईड दिखाकर हमें भ्रमित करना चाहता था।”

“अब बोलो—क्या वजह जो सकती है इस हत्या की?”

“जब कोई अमीर आदमी मार दिया जाता है, वह चाहे जहां मरा हो। मुझे सबसे पहले उसकी मौत के पीछे दौलत नजर आती है।”

“मगर राजदान की आर्थिक स्थिति दयनीय थी।”

“मुमकिन है यह बात हत्यारे को पता न हो।”

“करेक्ट! इस बात में दम है।” कहने के बाद राणा दिव्या, देवांश की तरफ पलटा। सवाल किया—“ध्यान से देखकर बताओ, क्या कमरे से कोई कीमती वस्तु गायब है?”

“कीमती के नाम पर कुछ रह ही नहीं गया था हमारे पास।” देवांश ने कहा।

“केवल कुछ कहने हैं जिनकी कीमत तीन-चार लाख से ज्यादा नहीं होगी।” दिव्या बोली।

राणा ने पूछा—“कहां हैं वे?”

“वहां!” दिव्या ने पेंटिंग की तरफ अंगुली उठाई।

राणा सहित सबकी नजरें उस तरफ घूम गईं।

ठकरियाल ने कहा—“वहां कहां, वहां तो दीवार पर पेंटिंग टंगी है।”

“पेंटिंग के पीछे एक लॉकर है।”

“लॉकर?”

“एक मिनट।” कहने के बाद रणवीर राणा बैड की तरफ बढ़ा। उस पर बिछी चादर को ध्यान से देखने लगा। वह उसकी इस हरकत को देखकर एक बार फिर छुपी सी मुस्कान भट्टे होठों पर रेंगती चली गई। पेन्टिंग के ठीक नीचे बैडशीट पर राणा को जूतों के निशान नजर आये। वह अपने दायें हाथ का घूंसा बहुत जोर से बायीं हथेली पर मारता दिव्या की तरफ पलटकर कह उठा—“हमारा दावा है मिसेज राजदान, तुम्हारे जेवर इस वक्त लॉकर में नहीं है।”

“क-क्या? क-क्या कह रहे हैं आप?” दिव्या ने मुंह से ऐसी चीख निकाली जैसे उसकी जान ही निकल गई हो—“व-वो न हुए तो तबाह हो जायेंगे हम। वह हमारी आखिरी पूंजी है।”

वह बाकायदा विलाप करने लगी थी। पर जरा भी ध्यान दिये बगैर ठकरियाल ने रणवीर राणा को ‘टुंडे’ पर चढ़ाये रखने का अभियान जारी रखे कहा—“कमाल कर रहे हैं सर आप लॉकर अभी खुला नहीं है बल्कि अभी तो पेन्टिंग भी अपनी जगह है और...आपने जेवर गायब होने की घोषणा कर दी।...आखिर कैसे?”

“वह बाद में बतायेंगे। पहले यह देखो, हमारे दावे में कितना दम है?” कहने बाद रणवीर राणा ने फिंगर प्रिन्ट्स एक्सपर्ट और फोटोग्राफर को हुक्म देने शुरू किये।

उनके हुक्म पर मुकम्मल फोटोग्राफी, पेन्टिंग और लॉकर के हैंडिल आदि से अंगुलियों के निशान लेने के बाद लॉकर खोला गया। वह खाली मिलना था, सो मिला।

दिव्या ‘लुट गई’—‘बरबाद हो गई’ का राग अलापती रही जबकि रणवीर राणा ठकरियाल की तरफ ऐसी नजरों से देख रहा था जैसे जादूगर अपने हाथों से कबूतर गायब करके ‘हैरान’ दर्शकों की तरफ देखता है। ठकरियाल भी अपने फेस पर उन्हीं भावों को चिपकाये था जैसे अभी-अभी कोई चमत्कारी खेल देखा हो। उसने वही कहा जो राणा सुनना चाहता था—“ये तो चमत्कार हो गया सर, करिश्मा हो गया। हैरत की बात लॉकर का खाली होना नहीं बल्कि...आपके द्वारा पहले ही उसके खाली होने की घोषणा कर देना है।...यह चमत्कार कैसे कर सके आप?”

“कोई खास बात नहीं है।” खुद को और ज्यादा श्रेष्ठ दर्शाया राणा ने—“यदि तुम भी ध्यान से बैड पर बिछी चादर को देखते तो यह चमत्कारिक घोषणा कर सकते थे। लॉकर खाली करने के लिए हत्यारे को जहां खड़ा होना जरूरी था वहां अब भी, जूतों के निशान हैं। उसी मिट्टी वाले जैसे बाथरूम की खिड़की पर हैं। जाहिर है—यहां पहुंचने के बाद हत्यारे ने लॉकर में एक छल्ला भी नहीं छोड़ा होगा।”

“सचमुच सर। आपके द्वारा डिटेल बताई जाने के बाद सब कुछ समझ जाना कितना आसान लगता है।”

“अब हमें यह पता लगाना होगा, इस लॉकर तक किसकी पहुंच थी?”

देवांश की नजरें आफताब पर जम गईं।

“नहीं साब।” उसकी नजरों का अर्थ समझते ही आफताब उर गया। गिड़गिड़ा उठा वह—“मेरा इस वारदात से कोई मतलब नहीं है।”

देवांश कुछ बोला नहीं, केवल घूरता रहा उसे।

राणा ने कहा—“मतलब क्या हुआ इस बात का? अभी तो देवांश ने कुछ कहा भी नहीं है, फिर तुम इतने घबरा क्यों गये?”

“छ-छोटे साब मुझे घूर ही कुछ ऐसे अंदाज में रहे हैं।” आफताब के होश उड़े हुए थे—“म-मगर साब, खुदा की कसम मैंने कुछ नहीं किया।”

“यह सफाई तुम दे क्यों रहे हो?” रणवीर राणा गुर्गया।

आफताब तब तक हकला ही रहा था जब देवांश ने कहा—“यह लॉकर के बारे में जानता था।”

“ओह।” रणवीर राणा की आंखें सुकड़ गईं।

इस एहसास ने आफताब की हालत खराब कर दी थी कि वे सब उस पर शक कर रहे हैं। और उस वक्त तो घिग्घी ही बंध गई जब ठकरियाल ने झपटकर उसकी कलाई पकड़ने के साथ कहा—“इधर आओ।”

वह उसे घसीटता हुआ बैड के नजदीक ले गया।

खौफ का मारा आफताब जाने क्या-क्या कहना चाहता था मगर स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं कह पा रहा था। बड़ी ही अनाप-शनाप आवाजें निकल रही थीं उसके मुंह से।

ठकरियाल ने एक बार बैडशीट पर बने जूते के निशानों को देखा, फिर आफताब के पैरों को। यही क्रिया दोहराने के बाद आफताब का हाथ छोड़ दिया उसने। रणवीर राणा की तरफ पलटकर बोला—“सर, परमीशन दें तो एक छोटा सा पटाखा मैं भी फोड़ दूँ।”

“हां-हां।...क्यों नहीं इंसपेक्टर।”

“हत्यारा और चाहे जो हो मगर आफताब नहीं है।”

“बेस?”

“बैडशीट पर बने निशान और आफताब के पैरों में जमीन-आसमान का फर्क है। इसके पैरों में दस नम्बर का जूता आना चाहिये जबकि निशान सात नम्बर जूते से ऊपर का नहीं।”

“करेक्ट। एकदम करेक्ट इन्स्पेक्टर।” राणा ने आफताब के पैरों का मिलान बैडशीट पर बने निशान से करने के साथ कहा—“हम तुमसे सहमत हैं और...खुशी हुई, इन्वेस्टीगेशन करने की कला से तुम भी वाकिफ हो।”

आफताब की हालत ऐसी थी जैसे हजारों फुट गहरी खाई में गिरने से बाल-बाल बचा हो। जरा सी देर में, सुबह के वक्त उसे इस बंद कमरे में तारे नजर आ गये थे।

दिव्या ने जब आफताब की बरी होते देखा तो चीख पड़ी—“मगर यह सब इसने नहीं किया तो जरूर बबलू ने किया है। देवांश... हम लोग के अलावा केवल वहीं है जिसे लॉकर के बारे में मालूम हैं हमें पहले ही शक था, वह कभी न कभी ऐसा कुछ जरूर करेगा। मुझे पूरा विश्वास है, उसी कंगले ने किया है सब कुछ।”

देवांश यूँ खड़ा था जैसे कोई फैसला न कर पा रहा हो।

ठकरियाल इसलिये खामोश था क्योंकि यहां से वह ‘कमान’ पुनः रणवीर राणा को सौंपनी चाहता था। वही हुआ, जैसी उम्मीद थी, राणा ने पूछा—“कौन है ये बबलू?”

“विला के सामने सड़क के उस पार जो तीन मंजिला फ्लैट बने हुये हैं—बबलू उन्हीं में से एक में रहता है।” देवांश ने नाप तोलकर वहीं बोलना शुरू किया जो पहले से निर्धारित था—“भैया से, जरूरत से कुछ ज्यादा ही घुटती थी उसकी। ऐसा क्यों था, हजार कोशिशों के बावजूद हम जान नहीं पाये। वह अक्सर भैया के पास आ जाया करता था। इसीलिए, पेन्टिंग के पीछे छुपे लॉकर की जानकारी भी थी उसे। मुझे और दिव्या को उस लड़के की नीयत कभी ठीक नहीं लगी। लालची किस्म का सा है। कई बार भैया को समझाने की कोशिश की मगर...”

“नहीं।” उसकी बात काटकर भट्टाचार्य कह उठा—“वह लड़का ऐसा नहीं कर सकता।”

“क्यों डाक्टर साहब?” ठकरियाल को हस्तक्षेप करना जरूरी लगा—“आपका ऐसा ख्याल क्यों है?”

“क्योंकि मैं उस लड़के को जानता हूँ। कई बार यहां मिला है वह हमेशा राजदान की सेवा करते ही पाया और राजदान भी उसे.

..

“क्यों?” देवांश ने टोका—“क्यों करता था वह भैया की इतनी सेवा?”

“अरे भई तुम्हें हो क्या गया है देवांश? राजदान से प्यार करता था वह। उसके द्वारा की जाने वाली सेवा की और भला क्या वजह हो सकती है?”

“असली वजह आप नहीं, हम जानते हैं भाई साहब।” दिव्या ने कहा।

हैरान भट्टाचार्य बोला—“कम से कम मैं तो कोई और वजह नहीं समझता।”

“वजह थी भाई साहब। उसे इनसे पैसों का लालच रहता था।”

“मैं उस लड़के के बारे में ऐसा सोच भी नहीं सकता।”

“एकाध बार ये आपको इनके हाथ-पैर दबाता मिल गया, इससे ज्यादा उसके बारे में जानते ही क्या हैं?” दिव्या समझ चुकी थी, झूठ-सच बोलकर भट्टाचार्य को कमजोर करना जरूरी है। इसी मिशन को अंजाम देने हेतु कहती चली गई—“जानते तो हम हैं। हम। मैं और देवांश। कई बार हमने उसे ‘इनसे’ पैसे मांगते देखा है। कभी फीस के बहाने, कभी मां की बीमारी के बहाने तो कभी किसी और बहाने से।”

राणा ने पूछा—“क्या राजदान साहब उसे पैसे दे भी दिया करते थे?”

“अक्सर।” देवांश ने कहा।

भट्टाचार्य बोला—“मुझे तो कभी वह ऐसा नहीं लगा।”

“मिसेज राजदान कह रही हैं तो ठीक ही कह रही होंगी। भला क्या जरूरत है इन्हें झूठ बोलने की?” ठकरियाल ने फाईनल स्ट्रोक मारा—“जरूर वह राजदान साहब की सेवा के बदले इन्हें सेन्टीमेन्टल करके पैसे लेता रहता होगा। इस उम्र के लड़कों के खर्च आजकल आसमान छू रहे हैं। और...यह बात भी अपनी जगह दुरुस्त है—एकाध मुलाकत में किसी को नहीं जाना जा सकता। जान तो वही सकता है—जिसने अक्सर झेला हो। फिर भी यह कोड़ी जरा दूर की लगती है कि यह काम उसने किया होगा। परन्तु अगर मिसेज राजदान और मिस्टर देवांश किसी पर संदेह व्यक्त कर हैं तो उसे चौक रहे हैं तो उसे चौक करना जरूरी है।...क्यों सर?”

“बुराई कुछ नहीं है चौक करने में।” रणवीर राणा ने कहा—“दूध का दूध पानी का पानी हो जायेगा।”



ठकरियाल ने अपने रूल से बंद दरवाजे पर दस्तक दी।
 रामोतार सहित चार-पांच पुलिस वालों के अलावा उसके साथ रणवीर राणा, दिव्या, देवांश और भट्टाचार्य भी थे। मुश्किल से आधे मिनट बाद दरवाजा खुला।
 दरवाजा खोलने वाले की उम्र करीब चालीस वर्ष थी।
 वह 'आई साइड' लगाये हुए था।
 सुबह-सुबह अपने दरवाजे पर पुलिस को देखकर चेहरे पर वैसे ही भाव उभरे जैसे ऐसा दृश्य देखकर किसी भी शरीफ आदमी के चेहरे पर उभरेंगे।
 "कहिये!" उसने चश्मा दुरुस्त किया।
 ठकरियाल ने कड़क लहजे में पूछा—"आपका नाम?"
 "स-सत्य प्रकाश।" आवाज कांप रही थी।
 "बबलू आप ही का लड़का है?"
 "ज-जी।" सत्य प्रकाश हकला उठा—"क-क्या किया है उसने?"
 "तभी, अंदर कहीं से किसी महिला की आवाज उभरी—कौन आया है?"
 सत्य प्रकाश जवाब न दे सका।
 तब तक वह भी, जो सत्य प्रकाश की पत्नी और बबलू की मां थी, दरवाजे पहुंच चुकी थी। पुलिस को देखकर उसका मुंह भी खुला का खुला रह गया।
 बड़ी मुश्किल से पूछा सकी—"अ-आप लोग?...आप लोग हमारे घर क्यों आये हैं?"
 "सुजाता, ये बबलू के बारे में पूछ रहे हैं।" सत्य प्रकाश ने कहा।
 सुजाता के पैरों तले से मानो धरती खिसक गई। मुंह से निकला—"ब-बबलू के बारे में?"
 "कहां है वह?" ठकरियाल के लहजे में पुलिसिया ठसक थी।
 "क-कुछ बताइये तो सही। आखिर बात क्या है? क्यों पूछ रहे हैं आप लोग बबलू को?"
 अचानक ठकरियाल सत्य प्रकाश को जोरदार धक्का देता गुराया—"बार-बार एक ही सवाल किये जा रहा है साले। वह नहीं बताता जो हम पूछ रहे हैं।"
 सत्य प्रकाश पीछे खड़ी सुजाता से नहीं टकरा गया होता तो यकीनन फर्श पर गिर जाता। चश्मा तो नाक से कूदकर गिर ही चुका था। सुजाता ने सत्य प्रकाश को सम्भालते हुए कहा—"अरे-अरे! ये क्या कर रहे हैं आप? कम से कम पेश तो तमीज से आईये।"
 एस. एस. पी. फिर भी एस. एस. पी. था। सो, थोड़े नम्र स्वर में बोला—"सवाल करने की जगह अगर आप सीधे-सीधे बतायें बबलू कहां है तो बेहतर होगा।"
 "सो रहा है।" सुजाता ने कहा।
 "कहां?"
 "अंदर वाले कमरे में।"
 "हमें उससे मिलना है।"
 "ल-लेकिन क्यों?"
 ठकरियाल गुराया—"फिर सवाल किया तुमने?"
 "देखिये एस. एस. पी. साहब।" सत्य प्रकाश ने कहा—"हम शरीफ लोग हैं। बेटा भी ऐसा नहीं है जैसे पुलिस दूँढती फिरे 'इसलिये हैरान हैं। बबलू ने ऐसा क्या कर दिया है जो आप लोग..."
 "उसने क्या किया है, कुछ भी है या नहीं—कुछ देर बाद खुद पता लग जायेगा।" राणा ने कहा—"हमें एक हत्या और लूट के मामले में उससे पूछताछ करनी है। प्लीज, रास्ते से हट जायें।"
 "हत्या और लूट!" सत्य प्रकाश के हलक से चीख निकल गई—"भला इस सबसे बबलू का क्या वास्ता?"
 "ये इस तरह नहीं मानेंगे सर।" ठकरियाल ने राणा से कहने के बाद सिपाहियों से कहा—"पकड़ लो इन्हें!"
 हुक्म की देर थी।
 दो पुलिस वालों ने झपटकर सत्य प्रकाश को दबोच लिया, दो ने सुजाता को।
 ठकरियाल ने कदम दरवाजे के पार रखा। फर्श पर पड़ा चश्मा भारी बूट के नीचे दबा और चरमराकर टूट गया। राणा सहित बाकी लोग उसके पीछे थे।
 सत्य प्रकाश और सुजाता चीखने-चिल्लाने से ज्यादा कुछ न कर सके।

अंदर वाले कमरे के दरवाजे को ठकरियाल ने इतनी बेरहमी से खोला कि 'धाड़' की जोरदार आवाज हुई। उस आवाज ने बैड पर सोये पड़े बबलू को हड़बड़ाकर उठा दिया। पुलिस के साथ देवांश, दिव्या और भट्टाचार्य भी थे।

उन सबको देखकर बबलू के गुलाबी होठों पर वैसी मुस्कान उभरी जैसी खेल में जीतने वाले खिलाड़ी के होठों पर उभरती है। परन्तु सिर्फ एक पल के लिए। अगले पल वह अपने चेहरे पर हैरानी के भावों को आमंत्रित कर चुका था। बोला—“क्या हुआ अंकल? आप, आंटी और डॉक्टर अंकल मेरे घर पुलिस के साथ?”

ठकरियाल गुराया—“हमें तुमसे कुछ पूछना है।”

“कुछ पूछने की जरूरत नहीं रह गई है इस्पैक्टर।” कहने के साथ रणवीर राणा ने बैड के नजदीक फर्श पर रखे बबलू के जूते उठा लिये।

सात नम्बर के थे वे।

तलों पर विला को लॉन की मिट्टी लगी थी।

दिव्या, देवांश और ठकरियाल तो जानपते ही थे ये सब होना है।

आश्चर्य हुआ तो सिर्फ भट्टाचार्य को।

आश्चर्य भी गहन।

ऐसा...कि सबकुछ सामने होने के बावजूद विश्वास नहीं कर पा रहा था।

दिल गवाही नहीं दे रहा था कि ऐसा भी हो सकता है।

बबलू...और राजदान का हत्यारा?

लुटेरा?

नामुमकिन।

परन्तु।

सुबूत सामने थां

सुबूत भी अकाट्य।

उन्हीं जूतों के निशान उसने खुद बैड शीट पर साफ-साफ देखे थे।

“मैंने कहा था न एस. एस. पी. साहब।” दिव्या ने पूर्व निर्धारित नाटक शुरू कर दिया—“यही है मेरे सुहाग का हत्यारा। इसी ने उड़ाई है मेरी मांग में खाक।” कहने के साथ उसने झपटकर दोनों हाथों से बबलू का गिरेबान पकड़ा और उसे झंझोड़ती हुई हिस्टीरियाई अंदाज में चीख पड़ी—“बोल, बोल कमीने! क्यों किया ऐसा? अरे, अगर तुझे दौलत की ही भूख थी तो मुझसे कहता। अपना छल्ला-छल्ला मुंह पर फैंक मारती तेरे। कम से कम सुहाग तो बचा रहता मेरा।”

इसी किस्म की जाने कितनी बातें चीखती चली गई वह।

देवांश और भट्टाचार्य उसे बबलू से अलग करने की चेष्टा कर रहे थे। कामयाब तो हुए लेकिन वे ही जानते थे, कितनी जिद्दोजहद करनी पड़ी। चीचड़ी की मानिन्द चिपट गई थी वह उससे।

अलग होने के बाद भी जाने क्या-क्या चीखती-चिल्लाती रही। उसकी हालत देखकर बबलू के गुलाबी और मासूम होठों पर पुनः चमकदार मुस्कार ने उभरने की कोशिश की।

बड़ी ही दिलचस्प और रहस्यमय मुस्कान थी वह।

परन्तु।

बबलू ने तुरन्त ही उसे अपने होठों में भींच लिया।

जैसे डर गया हो, कहीं कोई उसकी मुस्कान को देख न ले।

चेहरे पर चौंकने और हैरत के भाव पैदा कर लिय। चीख पड़ा वह—“आखिर बात क्या है? हो क्या गया है आंटी को? क्यों मुझे अपने सुहाग का हत्यारा...सुहाग का हत्यारा?...क्या चाचू को किसी ने...नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।”

“ऐसा हो चुका है बेटे।”...ठकरियाल ने झपटकर उसके बाल पकड़े, दांत भींचकर गुराया—“और करने वाले हो तुम। अब कोई फायदा नहीं नाटक से। हम सब जान चुके हैं।”

“क्या बात कर रहे हो इस्पैक्टर अंकल? मैं भला चाचू को...क्या सचमुच मेरे चाचू को किसी ने...

ठकरियाल उसकी बात काटकर गुराया—“ज्यादा चूँ-चपड़ की तो भूसा भर दूंगा खाल में।”

बबलू कुछ नहीं बोला, मासूम आंखों में दिलचस्प भाव लिये केवल देखता रहा उसे।

“तलाशी लो कमरे की!” रणवीर राणा ने कहा।

रामोतार और ठकरियाल तलाशी में जुट गये। दो पुलिस वाले सत्य प्रकाश को जकड़े थे, दो सुजाता को। सुजाता और सत्य प्रकाश

की हालत ऐसी थी जैसे स्वपन देख रहे हो।

दिव्या रोये चली जा रही थी।

देवांश बबलू को इस तरह घूर रहा था जैसे कच्चा चबा जायेगा।

और तब, जब रामोतार ने बबलू के स्कूल बैग से दिव्यो क गहने बरामद कर लिये।

सत्य प्रकाश और दिव्या की आंखें फटी की फटी रह गईं।

जेवर हाथ में लिये ठकरियाल बबलू के नजदीक पहुंचा। एक-एक शब्द को चबाते हुए कहा उसने—“क्या अब भी तुझे कुछ कहना है? अब भी करेगा कोई नाटक?”

बबलू चुप रहा।

“बोलता क्यों नहीं?” अचानक सत्य प्रकाश ज्वालामुखी की मानिन्द फट पड़ा—“क्या है ये सब? कहां से आ गये ये गहने तेरे स्कूल बैग में?”

बबलू अब भी चुप रहा।

“छोड़ दो।...छोड़ दो हमें।” दहाड़ने के साथ सत्य प्रकाश में जाने इतनी ताकत कहां से आ गई कि एक ही झटके में उसे जकड़े दोनों पुलिसिये अपनी-अपनी दिशाओं में जा गिरे।

झपटकर दोनों हाथों से बबलू का गिरवान पकड़ लिया। उसे झंझोड़ता हुआ दांत भींचकर गुराया—“बोल...बोल...कहां से आये ये जेवर तुझ पर?”

बबलू ने केवल इतना कहा—“सॉरी पापा।”

“ले चलो इसे।” राणा ने उसे जोर से ठकरियाल की तरफ धकेलते हुए कहा—“थाने में बतायेगा हकीकत।”

ठकरियाल ने इस तरह उसके बाल जकड़ लिये जैसे छोड़ते ही भाग जाने का खतरा हो।

मगर।

दिमाग उलझकर रह गया था उसका।

कारण था—बबलू का उस बारे में कुछ भी न कहना जो रात ‘वास्तव’ में उसके साथ हुआ था। उसे कहना चाहिये थे—‘मुझे एक लेटर के जरिये विला में राजदान ने बुलाया था। उन्होंने ही दिये थे ये जेवर।’ यही जवाब तो थे उसके पास। हालांकि ठकरियाल ने इस सबकी काट सोच रखी थी परन्तु उस पट्टे ने तो ऐसा कुछ कहा ही नहीं।

वह नहीं कहा जो स्वाभाविक रूप से उसके द्वारा कहा जाना चाहिये था।

जो उसे बचा सकता था।

क्यों?

क्यों नहीं कह रहा था बबलू ऐसा कुछ?

यह सवाल ठकरियाल के दिमाग में बुरी तरह अटककर रह गया।

ठीक यही क्षण था जब नन्हें शैतान ने बहुत धीमे से ठकरियाल के कान में कहा—“मुझे गिरफ्तार करके तुम अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल कर चुके हो इसपैक्कर अंकल।”

ठकरियाल के दिमाग की सारी की सारी नसें झनझना उठीं।



“चेयर्स।” दिन क कराब दो बजे दिव्या और देवांश के जाम टकराये।

राजदान की लाश पोस्टमार्टम के लिए ले जाई जा चुकी थी।

इस वक्त वे देवांश क कमरे में थे।

बेहद खुश।

दिव्या ने अपने हाथ में मौजूद जाम देवांश के होठों की तरफ बढ़ाया, देवांश ने दिव्या की तरफ।

दोनों ने एक-एक घूंट भरा।

हाथ वापस खिंचे।

दिव्या ने एक सिगरेट सुलगाने के बाद धुवें का गुब्बार देवांश के चेहरे पर मारने के साथ कहा—“देखा देव, बेकार ही जरूरत से ज्यादा डर रहे थे तुम। सब कुछ कितनी आसानी से निपट गया। उसके मां-बाप तक को मानना पड़ा, हत्यारा वही है।”

“हमारे को तो किसी हालत में नहीं हो सकता था यह सब।” देवांश ने भी एक सिगरेट सुलगा ली—“सारा चक्कर ठकरियाल का

है। कदम-कदम पर वही हुआ जो वह हमें पहले ही बता चुका था। खुद को पीछे रखकर, सारा केस एस. एस. पी. से खुलवाया उसने।”

“वाकई। ठकरियाल ऐसे मामलों में खेला-खाया है।”

“इस सबके बावजूद, मुझे अभी-भी उस फोटो की चिंता सताये जा रही है।” देवांश ने कहा—“पता नहीं किसने खींचा था उसे। वह अकेला फोटो हमारी अब तक की मुकम्मल कामयाबी पर पानी फेर सकता है।”

“मुझे पूरा विश्वास है, इस झमेले कोभी सम्भाले लेगा ठकरियाल।” दिव्या कहती चली गई—“ऐसा विश्वास मुझे इसलिये है क्योंकि सचमुच अब यह मिशन हमारा कम, ठकरियाल का ज्यादा बन गया है। बीमे की रकम ने आंखें चौंधिया दी हैं उसकी। अब कहीं भी, किसी भी किस्म की गड़बड़ होना मतलब है—हमारे साथ-साथ ठकरियाल का भी जेल पहुंच जाना और...ऐसा वह हरगिज नहीं होने देगा। उसके साथे मैं हम सुरक्षित हैं।”

देवांश ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि कमरे के ढुके हुए दरवाजे पर दस्तक हुई।

“कौन है?” देवांश ने अक्खड़ स्वर में पूछा।

बाहर से आफताब की आवाज आई—“मैं हूं मालिक।”

“क्या बात है?”

“डाकिया आपके नाम एक खत दे गया है।”

“खत।...मेरे नाम?” देवांश बड़बड़ाया—“मुझे किसने खत लिख दिया?”

दिव्या ने जल्दी से दोनों गिलास सोफे के पीछे छुपाये। उस वक्त वह अपनी सिगरेट एशट्रे में मसल रही थी जब हौले से हंसते हुए देवांश ने कहा—“अब क्या जरूरत है इस सबकी? वह है ही नहीं जिससे आफताब शिकायत कर सकता था।”

“फिर भी, अभी हमारे सम्बन्धों का किसी के सामने आना ठीक नहीं है।”

(यहां मैं अर्थात् वेद प्रकाश शर्मा एक छोटी सी बात स्पष्ट करने के साथ पाठकों से माफी मांगना चाहता हूं।...‘कातिल हो तो ऐसा’ के अंतिम पृष्ठों में ‘शाकाहारी खंजर’ के दो दृश्य दिये गये थे। पहला, बबलू की गिरफ्तारी का और दूसरा वह, जिसे इस वक्त पढ़ रहे हैं। दोनों ही दृश्यों में चेंज है। अर्थात्—कुछ बातें जो उन दृश्यों में थी, इन दृश्यों में नहीं हैं और कुछ बातें जो इन दृश्यों में हैं, उनमें नहीं थीं। फिर भी करीब-करीब मतलब एक ही है। जो भी चेंज हैं वे, वे हैं जो कथानक को विस्तार से लिखने पर स्वाभाविक रूप से ‘प्रकट’ होते हैं। अतः उलझें नहीं, कथानक का असली हिस्सा ये ही सीन हैं—जिन्हें आप इस वक्त पढ़ रहे हैं। यदि इस सबके कारण आपको कोई असुविधा हुई तो उसके लिये मैं क्षमा चाहता हूं।—आपका वेद प्रकाश शर्मा)

“मैं क्या करूं साब?” बाहर से आफताब ने पूछा।

देवांश ने कहा—“आजा।”

दरवाजा खुला।

आफताब नजर आया।

उसके हाथ में एक रजिस्टर्ड लेटर था।

मातमी चेहरा बनाये देवांश ने लेटर लिया।

उधर, दिव्या भी यूं खी थी जैसे मारे गम के बुरा हाल हो।

आफताब ने दोनों पर एक-एक नजर डाली और लेटर देने के बाद बगैर कुछ कहे कमरे से लचा गया। उसके जाते ही दिव्या के जिस्म में मानो बिजली भर गई। झपटकर सोफे के पीछे रखे दोनों गिलास वापस उठाये। एक खुद सम्भाला, दूसरा देवांश को देती बोली—“किसका लेटर है?”

तब तक देवांश लिफाफा फाड़कर लेटर निकाल चुका था।

तहें खोलते ही चौंक पड़ा वह। मुंह से निकला—“यह तो राजदान का है।”

“राजदान का?” कहने के साथ दिव्या देवांश के हाथ में मौजूद लेटर पर झुक गई।

राजदान के लेटर पैड का कागज था वह।

राईटिंग भी राजदान की ही थी।

देवांश के एक हाथ में लेटर था, दूसरे में व्हिस्की का गिलास।

दोनों हाथ जूड़ी के मरीज के हाथों की मानिन्द कांप रहे थे।

उसने सबसे ऊपर लिखी तारीख पढ़ते हुए कहा—“यह लेटर उसने अट्टाईस अगस्त को लिखा था।”

“ल-लिखा क्या है?”

देवांश ने पढ़ना शुरू किया—

“छोटे!

मैं अच्छी तरह जान चुका हूँ तुम दोनों कितने हरामजादे हो।

उन्तीस तारीख की रात मैं मैं जो करने वाला हूँ, उसके बाद पांच करोड़ की खातिर जो तुम करोगे—उसे मैं आज ही अच्छी तरह जानता हूँ। मेरा दावा है—मेरी हत्या के इल्जाम मैं तुम बबलू को फंसाओगे। और बच्चे, यदि तुमने ऐसा किया तो समझ लो—मेरे जाल में पूरी तरह जकड़ने जा चुको हो। याद रहे, मैं वो खंजर बन चुका हूँ जो तुम्हें मरने नहीं देगा बल्कि...खून का एक कतरा भी नहीं बहने देगा तुम्हारे जिस्मों से। तुम्हारा खून ही बहाना होता—मार ही डालना होता तुम्हें, तो मरे पास बहुत रास्ते थे मगर मुझे तो तुम्हारी जिन्दगी की ही मौत बना देना है खून की एक भी बूंद बहाये बगैर तुमहें तड़पा-तड़पाकर मार डालना ही मेरा मकसद है और तुम देखोगे, मरने के बाद बहुत ही खूबसूरती से अंजाम दूंगा मैं अपने मिशन को।

तुम्हारा राजदान।”

पूरा पत्र पढ़ते ही देवांश की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। गिलास, हाथ से फिसला। सेन्टर टेबल पर गिरा और चकनाचूर हो गया। उधर, दिव्या पूरी की पूरी यूँ चकराई थी जैसे किसी ने कनपटी की उस नस पर कराट मारी हो जिस पर चोट लगते ही इंसान बेहोशी के गर्त में डूबता चला जाता है।

‘धाड़ से’ कमरे में बिछे कीमती कालीन पर जा गिरी वह।



“हां! मैं कुबूल करता हूँ।” बबलू ने कहा—“मैंने ही मारा है चाचू को।”

ऐसा सुनकर ठकरियाल को अपनी खोपड़ी ‘भक्क’ से उड़ गई महसूस हुई।

यक विस्फोटक सवाल बड़े ही जबरदस्त धमाके के साथ उसके जहन के परखच्चे उड़ा गया कि जो बबलू ने किया नहीं, उसे वह कुबूल क्यों कर रहा है?

करने को तो पुलिस टॉर्चर रूम में बड़े से बड़ा अपराधी भी वह कुबूल कर लेता है जो उसने न किया हो मगर तब, जब उसे ‘हवाई जहाज’ बना दिया जाये। तब, जब मार से बचने के लिए उसके पास कोई चारा न बचे।

परन्तु।

बबलू को तो अभी तक एक चांटा भी नहीं मारा गया था।

हाथ तक नहीं लगाया गया था उसे।

बस पहला ही सवाल किया था रणवीर राणा ने। यह कि—“अब बोलो, हकीकत क्या है?”...जवाब मैं बबलू ने उपरोक्त वाक्य कह दिया।

ठकरियाल ने बुरी तरह चौंककर बबलू कील तरफ देखा था। और...उस वक्त तो उसके होश ही फाख्ता हो गये जब बबलू के गुलाबी होठों पर एक खास मुस्कान चिपकी देखी। वह मुस्कान ऐसी थी जैसे ठकरियाल से पूछ रही हो—‘कहो, कैसी रही?’

बबलू की नीली आंखों में मौजूद चमक साफ बता रही थी—वह जानता है, उसके इस झूठ से अंदर ही अंदर ठकरियाल की क्या हालत हो गयी है?

खेल आखिर था क्या, यह जानने का ठकरियाल के पास फिलहाल कोई रास्ता नहीं था।

रणवीर राणा मौजूद न होता तो वह एक ही सवाल पूछता बबलू से। यह कि—‘इस झूठ को आखिर वह क्यों कुबूल कर रहा है?; इस सवाल का जवाब पाने के लिए एड़ी से चोटी तक का जोर लगा देता परन्तु इस वक्त...कुछ भी तो नहीं था उसके हाथ में।

काफी लम्बी खामोशी के बाद रणवीर राणा ने अगला सवाल किया—“ऐसा क्यों किया तुमने?”

“गहनों की खातिर।” कहने के साथ उसने होठों पर जहरीली मुस्कान लिए कनखियों से ठकरियाल की तरफ देखा।

ठकरियाल का दिमाग हवा हुआ जा रहा था।

बहुत बड़ी पहेली बन गया था बबलू उसके लिए।

उसका जिस्म ठकरियाल को सवालिया निशान में तब्दील होता सा लगा। यह स्थिति तभी से थी, जब से बबलू अपने घर उसके कान में फुसफुसाया था।

“पूरी बात बताओ।” रणवीर राणा ने कहा—“जब तुम वहां पहुंचे तो राजदान साहब क्या कर रहे थे? पहुंचे कैसे और...किन हालात में खून किया।?”

“एस. एस. पी. साहब।” एकाएक बबलू गिड़गिड़ा उठा—“हकीकत मैं आपको बता तो दूंगा मगर प्लीज, मेरे पापा को मत बताना। बहुत दुख होगा उन्हें।”

“ठीक है। कोशिश करेंगे। हकीकत बताओ।”

एक बार फिर बबलू ने ठकरियाल की तरफ रहस्यमय मुस्कान उछाली और रणवीर राणा की नजरों में खुद को दीन-हीन दर्शाता कहात चला गया—“जिस फ्लैट में हम रहते हैं, उसे पापा ने पन्द्रह लाख रुपये में खरीदा था। दस लाख का इन्तजाम उन्होंने खुद किया था, पांच लाख एक फाईनेंसर से ब्यास पर लिये थे। ब्याज तो पापा मीने के महीने चुकाते रहते हैं मगर मूल में से कभी कुछ नहीं दे पाये। करीब हफ्ते भर पहले फाईनेंसर हमरे घर आया। मेरे सामने उसने पापा से कहा—‘एक महीने के अंदर मेरे पांच लाख नहीं मिले तो घर का सारा सामान उठाकर बाहर फैंक दूंगा।’ पापा-मम्मी बहुत चिंतित हो उठे। हालांकि न उन्होंने मुझसे कुछ कहा न मैंने उनसे। परन्तु सोचा—चाचू से मांगता मगर हिम्मत नहीं पड़ी। समय-समय पर, नये-नये बहानों के साथ चाचू से छोटी-मोटी रकम मांग लेना अलग बात थी, एक साथ पांच लाख मांगना अलग।”

ठकरियाल हतप्रभ।

जिस तरह बबलू ने सब कुछ धाराप्रवाह बताना शुरू किया था उससे जाहिर था—जो वह कह रहा था, पूर्वनिर्धारित था। तो क्या उसे मालूम था, हालात ये होंगे?

पुलिस उसे पकड़ेगी?

राजदान की हत्या का इल्जाम लगायेगी और...वह यह सब कहेगा?

पता था तो, क्यों—कैसे?

चक्कर क्या था ये?

ठकरियाल ने जितना सोचा, उलझता चला गया।

कुछ समझ में नहीं आकर दे रहा था। उधर रणवीर राणा ने बबलू से अगला सवाल किया—“जब तुम राजदान साहब से पांच लाख मांगने की हिम्मत न जुटा सके तो क्या किया?”

“बात कल दोपर की है।” बबलू ने कहा—“जब मैं रोज की तरह उनके पास गया तो देवांश अंकल और दिव्या आंटी नहीं थे। चाचू एक रिवाल्वर की सफाई कर रहे थे। रिवाल्वर को देखकर मैं डर गया। अनेक सवाल किये चाचू से उसके बारे में। मेरे सवालों के जवाब में चाचू ने कहा—‘ये रिवाल्वर मेरा ही है। बहुत दिन से बैंक लॉकर में रखा था। दो दिन पहले ही निकालकर लाया हूं। सफाई इसलिये कर रहा था। क्योंकि समय-समय पर होती रहनी चाहिये वरना जाम हो जाता है।’ मैंने जब पूछा—‘चाचू, टी. वी. और पिकचरों में जो रिवाल्वर दिखाये जाते हैं उनकी नाल तो इतनी लम्बी नहीं होती, फिर इसकी इतनी लम्बी क्यों है?’ चाचू ने बताया—‘ये साईलेंसर है जो नाल पर अलग से लगाया जाता है। इसे लगाकर फायर किया जाये तो उतनी आवाज नहीं होती जो लोगों को सुनाई दे सके।’ फिर जाने क्यों वे भावुक हो गये। कहने लगे—‘कभी-कभी दिल चाहता है, इससे खुद को खत्म कर लूं। परेशान हो गया हूं मैं अपनी बीमारी से। मगर, आत्महत्या करना भी आसान नहीं है। कोशिश के बावजूद कभी हिम्मत नहीं जूटा सका।’ मैं चाचू की बातें सुनकर डर गया। रिवाल्वर छीन लिया उनसे। कहा—‘खबरदार चाचू, फिर कभी ऐसी बातें मत करना।’ चाचू हंसने लगे। बोले—‘यही सोचकर तो नहीं कर पाता मैं ऐसा कि तुझ पर, देवांश पर और दिव्या पर क्या गुजरेगी?’ फिर उन्होंने मुझसे रिवाल्वर को लॉकर में रखने के लिए कहा। उनक हुक्म का पालन करने के लिए लॉकर खोला तो चकाचौंध रह गया। उसमें जेवर थे। दिमाग में ख्याल उभरा—‘ये जेवर हाथ लग जाये तो फाईनेंसर से हमेशा के लिये छुटकारा पाया जा सकता है।’ रिवाल्वर उसमें रखकर मैंने लॉकर बंद जरूर कर दिया परन्तु रह-रहकर जेवर ही जहन की आंखों के सामने चकरा रहे थे। उसके बाद—मैं चाचू से इधर-उधर की बातें जरूर कर रहा था। जवाब भी दे रहा था चाचू के सवालों का परन्तु दिमाग उन बातों में नहीं था। लगातार यही सोच रहा था—‘जेवरों पर कैसे हाथ साफ किया जाये?’ यदि यह कहूँ—मैं उसी समय स्कीम चुका था तो गलत नहीं होगा। तभी तो चाचू से कहा—‘चाचू, मैं तुम्हें अपनी फैमिली के बारे में एक बहुत ही गुप्त बात बताना चाहता हूं मगर इस वक्त नहीं बता सकता। सबसे छुपकर रात के किसी वक्त आपके पास आऊंगा। आप अपने बाथरूम की लॉन में खुलने वाली खिड़की खोलकर रखना।’ चाचू ने काफ़ी कहा—‘अभी बता न क्या बात है?’ मुझे न बतानी थी न बताई। तय हो गया वे रात को खिड़की खुली रखेंगे।”

“तो तुम इस तरह रात को उनके बैडरूम में पहुंचे?” राणा ने टोका।

बबलू ने अफसोसनाक स्वर में कहा—“हां।”

“कितने बजे?”

“साढ़े बारह बजे थे।”

“खिड़की खुली मिली?”

“हां।”

“उसके बाद?”

“चाचू व्हिस्की पी रहे थे। मैं चौंका। पहले कभी उन्हें ऐसा करते नहीं देखा था। इस बारे में सवाल किये तो वे टाल गये। एक ही धुन लगी हुई थी उन्हें। बार-बार पूछने लगे—‘क्या बताने वाला था तू अपनी फैमिली के बारे में?’ तब, मैंने उन्हें फाईनेंसर वाली प्रॉब्लम

बता दी। कहा—‘चाचू, पांच लाख मिल जायें तो मम्मी-पापा की टेंशन दूर हो जाये।’ यह बात मैंने यह सोचकर कही थी—अगर चाचू सीधे रास्ते से मदद दे देते हैं तो मुझे वह नहीं करना पड़ेगा जिसे सोच-सोचकर सारे दिन डरता रहा था। लेकिन शायद भगवान को ऐसा मंजूर नहीं था। तभी तो चाचू ने कहा—‘हमारे पास पैसे होते तो तेरी मदद जरूर करते मगर क्या बतायें इस बीमारी ने तो हमें ही कर्ज में डूबो दिया है। मैं समझ चुका था—सीधी अंगुली से घी निकलने वाला नहीं है। अब अपने प्लान पर काम करना मेरी मजबूरी थी। उसके लिये जरूरी था—उनके और अपने बीच के वातावरण को सामान्य बनाये रखना। मैंने कहा—‘कोई बात नहीं चाचू, एक बार तुम ठीक हो जाओ तो सब ठीक हो जायेगा। तुम अपनी प्रॉब्लम भी हल कर लोगे और मेरी भी।’ बातें चलती रहीं, मैं मौके की तलाश में था और जल्दी ही मौका मिल भी गया। चाचू ने टॉयलेट की इच्छा व्यक्त की। मैंने सहारा देकर उन्हें बाथरूम के दरवाजे तक पहुंचाया। उधर उन्होंने बाथरूम का दरवाजा अंदर से बंद किया इधर, मेरे जिस्म में मानों बिजली भर गई। मालूम ही था—लॉकर की चाबी राईटिंग टेबल की दराज में है। चाचू के टॉयलेट से लौटने तक मैं न केवल लॉकर को खाली कर चुका था बल्कि उसे वापस बंद करने के बाद पेन्टिंग भी टांग चुका था। चाचू को बाथरूम के दरवाजे से लाकर मैंने फिर सोफा चेयर पर बैठा दिया।”

बबलू सांस लेने के लिये रुका तो राणा ने सवाल किया—“जब जेवर तुम्हारे हाथ लग चुके थे तो राजदान साहब का मर्डर करने की क्या जरूरत थी? वे यह भी नहीं जान सके थे तुम उनका बाथरूम में रहते लॉकर खाली कर चुके हो।”

“उस वक्त नहीं जान सके थे तो क्या हुआ?” बबलू के हर लफ्ज से जाहिर था जो भी कह रहा है, पूरी तरह पूर्वनिर्धारित था—“बाद में जब जेवर और रिवाल्वर गायब पाते तो समझ जाते उन्हें मैंने ही गायब किया है। उस अवस्था में मेरा पकड़ा जाना निश्चित था।”

“तो?”

“सब कुछ करके साफ बच निकल जाने का एक ही रास्ता था—चाचू का खात्मा। उसके बाद कोई गवाह नहीं था जो बता सकता कि मैं रात के वक्त वहां आया था। मेरी प्लानिंग के मुताबिक चाचू की लाश ऐसी अवस्था में पाई जाने वाली थी जिसे देखकर लोग यही समझते चाचू ने सुसाइड कर ली है। इसलिए, पुनः कुछेर की बातचीत के बाद मैंने अपना दायां हाथ जेब में डाला। अचानक चाचू से कहा—‘अरे, ये आपके दांतों में क्या हुआ चाचू?’ चाचू ने पूछा—‘क्या हुआ?’ मैंने कहा—‘जरा मुंह खोलना।’ और...उन्हें स्वप्न तक में उम्मीद नहीं थी मैं क्या करने वाला हूं अतः जरा भी संदिग्ध हुए बगैर मुंह खोल दिया। मैंने फुर्ती के साथ जेब से रिवाल्वर निकाला। इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते, बिजली की फुर्ती से साइलेंसर सहित नाल उनके मुंह में घुसेड़ दी। उन्होंने तेजी से अपने दोनों हाथों से रिवाल्वर हटा लिया। पलक झपकते ही चाचू का खेल खत्म हो चुका था। खून से लथपथ उनकी लाश सोफा चेयर पर मेरे सामने पड़ी थी।”

“हत्या का यह तरीका तुम्हें कैसे सूझा?”

“टी. वी. सीरियल में देखा था।”

“मतलब?”

“उस सीरियल में एक करेक्टर ने रिवाल्वर की नाल अपने मुंह में डालकर सुसाइड की थी। मैंने यही सोचकर इस ढंग से मर्डर करने के बारे में सोचा कि इस पोजिशन में मिली लाश को देखकर सब यही सोचेंगे चाचू ने अपी बीमारी से तंग आकर सुसाइड कर ली है। ऐसा वे करना भी चाहते थे।”

“उसके बाद?”

“वापस उसी रास्ते से आकर अपने कमरे में सो गया।”

बबलू ने पुनः एक मुस्कान ठकुरियाल की तरफ उछाली—“पूरा विश्वास था, लोग उसे आत्महत्या ही समझेंगे। हत्यारे के रूप में जब किसी की खोज ही नहीं होने वाली है तो मेरे पकड़े जाने का सवाल ही नहीं उठता। मगर जाने कैसे, आप लोग मुझ तक पहुंच गये। यह सब कैसे हुआ, मेरे लिये अभी भी रहस्य है।”

“यह नहीं सोचा तुमने—जब दिव्या और देवांश लॉकर से जेवर गायब पायेंगे और यह बात पुलिस को बतायेंगे तो पुलिस समझ जायेगी यह सुसाइड नहीं मर्डर है?”

“क्या मैं इसीलिये पकड़ा गया?”

“सवाल मत करो। केवल दो—जब तुमने दूसरी बारीक बातें सोच लीं तो इस बात पर ध्यान क्यों नहीं दिया?”

“मैंने सोचा था—देवांश अंकल और दिव्या आंटी जेवर गायब होने वाली बात पर ज्यादा ध्यान नहीं देंगे। सोचेंगे—चाचू ने खर्च कर दिये होंगे। क्या ऐसा नहीं हुआ? क्या इसकी जगह ये हुआ कि...

णवीर राणा ने अचानक बबलू की बात काटकर कहा—“इंस्पेक्टर।”

“य-यस सर।” बुरी तरह चौंकने के कारण ठकुरियाल हड़बड़ा गया।

“हमने सोचा था, यह काम किसी चालाक हत्यारे का है मगर नहीं—वह सोच गलत थी।” राणा कहता चला गया—“असल में इसने जो चालाकी बरती वह उतनी ही थी जितनी टी. वी. सीरियल में देखी थी। उसके इधर-उधर बेवकूफियां ही बेवकूफियां की हैं इसने।

जैसे इस बात पर जरा भी ध्यान नहीं दे पाया कि घटनास्थल पर फुट स्टैप्स भी छूटे होंगे। हमें पूरा विश्वास है—रिवाल्वर से ही नहीं, कमरे में दूसरी जगहों से भी इसकी अंगुलियों के निशान मिल जायेंगे।”

“यस सर।” इसके अलावा ठकरियाल कह भी क्या सकता था।

“हमारे प्वाइंट ऑफ व्यू से पूछताछ समाप्त हो चुकी है। तुम कुछ पूछना चाहो तो पूछ सकते हो।”

ठकरियाल की बुद्धि ऐसी कुद हुई कि कुछ समझ में ही आकर नहीं दे रहा था।

देखा जाये तो वह, दिव्या और देवांश भी वही सिद्ध करना चाहते थे जो हो रहा था, यानी राजदान का अंत सुसाईड नहीं मर्डर था। मर्डर भी वह, जिसे बबलू ने किया था।

यही साबित करने के लिए तो इतने पापड़ बेले थे उन्होंने।

लम्बा-चौड़ा प्लान बनाया था।

क्योंकि।

इसी सूरत में बीमा कंपनी से पांच करोड़ मिलने वाले थे।

लेकिन अब।

जबकि यही साबित हो रहा था।

बल्कि हो चुका था।

तो।

तिरपन कांप रहे थे उनके।

लग रहा था—कहीं कोई गड़बड़ी है।

ऐसा केवल इसलिये था क्योंकि जो चार्ज वे बबलू पर लगाना चाहता थे। जिस जाल में फंसाने के लिए उन्होंने अपनी स्कीम बनाई थी। बबलू वही सब खुद सक्सेप्ट कर रहा था। ठीक इस तरह जैसे वह भी उन्हीं से मिला हुआ हो। उन्होंने तो यह कल्पना की थी कि बबलू चीखता रहेगा, चिल्लाता रहेगा। बार-बार कहता रहेगा उसने कुछ नहीं किया और वे साबित कर देंगे—सब कुछ उसी ने किया है।

किस्सा खत्म।

हो हालांकि वही रहा था।

परन्तु!

हो बबलू की स्वीकारोक्ति के साथ रहा था।

और यही थी उलझन।

बहुत ही बड़ा पेंच था यह।

आखिर क्यों वह उस सबको स्वीकार कर रहा है?

जिसका दूर-दूर तक उससे कोई वास्ता नहीं है।

केवल स्वीकार ही नहीं कर रहा।

पूरी कहानी सुना रहा है।

सुना चुका है।

क्यों?

क्या चाहता है वह?

खुद ही को झूठ-झूठ किसी का हत्यारा साबित करके कोई आखिर क्या चाह सकता है?

क्या फायदा हो सकता है उसे?

ठकरियाल ने खूब सोचा।

बात दिमाग में फिट न हो सकी।

और फिर, जो कहानी बबलू ने सुनाई थी।

उसमें कहीं भी, किसी भी तो किस्म का ‘लोच’ नहीं था।

साफ जाहिर था—कहानी के एक-एक प्वाइंट पर पहले ही काफी बारीकी से सोच लिया गया था। बबलू ने जो भी कहा—बहुत ही आत्मविश्वास से कहा था।

ठकरियाल को लगा—बात उसकी समझ में भले ही न आ रही हो लेकिन—अंजाम जो भी निकलने वाला है, उसके ‘फेवर’ में नहीं होगा।

खुद को किसी अनजाने जाल में फंस गया महसूस किया उसने।

जाने क्यों, लगने लगा—बबलू को झूठा सिद्ध करना उके हित में है।

थी न आश्चर्य की बात?

जो सिद्ध करने के मिशन पर वे काम कर रहे थे। जब वही, लगभग सिद्ध हो चुका था तो ठकरियाल यह सिद्ध करने पर आमादा हो गया कि बबलू ने जो कहा, वह झूठ है।

वह राजदान का हत्यारा नहीं है।

तभी तो बबलू से सवाल किया उसने—“तुम्हें पूरा यकीन है, राजदान की हत्या तुम्हीं ने की है?”

बड़ी ही जालिम मुस्कान उभरी बबलू के होठों पर।

वह।

जो ठकरियाल के दिल और दिमाग, दोनों को चीरती आकाशीय बिजली की मानिन्द अंतर में उतरती चली गई।

उस मुस्कान के साथ बबलू ने कहा—“क्या अब भी आपको शक है इंस्पेक्टर अंकल?”

“मुझे लगता है तुम कोई खेल, खेल रहे हो?”

“इंस्पेक्टर।” रणवीर राणा कह उठा—“हो क्या गया है तुम्हें? कैसे अनाप-शनाप बातें कर रहे हो बिल्कुल उल्टी बातें कर रहे हो जो एक पुलिस इंस्पेक्टर को करनी चाहियें। पूरे सुबूत मौजूद हैं इसके खिलाफ। खुद बता चुका है मर्डर किस तरह किया। केस एक तरह से हल हो चुका है जोकि हम पुलिस वालों का लक्ष्य होता। पर एक तुम हो, जाने क्यों झूठा साबित करना चाहते हो इसे। आखिर किस लक्ष्य काम कर रहे हो तुम?”

ठकरियाल को ठीक से सूझा नहीं राणा को क्या जवाब दे?

सूझता तो तब जब उसे खुद अपना लक्ष्य मालूम होता।

सचमुच उस समय ठकरियाल समझ नहीं पा रहा था उसका लक्ष्य क्या होना चाहिए।

बबलू को राजदान का हत्यारा साबित करना या बेकुसूर ठहराना।

रणवीर राणा के सवालों का जवाब देना था। सो, यूं बोला—“सर, मैं असल में इसके द्वारा इतनी बड़ी घटना को इतनी आसानी से कुबूल करने के कारण उलझन में फंस गया हूं। बल्कि हैरान हूं। यहां लाने के बाद अभी हमने इसके साथ जरा भी तो सख्ती नहीं की और ये है कि सब कुछ उगलता चला गया।...आखिर क्यों?”

“जवाब मेरे पास है।” बबलू कह उठा।

“तुम्हारे पास?”

वह रहस्यमय मुस्कान के साथ बोला—“जब घटनास्थल से मेरे जूतों के निशान मिल गये। मेरे स्कूल बैग से आप लोगों ने गहने बरामद कर लिये तो रह ही क्या? इतना समझदार तो मैं हूं—इन दोनों सुबूतों के बाद मैं वाहे जो कहता रहता। तुम लोगों को यकीन आने का सवाल ही नहीं उठता। झूठ बोलता तो पिटाई होती। तब सच बोलना पड़ता। उससे बेहतर, पहले ही सच बोल दिया है।”

ठकरियाल कुछ कह नहीं सका। इस तरह धूरता रह गया बबलू नाम के उस चालाक लड़के को जैसे कच्चा चबा जोगा।

“सीधी बात बताओ इंस्पेक्टर।” राणा बोला—“इसने जो कहा, वह तुम्हें झूठ लग रहा है या सच?”

कैसे कह देता ठकरियाल कि जो सच लग रहा है, जिसके फेवर में मुकम्मल सुबूत हैं—असल में वह झूठ है। वह झूठ जिसकी बुनियाद खुद उसी ने रखी थी। सो कहना पड़ा—“लग तो सच ही रहा है।”

“किस्सा खत्म। फिर कहां उलझे हुए हो तुम?”

“सुबूत भी तो चाहियें सर।”

“कैसे सुबूत?”

“जिनसे इसकी कहानी कोर्ट में सच साबित हो सकें।”

“फुट स्टैप्स हैं। गहने इसके स्कूल बैग से बरामद हुए हैं। यह सब पर्याप्त नहीं लगते तुम्हें?”

“फिर भी सर।” ठकरियाल ने कहा—“अगर इसने राजदान साहब को इतने नजदीक से गोली मारी थी तो लिबास पर उनके खून के छींटे होने चाहिए थे।”

राणा से पहले बबलू कह उठा—“उस वक्त मैंने दूसरे कपड़े पहन रखे थे।”

एक बार फिर झटका लगा ठकरियाल को।

नन्हें शैतान के पास मानों उसके हर सवाल का जवाब था।

ठकरियाल के लगा—बबलू सोलह साल का जरूर है लेकिन इससे बड़े शातिर से उसका पाला पहले कभी नहीं पड़ा।

वह पूरी तरह आमादा था खुद को फंसाने पर।

खुद को राजदान का हत्यारा साबित करने के लिये हाथ धोकर पीछे पड़ गया था वह।

क्यों?

ऐसा क्यों कर रहा था बबलू?

चाल क्या थी ये?

आखिर क्या फायदा होने वाला था उसे?

लाख दिमाग खपाने के बावजूद जब न समझ सका तो पूछा—“कहां हैं वे कपड़े जो तुमने कल क सत्त पहन रखे थे?”

“मेरे कमरे में।”

“मतलब?”

“उसी कमरे में जिससे आपने मुझे गिरफ्तार किया है।” बबलू की रग-रग से चालाकी झलक रही थी—“असल में, जेवर हासिल करने बाद आपने मेरे कमरे की और तलाशी लेने की जरूरत ही नहीं समझी। समझते, तो मेरे बैड के नीचे से वे कपड़े भी बरामद कर लेते जो अभी-भी चाचू के खून से सने, वहीं रखे होंगे।”

बबलू की बात सुनकर ठकरियाल को ऐसा लगा जैसे एक साथ सैकड़ों शैतान लड़के मिलकर जोर-जोर से सीटियां बजा रहे हों। खुद को राजदान का हत्यारा साबित करने में किसी किस्म की कोताही नहीं बरत रहा था वह।

वह।

जो ठकरियाल को इस दुनियां का सबसे आश्चर्यजनक लड़का लगा।



“क-क्या—ये क्या कह रहे हो तुम?” देवांश के हलक से चीख निकल गयी—“ख-खून सने कपड़े भी बरामद हो गये?”

“हां।”

“कहां है?”

ठकरियाल ने अपने हाथ में मौजूद अखबार का बण्डल खोल दिया।

एक सफेद टी शर्ट और सफेद हाफ पैण्ट फर्श पर जा गिरी।

खून से लथपथ थे वे।

दिव्या और देवांश चेहरों पर खौफ लिये आंखें फाड़े उन कपड़ों को इस तरह देखते रह गये जैसे वे कपड़े नहीं, उनके सामने फन अकड़ाये खड़ा काला नाग हो।

काफ़ी देर तक दोनों में से किसी के मुंह से आवाज न निकली।

फिर फंसी-फंसी सी आवाज में दिव्या ने पूछा—“क्या इन पर लगा खून वाकई राजदान का है?”

“असलियत तो जांच के बाद ही पता लगेगी मगर...

“मगर?”

“मेरा ख्याल है, खून जांच के बाद राजदान का ही साबित होने वाला है।”

“क-कैसे कह सकते हो ऐसा?”

“बबलू को राजदान का हत्यारा सिद्ध करने की यह स्कीम जिसने भी बनाई है, वह कोई बहुत ही बड़ा खिलाड़ी है। ऐसी कोई चूक उसके द्वारा नहीं हो सकती जिसके बेस पर आगे चलकर बबलू का बयान झूठा साबित हो सके।”

“उसका खून भला कब इन कपड़ों तक पहुंचा?”

“अभी किसी बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।”

“लेकिन।” दिव्या ने कहा—“जो साबित करना हमारे हित में था, जो हम साबित करना चाहते थे वह खुद बबलू क्यों साबित करना चाहता है? उसे खुद को राजदान का हत्यारा साबित करने से क्या फायदा है?”

“यही तो है वह सवाल जिसने मेरी खोपड़ी की जड़ों को हिला रखा है।” ठकरियाल कहता चला गया—“जब उसने बताया, खून से सने कपड़े मेरे बैड के नीचे रखे हैं तो अवाक् रह गया मैं। एस. एस. पी. ने कहा—‘जाओ इंस्पेक्टर, बरामद कर लो उन कपड़ों का। सारी बातों पर गौर करने के बाद यह बात हम दावे के साथ कह सकते हैं—कपड़े वहीं मिलेंगे जहां यह बता रहा है। अब तुम्हें देखना है ये केस। हमारे वाह जाने की जरूरत नहीं है।’...उसके बाद, मैं दो सिपाहियों के साथ बबलू के घर पहुंचा।...उसके बाद, मैं दो सिपाहियों के साथ बबलू के घर पहुंचा। चा। उसकी मां तब भी यह कह रही थी—मेरा बेटा ऐसा नहीं कर सकता। मगर बाप गुमसुम हो गया। जब उन्होंने मुझे यह कपड़े बरामद करते देखा तो मारे हैरत के दोनों की आंखें फटी की फटी रह गयीं।”

“क्या कपड़े वहीं से बरामद हुए जहां बबलू ने बताये थे?”

“हां।”

“कमाल की बात है।”

दिव्या ने पूछा—“उसकी मां ने जानना नहीं चाहा, बबलू ने क्या बयान दिया है?”

“किसी ने कुछ नहीं पूछा मुझसे, बल्कि मैंने ही पूछा था।”

“क्या?”

“फ्लैट के बारे में। उसकी कीमत के बारे में। फाईनेंसर के बारे में।”

“क्या जवाब मिला?”

“वह सच है जो बबलू ने कहा।”

“यानी उन्हें फाईनेंसर के पांच लाख देने है?”

“हां।”

दोनों चुप रह गये।

ठकरियाल ने आगे कहा—“उसकी मां पूछने लगी—मैं वह सब क्यों पूछ रहा हूं। मैं बात को गोल कर गया। कहता भी क्या? वहां से सीधा यहीं आया हूं। दोनों सिपाही लॉबी में खड़े हैं।”

कुछ देर के लिये उनक बीच खामोशी छा गई। जैसे कहने के लिये किसी के पास कुछ न बचा हो। फिर, देवांश ने कहा—“मेरी समझ में बात कुछ-कुछ आ रही है।”

“कौन सी बात?”

“कुछ देर पहले हमें रजिस्टर्ड डाक से यह लेटर मिला है।” कहने के साथ देवांश ने लेटर निकालकर ठकरियाल को पकड़ा दिया—“इसमें भी लगभग वही लिखा है जो बबलू ने तुम्हारे कान में कहा।”

ठकरियाल ने लेटर लिया।

पढ़ा।

ओर दिमाग से सांय-सांय होने लगी।

काफी देर तक वह चाहकर भी अपने मुंह से कोई आवाज न निकाल सका। दिमाग सोचने की कोशिश कर रहा था—झमेला आखिर है क्या? उसे चुप देखकर देवांश कह उठा—“सच वही है, जो मैंने कहा था। अपनी मौत से पहले हमारे चारों तरफ कोई बहुत गहरा जाल बुनकर गया है राजदान। लेटर पर पड़ी डेट से ही नहीं, डाकखाने की मोहर से भी स्पष्ट है—लेटर अट्टाईस तारीख को रजिस्टर्ड कराया गया। क्लियर है—उसे तभी मालूम था, हम बबलू को फंसाने वाले हैं। साफ लिखा है इसमें—अगर हमने ऐसा किया तो समझ लेना चाहिये, हम उसके जाल में पूरी तरह जकड़े जा चुके हैं।”

“इससे तो जाहिर है, बबलू भी जो कह और कर रहा है—वह सब भी उसी षड्यंत्र का हिस्सा है जिसे राजदान अपनी मौत से पहले रच चुका था।” ठकरियाल को कहना पड़ा—“शायद वह हमें कदम-कदम पर हैरान और हलकान करना चाहता है।”

“अगर ये षड्यंत्र उसका भी है, तो कैसा षड्यंत्र है ये?” दिव्या का चेहरा अच्छी तरह धुले और निचुड़े कपड़े जैसा नजर आ रहा था—“क्यों वह बबलू को, उस बबलू को अपनी हत्या के जुर्म में फंसाने का सामान करके गया जिससे सबसे ज्यादा प्यार करता था? क्यों बबलू खुशी-खुशी न सिर्फ हत्या के इल्जाम को अपने सिर लेने को तैयार हो गया बल्कि खुद को हत्यारा साबित करने के लिये मरा जा रहा है? इस सबसे तो हमें ही फायदा होगा। बबलू के हत्यारा साबित होने का मतलब है—हमें बीमाकम्पनी से पांच करोड़ मिल जाना। ऐसा क्यों चाहेगा राजदान?”

“इसका मतलब षड्यंत्र वह नहीं है जो फिलहाल हमें नजर आ रहा है।” ठकरियाल—“बात शायद उससे आगे, कहीं और ज्यादा पेचीदा है।”

देवांश बोला—“अब जाकर तुम्हारे दिमाग की रेलगाड़ी ने उस पटरी पर दौड़ना शुरू किया है जिस पर मैं शुरू से दौड़ रहा हूं।”

“फोटोग्राफर को भी नहीं भूलना चाहिये हमें ठीक ही कहा था तुमने। राजदान ने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि अंततः पांच करोड़ के लालच में मैं तुम्हारा साथ दूंगा। शायद उस फोटो का इस्तेमाल राजदान की प्लानिंग के तहत किसी ऐसे स्पॉट पर होना है जहां से फंसे हुए बबलू को वापस खींचा जा सके क्योंकि यह बात हरगिज...हरगिज नहीं मानी जा सकता वह बबलू का कुछ बुरा सोचकर मरा होगा।”

“मैं फिर कहता हूं।” देवांश बोला—“हमें अब भी सब कुछ कुबूल कर लेना चाहिये।”

“बंद करो बार-बार ये राग अलापना।” अचानक ठकरियाल गुस्से में गुर्गा उठा—“यह बात तुम्हारे भूसा भरे भेजे में घुस क्यों नहीं रही कि गुनाह कुबूल कर लेने से हमें कोई फायदा होने वाला नहीं है।”

ठकरियाल की आवाज में ऐसी धमक थी कि देवांश सहमकर चुप रह गया।

चाहकर भी कुछ बोल नहीं सका।

“अच्छी तरह अपने भेजे में उतार लो यह बात।” ठकरियाल दंत भींचे उसी लहजे में कहता चला गया—“अब हमारे पास एक..और सिर्फ एक ही रास्ता है। यह कि राजदान के जाल को समझें, तोड़ने की कोशिश करें इसे। याद रहे, भविष्य में मैं तुम्हारे मुंह से सिरेण्डर की बात न सुन लूं। कहीं ऐसा न हो कि गुस्से में मैं तुम्हारा कत्ल कर डालूं।”

दिव्या बोली—“ठकरियाल ठीक कह रहा है देव। अब शायद हम इतनी दूर निकल आये हैं कि घबराकर घुटने टेक देना कोई हल नहीं है।...और ठकरियाल, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये कि देव का कत्ल तक कर देंगे। बहरहाल, हम साथी हैं एक-दूसरे के। पार्टनर हैं इस मिशन में। तीनों को अपनी राय व्यक्त करने का बराबर का हक है।”

“राय व्यक्त करने कहा हक है। बार-बार एक ही राग अलापने का हक नहीं है।” ठकरियाल का गुस्सा कम होकर नहीं दे रहा था—“इसे जब देखो, तब घुटने टेकने की बात करता नजर आता है। इतना ही डरपोक था तो मंसूबे क्यों बनाये थे पांच करोड़ कमाने के? मामला पांच करोड़ का है। पांच करोड़ का। हाथ पर हाथ रखकर नहीं कमाई जा सकती इतनी बड़ी रकम। थोड़ा-बहुत हलकान तो होना ही पड़ेगा। मेहनत भी करनी होगी। मगर एक ये है, जरा सी पेचीदगियां शुरू हुई नहीं कि इसके रिकार्ड की सुई एक ही जगह अटक जाती है। इसके इतना कमजोर पड़ने का मतलब है, बैठे-बिठाये हम दोनों का भी बंटोधार हो जाना।”

“नहीं होगा ठकरियाल, वैसा कुछ नहीं होगा जैसा तुम सोच रहे हो।” दिव्या ने कहा—“मैं गारंटी लेती हूं देव की। और फिर समय-समय पर इसने जो सम्भावनाएँ व्यक्त की हैं वे इसके डरपोक होने की नहीं, समझदार होने की परिचायक हैं ठंडे दिमाग से सोचो—क्या गलत कहा देन ने? इसने हम दोनों से पहले सम्भावना व्यक्त की थी कि राजदान का जाल ‘तुमसे’ भी काफी दूर तक फैला हुआ है, वही आज हमें भी मानना पड़ रहा है।”

“इससे शिकायत नहीं है मुझे, शिकायत इसके द्वारा बार-बार सिरेण्डर की सलाह देने से है।”

“ओ. के.! अब नहीं देगा देव यह सलाह।”

ठकरियाल चुप रहा गया। चेहरा अब भी तमतमा रहा था।

देवांश की जी चाह रहा था—आगे बढ़कर ठकरियाल के जबड़े पर घूंसा जमा दे।

‘मैसेज’ दे कि उसे कत्ल करना इतना आसन नहीं है जितना आसनी से उसने यह बात कह दी मगर, फिहाल ऐसा कुछ किया नहीं उसने। खुद को सामान्य करने हेतु जेब से पैकिट निकाला और एक सिगरेट सुलगा ली। शिकायत उसे दिव्या से भी थी। उस दिव्या से जो बातों ही बातों में उसे ठकरियाल से छोटा साबित कर गई थी।

कुछ देर की खामोशी के बाद ठकरियाल ने कहा—“हमारी सबसे पहले कोशिश राजदान के जाल को समझने की होनी चाहिये। उसके बाद उसे तोड़ सकते हैं।”

“मगर कैसे?” दिव्या ने कहा—“कैसे पता लगे उसका जाल?”

“फिलहाल जितनी बातें हुई हैं उनसे एक ही नतीजा निकलता है। यह कि बबलू उसके जाल का मुख्य मोहरा है। वह मेरे कब्जे में है। थाने में है। उससे पुलिसिया अंदाज में पूछताछ की जानी चाहिये। वही बता सकता है—क्यों मरा जा रहा है खुद को राजदान का हत्यारा साबित करने के लिये? उसक कपड़ों पर खून कब, कैसे और कहां लगा?”

“बात तो ठीक है, मगर...”

“मगर?”

“रणवीर राण के समने हम उससे यह सब कैसे पूछ सकेंगे?”

“अब राणा थाने में नहीं है।”

“कहां गया है?”

“एस. एस. पी. है वह। मेरी तरह किसी एक थाने का इंचार्ज नहीं जो वहीं पड़ा रहेगा। किसी केस में एस. एस. पी. इतनी दिलचस्पी ले ले जितनी इसमें ली तो काफी बड़ी बात मानी जाती है। उसकी नजरों में केस हल हो चुका है। आगे की औपचारिक कानूनी कार्यवाही करने का अधिकार थनाध्यक्ष होने के नाते मेरा है। अब तो वह मुझसे केवल ‘प्रोग्रेस रिपोर्ट’ मांगेगा। रिपोर्ट क्या देनी है, यह मेरे अख्तियार में है।”

“यानी बबलू से पूछताछ के वक्त हम भी थाने में रह सकते हैं?”

“बेशक।”

“तो चलें?” दिव्या ने पूछा।



ठकरियाल के साथ दिव्या और देवांश को देखकर बबलू के होठों पर मुस्कान फैल गई। ऐसी मुस्कान जो साफ कह रही थी—मैं जानता था। तुम तीनों इसी मुद्रा में यहां आओगे।

तीनों के चेहरे गम्भीर थे। बल्कि यह कहा जाये तो ज्यादा ठीक होगा, ठकरियाल के चेहरे से क्रूरता भी टपक रही थी। अखबार से लिपटे खून सने कपड़े अभी-भी उसके हाथों में थे।

तीनों की नजरें कुछ इस तरह बबलू पर स्थिर थीं जैसे अर्जुन की नजरें मछली की आंख पर रही होंगी। जबड़े यूं कसे हुए थे जैसे बबलू को कच्चा जबा जाना जाना चाहते हों।

उनके ख्याल से इस जगह, उनके चंगुल में इस कदर फंसा हाने के कारण बबलू सहमा हुआ ही नहीं बल्कि आतंकित होने चाहिये था मगर, हर सम्भवना के विपरीत वह पूरी तरह निश्चित नजर आ रहा था और...यह हकीकत उन्हें अंदर ही अंदर बुरी तरह चिड़ा रही थी।

नजरें उसी पर जमाये ठकरियाल ने कहा—“दरवाजा बंद कर दो देवांश।”

देवांश ने पलटकर टॉचर रूम का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया।

बबलू के होठों पर थिरक रही मुस्कान गहरी हो गई।

तीनों उस चेयर के नजदीक पहुंचे जिस पर वह बंधा बैठा था। इससे पहले कि उनमें से कोई कुछ कहता, बबलू बोला—“कर लाये बरामद मेरे कपड़े?”

ठकरियाल ने बण्डल एक तरफ फेंका। कहा—“एस. एस. पी. यहां से जा चुका है।”

“तो?”

“मुझे टॉचर करने के ऐसे-ऐसे तरीके आते हैं जिन्हें झेलने वाला तो क्या, सुनने वाला भी कांपकर वह उगलने लगता है जो मैं उगलवाना चाहता हूं।”

बबलू को डरना चाहिये था। मगर, नहीं डर।

बल्कि।

गुलाबी होठों पर थिरकती रही मुस्कान में कुछ और इजाफा ही गया।

यूं मुस्करा रहा था जालिम जैसे अच्छी तरह जानता हो उसका कुछ नहीं बिगाड़ा जा सकता। बोला—“तुम तो खैर यह सोचकर हैरान होंगे ही कि मैंने एस. एस. पी. साहब के सामने क्यों खुद को चाचू का हत्यारा साबित किया? मगर मैं तुमसे ज्यादा हैरा हूं।”

“कारण?”

“कदम-कदम पर वही हो रहा है जो चाचू ने कहा था।”

“क्या कहा था?”

“अभी-अभी जो तुमने कहा, चाचू मुझे पहले ही बता चुके हैं, इस स्पोर्ट पर आकर तुम वैसा ही कुछ कहोगे।...टॉचर की धमकी दोगे मुझे।”

“तब तो तुम्हें यह भी पता होगा—इससे आगे क्या होने वाला है?” ठकरियाल के लहजे में व्यंग्य आ घुला।

“बेशक पता है।”

“बताओ तो सही, क्या होने वाला है?”

“तुम सिर्फ कह रहे हो, टॉचर कर नहीं सकोगे मुझे”

“वजह?”

“मैं बगैर टॉचर हुए वह सब बता दूंगा जो तुम जानना चाहते हो।”

दांत भिंच गये ठकरियाल के। जी चाहा, सवाल-जवाब बाद में होते रहेंगे। पहले दो-चार जमा दे उसके जबड़े पर। कहे—‘देख, वह नहीं आ जो राजदान ने कहा था’ मगर, उसे लगा—यह हरकत उसके अंदर की चिड़ को ही प्रदर्शित करेगी। फिलहाल उसका लक्ष्य बबलू से अपने सवालों के जवाब पाना है और वह यूं ही तैयार है। सो गुराया—“तो बोलो, क्यों मरे जा रहे हो खुद को राजदान का हत्यारा साबित करने के लिये।”

“मुझे नहीं मालूम।”

“मतलब?”

“मैं केवल वह कर रहा हूं जो चाचू ने कहा, उन्हें इससे क्या फायदा होने वाला है, उन्हें ही पता होगा।”

ठकरियाल गुरा उठा—“झूठ बोल रहे हो तुम?”

“यह भी बता दिया था चाचू ने, तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं होगा। और...

“और?”

“यहा से तुम अपनी समझ में, मुझसे सच उगलवाने हेतु—टॉचर करना शुरू कर सकते हो।”

ताव तो बहुत आया ठकरियाल को। जी चाहा—एक ही घूसे में बत्तीसी झाड़ दे उस नन्हें शैतान की। मगर खुद को नियंत्रित रखे बोला—“तो ठीक है, नहीं करता मैं तुम्हें टॉचर।”

“यह भी कहा था।” बबलू खुलकर हंस पड़ा—“यह कि मुमकिन है, तुम मेरी यह बात सुनकर सिर्फ उन्हें गलत सबित करने के लिये अपना विचार स्थगित कर दो।”

और अब! खुद को नियंत्रित नहीं रख सका ठकरियाल।

एक जोरदार घूसा जड़ ही दिा बबलू के जबड़ पर।

पलक प्पकते ही होशों से खून बहने लगा परन्तु उसकी तरफ से ऐसी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई जैसे कोई पीड़ा पहुंची हो। उल्टा, और जोर से ठहाका लगाकर हंस पड़ा पट्टा। बोला—“ये तो कहा ही था चाचू ने। यह कि मेरी यह बात सुनकर तुम पगला जाओगे। नियंत्रण खो दोगे खुद पर से और मारपीट शुरू कर दोगे।”

ठकरियाल को लगा—यह नन्हा शैतान उसे चिड़ाने की, उत्तेजित करने की कोशिश कर रहा है और वही सब होता जा रहा है। वह फैसला नहीं कर सका क्या करे? तभी, थोड़ा आगे बढ़ कर देवांश ने पूछा—“तुम्हारे कपड़ों पर खून कहां से लगा?”

बबलू ने पनु: कहा—“चाचू ने यह भी कहा था—कि यहां से तुम सवाल करना शुरू कर सकते हो।”

“जवाब दे हरामजादे!” ठकरियाल ने झपटकर उसे बाल पकड़े—“जवाब दे!”

“तुम्हारी यह हालत कर देने का हुक्म दिया था चाचू ने मुझे। सो हो गयी। अर्थात्...मेरा पहला मिशन पूरा हुआ। अब दूसरे मिशन पर आता हूं।”

“दूसरा मिशन?”

“मेरे कपड़ों पर खुद चाचू ने खून डाला था।”

“कब?...क्यों?”

“एक-एक करके।” बबलू पूरी तरह उनकी हालत का मजा लूट रहा था—“एक-एक करके सवाल करो वरना जवाब देने में मैं गड़बड़ा जाऊंगा। पहले ‘कब’ का जवाब देता हूं।” कहने क बाद उसने इतनी गहरी सांस ली जैसे कोई लम्बी बात बताने जा रहा हो लेकिन कहा केवल यूं—“परसों रात की बात है ये।”

“पूरा किस्सा बताओ।”

“चाचू ने मुझसे दिन में ही कह दिया था—सफेद टी शर्ट, सफेद हाफ पैण्ट पहनकर बाहर बजे खिड़की के जरिये उनके बाथरूम में पहुंच जाऊं। मेरे द्वारा सवाल करने का तो सवाल ही नहीं उठता था उनके हुक्म के बाद। सो, पहुंच गया। देखा—वे बाथरूम में एक पिचकारी लिये खड़े हैं। मैं बोला—‘ये क्या हाल बना रख है चाचू? होली तो नहीं है आज जो ये पिचकारी...’ सेन्टेन्स अधूरा रह गया मेरा। उन्होंने ‘फच्च’ से पिचकारी में भरे रंग से मुझे सराबोर कर दिया। मैं बौखलाया। बोला—‘ये तो एक तरफा हमले वाली बात हो गयी चाचू। होली ही खेलनी थी तो पहले ‘चेताया’ होता मुझे। खाली हाथ नहीं आता। एकाध गुब्बारा तो भर ही लाता ‘गधैया’ रंग का।’ चाचू हंसने लगे। बोले—‘ये रंग नहीं, खून है बबलू। खुद हमारा खून।’ मैंने कहा—‘चाचू, कम से कम मजाक तो ढंग का करो।’ तब उन्होंने बताया—ये मजाक नहीं है। उन्होंने दिन में ही विला से बाहर एक ब्लड बैंक में जाकर अपने जिस्म से दो सौ ग्राम खून निकलवाया था। एक शीशी में, साथ ही ले आये थे और उसी को पिचकारी में भरने के बाद मेरे ऊपर डाला था।”

“देव, मैंने बताया ही था तुम्हें।” दिव्या कह उठी—“कई घंटे कोई कुछ नहीं बोला।”

ठकरियाल ने बबलू से पूछा—“उसके बाद?”

“कब का जवाब दे चुका हूं, अब क्यों पर आता हूं बबलू कहता चला गया—“मुझे चाचू से पूछना पड़ा—‘चाचू, अपने ही खून की यह होली आपने मुझसे क्यों खेली? उन्होंने कहा—‘कुछ लोग मेरा कत्ल करने वाले हैं। मैं चाहता हूं—उस इल्जाम में वो नहीं, तू फंसे।’ बुद्धि उल्टी हो गयी मेरी। बोला—‘चाचू, ऐसा क्या बुरा किया है मैंने तुम्हारा जो झूठ-मूठ मुझे अपने कत्ल के इल्जाम में फंसाने वाले हो और...जो कत्ल करने वाले है, उन्होंने क्या नकी की है जो उनके हाथों कत्ल होने के बावजूद चाहते हो वे न पकड़े जायें।”

“क्या जवाब दिया उसने?”

“कहने लगे—‘मैं उनसे बहुत प्यार करता हूं। इतना ज्यादा कि भले ही वे मुझे कत्ल कर दें, मैं फिर भी नहीं चाहूंगा बेचारे इस इल्जाम में घिसते फिरें।’ मैंने कहा—‘प्यार करने का दम तो तुम मुझसे भी भरते थे चाचू।’ बोले—‘घबरा मत। बिगड़ेगा तेरा भी कुछ नहीं। ऐन वक्त पर मैं। तुझे बचा लूंगा।’

“राजदान बचा लेगा?” ठकरियाल बोला—“मरने के बाद?”

“यहीं तो ‘गच्चा’ खा रहे हो तुम।”

“क-क्या मतलब?”

“गच्चा भी बहुत तगड़ा।”

“क्या बक रहा है हरामजादे?” ठकरियाल चीख पड़ा—“मतलब क्या हुआ तेरी बकवास का?”

“वही मतलब हुआ जो तुम समझ रहे हो।” बबलू बोला—“चाचू जिन्दा ही नहीं, स्वस्थ भी हैं। चाक चौबंद भी हैं।”

ठकरियाल ने एक झटके से पलटकर दिव्या और देवांश की तरफ देखा।

उनके चेहरे ऐसे नजर आ रहे थे जैसे अभी-अभी, हजार-हजार बार कोलहू के पाटों से गुजरे हों। चीख पड़ा ठकरियाल—“क्या बक रहा है ये?”

“सचमुच! ये बक ही रहा है।” देवांश की आवाज कांप गई—“राजदान जल कर नहीं मरा। किसी खाई में नहीं गिरा था वह जिसकी लाश बाद में मिली हो। हमारे सामने मरा है, हमारी इन आंखों के सामने।”

दिव्या बोली—“लाश तो खुद तुमने भी देखी थी।”

“क्या देखा था मैंने? क्या देखा था? राजदान के कपड़े। उसका कमजोर जिस्म। चेहरे और खोपड़ी के तो परखच्चे उड़े हुए थे। ऐसी हालत में थी लाश कि पहले ही से पता न होता राजदान की है तो किसी हालत में पहचानी नहीं जा सकती थी। तुम्हीं लोगों ने कहा था वह राजदान की लाश है।”

“यह सच है।” देवांश ने कहा—“एक-एक अक्षर सच है हमारा। हमारे देखते ही देखते। हमसे बातें करते ही करते खुद को शूट किया है उसने। उसके खून से सने हमारे कपड़े गवाह हैं।”

“हरामजादों! ध्यान से देखा भी था उसे?...कोई और तो नहीं था उसके मेकअप में?”

दोनों के पैरों तले से मानो धरती खिसक गई। मुंह से निकला—“म-मेकअप में?”

“आश्चर्यजनक रूप से तरक्की कर ली है प्लास्टिक सर्जरी ने। ऐसे-ऐसे फनकार मौजूद हैं दुनिया में जो किसी के भी चेहरे का हूबहू फेसमास्क बना सकते हैं। कहीं ऐसे ही किसी फेस मास्क के फेर में तो नहीं आ गये तुम? उफ्फ...। इसकी बातें सुनने के बाद तो मुझे ऐसा ही लगता है। जो जान गया था तुम उसका मर्डर करने वाले हो। जिसने ठान ही ली थी तुम्हें अपनी साजिश में फंसाने की। उसने यह खेल भी खेल दिया हो तो क्या आश्चर्य?”

“ठीक।...आपने बिल्कुल ठीक अंदाजा लगाया ठकरियाल अंकल।” बबलू कह उठा—“चाचू ने मुझसे यही कहा था। यह कि वे किसी और को अपना फेस मास्क पहना देंगे। वह इनके सामने खुद को इस तरह गोली मार लेगा कि चेहरे का भिन्यास उड़ जायेगा। ये समझेंगे चाचू मर गये जबकि वे जिन्दा रहकर इन्हें, इनके किये की सजा देंगे।”

“ये झूठ है। सरासर गलत है ठकरियाल।” देवांश चीख पड़ा—“अरे चाचू ने ही तो बताई थीं उसे वे सब बातें। उन्होंने ही तो समझाया था मरने से पहले क्या-क्या कहना है?”

“ल-लेकिन...” दिव्या ने कहा—“भला इस तरह मरने को कौन तैयार हो जायेगा?”

“मैंने भी चाचू से यही पूछा था। बोले—‘मैंने एक ऐसा आदमी खोज लिया है जिसे एड्स है। वह गरीब है। तीन जवान लड़कियां हैं उसकी। बेचारे को एड्स से ज्यादा उनकी शादी की चिंता खाये जा रही थी। मैं मिला। केवल दस लाख में खुश हो गया वह। कहने लगा—‘मरना तो है ही, इस मौके पर आप मिल गये। मेरी बच्चियों की शादी का इन्तजाम हो गया। मेरे लिये तो सौभाग्य की ही बात हुई ये। जिस तरह आप कहो, मरने के लिये तैयार हूं।’”

“कौन था वह, कहां रहता था?”

“मैंने पूछा, मगर चाचू ने बताया नहीं। कहने लगे—‘ठकरियाल ऐसी बला का नाम है जिसे टॉर्चर के ऐसे-ऐसे तरीके आते हैं जिन्हें झेलने वाला तो क्या सुनने वाला भी कांपकर वह उगलने लगा है जो वह उगलवाना चाहता है। तुझे मालूम हुआ और उसने टॉर्चर करना शुरू कर दिया तो उगलना पड़ेगा। इससे बेहतर है—तुझे पता ही न हो ताकि चाहे जितना टॉर्चर किया जाये, कुछ उगल ही न सके तू। जब पता ही नहीं होगा तो उगलेगा क्या?’”

ठकरियाल बबलू को ऐसी नजरों से घूरता रह गया जैसे समझ न पा रहा हो इस लड़के का किया क्या जाये।

जबकि देवांश कहता चला गया—“ये सरासर झूठ बोल रहा है ठकरियाल। समझने की कोशिश करो इसक जाल को। मैं दावे के साथ कह सकता हूं—मरने वाला राजदान ही था। मरने से पहले उसने जितनी शिद्दत के साथ, जितनी वेदना के साथ बातें की थीं इसे मैं। इस वक्त भी अच्छी तरह महसूस कर सकता हूं। किसी दूसरे को चाहे जितना पढ़ा दिया जाये, वह उन बातों को उतनी गहरी संवेदनाओं के साथ नहीं कह सकता।”

“चाचू ने मुझे बताया था—जो शख्स मरने से पहले उनकी एक्टिंग करने वाला है, वह अपने जमाने का मंजा हुआ स्टेज आर्टिस्ट है।”

“कमाल ये है कि इस हरामजादे के पास मेरे हर सवाल का जवाब है।” देवांश दांत भींचकर कह उठा—“इससे पूछो, अगर ऐसा

है भी तो हमें क्यों बता रहा है यह सब? क्यों प्लान ओपन कर रहा है राजदान का?”

“मैं जो भी रहा हूँ, उन्हीं के हुक्म पर कर रहा हूँ।” बबलू बोला—“उन्होंने ही कहा था, जब तुम लोग पूछताछ करो तो मैं यह सब बगैर टॉर्चर हुए बता दूँ।”

“ऐसा क्यों चाहता था वह?”

“मैंने पूछा, उन्होंने नहीं बताया।”

“देखा...देखा ठकरियाल। जो इसे नहीं बताना होता उसक लिये कह देता है, राजदान ने नहीं बताया और जो बताना होता है, उसे यह कहने के साथ बता देता है कि यह बतान का हुक्म खुद राजदान की तरफ से है। मैं कहता हूँ—अगर यह हमें सब कुछ उसी के हुक्म से बता रहा है तो क्या इसी से जाहिर नहीं हो जाता कि इस स्पॉट पर, इसके मुँह से यह सब कहलवाना उसके ही षड्यंत्र का हिस्सा है। यह सब कहने के लिए उसने अपनी मौत से पहले इसे जान-बूझकर नियुक्त किया है ताकि इसकी बातें सुनकर हम गड़बड़ा जायें। होश उड़ जायें हमारे।”

उस शख्स की मुस्कान में जहर आ घुला। जिसका नाम बबलू था—बोला—“मैंने चाचू का हुक्म बजा दिया। यह तुम्हारा हैड्रेक है कि चाचू के जिन्दा होन पर विश्वास करो न करो। और हां, तुम्हें यह बताने के लिए और कहा था उन्होंने कि रात के तीन बजे उन्होंने खुद मुझसे बात की थी। कहा था—‘देवांश तेरे कमरे में एक लेटर फैंकने आ रहा है। मेरे लेटर पैड के कागज पर उसे ठकरियाल ने लिख है, मेरी राईटिंग से राईटिंग मिलाने की कोशिश भी की है। उस लेटर को पढ़ते ही तुझे बाथरूम के रास्ते से मेरे बैडरूम में जाना है। वहां वे जैसे भी करेंगे, ऐसा ड्रामा करेंगे जैसे ‘मैं’ ही वहा होऊं। मुमकिन है, ठकरियाल या देवांश मेरे कपड़े पहनकर खुद को ‘मैं’ दिखाने की कोशिश करें। जाहिर है—उनकी कोशिश होगी—स्टेज आर्टिस्ट की लाश पर तेरी नजर न पड़े और तुझे भी ऐसा ही दर्शाना है जैसे तू उनके झांसे में आ गया है। वे तेरे ही हाथों से पेन्टिंग उतरावायेंगे ताकि बैडशीट पर तेरे फुट स्टैप्स और पेन्टिंग पर अंगुलियों के निशान रह जायें। जेवर तुझे दिये जायेंगे ताकि सुबह को पुलिस कार्यवाई के दरम्यान तेरे कमरे से बरामद किये जा सकें। याद रहे—तुझे वही करते चले जान है जो वे चाहें। जेवर अपने कमरे में लाकर स्कूल बैग में रख लेना।”

“और वही तुमने किया?”

सजीली मुस्कान के साथ कहा बबलू ने—“आप विद्वान हैं।”

“यानी उस वक्त तुम्हें पता था—टेबल लैम्प के पीछे लाश पड़ी है। राजदान का नाईट गाऊन पहने तुम्हारे सामने मैं खड़ा हूँ।”

“हन्डरेड परसेन्ट मालूम था इंस्पेक्टर अंकल। वरना सोचिये, कहां आपका अदरक की गांठ जैसा ये जिस्म और कहां मेरे चाचू की लम्बाई। हालांकि चाचू ने कहा था—मैं अपनी किसी भी बात से यह जाहिर न होने दूँ कि मुझे उस ड्रामे पर शक हो रहा है बावजूद इसके, आपकी आवाज पर ‘कॉमेन्ट्स’ पास करने की अपनी शरारत को नहीं पचा पाया। सोचा, थोड़ा सा तो डराया ही जाये तुम्हें। तुमने नजला-जुकाम वाली बात कही। मैं चुप रह गया। तुमने सोचा—‘बच्चे को बना दिया उल्लू।’...अब समझ में आया होगा, उल्लू तो ये बच्चा बना रहा था तुम्हें।”

“ये बातें राजदान तुम्हें कैसे बताई?”

“फोन पर।”

“तुम्हारे यहां तो फोन ही नहीं हैं”

“मेरे ट्राऊजर की बार्थी जेब में हाथ डालो।”

देवांश हिचक गया।

बबलू बोला—“डालो न, वा मेरे हाथ खोल दो।”

ठकरियाल ने उसकी जेब में हाथ डाला।

वापस आया तो उसमें ‘नोकिया’ का छोटा सा सेलफोन था। उसे देखते ही देवांश के मुँह से निकला—“ये तो मेरा फोन है।”

“है तो चाचू की कमाई का ही न?”

“तेरे पास कहां से आया?”

“अब क्या यह भी बताना पड़ेगा, चाचू ने दिया था ताकि वक्त जरूरत पर कॉन्टेक्ट कर सकें। वही किया।”

ठकरियाल के हाथ से फोन देवांश ने लिया।

वह लिस्ट चैक की जिसमें ‘इनकमिंग कॉल’ स्टोर होती थीं। एक ही कॉल स्टोर थी उसमें, देवांश ने उस नम्बर को पढ़ा। चौंका। बोला—“ये तो राजदान के सेल्युलर का नम्बर है। मतलब फोन उन्हीं के मोबाईल से किया गया।”

“बोल भी वे रहे थे दूसरी तरफ से।” बबलू ने कहा—“रात क तीन बजे।”

ठकरियाल, दिव्या और देवांश उसे घूरते रह गये। उसे—जो केवल सोलह साल का होने के बावजूद इस वक्त उन्हें दुनियां का सबसे ज्यादा चलता-पुर्जा नजर आ रहा था।

कुछ देर की खामोशी के बाद ठकरियाल ने कहा—“ये जो तुमने अब कहा है, अपने जेब से फोन बरामद कराया है। यह सब भी राजदान के कहने पर ही किया होगा।”

“वह मैं कर ही नहीं सकता जो उनका हुक्म न हो।”

“एक और छोटे से सवाल का जवाब दो मेरे।”

“लम्बा हो या छोटा, मैं उस हर सवाल का जवाब देने के लिये हाजिर हूँ जिसका जवाब मेरे पास है क्योंकि चाचू ने कहा था—कुछ भी मत छुपाना, जो मालूम है—सब बता देना।”

एक बार फिर ठकरियाल उसे घूरता रहा गया। अपने असली मनोभावों को छुपाता बोला—“ये बताओ—जो तुमने कहा, वह सब सचमुच हुआ भी है या केवल इसलिये कहा क्योंकि राजदान ने यह सब कहने के लिये कहा है?”

“मेरी तुच्छ बुद्धि में मतलब नहीं घुस सका आपकी गूढ़ बात का।”

“तुमने जो यह कहा, राजदान जिन्दा है। अपनी जगह उसने एक स्टेज आर्टिस्ट से सुसाईड कराई। तीन बजे तुमसे फोन पर बात की।...तुम्हारी नॉलिज के मुताबिक यह सब सच है या केवल उसके कहने पर हमसे कह रहे हो?”

“मेरी नॉलिज के मुताबिक तो सच ही है।”

“तो फिर इस स्पॉट पर उसने तुम्हें, हमें यह सब बताने की इजाजत क्यों दी?”

“चाचू जानें या राम, अपुन ने कर दिया अपना काम।”

“कहा था, यह भी बता दूँ कि वह शख्स जिसने हमारे फ्लैट की इमारत के टैरेस से देवांश अंकल का छाया चित्र खींचा था, कोई और नहीं खुद चाचू थे।”

“ओह।...यह भी पता है तुम्हें?”

“जी।”

“और क्या पता है?”

“बहुत कुछ पता है। सवाल करते रहिये—जवाब मिलते रहेंगे। तांत्रिक अंगूठी समझिये मुझे।”

“मेरे बोर में क्या कहा था।”

“केवल इतना कि मैंने पांच लाख में ठकरियाल को एक काम सौंपा है। मगर मैं जानता हूँ—वह दिव्या और देवांश से बड़ा लालची है। वह आधा काम भले ही कर दे मगर पूरा काम हरगिज नहीं करेगा क्योंकि उससे पहले ही दिव्या उसे पांच करोड़ की हुंडी नजर आने लगेगी। वह उनके साथ मिल जायेगा और तुझे फंसाने के मिशन पर काम करेगा।”

“यह सब कहा उसने?”

“हाथ खोल दो। स्टाम्प पेपर ले आओ। मैं लिखकर दे सकता हूँ। वैसे, सोलह साल के बच्चे के लिखे की कोई वैल्यू नहीं होती।” ठकरियाल फैसला न कर सका।

बबलू झूठ बोल रहा है या सच।

राजदान के दिमाग का लोहा मानना पड़ा उसे ओर अब...उसे इस झमेले से गुजरकर पांच करोड़ तक पहुंचना था।

इतने सवालों के जवाब मिल जाने के बावजूद उसके जहन में बहुत से सवाल कुलबुला रहे थे। जैसे—राजदान ने अपनी हत्या के जुर्म में बबलू को क्यों फंसाया? क्यों उसने बबलू से रणवीर राणा के सामने कुछ और, और उसके बाद कुछ और बयान देने के लिए कहा? इस स्पॉट पर बबलू द्वारा उनकी नॉलिज में ये सारी बातें ले आने के पीछे राजदान का क्या उद्देश्य है?

क्या वह मानसिक रूप से उन्हें टॉर्चर करना चाहता है? तोड़ डालना चाहता है उन्हें?

आखिर षड्यंत्र क्या है उसका?

इस बार बबलू से यही पूछा ठकरियाल ने—“राजदान चाहता क्या है?”

“एक से ज्यादा बार कह चुका हूँ।” बबलू ने रटा-रटाया जवाब दिया—“मुझे नहीं मालूम।”

“जब इतना सब कुछ मालूम है तो इस बात पर कैसे विश्वास किया जा सकता है तुम्हें उसका प्लान नहीं मालूम?”

“नहीं मालूम तो नहीं मालूम, इसमें क्या कर सकता हूँ मैं?”

“अगर मैं ये कहूँ।” ठकरियाल ने अपना एक-एक शब्द चबाया—“तुम्हें मालूम तो है मगर राजदान की तरफ से बताने की परमीशन नहीं है, तो?”

“और जो बताने की परमीशन नहीं है, उसे तुम बगैर थर्ड डिग्री से गुजरे नहीं बताओगे।”

सुनते हो, ठहाका लगाकर हंस पड़ा लड़का।

एक बार हंसा तो फिर हंसता ही चला गया। अंदाज ऐसा था जैसे ठकरियाल ने कोई जबरदस्त चुटकुला सुना दिया हो।

ठकरियाल दांत पीस उठा।

दिव्या और देवांश सहमी-सहमी नजरों से बबलू को देख रहे थे।

वह छोटा-सा लड़का इस वक़्त उन्हें अपने लिये यमराज द्वारा भेजा गया दूत सा लग रहा था।

पुलिस टॉर्चर रूम में, एक इंस्पेक्टर के सामने कुर्सी पर बंधा होने के बावजूद जरा भी तो नहीं डर रहा था वह। उल्टा उन्हें, अपनी खिलखिलाती हंसी से डराये दे रहा था। उस हंसी से जो उन्हें अपनी खिल्ली सी उड़ाती महसूस हो रही थी।

खिलखिलाहट जब थोड़ी कमजोर पड़ी तो दांत भींचे ठकरियाल ने पूछा—“क्या मतलब हुआ इस पागलों जैसी हंसी का?”

“हंसी मुझे इसलिये आ गई अंकल क्योंकि फिर...एक बार फिर वही हो गया जो चाचू ने कहा था।” अपनी हंसी रोकने का सा प्रयास करते बबलू ने कहा।

“क्या कहा था?”

“यही की जब मैं वह सब बता चुकूंगा जो जानता हूँ तो तुम फिर किसी न किसी बहाने से मुझे टॉर्चर करने के मंसूबे बनाओगे मगर, मंसूबे केवल मंसूबे रह जायेंगे। कर नहीं सकोगे ऐसा।”

ठकरियाल के जबड़े कस गये। गुराया—“मेरे थाने में, कौन रोक लेगा मुझे?”

तभी टॉर्चर रूम के बद दरवाजे को किसी ने खटखटाया।

तीनों ने चौंककर उस तरफ देखा।

बबलू के गुलाबी होठों पर फैली मुस्कान गहरी हो गई।

ठकरियाल ने भन्नाते हुए लहजे में पूछा—“कौन?”

“मैं सर।” रामोतार की आवाज सुनाई दी।

“क्या मुसीबत आ गई?...मैंने तुमसे खुद को डिस्टर्ब न करने के लिए कहा था।”

“सर, एक वकील साहब आये हैं आपसे मिलने।”

ठकरियाल आपे से बाहर होकर चिल्ला उठा—“मेरे ऑफिस में बैठा उसे। कह! अभी बिजी हूँ, थोड़ी देर बाद मिलूंगा।”

“काम जरूरी है हुजूर।” एक नई आवाज सुनाई दी—“राजदान साहब का फरमान लाया हूँ।”

झटका सा लगा ठकरियाल के दिला-दिमाग को। मुंह से निकला—“र-राजदान का फरमान?”

पलटकर दिव्या और देवांश की तरफ देखा। उनकी तरफ जिनके चेहरों पर हवाईयां उड़ रही थीं। कोशिश के बावजूद ठकरियाल अपने मुंह से आवाज न निकाल सका जबकि थोड़े गैप के बाद बाहर से पुनः वही आवजा उभरी—“हुजूर खोल रहे हैंया मैं एस. एस. पी. साहब का फोन खटखटाऊं?”

भन्नाया हुआ ठकरियाल दरवाजे की तरफ लपका।

अगले पल, एक झटके से दरवाज खोल दिया उसने।



बड़े-बड़े कानों और तोते जैसी नाक वाला शख्स था वह।

रंग पीला था।

पतला-दुबला। मुश्किल से पांच फुट। उसके सिर के पिछले हिस्से में केवल इतने बाल थे जिन्हें आसीन से गिना जा सकता था। बाकी सिर दर्पण की मानिन्द चमक रहा था।

जिस्म पर वकीलों का लिबास।

सफेद पैंट। सफेद कमीज। टाई और काला कोट।

वह मुस्करा रहा था। मुस्कराने के कारण उसके होठों के दोनों सिरों कानों तक फैले नजर आ रहे थे। मारे गुस्से के तमतमा रहे ठकरियाल ने पूछा—“कहिये! कौन हैं आप?”

“बंदे को वकीलचंद कहते हैं।” कहने के साथ वह अपने पेट पर हाथ रखकर ठकरियाल के सम्मान में इस तरह झुका जैसे मोटी टिप मिलने पर वेटर झुकता है—“नाम से भी और पेशे से भी।...मां-बाप ने शायद पैदा करने से पहले ही वकीलचंद रख दिया। वकीलचंद जैन! लायक बेटा था मां-बाप का इसलिये सपना पूरा कर दिया। एल. एल. बी. में फर्स्ट क्लॉस आया था बंदा।”

“राजदान साहब का क्या फरमान लाये हो?”

“कुछ भी नहीं।” कहने के साथ उसने दरवाजे के बीचो-बीच खड़े ठकरियाल के दावें-बायें से कमरे में झांकने का प्रयत्न किया।

“क-कुछ भी नहीं?” ठकरियाल चकराया—“कहा तो यही था तुमने।”

बड़े आराम से कह दिया वकीलचंद ने—“झूठ बोल दिया था।”

“झ-झूट?”

“वैसे झूट बोलना पाप होता है। मगर मेरे लिये नहीं। वकील हूं न। भगवान महावीर भी बुरा नहीं मानते मेरे झूट बोलने पर। वे भी समझते हैं—पेशा ही ऐसा है। घोड़ा घास से यारी करेगा तो खायेगा क्या? बगैर झूट बोले चल ही नहीं सकती अपनी दुकान।.. अब इसी मामले को लो—मैं वह नहीं कहता जो कहा तो आप कभी लपककर दरवाजा न खोलते।”

“तो फिर क्यों...क्यों आये हो यहां?”

“बंदा मानवाधिकार आयोग की तरफ से ड्यूटी पर है।”

“मानवाधिकार आयोग?”

“पुलिस इंस्पेक्टर हैं आप। जरूर जानते होंगे—यह एक ऐसा डिपार्टमेंट है जहां आदमी का कोई भी बच्चा अपने मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए एप्लीकेशन लगा सकता है। वही कर रखा है इस छोटे से बच्चे ने।” कहने के साथ उसने कुर्सी पर बंधे बैठे बबलू की तरफ इशारा किया—“एक एप्लीकेशन लगाई थी इसने मानवाधिकार आयोग में। उसमें लिखा है—पुलिस अपनी कस्टडी में इसे मानसिक और शारीरिक रूप से टॉर्चर का सकती है, यहां तक कि एनकाऊन्टर तक किया जा सकता है इसे। और आप तो जानते हैं—एक पुलिस इंस्पेक्टर को ऐसा कुछ करने के अधिकार नहीं होते। कहीं आप ऐसा कर ही न डालें—इसके लिए आयोग की तरफ से मेरी ड्यूटी लगाई गई है।”

“फिर भी, अगर मैंने ऐसा किया तो क्या कर लोगे तुम?”

“रिपोर्ट दे दूंगा आयोग को अपनी। इससे ज्यादा कर भी क्या सकता हूं। वैसे इंस्पेक्टर हैं आप। जानते ही होंगे—मेरी रिपोर्ट के बाद आप इंस्पेक्टर नहीं रह सकेंगे।”

ठकरियाल के जबड़े भिंच गये। कसमसा उठा वह। जी चाहा—एक ही घूंसे में तोते जैसी नाक को चपटी कर डाले परन्तु कर नहीं सकता था ऐसा। जानता था—सचमुच ऐसी किसी हरकत का अंजाम नौकरी से हाथ धोना होगा। अब जाकर उसकी समझ में आया—बबलू क्यों बार-बार कह रहा था वह उसे टॉर्चर नहीं कर सकता। बबलू या राजदान की ‘पंशबंदी’ ने एक बार फिर तिलमिलाकर रख दिया उसे। वह इन्हीं सब ख्यालों में खोया हुआ कि वकीलचंद चूहे की तरह रेंगकर कमरे के अंदर पहुंच गया। बबलू से बोला—“ठीक तो हो तुम?”

“बिल्कुल सही वक्त पर पहुंचे वकील अंकल।” बबलू ने कहा—“थोड़े भी लेट हो जाते तो ये लोग अपना कार्यक्रम शुरू करने वाले थे।”

“इंस्पेक्टर।” दिव्या ने वकीलचंद की तरफ इशारा करके ठकरियाल से कहा—“ये तो बचपन के दोस्त है उनके। राजदान से मिलने विला में भी आये थे।”

“ठीक पहचाना भाभीजान ने।” वकीलचंद बोला—“मगर उस दिन मैं वकीलचंद जैन की हैसियत से आया था, आज वकीलचंद एडवोकेट की हैसियत से पधारा हूं।”

ठकरियाल ने उसे घूरते हुए पूछा—“आयोग का नियुक्ति पत्र है तुम्हारे पास?”

“मुलाहिजा फरमाइये।” कहने के साथ वकीलचंद ने अपने कोट की जेब से एक कागज निकाल कर ठकरियाल के हाथ में ठूंस दिया। बोला—“आयोग का हुक्म है—जब तक आप इस बच्चे को कोर्ट में पेश नकर दें, तब तक मैं यही का दाना-पानी खाऊं-पियूं।”



“नहीं।...अब कुछ नहीं हो सकता। चौबीस घंटों के अंदर मुझे बबलू को कोर्ट में पेश करना होगा और उससे पहले वकील चंद टॉर्चर रूम से टलने वाला नहीं है।” ठकरियाल कहता चलाय गया—“कमाल का आदमी निकला राजदानं कदम-कदम पर उसने ऐसा जाल बिछा रखा है जिसमें फंसे हम केवल कसमसा सकते हैं। कुछ कर नहीं सकते। इतना चतुर, इतना चालाक और इतना बड़ा खिलाड़ी लगता तो नहीं था वह।”

“भगवान!” दिव्या बड़बड़ा उठी—“मरने से पहले कितने लोगों को पीछे लगा गया वह हमारे। बबलू, उसे फोन करने वाला, वकीलचंद और वह फोटोग्राफर।”

“हमारे किये अब तक हुआ ही क्या है।” देवांश बोला—“सब कुछ राजदान के ही प्लान के मुताबिक तो हो रहा है। यहां तक कि..जो हम सोच रहे होते हैं कि अपनी प्लानिंग के मुताबिक कर रहे हैं, कुछ ही आगे बढ़ने पर पता लगता है—वही कर रहे हैं जो राजदान मरने से पहले जानता था कि हम करेंगे।”

“तुम भूल रहे हो, उसका मरना भी संदेह के घेरे में आ गया है।”

“नहीं। इस बात को मैं किसी कीमत पर नहीं मान सकता।”

“दावे की वजह?”

“मुझे अब भी उसके मरने का सीन अच्छी तरह याद है। बल्कि आंखों के सामने घूम रहा है। वे बातें कानों में गूंज रही हैं जो उसने कही थीं। मैं कैसे बताऊं...कैसे समझाऊं इंस्पेक्टर, वे बातें उस अंदाज में दूसरा कोई, भले ही चाहे वह जितना मंजा हुआ स्टेज आर्टिस्ट हो, कर ही नहीं सकता। तुम्हें याद है दिव्या, उस वक्त उसेक चहरे पर तड़प और वेदना के कितने गहरे भाव थे जब उसने कहा था जब उसने कहा था—‘क्यूं किया! क्यूं किया! क्यूं किया ऐसा। अरे ऐसा ही करना था तो मरी मौत के बाद कर लेते। चैन से मर तो जाने देते मुझे। कम से कम मेरी आंखों को तो न दिखाते वह मंजर।’ उसकी वह तड़प, वह छटपटाहट! नहीं...नहीं ठकरियाल, एक एक्टर के बसका रोग नहीं था वह। बस इतना ही कह सकता हूं—यदि उस वक्त होते तो मेरी तरह दावा कर रहे होते, वह राजदान ही था।”

“मैं ये नहीं कह रहा तुम्हारे दावे में दम नहीं है। समझ सकता हूं—इस स्पॉट पर बबलूके मुंह से यह सब कहलवाना, हमें बौखलाने के लिये मरे हुए राजदान की चाल भी हो सकती है,

मगर...

“मगर?”

“बबलू इतना खुश नजर नहीं आ रहा होना चाहिये था।”

“मतलब?”

“जरा सोचो, कितना खुश है वह लड़का। बल्कि मस्त है। मजा ले रहा है हमारी अवस्था का। हालात को पूरी तरह इन्जवॉय कर रहा है। अगर उसे पता होता—राजदान सचमुच मर चुका है तो क्यों ऐसी ही अवस्था में होता—राजदान सचमुच मर चुका है तो क्या ऐसी ही अवस्था में होता वह? उसे तो दुख में डूबा होना चाहिये था। जितना प्यार वह राजदान से करता था, उसकी रोशनी में देखें तो...

“बात में दम है देव।” चेहरे पर खौफ लिये दिव्या कह उठी—“सचमुच उसके चेहरे पर दुख का वैसा कोई लक्षण नहीं है जैसा राजदान की मौत पर होना चाहिये था। कम से कम उसे तो एक्टर मान नहीं सकते हम। उसकी हर हरकत से केवल एक ही बात टपक रही है—यह कि राजदान जिन्दा है।”

“कैसे हो सकता है ऐसा?” देवांश अविश्वसनीय स्वर में बड़बड़ाया—“कैसे?”

दिव्या बोली—“हमारे पास बबलू से बरामद तुम्हारा मोबाईल है। बकौल बबलू, और...इसकी इनकमिंग लिस्ट भी बता रही है, रात दो पचपन पर राजदान के मोबाईल से इस पर फोन किया गया। क्यों न हम इससे उसी नम्बर अर्थात् राजदान के मोबाईल पर फोन करें? मुमकिन है वह शख्स जिसके पास इस वक्त राजदान का मोबाईल है, अभी तक इस भ्रम में हो कि यह फोन बबलू के पास है और वह उससे कॉन्टेक्ट करने की कोशिश कर रहा है, कॉल रिसीव करे”

“नहीं।” ठकरियाल ने विरोध किया—“वह जो भी है, राजदान या कोई और, इस भ्रम में नहीं हो सकता कि यह फोन अभी तक बबलू के पास है, बल्कि वह पक्के तौर पर जानता होगा—फोन इस वक्त हमारे कब्जे में है।”

“यह बात इतने विश्वास के साथ कैसे कह सकते हो?”

“फोन खुद बबलू ने अपने पास हमें बरामद कराया है अर्थात् एक तरह से यूं कहा जा सकता है—इस वक्त फोन हमारे पास उन्हीं की प्लानिंग के मुताबिक है।”

“फिर क्या करें?”

“मेरे ख्याल से राजदान के मोबाईल पर फोन तो किया जाना चाहिये मगर उस पी. सी. ओ. से।” ठकरियाल ने गाड़ी की विंड स्क्रीन के पार काफी दूर नजर आ रहे पी. सी. ओ. की तरफ अंगुली से इशारा करने के साथ कहा—“राजदान का फोन जिस किसी के पास भी है, उसकी स्क्रीन पर एक अंजाना नम्बर देखकर वह कॉल जरूर रिसीव करेगा।”

“बात में दम है।” दिव्या बड़बड़ाई।

तब तक वे पी. सी. ओ. क नजदीक पहुंच चुके थे।

‘जेन’ ड्राईव करते देवांश ने गाड़ी पी. सी. ओ. के नजदीक रोक दी।

उनके पीछे-पीछे चली आ रही पुलिस जीप भी रुक गई। उसे थाने का ड्राईवर चला रहा था।

ठकरियाल की तरफ से यही निर्देश थे उसे। यह कि ‘जेन’ के पीछे-पीछे चलता रहे। यह निर्देश उसे ठकरियाल ने थाने से चलते वक्त दिये थे। असल में दिव्या और देवांश को विला पहुंचाना था। ठकरियाल को अपने क्वार्टर पर। एक चौराहे से उनके रास्ते अलग-अलग हो जाने वाले थे। ठकरियाल ने सोचा था—वहां से वह अपनी जीप में बैठ जायेगा। वहां तक दिव्या और देवांश के साथ उन्हीं बातों पर करना चाहता था जिन पर कर रहा था।

दिव्या जेन की पिछली सीट पर बैठी थी।

ठकरियाल ड्राईव करते देवांश की बगल वाली सीट पर।

अभी उन्होंने अपनी-अपनी साईड का दरवाजा खोलने के लिये हाथ बढ़ाये थे कि देवांश की जेब में पड़ा मोबाईल बज उठा। तीनों चौंके।

देवांश ने हाथ बढ़ाकर मोबाईल निकाला।

स्क्रीन पर नजर आ रहे नम्बर को पढ़ा।

और।

उछल पड़ा वह। मुंह से चीख सी निकली—“य-यह तो उसी का नम्बर है।”

ठकरियाल ने झपट्टा सा मारकर मोबाईल उसके हाथ से छीन लिया। स्क्रीन पर सचमुच राजदान के मोबाईल का नम्बर नजर आ रहा था। पिछली सीट पर से अंधखड़ी हो चुकी दिव्या ने भी उस नम्बर को देख लिया था। चेहरा पलक झपकते ही ऐसा हो गया जैसे किसी अज्ञात शक्ति ने हल्की पाते दी हो। फोन वापस देवांश की तरफ बढ़ाते ठकरियाल ने कहा—“बात करो।”

“म-मैं?” देवांश के हलक से बकरी की सी मिमियाहट निकली।

फोन लगातार बज रहा था।

देवांश की हालत देखकर ठकरियाल गुर्रा उठा—“बात करो देवांश!”

देवांश ने फोन लिया। हाथ बुरी तरह कांप रहा था। उसे ‘ऑन’ करते वक्त सारा चेहरा पसीने से तर हो चुका था। जब ‘हैलो’ कहा तो अपनी ही आवाज किसी अंधकूप से निकलती सी लगी उसे।

जवाब में दूसरी तरु से आवाज उभरी—“तुमने पी. सी. ओ. के नजदीक गाड़ी रोकी। मुझे लगा—शायद मुझ ही से बात करना चाहते हो। सोच—क्यों न मैं ही फोन मिला दूं?”

“भ-भैया!” देवांश के हलक से चीख सी निकली।

“भैया कहां—आजकल तो सीधे-सीधे राजदान कहता है तू मुझे।” आवाज राजदान की ही थी—“वह कह! वही कह छोटे! तेरे मुंह से अपने लिये इज्जत सूचक शब्द सुनकर अब मुझे खीझ सी होती है।”

“म-मगर! आप जिन्दा कैसे हो सकते हैं?”

“क्यों, बताया नहीं बबलू ने?”

“वह झूठ है। वह झूठ है।” देवांश पागलों की तरह चिल्ला उठा—“ऐसा हो ही नहीं सकता।”

दूसरी तरफ से ठहाका लगाने की आवाज उभरी। ऐसी, जो देवांश की रीढ़ की हड्डी में सिर दर्द लहर बनकर दौड़ती चली गई। हंसने के बाद दूसरी तरफ से कहा गया—“फोन जाने जिगर को दे अपनी। जानता है न, कौन ही तेरी जाने जिगर?”

फोन दिव्या की तरफ बढ़ाते देवांश ने कांपती आवाज में कहा—“त-तुमसे बात करनी चाहता है।”

“म-मुझसे?” दिव्या की हालत वैसी ही थी जैसी रात के बारह बजे श्मशान भूमि में भूतों का ताण्डव देख रहे ‘कमजोर दिल’ व्यक्ति की हो सकती है।

मोबाईल से निकलकर राजदान की आवाज मुकम्मल कार में गूंजी—“हां मेरी जान, तुम्हीं से बात करनी चाहता हूं मैं। फोन अपने कोमल हाथ में लेकर सुरीली आवाज में कम से कम ‘हैलो’ तो कहो।”

फोन देवांश के हाथ से लेकर अपने कान की तरफ ले जा रही दिव्या की हालत उस रोबोट जैसी थी जिसे वैज्ञानिक अपने आदेश के मुताबिक गतिमान कर सकता है। दूसरी तरफ से कहा गया—“दिव्या, मेरी देवी बहुत तेज चला है तेरा दिमाग तो, फिर समझाती क्यों नहीं अपने आशिक को—दुनियां में कोई मूर्ख ऐसा नहीं है जिसे पता लग जाये कि फलां-फलां उसके कत्ल के तलबगार हैं और वह उन्हीं के सामने सुसाईड कर ले।”

“तो मरने वाला क्या सचमुच आपके मेकअप में कोई स्टेज आर्टिस्ट...”

ठकरियाल ने दिव्या का वाक्य पूरा होने से पहले ही झपटकर फोन उसके हाथ से लिया और गुर्राया—“तू जो भी है, कान खोलकर सुन हरामजादे। अपनी लाईफ में मैंने ऐसे हजारों ‘आर्टिस्ट’ देखे हैं जो दूसरों की आवाज की हूबहू नकल कर सकते हैं। तू जो खुद को राजदान साबित करके हमें डराने की कोशिश कर रहा है, बहुत ही बचकाना हरकत है ये।”

राजदान के हंसने की आवाज उभरी। उसके बाद कहा गया—“जानता हूं इंस्पेक्टर। जानता हूं इन दोनों के मुकाबले तू कुछ ज्यादा ही घुटा हुआ है मगर सोच, कोई और क्यों खुद को राजदान साबित करना चाहेगा?”

“उसी ने कुछ पैसे देकर नियुक्त किया होगा तुझे इस काम पर।”

पुनः हंसने की आवाज उभरी। कहा गया—“ठीक उसी तरह न, जैसे मैंने पांच लाख तुझ तक पहुंचाकर तुझे इन दोनों को जेल न, जैसे मैंने पांच लाख तुझ तक पहुंचाकर तुझे इन दोनों को जेल में ठूंसे पर नियुक्त किया था। मगर, जरा सोच ठकरियाल—कितनी गहराई तक जानता था मैं तुझे। अच्छी तरह जानता था, एक नम्बर का हरामी और लालची है तू। इतना दीवान है दौलत का कि मैं अच्छी तरह जानता था, पांच करोड़ नजर आते ही तू राल टपका बैठेगा। वही हुआ। अब तुझे भी इनकी तरह अपनी करतूतों का अंजाम

भुगतना होगा। चाहे जितने हाथ-पैर मार लेना मगर तुममें से कोई भी, मेरे जाल से बच नहीं सकेगा।”

कहने के बाद दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया।

कुछ कहने के लिये ठकरियाल का मुंह खुला था मगर खुला ही रहा गया।

जबड़े कसे हुए थे उसके। चेहरा भभक रहा था।

दिव्या और देवांश की तरफ डरा हुआ बिल्कुल नजर नहीं आ रहा था वह।

वापस राजदान का नम्रार रिंग किया।

इरादा स्पष्ट था—दूसरी तरफ जो भी कोई था, उससे वह और बातें करनी चाहता था परन्तु कामयाब न हो सका। दूसरी तरफ के मोबाईल का स्विच ऑफ हो चुका था।

“उल्टा मुझ ही से डर गया साला।” ठकरियाल बड़बड़ाया—“फोन ऑफ कर दिया है उसने।”

न दिव्या कुछ कह सकी, न देवांश।

उन्हें होश ही कहां था कुछ कहने का। चेहरों पर हवाईयां उड़ रही थीं।

“इस कदर क्यों होश फाख्ता हैं तुम्हारे?” ठकरियाल गुर्गया—“सम्भालो खुद को। यूं कमजोर पड़ जाने से काम नहीं चलेगा। मुकाबला करना होगा उसका।”

देवांश बड़ी मुश्किल से पृष्ठ सका—“क-क्या वह वही है?”

“हमें इस फेर में नहीं पड़ना।” ठकरियाल कहता चला गया—“भले ही वह राजदान हो या कोई और, टकराना तो पड़ेगा ही उससे।”

“उसे मालूम था हमने अपनी गाड़ी पी. सी. ओ. के नजदीक रोकी है।” देवांश की आवाज अभी भी कांप रही थी—“इसका मतलब, वह यहीं—कहीं हमारे आसपास है।” कहने के साथ उसकी सहमी हुई नजरें अपने चारों तरफ का निरीक्षण करने लगी थीं।

ठकरियाल और दिव्या की नजरों ने भी वैसा ही किया।

वह एक व्यस्त सड़क थी। अनेक वाहन तेजी से आ जा रहे थे। करीब एक फर्लांग दूर एक चौराहा भी था जहां लाइटें नियमित रूप से लाल ओर हरी हो रही थीं। ठकरियाल बोला—“इस तरह कुछ पता नहीं लग सकेगा।”

“लेकिन।” दिव्या ने कहा—“यह तो पता लगाना चाहिये—वह वही है या उसके द्वारा नियुक्त किया गया कोई ‘आर्टिस्ट’। इसी के आधार पर तो हम उससे टकराने की रणनीति बना सकेंगे।”

देवांश बोला—“इसका फैसला तो तभी हो सकता है जब एक बार फिर राजदान की लाश सामने आये और...हम इस नजरिये से उसकी जांच-पड़ताल करें।”

“तुम ठीक कह रहे हो देवांश। फिलहाल हमारे पास इस भ्रमजाल से निकलने कस एक ही तरीका है।” ठकरियाल कहता चला गया—“पोस्टमार्टम से लाश मिलने के बाद, शवयात्रा से पहले जब रस्म के मुताबिक उसे नहलाया जा रहा होगा तो उस वक्त मैं वहां खुद मौजूद रहूंगा। फेस चैक करूंगा उसका। खाल की जगह प्लास्टिक के रेशे हुए तो साफ हो जायेगा वह जिन्दा है।”

दोनों में से कोई कूद कह नहीं सका।



राजा हरिश्चन्द्र बनने से काम नहीं चलेगा बबलू के पापा।” सुजाता ने कहा----“कुछ करना होगा हमें। आखिर बबलू हमारा बेटा है।

“कैसा बेटा है वो मेरा।” बुरी तरह भन्नाया सत्य प्रकाश चीख पड़ा—“मेरा बेटा होता तो कभी ऐसा काम कर ही नहीं सकता था।”

तभी वहां एक नई आवाज गूंजी—“बबलू आप ही का बेटा है अंकल क्योंकि...क्योंकि उसने वैसा कुछ नहीं किया जैसा पुलिस कह रही है।”

सुजाता और सत्य प्रकाश ने एक साथ पलटकर दरवाजे की तरफ देखा।

वहां एक गुड़िया जैसी लड़की खड़ी थी।

स्वीटी थी वह।

सत्य प्रकाश ने पूछा—“तू कौन है?”

“दोस्त हूं बबलू की, उसके साथ पढ़ती हूं।”

“तुझे कैसे मालूम उसने वह सब नहीं किया ओर फिर, नहीं किया तो उनके गहने कैसे बरामद हुए बबलू के स्कूल बैग से? कैसे उसके फुट स्टैप्स राजदान के बैडरूम से मिले? कुछ ही देर पहले एस. एस. पी. से हमारी बात हुई है। उसका कहना है—बबलू ने खुद अपना गुनाह कुबूल कर लिया। उस बेक्कूफ ने जो कुछ किया हमारे द्वारा लिये गये कर्जे की चुकाने के लिये किया और अब तो उसी

की निशानदेही पर खून से सने कपड़े भी बरामद कर लिये गये हैं।”

“वही सब बताने आई हूँ मैं यहां।” स्वीटी बोली—“बबलू ने कहा था—उसकी गिरफ्तारी आपको बहुत दुखी कर देगी। तब, मुझे सामने आकर आपको सच्चाई बतानी है ताकि आप और ज्यादा दुखी न हों।”

सत्य प्रकाश ने चौंके हुए स्वर में पूछा—“कहना क्या चाहती है तू?”

“बता तो मैं दूंगी अंकल लेकिन उससे पहले आपको वादा करना होगा, वे बातें आप किसी और को नहीं बतायेंगे।”

“बात आखिर है क्या?” उत्कंठा की ज्यादाती के कारण सत्य प्रकाश चीखा सा पड़ा।

“बबलू ने वही किया है जो चाचू ने कहा।”

“र-राजदान ने?”

“हां।”

“क्या कहा उसने?”

“यह कि पुलिस जो भी चार्ज लगाये वह उस सबको कुबूल कर ले बल्कि एक कहानी भी सुनाई। वही कहानी जो बबलू ने पुलिस स्टेशन में पुलिस को सुनाई होगी। चाचू ने कहा था—‘तुझे हर एक्टिंग से खुद को मेरा हत्यारा साबित करना है। ऐसा कोई प्लान बाकी नहीं रह जाना चाहिये जिसके बेस पर लोग सोच सकें तू झूठ बोल रहा है’।”

“य-ये क्या बात हुई भला?” सत्य प्रकाश की खोपड़ी उलट गई—“ऐसा क्यों कहा राजदान ने?”

“उन्हें सबक सिखाने के लिए जो उनका मर्डर कर देना चाहते थे।”

“बात कुछ समझ में नहीं आ रही। बक क्या रही है तू? पूरा किस्सा बता।”

“पूरा किस्सा तो न मुझे मालूम है न बबलू को।” स्वीटी कहती चली गई—“काफी पूछा मने लेकिन चाचू ने नहीं बताया। कहने लगे—‘बस इतना समझ लो, कुछ लोग मेरी हत्या करनी चाहते हैं। इस जुर्म में वे तुम्हें (बबलू को) फंसाने की कोशिश करेंगे। तुम्हारा काम होगा—खुद को मेरा हत्यारा साबित करना ताकि ‘वे’ इस भ्रम में रहें कि उनकी योजना कामयाब हो गयी है।”

“अजीब बात है, ऐसा क्यों चाहता था राजदान?”

“हमने काफी पूछा। चाचू ने बताया नहीं। कहने लगे—‘मुझसे प्यार करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो तो वही करोगे जो मैं कह रहा हूँ।’

“और बेवकूफ बना बबलू वह सब करता चला गया। खुद को हत्यारा कह रहा है राजदान का। आखिर...आखिर ये बात क्या हुई?” कहते-कहते सत्य प्रकाश ने अचानक झपटकर स्वीटी का हाथ पकड़ लिया। कहा—“तुझे हमारे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा। वहां कहना होगा यह सब जो तूने अभी-अभी कहा।”

“नहीं अंकल। मैं वहां नहीं जाऊंगी। वहां नहीं कहूंगी मैं ये सब। इस तरह तो चाचू का पूरा प्लान ही फेल हो जायेगा। नाराज हो जायेगा बबलू मुझसे।”

“राजदान का प्लान आखिर था क्या?”

“हमें नहीं मालूम।”

“अजीब आदमी था राजदान। पता नहीं बच्चों को किस झमेले में फंसा गया। आ! तुझे पुलिस को यह सब बताना होगा।” कहने के साथ सत्य प्रकाश ने उसे दरवाजे की तरफ घसीटना शुरू कर दिया।

स्वीटी उसके साथ जाना नहीं चाहती थी। वह चीख-चीखकर सुजाता से कहने लगी—“आंटी, बचाओ मुझे। समझाओ अंकल को। मैंने तो पहले ही वादा ले लिया था ये बातें किसी और को नहीं बताई जायेंगी। पुलिस को तो किसी कीमत पर नहीं।”

सुजाता के मुंह से बोल न फूट सका। बुत की मानिन्द खड़ी थी वह। पैचदार बातें उसकी समझ में बिल्कुल नहीं आ रही थीं। समझ नहीं पा रही थी क्या करे, क्या न करे?

स्वीटी को खींचता सत्य प्रकाश दरवाजे के नजदीक पहुंचा ही था कि ठिठककर रुक जाना पड़ा।

दरवाजे की बीचो-बीच उनका रास्ता रोके एक शख्स खड़ा था।

उसकी शक्ति नहीं देख सकते थे वे।

जिस्म पर भारी बूट, काली पतलून, ओवरकोट और हैट था। ओवरकोट के कॉलर खड़े थे। हैट ललाट पर झुका हुआ। दोनों ने मिलकर उसके चेहरे को छुपा रखा था। काफी देर तक सुजाता, सत्य प्रकाश और स्वीटी हकबकाये से उसे देखते रहे।

हिम्मत करके सत्य प्रकाश ने पूछा—“क-कौन हो तुम?”

आगे बढ़ने के साथ उसने ओवरकोट के कॉलर गिरा लिये, हैट सीधा कर लिया।

“र-राजदान भैया!” सुजाता के हलक से चीख निकल गई।

स्वीटी कह उठी—“चाचू।”

सत्य प्रकाश इस तरह मुंह बाये उसे देखे चला जा रहा था जैसे उस 'मैसेज' पर विश्वास न कर पा रहा हो जो उसकी आंखें दिमाग को दे रही थीं। मुंह से निकला—“अ-आप?...आप जिन्दा हैं?”

“क्या अब भी आपके शक है मास्टरजी?” वह कुछ और आगे बढ़े।

“म-मगर। य-ये क्या चमत्कार है भैया?” सुजाता कह उठी—“आपकी लाश दूसरे लोगों की तरह हमने भी अपनी आंखों से देखी है। यहां से बबलू को गिरफ्तार करके जब वे विला में ले गये तो हम भी साथ थे। अगर तुम ये हो तो वह लाश किसकी थी?”

“सुजाता बहन, क्या तुमने उसका चेहरा देखा था?”

“चेहरा और सिर तो गोली लगने के कारण...उपफ! तो क्या वह किसी और की लाश थी?”

“इतना तो अब तुम लोग समझ ही सकते हो।”

“ल-लेकिन।” सत्य प्रकाश ने कहा—“ये चक्कर आखिर है क्या राजदान साहब? बबलू को आपने किस झमेले में फंसा दिया?”

“क्या आप ऐसा सोच सकते हैं मास्टरजी कि हम बबलू को किसी झमेले में फंसायेंगे?”

“सोच तो नहीं सकते थे मगर...”

“मगर?”

“वह आपकी हत्या के इल्जाम में थाने में है और ये लड़की...”

“जो कुछ इसने कहा, ठीक कहा।” राजदान उसकी बात काटकर कह उठा—“बबलू जो भी कर रहा है, वह हम ही ने उससे कहा है। विश्वास रखो, हम फना हो सकते हैं मगर बबलू का बाल तक बांका नहीं होने दे सकते। अगर यूँ कहा जाये तो गलत नहीं होगा—अगर वक्त रहते हमें दुश्मन का प्लान पता न लग जाता तो आज बबलू सचमुच हमारी हत्या के जुर्म में फंसा होता। इस कदन कि दुनिया की कोई ताकत उसे बचा नहीं सकती थी।”

“हम कुछ समझे नहीं।”

“उनका प्लान हमारा मर्डर करके बबलू को फंसाने का था। ऊपर वाले की कृपा से वक्त रहे हमें पता लग गया। हमने अपना ‘क्लोन’ तैयार किया। उनके हाथों उसकी हत्या होने दी और उन्हीं के प्लान के मुताबिक बबलू को फंसने दिया ताकि वे पूरी तरह इस खुशफहमी के शिकार हो सकें कि वे कामयाब हो गये हैं।”

“कौन लोग हैं वे और आप उन्हें इस भ्रम में क्यों फंसाये रखना चाहते हैं?”

“इस बात को अभी मास्टरजी कि वे कौन हैं? वक्त के साथ बेनकाब होना ही है उन्हें। हम इसी मिशन पर काम कर रहे हैं। हम समझ सकते हैं—आपको बबलू की स्थिति परेशान कर रही है। उसी परेशानी को दूर करने के लिए स्वीटी की ड्यूटी लगाई गई थी लेकिन हमें पहले ही शक था—आप इसकी बातों से संतुष्ट नहीं हो सकेंगे इसलिये खुद सामने आना पड़ा। हमारे ख्याल से आपको यह हकीकत जानने के बाद बेफिक्र हो जाना चाहिये कि जिसकी हत्या के इल्जाम में बबलू गिरफ्तार है वह जिन्दा है और ऐसा शख्स है जो किसी हालत में उस पर कोई आंच नहीं आने देगा।”

“वो सब तो ठीक है मगर...”

“मगर?”

“ये चक्कर आखिर है क्या?”

“हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ आपसे।” राजदान ने सचमुच हाथ जोड़ लिए—“किसी चक्कर को समझने की कोशिश न करें। कोशिश के बावजूद वे पेंचदार बातें आप जैसे सीधे-सीधे आदमी की समझ में नहीं आयेंगी। बस यूँ समझिये, बबलू को इस झमेले में फंसाने के लिए हम इसलिये मजबूर हो गये क्योंकि पहले ही से उनका प्लान उसे फंसाने का था। न होता तो वह काम जो हम बबलू से ले रहे हैं, यकीनन किसी और से लेते। बावजूद इसके, आपको बाल बराबर चिंता करने की जरूरत नहीं है। हम जिस क्षण चाहेंगे बबलू को कानून की गिरफ्त से निकाल लायेंगे।”

सत्य प्रकाश और सुजाता चुप रह गये।

राजदान ने अपने म्यूजिकल लार्डर से एक सिगार सुलगाया, पूछा—“क्या आपको मुझ पर यकीन नहीं है?”

“क-कैसी बातें कर रहे हो राजदान भैया?” सुजाता कह उठी—“आप पर यकीन और वो भी बबलू के सम्बन्ध में?...मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है, आप उसे हम दोनों से ज्यादा प्यार करते हैं। आपके रहते सचमुच कुछ नहीं हो सकता।”

“बस!...यही विश्वास चाहिये हमें आपका।” कहने के बाद वह सत्य प्रकाश के नजदीक पहुंचा। बोला—“मास्टर जी! जरा सोचिये, हमें खुद प्रकट होकर आपको यह सब बताने की क्या जरूरत थी? जो चल रहा था चलने देते। दूसरे लोगों की तरह आप भी स्वप्न तक में हमारे जीवित होने की कल्पना नहीं कर सकते थे। केवल आपके दुख को दूर करने, आपको निश्चित करने हेतु सामने आना पड़ा और अब...हमें आपका सहयोग चाहिये।”

“हमारा सहयोग?”

“केवल इतना—आप वक्त से पहले किसी को हमारे जीवित होने के बारे में नहीं बतायेंगे बल्कि अपनी किसी गतिविधि से भी ऐसा जाहिर नहीं होने देंगे कि आपको बबलू की कोई फिक्र नहीं रही है। चिंताग्रस्त मां-बाप की भूमिका ही निभाते रहना है आपको।”

“ल-लेकिन...बबलू पुलिस के चंगुल से कब छूटेगा?”

बड़ी ही रहस्यमय मुस्कान उभरी राजदान के होठों पर। बोला—“यह काम तो आज राज ही होने वाला है।”



अपने फ्लैट का दरवाजा खोलते ही ठकरियाल के कानों में राजदान की आवाज पड़ी—“वैलकम! वैलकम ठकरियाल। मैं जानता हूं तुम्हारे दिमाग के पावर हाऊस के बहुत सारे फ्यूज उड़े पड़े होंगे। उन्हीं को जोड़ने के लिये पेश है ये टपेरिकार्डर।”

आवाज बंद हो गयी।

ठकरियाल की नजरें घूमकर उस टपेरिकार्डर पर स्थिर हो गयीं जो मुख्य दरवाजे के पीछे एक टेबल पर रखा गया था। उसमें मौजूद केसिट अभी-भी घूम रही थी। ठकरियाल ने एक ही नजर में देख लिया—फ्लैट के मुख्य द्वार से कनेक्टिड एक तार का दूसरा सिरा टपेरिकार्डर के ‘प्ले’ वाले स्विच से जुड़ा था कुछ इस तरह कि उसके द्वारा दरवाजा खोलते ही टेप ‘ऑन’ हो गया था। अभी ठकरियाल उस सारे सिस्टम को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि टेप से निकलकर राजदान की आवाज पुनः कमरे में गूंजी—“फिक्र मत करो। तुम्हारी राईटिंग टेबल की सबसे ऊपर वाली दराज में एक कागज है। उसे पढ़ो और जानो। कुछ देर बाद बबलू भी तुम्हारे पंजे से निकल चुका होगा।”

ठकरियाल ने फुर्ती से के साथ अंदर वाले कमरे की तरफ जम्प लगाई।



रात का अंधेरा। हर तरफ सन्नाटा।

थाने में मौजूद लगीग सभी सिपाही अपनी-अपनी कुर्सियों पर पड़े ऊंघ रहे थे।

उन्हीं में रामोतार भी था।

वह, जो वास्तव में नहीं ऊंघ रहा था।

बल्कि।

केवल एक्टिंग कर रहा था ऊंघने की।

उसने गद्दन अपनी छाती पर लटकाये एक आंख खोली।

उसी से बाकी सिपाहियों का निरीक्षण किया।

संतुष्ट होने के बाद दूसरी आंख भी खोली।

चेहरा सीधा किया और कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि उसकी किसी हरकत से कोई आहत उत्पन्न न हो सके।

चोरों की मानिन्द दबे पांव टॉर्चर रूम की तरफ बढ़ा।

बंद दरवाजे के नजदीक पहुंचा। दोनों किबाड़ों के बीच बनी झिरी से अंदर झांका।

टॉर्चर रूम में वकीलचंद के खर्राटे गूंज रहे थे। अजीब ढंग के खर्राटे थे उसके। खर्राटों के साथ ही होठों में कम्पन हो रहा था। झाग निकल रहे थे।

केवल बबलू था जो ऊंघ नहीं रहा था। कुर्सी पर सीधा बंधा बैठा था वह।

रामोतार ने उसकी परवाह किये बगैर हाहिस्ता से दरवाजा खोला। वकीलचंद ज्यों का त्यों खर्राटे मारता रहा। रामोतार और बबलू की नजरें मिलीं।

दोनों के होठों पर मुस्कान उभरी।

जाहिर था—जो हो रहा है, दोनों की मिली-भगत से हो रहा है। बबलू की की नजर भी वकीलचंद पर थी, रामोतार की भी।

अगले पल, बगैर कोई आवाज पैदा किये रामोतार वकील चंद के नजदीक पहुंच गया।

जेब से एक छोटी सी शीशी निकाली।

कार्क खोला।

और।

केवल एक पल के लिये उसे वकीलचंद की नाक के नीचे ले गया।
 अगले पल—वकीलचंद के खर्राटों ने दम तोड़ दिया।
 चेहरा कुछ और ज्यादा छाती पर लुढ़क गया।
 “बस।” बबलू ने कहा—“काम हो चुका है।”
 रामोतार ने फुर्ती के साथ शीशी पर कार्क लगाया। वापस जेब के हवाले। लपककर बबलू के नजदीक पहुंचता बोला—“थोड़ा लेट हो गया बाहर वे साले सोये ही नहीं थे।”
 बबलू ने केवल इतना ही कहा—“कोई बात नहीं।”
 “लो।” रामोतार ने एक ब्लेड निकालकर उसे दिया—“बंधन काट लो।”
 “उसमें टाईम लगेगा, तुम खोल दो न।”
 “ठकरियाल साहब कनकव्वा बना देगे मेरा। वे समझ जायेंगे...”
 “इतना ही तो समझेंगे मुझे फरार करने में इस वक्त यहां मौजूद किसी पुलिसिये का हाथ है, वह तुम हो—यह कैसे समझ सकेंगे? सबको कनकव्वा बनाना पड़ेगा उन्हें।”
 “ठकरियाल साहब का अभी नाम ही नाम सुना है तुमने। काम से वाकिफ नहीं हो उनके। उन्हें एक बार शक हो गया तुम्हारी फरारी में किसी पुलिसिये का हाथ है तो उनके हाथों को मेरी गर्दन तक पपहुंचने में देर नहीं लगेगी। इसलिये वही सही है जो पहले सोचा था। सब सोते रह गये। मैं भी। और तुम अपने पास मौजूद ब्लेड से रस्सियां काटकर उड़नछू हो गये।”
 बबलू ने बगैर कुछ कहे दायें हाथ की अंगुलियों में फंसे ब्लेड से उसी हाथ के गट्टे पर बंधी रस्सी को काटना शुरू किया। कई बार अंगुलिया चुकी भी। ब्लेड हाथ पर लगा। थोड़ा-बहुत खून भी निकला। रामोतार तो चाहता ही यह था। यह कि जो कहानी वह ठकरियाल को समझाने वाला है, उसके सुबूत भी घटनास्थल पर बिखरे मिलें।
 शुरू-शुरू में बबलू को दिक्कत हुई मगर जैसे-जैसे कटने के कारण रस्सी का कसाव ढीला पड़ा, काम आसान होता चला गया। एक हाथ आजाद होने के बाद दूसरे हाथ को और उसके बाद पैरों को आजाद करने के लिये ब्लेड की जरूरत नहीं थी।
 बबलू कुर्सी से खड़ा हो गया।
 कलाईयां रगड़ीं।
 रामोतार ने कहा—“बाहर जो मेरे संगी-साथी हैं उन्होंने क्लोरोफॉर्म नहीं सूंघा है। जरा सी आहट से चौकस हो सकते हैं अतः बिल्ली की मानिनद निकल जाओ।”
 “फिक्र मत करो।” कहने के साथ बबलू दूरवाजे की तरफ बढ़ गया।
 रामोतार ने पूछा—“मैं अपनी जगह पर जाऊँ?”
 “ओ. के.!”
 “तब, लगभग दोनों साथ-साथ टॉर्चर रूम से बाहर निकले।”
 रामोतार उस कुर्सी की तरफ बढ़ा जिस पर इस कार्यवाही से पहले था, बबलू ऑफिस से बाहर निकलने के लिये दरवाजे की तरफ। जब तक बबलू थाने के आंगन में पहुंचा तब तक रामोतार अपनी कुर्सी पर पड़ा इस तरह ऊंध रहा था जैसे सदियों से उसकी यही पोजीशन हो।
 थाने का मुख्य द्वार क्रास जाने के लिये बबलू को मुश्किल से पांच-छः कदम बढ़ाने थे कि कानों में किसी वाहन के इंजन की आवाज पड़ी।
 दायीं तरफ से हैड लाईट चमकी।
 मुख्य द्वार पर ऊंध रहा सिपाही हड़बड़ाकर उठा।
 उसी क्षण।
 बबलू ने आंगन में रखे वाटर कूलर के पीछे जम्प न लगा दी होती तो जीप की हैड लाईट की रोशनी से नहा गया होता। क्योंकि उसी जल रोशनी ने दायीं तरफ से घूमकर थाने के पूरे आंगन को प्रकाशमान कर दिया था।
 जीप बड़ी तेजी से आंगन में आई थी।
 टायरों की चरमराहट के साथ रुकी।
 ठकरियाल बाहर कूदा। मुख्य द्वार पर तैनात सिपाही ने बौखलाकर सल्यूट मारा।
 रात की नीरवता पूरी तरह भंग हो चुकी थी।
 ठकरियाल ने कड़क आवाज में मुख्य द्वार पर तैनात सिपाही कसे कहा—“तू सो रहा था रामधन?”
 “न-नहीं तो सर।” उसने हकलाते हुए जवाब दिया।

“सब ठीक है न?”

“जी।”

“गड़बड़ तो नहीं है कोई?” पूछने के साथ ठकरियाल ऑफिस की तरफ बढ़ा।

“नो सर।” सिपाही उसके पीछे लपका।

बबलू को समझते देर नहीं लगी, कुछ दउरे बाद यहां हंगामा खड़ा होने वाला है। बस ये कुछ ही पल थे उसके पास गायब हो जाने के लिये।

उधर वे दोनों ऑफिस के अंदर दाखिल हुए इधर बबलू ने वाटर कूलर की बैक से निकलकर थने से बाहर की तरफ दौड़ लगा दी।

जीप के इंजन की आवाज, उसकी हैड लाइट और थाने के आंगन से उपजी टायरों की चरमराहट के कारण ऊंध रहे सभी सिपाही हड़बड़ा गये थे। अभी सम्भलने का प्रयत्न कर ही कर रहे थे कि ठकरियाल जिन्न की तरह अंदर घुस आया।

वहां का नजारा देखा उसने।

एक ही पल में सब समझ गया।

“तो तुम सब ख्वाबों में ड्यूटी कर रहा थे?” ठकरियाल गुर्गया।

रामोतार सहित किसी के मुंह से बोल न फूटा।

चेहरे पर गुस्सा लिये ठकरियाल टॉर्चर रूम की तरफ बढ़ा।

दरवाजा खोलते ही बुरी तरह चौंक पड़ा। चीखा—“कहां गया बबलू?”

“य-यही तो था साब।” रामोतार ने कहा।

“कहां है यहां?” दहाड़ता हुआ ठकरियाल टॉर्चर रूम में पहुंचा।

झंझोड़कर वकीलचंद को उठाने की कोशिश की।

वह कुर्सी से गिर पड़ा मगर जगा नहीं।

सभी पुलिस वाले दंग थे। हैरा! डरे हुए।

जो नहीं था, वह भी खुद को उन्हीं जैसा दर्शा रहा था।

उसके बाद जो ठकरियाल ने हंगामा मचाया है तो रामोतार सहित सभी पुलिस वालों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। यह कहता हुआ वह दौड़कर आंगन में भी पहुंचा कि ‘तलाश करो उसे। मुमकिन है अभी यहीं कहीं छुपा हो।’

सिपाही इधर उधर भागने लगे।

ठकरियाल जीप लेकर खुद थाने के बाहर गया। करीब एक किलोमीटर जाने के बाद वापस आया परन्तु बबलू को न हाथ लगना था, न लगा। मारे गुस्से के ठकरियाल का बुरा हाल था।

सिवाहियों का लग राह था—ऐसी शामत पहले कभी नहीं आई जैसी आज आई है।

पन्द्रह मिनट बाद वह पुनः टॉर्चर रूम में मौजूद था। कटी हुई रस्सी और ब्लेड को देखकर रामोतार ने कहा था—“पता नहीं हरामी ने ब्लेड कहां छुपा रखा था।”

“क्या कहना चाहता है?” ठकरियाल गुर्गया।

“लगता तो यही है साब, ब्लेड उस पर पहले से था। मौका लगते ही रस्सी काट और...

“बेहोश किसने कर दिया वकीलचंद को?”

“ज-जी?”

“हकीकत वो नहीं है जो मुझे दिखाने की कोशिश की जा रही है” ठकरियाल गुर्गया—“हकीकत ये है कि तुममें से कोई न कोई यकीनी तौर पर उस लड़के से मिला हुआ था। उसी ने मदद की है उसे यहां से निकालने में।”

अवाक् रह गये सब।

होश फाख्ता।

सबने एक-दूसरे की तरफ देखा—जैसे गद्दार को तलाश करने की कोशिश कर रहे हों।

खुद रामोतार की हालत भी बैरंग थी।

यह सोचकर कि असलियत ताड़ ही गया ठकरियाल।

वह ठकरियाल जिसने वहां मौजूद एक-एक सिपाही को कच्चा चबा जाने वाली नजरों से घूरते हुए कहा—“सजा सबको मिलेगी। सभी गुनेहगार हो तुम। ड्यूटी के नाम पर सोते रहे और कैदी फरार हो गया मगर तुममें से कोई एक खास गुनेहगार है। वह, जिसने वकीलचंद को बेहोश किया। बबलू को ब्लेड मुहैया कराया। बेहतर है, वह खुद आगे आकर अपना गुनाह कुबूल कर ले। मैंने तुम लोगो

के बीच से खोजकर निकाला तो ऐसी हालत कर दूंगा जैसी आज तक किसी पुलिस वाले की नहीं हुई होगी।”

सन्नाटा खिंचा रहा।

क्या बोलता कोई?

सभी की टांगें कांप रही थीं।

एक पुराने हवलदार ने कहा—“सर, इजाजत दें तो मैं कुछ पूछ लूं?”

ठकरियाल जानता था, वह एक ईमानदार हवलदार है। बोला—“क्या जानना चाहते हो?”

“अ-आप कैसे विश्वास है से कोई...”

“रहमत खन, वकीलचंद के बेहोश पाये जाने से सारी तस्वीर साफ है।” ठकरियाल गुराया—“अगर उस लड़के पास पहले से ब्लेड था और वकीलचंद के ऊंघते उसने अपनी रस्सी काटी तो रस्सी कटने के बाद वकीलचंद को बेहोश करने की जरूरत नहीं थी। यहां से भी उसी तरह निकल जाता जैसे तुम सबके ऊंघते निकल गया। जाहिर है—वकीलचंद को रस्सी काटने से पहले बेहोश किया गया क्योंकि ऊंघता हुआ आदमी वैसी आहतों से जाग सकता है और...बंधा हुआ वह लड़का तो यह काम कर नहीं सकता। स्पष्ट है, तुम्हीं लोगों में से किसी ने किया होगा।”

“तो फिर ब्लेड की क्या जरूरत थी सर, जो मिला हुआ था—वह हाथों से ही खोल देता।”

“जस दृश्य को देखकर तो कोई भी पुलिस वाला पहली नजर में समझ जाता बबलू किसी पुलिस वाले की मदद से भागा है इसलिये मददगार ने वैसा नहीं किया। यह तरकीब इसलिये इस्तेमाल की ताकि उसी तर्क के साथ बच सके जो तुम दे रहे हो। तरकीब थी भी बेहतरीन। अगर मैं इस वक्त न आ जातां सुबह ही बबलू की फरारी का पता लगता तो वही समझा जाता जो तुम कह रहे हो क्योंकि तब तक वकीलचंद को होश आ चुका होता। वह खुद नहीं जान पाता—ऊंघने के बीच कुछ देर के लिए बेहोश भी हुआ था। गड़बड़ यही हो गयी। यह कि मैं इस वक्त आ टपका। तब, जबकि वकीलचंद बेहोश है। मेरे असमय आने के कारण ही तुममें से किसी का प्लान चौपट हुआ है।”

रहमत खान या किसी और की समझ में कुछ आया हो या न आया हो परन्तु रामोतार जान चुका था—ठकरियाल सब कुछ समझ चुका है। अब तो बस एक ही आसरा था—इतने स्टाफ के बीच से उसे...अकेले उसी को भला कैसे छांटा जा सकता था?

एक बार फिर टॉर्चर रूम में सन्नाटा छा गया था। ठकरियाल ने एक-एक को घूरते हुए कहा—“यानी तुम्हारे बीच छुपा बबलू का मददगार खुद सामने आने को तैयार नहीं है?”

पुनः ब्लेड की धार जैसा सन्नाटा छाया रहा।

“ओ. के.!” ठकरियाल के जबड़े कस गये—“गोपी को छोड़कर सब बाहर चले जायें।”

“म-मैं सर?” गोपी नामक पुलिसिये का चेहरा पीला पड़ गया।

“हां तुम।”

घिग्घी बंध गई उसकी। गिड़गिड़ उठा—“अ-अपने बच्चों की कसम साब। मैंने कुछ नहीं किया।”

“मैंने कब कहा तुमने किया है?”

“फ-फिर साब! मुझी को क्यों रोक रहे हैं आ...”

“शटअप!” ठकरियाल जोर से दहाड़ा।

गोपी सहमकर चुप रह गया।

“बाकी सब बाहर जाओ और...नजर रखना एक-दूसरे पर। तुम्हारे बीच कोई एक गद्दार है। वह नहीं पकड़ा गया तो सभी गुनेहगार माने जाओगे।”

सिर लटकाये सब बाहर चले गये।

गोपी अपने स्थान पर खड़ा सूखे पत्ते की मानिन्द कांप रहा था।

ठकरियाल ने हुक्म दिया—“दरवाजा अंदर से बंद कर लो।”

गोपी दरवाजे की तरफ यूं बढ़ा जैसे पैरों में मन-मन भर वजन बंधा हो।

हालत खराब थी उसकी।

जैसे अब रोया...कि अब रोया।

दरवाजा बंद करते ही पलटा और दौड़कर ठकरियाल के कदमों से जा लिपटा। रोता हुआ कहता चला गया वह—“म-मेरा विश्वास करो साब, मैंने कुछ नहीं किया।”

ठकरियाल ने उसका कॉलर पकड़ा। ऊपर उठाता बोला—“ड्यूटी कहां थी तेरी?”

“व-वायरलैस पर सर।”

“सो रहा था या जग रहा था?”

वह फफक पड़ा—“स-सो रहा था साब।”

“जेब का सामान निकालकर यहां रख दे।” ठकरियाल ने उस कुर्सी की तरफ इशारा किया जिस पर कुछ पहले बबलू बंधा था।

गोपी उसके आदेश का मतलब नहीं समझ सका। इसलिये पूछा—“जी?”

“सीधी-सीधी बात समझ में नहीं आती क्या तेरे? सब जेबों का सामान निकालकर यहां रख दे।”

समझ गोपी अब भी कुछ नहीं सका मगर, लगा—इस बार अगर उसने हुक्म का पालन नहीं किया तो मुमकिन है, गद्दी पर ठकरियाल का घूंसा आ लगे अतः कुछ इस तरह अपनी सभी जेबों का सामान निकालकर कुर्सी पर रख दिया जैसे वीडियो फिल्म को ‘फास्फोरवर्ड’ पर सैट कर दिया गया हो।

ठकरियाल ने सामान पर नजर डाली।

एक माचिस, बीड़ी काबण्डल, कुद रुपये, रेजगारी और चंद मुड़े-तुड़े कागजों के अलावा कुछ नहीं था।

“अब तू जा। और सुन...कोई भी पूछे, मैंने तुझसे क्या पूछा। क्या कराया तो कुछ नहीं बतायेगा।”

“ज-जी।”

“किशनपाल को भेज।”

वह इस तरह दरवाजे की तरफ लपका जैसे शेर के पंजे से निकलकर हिरन भागा हो।

कुछ देर बाद।

किशनपाल आया।

ठकरियाल ने पूछा—“बाहर गोपी से किसी ने कुछ पूछा?”

“जी।”

“क्या पूछा?”

“यही...कि आपने क्या पूछा?”

“किसने पूछा?”

“रामोतार ने।”

ठकरियाल की आंखें चमक उठीं। बोला—“कुछ बताया गोपी ने?”

“नहीं।”

“तू जा।...रामोतार को भेज दे।”

“ज-जी?” किशनपाल को आश्चर्य हुआ। शायद इसलिये क्योंकि एक तरह से उससे कुछ भी नहीं पूछा गया था। जब ठकरियाल ने उससे दूसरी बार जाने को कहा तो वह दरवाजे की तरफ बढ़ा गया।

कुछ देर बाद रामोतार अंदर आया।

कुर्सी पर रखे गोपी की जेब के सामान पर नजर पड़ते ही झटका सा लगा उसे।

दिमाग में सवाल उभरा—क्या ठकरियाल सबकी तलाशी ले रहा है?

उफफ!...क्लोरोफॉर्म की शीशी अभी तक उसकी जेब में है। उसे ठिकाने लगाने का न तो मौका मिला, न ही ख्याल आया।

हे भगवान्! क्या वह पकड़ा गया?

उसे घूरते हुए ठकरियाल ने हुक्म दिया—“जेबों से सामान निकालकर यहां रख दे रामोतार।”

वह समझ गया—खेल खत्म हो चुका है।

सो, बोला—“बबलू की मदद मैंने की है साब।”

“ये नहीं पूछा मैंने।” ठकरियाल के जबड़े कस गये। दांत भंचकर गुर्ग उठा वह—“जेबों से सामान निकालकर इस कुर्सी पर रखने के लिये कहा है।”

रामोतार ने सामान निकालकर कुर्सी पर रख दिया।

उसमें क्लोरोफॉर्म की शीशी भी थी।

ठकरियाल ने शीशी उठाई। उसे अपनी अंगुलियों के बीच घुमाता बोला—“क्यों किया ऐसा?”

“दो-दो लाख की खातिर।”

“किसने दिये पैसे?”

“राजदान साहब ने।”

“र-राजदान ने?...वह तो मर चुका है।”

“वे जिन्दा है साब।”

“मतलब?”

“आज शाम मेरे क्वार्टर पर आये थे।”

“आज शाम? जबकि वह कल रात मर चुका है।”

“मरने वाला कोई और होगा साब। वे ‘वे’ ही थे।”

“खैर! सौदा क्या हुआ तेरा उससे?”

“पहले तो उन्हें अपने सामने देखकर घिग्घी ही बंध गई मरी। आप समझ सकते हैं, सारे दिन जो आदमी जिस शख्स की लाश के आसपास रहा हो। जिसकी लाश को खुद पोस्टमार्टम पहुंचाकर घर पहुंचा हो उसे अपने सामने जीता-जागता खड़ा देखकर क्या हालत हुई होगी। बड़ी मुश्किल से विश्वास कर सका, वे राजदान ही थे। बोले—‘मैं जिन्दा है, उसकी हत्या के आरोप में पकड़ा गया शख्स भला कुसूरवार कैसे हो सकता है।’ मैंने पूछा—‘यहां क्यों आये हैं आप? बोले—‘रात को किसी भी तरह तुम्हें बबलू को थाने से फरार करना है।’ मैंने कहा—‘मैं भला ऐसा कैसे कर सकता हूं।’ तब उन्होंने दो लाख की पेशकश की। मेरे लिये दो लाख काफी थे। लालच आ गया साब। सोचा—‘मैं भला ऐसा कैसे कर सकता हूं जब रात के वक्त ड्यूटी पर मौजूद सभी पुलिस वाले ऊंघ रहे होंगे।’ वह दृश्य आज ही का नहीं, हर रात का होता है साब। कौन थाने में सारी रात जागकर ड्यूटी देता है। फिर भी कहा—‘मैंने अगर सीधे-सीधे बबलू फरार किया तो पकड़ा जाऊंगा।’ तब उन्होंने मुझे क्लोरोफॉर्म की यह शीशी और ब्लेड दिया। सारी योजना समझाई। मुझे लगा—मेरा उससे ज्यादा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है जितना दूसरे सिपाहियों का बिगड़ेगा। दो लाख कमाने के इस मौके को मैंने न गंवाना मुनासिब समझा।”

“रकम मिली?”

“आधी उन्होंने तभी दे दी थी। आधी अब...यानी काम होने के बाद घर पहुंच गई होगी।”

“तेरी बीवी के पास?”

“जी।”

“यानी वो भी शामिल है तेरी काली करतूत में?”

“बीवी से भला क्या छुपा रह जाता है साब?”

कुछ देर उसे घूरता रहा ठकरियाल। फिर बोला—“तो आज तू अपनी नौकरी गंवाने और जेल जाने को तैयार है?”

रामोतार ने बहुत आराम से कहा—“नहीं साब।”

“क्या-क्या तू सोचता है मैं तुझे छोड़ दूंगा? माफ कर दूंगा इतना बड़ा गुनाह?”

“जी साब।” रामोतार ने अजीब स्वर में कहा—“सोचता तो मैं कुछ ऐसा ही हूं।”

ठकरियाल गुर्रा उठा—“दिमाग खराब हो गया है क्या तेरा?”

“साब।...वजह है मेरे ऐसा सोचने की।”

“क्या वजह है?”

“आपने मेरी पोल खोली तो मैं आपकी पोल खोल दूंगा।”

“मेरी पोल?”

“मैंने तो एक छोटे से बच्चे को फरार ही किया है साब, आपने तो क्रियाकर्म ही कर दिया दो बालिग हस्तियों का। शांतिबाई और विचित्रा था उनका नाम। (पढ़े—‘कातिल हो तो ऐसा’) उस काम के पच्चीस लाख कमाये थे आपने। मुझे या थाने के किसी अन्य स्टाफ को उसमें से इकन्नी नहीं मिली। उनके बाद आप मेरे और थाने के दूसरे स्टाफ के सामने दूध के धूले के धूले ही बने रहे।”

“ओह! तो तू ये सब जानता है?”

“हां साब।”

“कैसे?”

“कैसे क्या साब? इसी थाने में तैनात हूं। आंखें खुली रखता हूं, इसलिये जान गया। उनकी गिरफ्तारी पर ही समझ गया था कोई न कोई घुटाला होने वाला है। पिछली बार उनसे पीछा छुड़ाने के राजदान साहब ने पचास लाख दिये थे। इस बार भी कुछ देना ही था, सो दिया और आपने पल्ला पसार कर लिया।”

ठकरियाल घूरता रह गया उसे।

रामोतार कहता चला गया—“साब, क्या मेरी यही शराफत काफी नहीं है कि आज से पहले मैंने इस सम्बन्ध में आपसे कोई बात नहीं की? फूटी कौड़ी की डिमांड नहीं की पच्ची लाख में से?”

“अब क्या चाहता है?”

“चाहता क्या साब। इसके अलावा और चाह भी क्या सकता हूँ—दो लाख मुझे भी कमाने दीजिये। जरूरत से ज्यादा दिमाग घुमाने की जरूरत ही क्या है आपको? बस इसी कहानी को फाईनल रहने दीजिये—बबलू ने पहले ही से अपने पास कहीं ब्लेड छुपा रखा था। वकीलचंद के ऊँघने का फायदा उठाकर रस्सी काटी और हमारे ऊँघने का फायदा उठाकर फरार हो गया। आपके अलावा सारे थाने की लापरवाही के खिलाफ जांच होगी। होती रहे। रोज होती हैं ऐसी जांचें। सारा स्टाफ चंदा करके जांच करने वाले के हलक में उतार देगा। निकल जायेगी जांच की कांच।”

कुछ देर ठकरीयाल उसे घूरता रहा। फिर आंखों में मौजूद सख्ती नम पड़ती चली गई। होठ मुस्करा उठे। बोला—“मानना पड़ेगा रामोतार, खिलाड़ी तू भी पक्का है।”

रामोतार ने हाथ जोड़कर कहा—“शिष्य हूँ साब आपका! कच्चा कैसे हो सकता हूँ?”



सारी रात के जागे हुए थे वे।

पूरा दिन टेंशन भरी भाग-दौड़ में गुजरा था।

इसके बावजूद दिव्या और देवांश को नींद नहीं आ रही थी।

दिमागों में सवाल ही सवाल घुमड़ रहे हों तो नींद आ भी कैसे सकती है?

जानते थे—सुबह होते ही पुनः व्यस्त हो जाना है। पोस्टमार्टम से लाश मिलेगी। उसका अंतिम संस्कार होगा। और भी जाने क्या-क्या नई बातें सामने आयें। उन्हें फेस करने के लिये थोड़ा आराम भी जरूरी है, यही सोचकर सोने के लिए जब देवांश ने अपने कमरे में जाने की चेष्टा की तो दिव्या ने कहा—“नहीं। मैं अकेली नहीं सो सकती। डर लगेगा मुझे। तुम यहीं, मेरे साथ सो जाओ।”

देवांश बगैर हील-हुज्जत किये रुक गया।

दोनों दिव्या के कमरे में डबल बैड पर लेट गये।

उसी डबल बैड पर, जिस पर उनकी रंगीन रातें गुजरी मगर आज।

किसी को कोई मूड नहीं हुआ।

कपड़े तक चेंज नहीं किये उन्होंने।

जो सारा दिन पहने रहे थे, वहीं पहने लेट गये।

एक-दूसरे की तरफ से करवट लिये।

बहुत देर तक करवटें बदलते रहे।

एकाध बार देवांश का हाथ दिव्या के कोमल अंग से भी टकराया।

परन्तु।

न तो उसी ने अपने अंदर कही तनाव महसूस किया, न ही दिव्या रोमांचित हो सकी।

अंततः देवांश ने कहा—“दिव्या।”

“हूँ।” आंखें बंद ही रखीं दिव्या ने।

“नींद नहीं आ रही।”

इस बार दिव्या ने आंखों खोलकर कहा—“मुझे भी।”

“क्यों न एक-एक पैग लें?...थोड़ा-सा घूमकर आयें किचन लॉन में।”

उसके बाद।

उन्होंने एक-एक नहीं, दो-दो पैग लिये।

एक-एक सिगरेट सुलगाई और किचन लॉन में पहुंच गये।

वह किचन लॉन जिसे देखने के बाद हर शख्स कह उठता था—‘यह तो ‘परिस्तान’ है।’

सचमुच।

परिस्तान ही था वह।

यह वह जननत थी जिसका निर्माण राजदान ने दिव्या के लिये कराया था।

उसके प्यार में डूबकर।

कुछ उसी तरह, जैसे शाहजहां ने ताजमहल बनवाया था।

वह अक्सर कहा करता था—‘दिव्या, शहजहां ने तो ताजमहल मुमताज के मरने के बाद बनवाया था मगर मैं ले यह ‘परिस्तान’

अपने प्यार की खातिर तुम्हारे जीते जी बनवाया है।’

वह दो हजार गज में फैला हुआ था। कृत्रिम पहाड़ थे उसमें जो बड़े-बड़े पत्थर लाकर बनाये गये थे। पत्थरों के बीच से संगीतमय आवाज के साथ बहती जलधारायें थीं। झरने थे। फव्वारे थे। तालाब और स्वीमिंग पूल था। एक फाऊन्टेन तो ऐसा था जो बीस फुट की ऊंचाई तक पानी की मोटी धार उछाला करता था।

सारे लॉन में पत्थरों, पौधों और होज आदि की बैक में छुपाकर कुछ इस तरह असंख्य रंग-बिरंगे बल्ब लगाये गये थे कि जब वे ‘ऑन’ होते थे तो वे नहीं, केवल उनसे फूटती रंग-बिरंगी रोशनियां नजर आया करती थीं।

बहुत ही सुन्दर नजारा होता था वह।

मगर।

इस वक्त वहां की सभी रंगीनियां गायब थीं।

कारण था—एक भी बल्ब का ‘ऑन’ न होना।

फव्वारे सूखे पड़े थे।

झरने खामोश।

प्रत्येक रात को उन सबको गतिमान करने और रोशनियां आदि ऑन करने का काम आफताब का था। शायद आज उसने उन्हें ऑन करने की जरूरत नहीं समझी थी। अपनी तरफ से ठीक ही किया था उसने। परिस्तान के मालिक को मरे पहला ही दिन तो था आज। अभी तो लाश श्मशान भी नहीं पहुंची थी। फिर भला, वहां रंगीनियां कैसे बिखेर सकता था वह?

उस सबकी जरूरत भी नहीं थी दिव्या और देवांश को।

रात भी अंधेरी थी।

हर तरफ अंधेरा।

मगर अचानक।

एक छोटी सी चट्टान जगमगा उठी।

दोनों ने चौककर उधर देखा।

“अरे!” दिव्या के मुंह से निकला—“वहां की लाईट किसने ऑन की?”

क्या जवाब देता देवांश?

अभी वे कुछ समझ भी नहीं पाये थे कि—एक और पहाड़ चमक उठा।

जहां के तहां ठिठक गये दोनों।

होश फाख्ता।

देवांश के मुंह से कांपती आवाज निकली—“यहां कोई है।”

दिव्या ने कुछ कहना चाहा मगर, मुंह से आवाज न निकल सकी।

उससे पहले ही ‘कट-कट-कट’ की आवाजों के साथ किचन लॉन की सभी लाईटें ऑन होती चली गईं।

हकबकाये से वे कभी इधर देख रहे थे, कभी उधर।

फिर।

अचानक ‘जैट पम्प’ चलने की आवाज ने शंत वातावरण को चीर डाला।

साथ ही, झरने चलने लगे।

फाऊन्टेन ने बीस फुट की ऊंचाई तक पानी की मोटी धार फैंकनी शुरू कर दी।

पत्थरों के बीच बहते पानी की संगीतमय आवाज हर तरफ गुंजने लगी।

जो परिस्तान कुछ देर पहले अंधेरे की चादर ओढ़े, खामोशी के साथ सोया पड़ा था वह देखते ही देखते न सिर्फ जाग गया बल्कि रोशनियों से दमक उठा।

पेड़, पौधे, घास, होज, चट्टाने, झरने और फव्वारे।

सब जीवित हो उठे।

बड़ा ही मनमोहक नजारा था वह।

परन्तु।

दिव्या और देवांश को बहुत डरावना लग रहा था।

मारे खौफ के दिव्या देवांश से लिपट गई।

देवांश की हालत भी उससे बेहतर नहीं थी।

दिमाग में एक ही सवाल था।
 कैसे गतिमान हो गया सब कुछ?
 किसने किया?
 “क-कौन है?” दिव्या के मुंह से भवाक्रान्त आवाज निकली—“यहां कौन है देव?”
 देवांश की सहमी हुई नजरें उसी को तलाश करने की कोशिश कर रही थीं। उसे—जिसने अचानक परिस्तान को जीवन दे दिया था।
 उसने पाया—इस वक्त वह वहां खड़ा है जहां से पहली बार दिव्या को झरने के नीचे नहाते देखा था। बहुत ही बड़ा, किसी शिलाखण्ड जैसा विशाल पत्थर था वह।
 फिर।
 एक चट्टान पर इंसानी परछाईं नजर आई।
 सिर्फ परछाईं।
 परछाईं का मालिक नजर नहीं आया।
 “द-देव!” कांपती आवाज में दिव्या ने परछाईं की तरफ इशारा किया—“व-वो देखो!”
 देवांश समझ गया—जिसकी परछाईं सामने वाली चट्टान पर पड़ रही है, वह उसके दायीं तरफ मौजूद विशाल पत्थर के पीछे होना चाहिये।
 दिव्या का हाथ पकड़े उस तरफ लपका।
 पत्थर की बैक में पहुंचा।
 तब वहां कोई नहीं था।
 उसने देखा—उसकी और दिव्या की परछाईयां उसी चट्टान पर हिल-डुल रही थीं जिस पर कुछ देर पहले अंजान शख्स की परछाईं थी।
 अपनी ही परछाईं से डर सा लगने लगा उन्हें।
 देवांश समझ गया—कुछ देर पहले वह यहीं था।
 मगर अब।
 अब नहीं था।
 किधर गया?
 देवांश जोर से चीख पड़ा—“कौन है यहां?”
 आवाज पूरे परिस्तान में गूंजती चली गई।
 अनेक पत्थरों से टकराकर वापस आई...और खुद उसी के कानों में धंस गई।
 अपनी ही आवाज बहुत डरावनी लगी थी उसे।
 “देव। चलो यहां से।” डरी हुई दिव्या ने उसे खींचने का प्रयास किया।
 पगलाया सा देवांश चारों तरफ को इस तरह देख रहा था। जैसे हिरन शेर की गंध पाकर उसे ढूंढने का प्रयास कर रहा हो।
 उसी क्षण।
 दिव्या के हलक से जोरदार चीख निकली।
 देवांश ने बौखलाकर उसक नजरों को पीछा किया।
 वह ठीक उनके सामने एक विशाल पत्थर के शीर्ष पर खड़ा था।
 वह।
 जिसे देखकर दिव्या के हलक से चीख निकली थी।
 राजदान का नाईट गाऊन था उसके जिस्म पर।
 वहीं, जो राजदान को बहुत पसंद था।
 स्केल जितनी चौड़ी काली-सफेद पट्टियां वाला गाऊन।
 ठीक सामने होने के बावजूद वे सीधे-सीधे उस तक नहीं पहुंच सकते थे। जिस पत्थर पर वे थे, वह उससे काफी ऊंचे पत्थर के शीर्ष पर खड़ा था।
 वह उन्हीं की तरफ देख रहा था।
 दिव्या की हालत तो पहले ही खराब थी। देवांश भी थरथरा उठा।

राजदान ही नजर आ रहा था वह।

हिम्मत करके देवांश एक बार फिर चीखा—“धोखा देने की कोशिश मत करो हमें। हम जानते हैं तुम राजदान नहीं हो सकते। कौन हो तुम?”

और।

जवाब में जो हरकत उसने की उसे देखकर देवांश के समूचे जिस्म में सिहरन दौड़ गई।

वह अपने हाथ से उन्हें अपने नजदीक आने का इशारा कर रहा था।

बड़ी ही डरावनी लगी उन्हें, उसकी यह हरकत।

ऐसा लग रहा था, जैसे यमराज इशारे से अपनी तरफ बुला रहा हो।

“देव! देव! वो तो वही है। मैं नहीं रुक सकती यहां। प्लीज...प्लीज चलो।” दिव्या का जिस्म और आवाज, दोनों कांप रहे थे। देवांश को विपरीत दिशा में खींचने का प्रयास कर रही थी वह।

देवांश को खुद समझ में नहीं आ रहा था क्या करे?

यूं खडबड़ा रहा गया जैसे अचानक स्टेचू में तब्दील हो गया हो।

और राजदान अचानक अपने स्थान से हिला। एक ही जम्प में उस पत्थर पर पहुंचा गया जिस पर खड़ी होकर दिव्या को नहाते देवांश ने देखा था। अब उसे ऊपर मौजूद चट्टान से झरने की शक्ल में पानी गिर रहा था।

वह नहा रहा था।

वहीं, जाहं देवांश ने दिव्या को नहाते देखा था।

कितना उत्तेजक दृश्य था वह।

कितना डरावना।

और उस वक्त तो दिव्या और देवांश के जिस्म सूखे पत्तों की मानिन्द कांप उठे जब नहाते हुए उस राजदान ने अचानक अपने जिस्म से गाऊन उतारकर एक तरफ फंक दिया।

उपफ।

पूरी तरह नंगा था वह।

जैसे भूत नहा रहा हो।

अब तो...अब तो देवांश का हौसला भी जवाब दे गया।

कसकर दिव्या का हाथ पकड़ा उसने और उस तरफ दौड़ लगा दी जिस तरफ से परिस्तान से बाहर निकला जा सकता था।

पत्थरों पर गिरते-पड़ते वे इस तरह भाग रहे थे जैसे सैकड़ों भूत पीछे लगे हों।

एक बार भी पलटकर झरने की तरफ नहीं देखा था।

किचन लॉन और विला के अंदरूनी भाग को जोड़ने वाले एकमात्र दरवाजे तक पहुंचते-पहुंचते उनकी हालत ऐसी हो गयी जैसी ‘मैराथन’ की दौड़ पूरी करने वाले धावक की होती है।

गैलरी में पहुंचते ही उन्होंने ‘धाड़’ से दरवाजा बंद कर लिया। चटकनी चढ़ाई। डंडाला कसा। ताला लगा दिया।

दोनों की सांसा धौंकनी की मानिन्द चल रही थी।

एक कदम भी और चलने की हिम्मत नहीं बची थी दिव्या में मगर देवांश उसका हाथ पकड़े, लगभग घसीटता हुआ गैलरी में भागता चला गया।

लॉबी में पहुंचा।

दिव्या ने पूछा—“कहां घसीटे ले जा रहे हो देव?”

देवांश ने जवाब नहीं दिया। उसका रुख उस गैलरी की तरफ था जिसके अंतिम छोर पर राजदान का बैडरूम था। केवल उसी कमरे की बॉल्कनी से किचन लॉन को देखा जा सकता था।

वे बैडरूम में पहुंचे।

बॉल्कनी कांच के स्लाईडिंग डोर के पार थी।

स्लाईडिंग के नजदीक पहुंचते ही वे ठिठक गये।

दोनों की नजर बॉल्कनी में रखी आराम कुर्सी पर जम गई।

यह वही आराम कुर्सी थी जिस पर बैठकर राजदान अक्सर किचन लॉन की रंगीनियां का नजारा किया करता था।

खाली कुर्सी अपने चन्द्राकार पायें पर झूल रही थी।

ठीक यूँ, जैसे तब झूला करती थी जब राजदान बैठा होता था।

“द-देव!” दिव्या की आवाज कांप रही थी—“कुर्सी हिल क्यों रही है?”
 देवांश बड़बड़ाया—“ऐसा लगता है, जैसे अभी-भी उस पर से उठकर कोई गया हो?”
 “हे भगवान!...कौन था यहां?”
 कांच के पार सारी गैलरी साफ नजर आ रही थी।
 झूलती कुर्सी के अलावा कोई भी तो नहीं था वहां।
 देवांश का हाथ पकड़ बॉल्कनी में पहुंचा।
 उस रेलिंग की तरफ लपका जहां किचन लॉन का नजारा किया जा सकता था।
 और।
 वहां पहुंची ही, एक और झटका लगा उन्हें।
 परिस्तान अंधकार में डूबा हुआ था।
 एक भी लाईट ऑन नहीं थी।
 रुके हुए फव्वारे।
 खामोश झरने।
 अंधकार! अंधकार! और अंधकार!
 सब कुछ वैसा, जैसा तब था जब उन्होंने पहला कदम परिस्तान में रखा था।
 चंद जुगनू जरूर भिनभिना रहे थे इधर-उधर।
 अंधेरे में दैत्यों की मानिन्द खड़े कृत्रिम पहाड़ उन्हें मुंह चिड़ाते से लगे।
 उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ कि कुछ देर पहले लॉन जगमगा रहा था।
 तो क्या वह सब दृष्टि-भ्रम था?
 किसी जादुई जंजाल में फंस गये थे वे?
 अचानक देवांश ने महसूस किया—दिव्या जान-बूझकर लम्बी-लम्बी सांसे लेने की कोशिश कर रही हैं उसने चौंककर देखा। दिव्या की हरकत बड़ी अजीब लगी उसे।
 वर्तमान हालात में थोड़ी डरावनी भी।
 विचार उभरा—‘कहीं दिमाग तो नहीं हिल गया है दिव्या का?’ ऐसा ही लगता था। देवांश ने झपटकर उसके दोनों कंधे पकड़े। जोर से झंझोड़ता हुआ चीखा—“दिव्या...दिव्या...ये क्या कर रही हो तुम? पागल हो गयी हो क्या?”
 “मैं कुछ सूंघ रही हूं।” उसने अजीब स्वर में कहा—“मुझे कुछ स्मेल आ रही है देव। तुम भी सूंघो।”
 इस विचार ने देवांश के होश उड़ा दिये कि कहीं सचमुच ही दिव्या सनक तो नहीं गई है?
 हरकत तो ऐसी थी उसकी।
 वब अब भी कुछ सूंघने का प्रयत्न कर रही थी।
 खौफ का मारा देवांश चिल्ला उठा—“होश में आओ दिव्या! सम्भालो खुद को।”
 वह बड़बड़ाई—“वह यहीं था।...कुछ देर पहले वह यहीं था।”
 “क-कौन?...कौन था यहां?...क्या बक रही हो तुम?”
 “र-राजदान।...राजदान था यहां।”
 “र-राजदान?”
 “सूंघो देव! सूंघो। मुझे उसके सिगार की स्मेल आ रही है।”
 अब जाकर देवांश को समझ में आया—दिव्या पागल नहीं हुई थी।
 उसने भी लम्बी-लम्बी सांसे लीं और सचमुच, वातावरण में स्मेल थी।
 वही स्मेल जो राजदान के सिगार के धुवें से आती थी।
 अब देवांश को उस स्मेल के स्रोत की तलाश थी और जल्द ही उसने उसे ढूंढ भी लिया।
 आराम कुर्सी के दायीं तरफ, फर्श पर एक एश्ट्रे रखी थी और एश्ट्रे पर रखा था सुलगा हुआ सिगार। आधा सिगार था वह। जैसे आधा किसी के द्वारा पिया जा चुका हो।
 देवांश ने झुककर सिगार उठा लिया।
 “म-मैंने कहा था न देव। कुछ देर पहले वह यहीं था।”
 देवांश ने सिगार का अंतिम सिरा चैक किया। वह गीला था। उसे राजदान के सिगार पीने का स्टाईल याद आया—दांतों में दबाकर

सिगार पीता था वह। इस कारण अंतिम सिरा उसके थूक से गीला हो जाता था। इसके बावजूद देवांश ने कहा—“जरूरी नहीं इसे उसी ने पिया हो। कोई भी पी सकता है ये सिगार।”

“लेकिन कौन है?” दिव्या चीख पड़ी—“उसके अलावा और कौन आयेगा चहां?”

देवांश चुप रहा गया। कोई जवाब नहीं था उसके पास। अपनी जगह सटीक ही था दिव्या का सवाल—कौन आयेगा यहां? क्यों पियेगाव ही सिगार जो राजदान पीता था? क्यों उसी आराम कुर्सी पर बैठकर झूलेगा?

जब कुछ सूझा नहीं तो दिव्या को बाहों में भर लिया।

और दिव्या।

दिव्या उससे अमर बेल की मानिन्द लिपट गई।

उस लिपटने में प्यार या वासना का आवेग नहीं बल्कि खौफ था। वह खौफ जिसने उसके जहन को बुरी तरह जकड़ लिया था।

देवांश उसे यूं ही लिये, स्लाईडिंग पार करके बैडरूम में आ गया।

उसी क्षण।

कान खड़े हो गये उसके।

छिटककर दिव्या भी अलग हो गई।

जाहिर है—वह आवाज उसने भी सुन ली थी जिसने देवांश के कान खड़े किये थे।

दोनों की खौफजदा आंखें बाथरूम के दरवाजे पर स्थिर हो गईं।

वह कमरे की तरफ से खुला हुआ था।

अंदर से शॉवर चलने की आवाज आ रही थी।

दिव्या फुसफुसाई—“वह नहा रहा है।”

देवांश के जबड़े कस गये।

वह बगैर कुछ कहे बाथरूम के दरवाजे की तरफ बढ़ा।

“नहीं।” दिव्या ने लपककर उसकी कलाई पकड़ ली—“तुम वहां मत जाओ।”

“छोड़ो दिव्या।” देवांश ने हल्का सा झटका देकर अपनी कलाई छुड़ाने के साथ कहा—“वह, वह नहीं हो सकता।”

“क्यों-क्यों नहीं हो सकता?”

“वह मर चुका है।” देवांश दांत भंचकर गुराया।

“शायद नहीं। उसने फोन पर हमसे बात की है। बबलू ने कहा था...

“बकता है वो। आवाज की नकल करने वाले मैंने बहुत देखे हैं। मेरे सामने। मेरी इन आंखों के सामने मरा है वो। भले ही तुम भी मान लो वह कोई ओर था मगर मैं नहीं मान सकता।”

“लेकिन कोई और, हमें ‘वह’ बनकर डराने की कोशिश क्यों करेगा?”

“वही जानना चाहता हूं मैं।” कहने के साथ, हालांकि जोश में वह दरवाजे की तरफ बढ़ी तेजी से बढ़ा था परन्तु दरवाजे के नजदीक पहुंचकर ठिठक गया।

तपककर दिव्या भी उसक नजदीक आ गई थी।

दिल धाड़-धाड़ करके बज रहे थे।

अंदरसे शॉवर चलने की आवाज अभी-भी आ रही थी।

साथ ही उन्होंने सुनी—राजदान के गुनगुनाने की आवाज।

दिव्या फुसफुसा उठी—“नहाते वक्त वह हमेशा यही गाना गुनगुनाता है।”

देवांश के रोंगटे खड़े हो गये।

अचानक उसे ख्याल आया—वह निहत्था है।

इस तरह अंदर घुस जाना उसकी भूल भी साबित हो सकती है। अंदर जो भी है, राजदान या कोई और...उस पर हमला भी कर सकता है।

उसका मुकाबला करने, उस पर काबू पाने के लिये कुछ चाहिये।

किसी ऐसी चचीज की तलाश में उसने सारे कमरे में नजर दौड़ाई जिसे हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सके। नजर कमरे की एक दीवार पर ‘शो-पीस’ के रूप में लटकी दो तलवारों पर ठहर गई। एक-दूसरे को क्रॉस किये हुए थीं वे।

देवांश जानता था—उनमें धार नहीं है।

वास्तव में केवल ‘शो-पीस’ ही हैं वे परन्तु उनसे बेहतर कमरे में और कुछ नहीं था। अतः एक जम्प सी लगाई। तलवारों के नजदीक

पहुंचा और अगले ही पल वह तलवार के साथ वापस बाथरूम के दरवाजे के नजदीक था।

दायें हाथ में तलवार ताने, बायें हाथ से ढुके हुए दरवाजे को धकेला

उसी क्षण-गुनगुनाहट गायब हो गई।

शॉवर अब भी चल रहा था।

देवांश ने एक झटके से दरवाजा खोल दिया।

वह किसी भी हमले का सामना करने के लिये तैयार था।

परन्तु।

कोई हमला नहीं हुआ।

ट्रेसिंग और बाथरूम के बीच अपारदर्शी कांच का जो दरवाजा था उस पर एक परछाई को जरूर हिलते-डुलते देखा उसने। वह भी केवल एक पल के लिये।

अगले पल उसने एक झटके से कांच का दरवाजा खोला।

परछाई ने उसी क्षण खिड़की से फ्रन्टलॉन की तरफ जम्प लगाई।

देवांश खिड़की पर झपटा। बाहर अंधेरा था। कुछ भी तो नजर नहीं आया उसे। हां, किसी के भागते कदमों की आवाज जरूर सुनाई दी।

हिम्मत करके देवांश ने भी खिड़की के बाहर जम्प लगा दी।

उसके पीछे दिव्या भी कूद पड़ी। वह केवल इसलिये देवांश के पीछे थी क्योंकि वर्तमान हालात में अकेली नहीं रहना चाहती थी। तलवार सम्भाले देवांश आगे, दिव्या उसके पीछे दौड़ रही थी। जोश में भरे देवांश को खुद नहीं मालूम था वह उस परछाई के पीछे दौड़ रहा है जिस खिड़की से कूदते देखा था या उससे विपरीत दिशा में क्योंकि चारों तरफ नीम अंधेरा था। आज तो वह बल्ब भी ऑफ था जो पिछली रात ऑन था।

अब तो पद्चाप भी सुनाई नहीं दे रही थी उसे, फिर भी भाग रहा था।

रुका तब जब अचानक खुद को तेज प्रकाश दायरे में फंसा पाया।

प्रकाश एक जीप की हैडलाईट्स का था।

उसका, जो ड्राईव वे पर दौड़ती सीधी उसकी तरफ आ रही थी।

पीछे से दिव्या और सामने से जीप आकर देवांश के नजदीक रुकी। वातावरण में जीप के ड्राईविंग डोर से कूदते ठकरियाल की आवाज गूंजी—“क्या हुआ देवांश? हाथ से तलवार लिये क्यों भागे फिर रहे हो अंधेरे में?”

देवांश इस कदर हांफ रहा था कि तुरन्त जवाब तक न दे सका।



शॉवर अब भी चल रहा था। खिड़की की चौखट पर गाले पैर का निशान भी था। साबुनदानी में रखे साबुन को देखकर दिव्या कह उठी—“देखो! देखो देव! वह इस साबुन से नहाया है। इसी साबुन से राजदान नहाया करता था।”

देवांश के साथ ठकरियाल की नजर भी साबुन पर अटक गई।

वह गीला ही नहीं था बल्कि झाग भी लगे थे उस पर। देखकर कोई भी कह सकता था—वह कुछ ही देर पहले इस्तेमाल हुआ है। ठकरियाल ने कहा—“इसमें कोई शक नहीं, यहां कोई नहाया है। मगर अब मैं दावे के साथ कह सकता हूं, वह राजदान नहीं हो सकता।”

“मैं तो कब से यही राग अलाप रहा हूं।” देवांश ने कहा—“लेकिन अपने अलावा किसी और की बात तुम्हें जंचती ही नहीं।”

उसके रोष पर ठकरियाल हौले से मुस्करा उठा। बोला—“तुम यह बात केवल इस बेस पर कह रहे थे कि राजदान तुम्हारे सामने मरा है, वैसी बातें करता मरा है जैसी तुम्हारे ख्याल से कोई और नहीं कर सकता था।...ये दोनों ही कारण अकाट्य नहीं थे। फेसमास्क से बहुत देर के लिये न सही, कुछ देर के लिये जरूर सामने वाले को धोखा दिया जा सकता है और सजीव एक्टिंग करने वाले एक से एक धुरंधर आर्टिस्टों से दुनियां भरी पड़ी है।”

“तो अब जरा अपना बेस भी स्पष्ट कर दो।” थोड़े चिड़े से देवांश ने कहा—“सुनूं तो सही, अचानक कौन सा अकाट्य कारण सूझ गया तुम्हें?”

ठकरियाल कुछ और चमकीली मुस्कान के साथ कह उठा—“जितना सब कुछ तुमने बताया उतना कुछ करने का दम खम ही कहां रह गया था राजदान में। कैसे विशाल पत्थर के शीर्ष पर पहुंचकर झरने के नीचे नहा सकता है वह? कैसे इस खिड़की से लॉन में कूदकर तुमसे तेज भाग सकता है? अपने अंतिम समय में तो वह चार-पांच कदम चलने पर ही हांफने लगता था।”

“य-यही...यही कहना चाहता था मैं।”

“है न अकाट्य कारण?” ठकरियाल ने देवांश की ‘चिड़न’ का मजा लिया—“अब मुझे पोस्टमार्टम से लाश मिलने का इन्तजार नहीं रहा। पक्के तौर पर कह सकता हूँ—मरने वाला राजदान ही था। जो राजदान बना घूम रहा है, वह कोई और है।”

“म-मगर।” दिव्या ने पूछा—“वह ऐसा क्यों कर रहा है?”

“जो कुछ तुमने बताया उससे तो यही भ्रम होता है वह तुम्हें डराना चाहता था।” कहने के बाद ठकरियाल मुड़ा। बाथरूम से ड्रेसिंग में और ड्रेसिंग से बैडरूम में पहुँचा। दिव्या, देवांश उसके पीछे थे। एक सिगरेट सुलगाने के बाद उसने आगे कहना शुरू किया—“अब मुझे लगता है, हमारा पहला ख्याल ही दुरुस्त था। राजदान ने अपनी मौत से पहले ही किसी को यह सब करने के लिये ठीक उसी तरह नियुक्त कर दिया था जिस तरह मुझे तुम्हें हलकान करने और अंततः जेल भेजने के मिशन पर किया था।”

“तो फिर तुम्हारे ही द्वारा उठाये गये सवाल के मुताबिक बबलू इतना खुश और निश्चिन्त क्यों है?” देवांश के लहजे में अब भी व्यंग्य था।

“शायद वह राजदान को सचमुच जिन्दा समझ रहा है।”

“मतलब?”

“मतलब समझाने से पहले मैं तुम्हें एक और बात बताना चाहता हूँ।”

“वह क्या?”

“बबलू हवालात से फरार हो गया है।”

“क-क्या?” दोनों के मुँह खुले रह गये।

“रात के इस वक्त मैं यहाँ तुम लोगों को यही इन्फॉर्मेशन देने पधारा था।”

“मगर...ऐसा कैसे हो गया?”

“एक बार फिर मानना पड़ेगा, अभी तक जो भी हुआ है—राजदान की प्लानिंग के मुताबिक हुआ है।”

“क्या कहना चाहते हो?”

“रामोतार को जानते हो?”

देवांश के मुँह से निकला—“तुम्हारा वह चहेता पुलिसिया?”

“बबलू उसी की मदद से फरार हुआ है।”

चौंक पड़ी दिव्या—“ऐसा कैसे हो गया?”

“पैसा बड़ी चीज है।”

“यानी?”

“अगर पांच लाख के लिये मैं राजदानका पूरा न सही अधूरा काम कर सकता हूँ तो क्या दो लाख के लिये रामोतार बबलू को फरार नहीं कर सकता?”

“इस काम के उसे दो लाख मिले हैं?”

“पक्का!”

“किसने दिये?”

“राजदानप के अलावा और कौन दे सकता है?”

“हे भगवान!” दिव्या बड़बड़ा उठी—“मरने से पहले वह कितने लोगो को क्या-क्या बांटकर, क्या-क्या काम सौंप कर गया?”

“यह काम उसने नहीं, उसके ‘क्लोन’ ने किया है।”

“अर्थात्?”

“रामोतार का कहना है, राजदान आज शाम उसके क्वार्टर पर आया था। वहीं उसे एक लाख रुपये दिये। बबलू को फरार करने का काम सौंपा और बाकी एक लाख काम पूरा होने के बाद पहुंचाने का वादा किया। उसका दावा है राजदान जीवित है।”

“बाकी एक लाख भी मिल गये उसे?”

“यही जानने के लिये मैंने रामोतार से अपने क्वार्टर पर फोन करके बीवी से बात करने को कहा। उसकी बीवी ने अपने मियां को बताया—राजदान साहब अभी-अभी बाकी एक लाख देकर गये हैं।”

“यानी वह जो भी है, पूरी ईमानदारी के साथ राजदान द्वारा सौंपे गये काम को अंजाम दे रहा है।”

“फिलहाल एक ही बात समझ में आ रही—यह कि वह किसी एक व्यक्ति को अपने मिशन का इंचार्ज बनने के बाद मरा है। यह वह व्यक्ति या तो सचमुच बेहद ईमानदार है या राजदान उसे इतना पैसा सौंप गया है जिसके सामने दो लाख कोई मायने नहीं रखते।”

“इतना पैसा था ही कहां उसके पास?” देवांश ने कहा।

“इस फेर में मत पड़ो। राजदान उन लोगों में से था जिनकी चड़्डी भी झाड़ो तो करोड़ दो करोड़ टपक पड़ते हैं।”

“बात तो ठीक कह रहे हो तुम।” देवांश ने कहा—“मरने से दो ही दिन पहले उसने मुझे रामभाई शाह का कर्जा चुकाने के लिये पचास लाख के शेयर्स दिये थे जबकि उससे पहले मैं सोच रहा था—उसका खजाना खाली हो चुका है।”

“अब तुम बबलू द्वारा राजदान को जीवित समझने का रहस्य समझ गये होंगे।”

“तुम्हारा मतलब है—बबलू राजदान के ‘क्लोन’ को ही राजदान समझकर खुश और निश्चिन्त है?”

“क्या ऐसा नहीं हो सकता?”

देवांश कह उठा—“यकीनन ऐसा ही होगा।”

“राजदान के पास फिलहाल बबलू को अपनी मौत के सदमे से बचाने का भी यही रास्ता था।” ठकरियाल कहता चला गया—“सारी कड़ियां खुद पर खुद जुड़ती जा रही हैं।”

“मगर अहम् सवाल अब भी वहीं का वहीं है।”

“वह क्या?”

“राजदान के ‘क्लोन’ ने बबलू को उसी के मुंह से राजदान का हत्यारा क्यों कहलवाया? न सिर्फ कहलवाया बल्कि वे सुबूत भी छोड़े जिससे वह हत्यारा सिद्ध हो जाये।”

“इस सवाल को जवाब मेरी जेब में है।”

“जेब में?”

ठकरियाल ने जेब से एक कागज निकालकर उन्हें दिखाते हुए कहा—“यह कागज मुझे अपने फ्लैट में, राईटिंग टेबल की दराज से मिला है।”

“हम कुछ समझ नहीं।”

ठकरियाल ने टेप के बारे में बताते-बताते कागज की तहें खोलीं और बात पूरी करने के साथ कागज उनकी आंखों के सामने लहराता बोला—“हमारे नाम राजदान का यह एक ओर लव लेटर है।”

देवांश ने लेटर उसके हाथ से झपट सा लिया।

दिव्या भी उस पर झुक गई।

एक बार फिर, राजदान के लेटर पैड पर उसी की राईटिंग मौजूद थी।

लिखा था।

इंस्पेक्टर ठकरियाल! तू कितना बड़ा कमीना, जलील और दौलत का दीवाना है, यह बात उसी दिन मेरी समझ में आ गई थी जिस दिन तू न मुझसे एक ऐसे काम के पचास लाख रुपये मांगे थे जो इंसानियत के नाते फ्री में करना चाहिये था।

याद कर उसी दिन को—तूने खुद मुझे ‘देवता’ कहा था। कहा था—‘पैंतालीस साल का हो गया हूं मैं। अपनी बीस साल की सर्विस में दुनियां देखी है मगर आप जैसा महान भाई नहीं देखा राजदान साहब।’...यह बात तूने तब कही थी जब मैंने तेरे चंगुल में फंसे एक शख्स को बख्श देने की रिक्वेस्ट की थी।...बात तो तूने इतनी बड़ी कही मगर अगले ही पल मेरी रिक्वेस्ट को मानने की कीमत मांग बैठा। पूरे पचास लाख। मजबूर था। सो, देने पड़े लेकिन समझ गया—इंसानियत से दूर-दूर तक तेरा कोई नाता नहीं है। पैसा ही भगवान है तेरा। पैसे के लिये अपनी मां तक को बेच सकता है। मैंने तुझे पचास ही नहीं, पच्चीस लाख और दिये—एक दूसरे काम के।

और अब...जबकि मुझे दिव्या और देवांश को उनके कर्मों का फल देना है सो दिमाग के किसी कोने में तू भी पड़ा है। मैं तुझे आज रात आठ बजे फोन करूंगा। रात एक बजे अपने बाथरूम में बुलाऊंगा। वहां से तुझे मेरा एक लेटर, जिसे ‘इस लेटर’ से पहले लिख चुका हूं, पांच लाख रुपयों के साथ मिलेगा। जानता हूं, तू उस लेटर में लिखे मेरे निर्देशों का पालन करेगा। मेरा दूसरा लेटर एक केसिट के साथ उस सोफे के पीछे से मिलेगा जिस सपर मेरी लाश पड़ी होगी। उस लेटर में लिखे निर्देशों का भी पालन करे तू परन्तु केवल तब तक जब तक यह पता नहीं लगेगा इस झमेले के पीछे पांच करोड़ का चक्कर है। मैं अच्छी तरह जानता हूं—पांच करोड़ की बात खुलते ही वह ठकरियाल जाग उठेगा जो एक लाचार इंसान से भी एक नेक काम के पचास लाख मांगने से नहीं चूका था। वहीं से फंसेगा तू लालच के जाल में और...मेरे निर्देशों को धता दिव्या और देवांश के कदमों से कदम मिला बैठेगा। उसके बाद तुम तीनों मिलकर मेरी हत्या के इल्जाम में बबलू को फंसाने की कोशिश करोगे ताकि बीमा कंपनी से पांच करोड़ ऐंटे जा सकें।

यहां मैंने तुम्हारे साथ एक छोटा सा खिलवाड़ करने की ठानी है। ऐसी साजिश रची है कि वह बबलू जिसे तुम मेरा हत्यारा सिद्ध करने के लिये मरे जा रहे होंगे खुद तुमसे सैकड़ों कदम आगे बढ़कर खुद को मेरा हत्यारा साबित करने पर आमादा हो जायेगा।

मैं ये सोच-सोचकर रोमांचित हूं कि उस वक्त क्या हालत हो रही होगी तुम तीनों की। कुछ भी तो समझ में नहीं आ रहा होगा तुम्हारी। दिमाग के भिन्नास उड़े हुए होंगे। पगलाये हुए से तुम अंततः बबलू के मुंह से हकीकत उगलवाने के लिये उसे टॉर्चर करना चाहोगे और

तब...बबलू तुम्हें मेरे जीवित होने का रहस्य बतायेगा। तुम्हारे होश उड़ जायेंगे। जानना चाहोगे—मैंने बबलू से यह क्यों कहा कि उसे खुद को मेरा हत्यारा साबित करना है। यह बात बबलू तुम्हें नहीं बतायेगा, क्योंकि वह खुद ही नहीं जानता मगर तुम इस बात पर विश्वास नहीं करोगे। टॉर्चर करने की कोशिश करोगे उसे लेकिन कर नहीं पाओगे। इसका प्रबन्ध भी मैंने कर लिया है। वकीलचंद सब सम्भाल लेगा। तब, देर-सवेर तू अपने फ्लेट पर पहुंचेगा। वहां मेरी आवाज का एक टेप तेरा इन्तार कर रहा होगा। वहां से मिलेगा तुझे मेरा 'यह लेटर'।

अब! एक और धमाके से गुजर।

जिस वक्त तू ये लेटर पढ़ रहा होगा उस वक्त तेरे थाने में बबलू को हवालात से फरार करने की प्रक्रिया चल रही होगी। मैं इसका भी प्रबन्ध कर चुका हूं। एडी से चोटी तक का जोर लगाने के बावजूद तू बबलू को फरार होन से नहीं रोक सकेगा।

और अब सोच-कितने बीहड़ हालात में फंस गया है तू?

बल्कि तुम तीनों।

मैं ऐसे बीज बो चुका हूं जो जिस क्षण चाहेंगे बबलू को बेकसूर साबित कर देंगे। इतना ही नहीं, कानून के समक्ष यह भी सिद्ध हो जायेगा—बबलू को फंसाने की कोशिश तुम्हीं ने की। आशा है तुम्हें यह जाल पसंद आया होगा, जिसमें फंस चुके हो।

तुम्हारा—राजदान।

एक-एक अक्षर पढ़ते वक्त जहां दिव्या और देवांश के चेहरों पर हैरत के भाव थे, वही अंतिम पंक्तियां पढ़कर होश उड़ गये। पीले पड़ गये चेहरे।

कानों में सांय-सांय की आवाज गूंज रही थी।

दिमागों ने काम करना बंद कर दिया।

ठकरियाल ने कहा—“इसे पढ़ते ही मैं फोन की तरफ लपका। इरादा थाने फोन करने का था लेकिन पाया—तार टूटा पड़ा था।”

“जखूर राजदान के ‘क्लोन’ ने तोड़ा होगा।” आतंकित दिव्या कह उठी।

“अब मेरे पास थाने पहुंचने के अलावा कोई चारा नहीं था। वहां वह सच पाया जो लेटर में लिखा था।”

“यानी एक बार फिर वही हुआ जो राजदान मरने से पहले निर्धारित कर गया था।”

“हन्डरेड परसेन्ट सहमत हूं मैं इस बात से मगर...”

“मगर?”

“ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि हम हर बार हालात के मुताबिक स्वाभाविक कदम उठाते चले गये।”

“क्या मतलब?”

“हब यह बात मेरी समझ में आ चुकी है कि हमारा एक भ अस्वाभाविक कदम राजदान के पूरे प्लान को चौपट कर सकता है।”

“बात भेजे में नहीं घुस रही।”

“शतरंज के मंजे हुए खिलाड़ियों के बारे में सुना होगा तुमने।” ठकरियाल कहता चला गया—“जो अच्छे खिलाड़ी होते हैं वे पहले ही अपने प्रतिद्वन्दी की आगमी दस-दस, कई बार तो बीस-बीस चालों का पूर्वानुमान लगा लेते हैं। वे पहले ही सोच लेते हैं—‘जब मैं ये चाल चलाऊंगा तो प्रतिद्वन्दी भ यह चाल फलां मोहरा वहां रखना पड़ेगा। राजदान ने कुछ इसी अंदाज में अपना जाल बिछाया है। बेवकूफी अब तक हम यही करते रहे कि हर घटना के जवाब में वही स्टेप उठाते रहे जो उन हालात में स्वाभाविक थे। स्वाभाविक होने के कारण राजदान हमारे हर स्टेप का पूर्वानुमान लगा चुका था और इसीलिए वह पहले ही ‘काट’ वाली चाल चल गया। ऐसे जाल को तोड़ने के लिए या ऐसे खिलाड़ी को मात देने के लिए जरूरी है—एक ऐसी चाल चली जाये जिसका पूर्वानुमान वह न लगा सका हो। जाहिर है ऐसी चाल स्वाभाविक नहीं अस्वाभाविक हो सकती है। जैसे ही हमारे द्वारा कोई ऐसी चाल चली जायेगी जो उसने मरने से पहले नहीं सोची थी, वैसे ही उसकी सारी चाल गड़बड़ा जायेंगी। एक बार उसकी चालें गड़बड़ाते ही स्थिति पर हमारा कब्जा होगा।”

“सुनूं तो सही, तुम ऐसा कौन सा कदम उठाने वाले हो जिसे मरने से पहले राजदान ने नहीं सोच लिया होगा।” देवांश के हर लफ्ज में व्यंग्य था।

उसके व्यंग्य का जवाब बड़ी ही धूर्त मुस्कान के साथ देते हुए ठकरियाल ने कहा—“अगर मैं ये कहूं तो तुम्हें कैसा लगेगा कि वैसा एक कदम मैं उठा चुका हूं।”

“उ-उठा चुके हो?” दिव्या के मुंह से चकित स्वर निकला।

“एक तरफ राजदान रामोतार को दो लाख रुपये देकर बबलू को फरार करने के मिशन पर नियुक्त करता है, दूसरी तरफ लेटर के जरिये मुझे बता देता है कि जिस क्षण मैं लेटर पढ़ रहा होऊंगा उस क्षण थाने में बबलू की फरारी की प्रक्रिया चल रही होगी। सोचो, ऐसा क्यों किया उसने? क्या सोचकर खेला होगा ये गेम?”

“मैं तो एक ही बात सोच सकता हूं—वह कदम-कदम पर हमें छकाना चाहता है।”

“नहीं।...यह खेल उसने केवल मुझे छकाने के लिए नहीं खेला।”

“फिर?”

“केवल वकीलचंद की बेहोशी ही मुझे बता सकी—बबलू की फरारी के पीछे स्टाफ के किसी आदमी का हाथ है। सुबह पहुंचता तो वकीलचंद को होश आ चुका होता। खुद वह नहीं बता सकता था कि बीच में वह बेहोश हुआ था। यही सोचता—उसकी आंख लग गई होगी। इस स्पोर्ट पर मैंने सोचा—अगर राजदान का मकसद केवल बबलू को फरार ही कराना था तो मुझे लेटर के जरिये क्यों बताया? जवाब स्पष्ट था—ऐसा उसने इसलिये किया ताकि मैं तुरन्त थाने पहुंचूं। मेरे टेलेन्ट को देखते हुए इस बात का पूर्वानुमान उसने लगा ही लिया होगा कि अगर मैं तुरन्त पहुंच गया तो रामोतार को ताड़ जाऊंगा।”

“यानी यह सब उसने रामोतार को तुम्हारे हाथों पकड़वाने के लिये किया?”

“हालात से जाहिर है।”

“क्यों?”

“बबलू द्वारा हवालात में दिये गये बयान, मोबाईल पर हुई बातें, राजदान के इस लेटर, अपने साथ कुछ देर पहले घटी घटनाओं से और रामोतार के बयान पर गौर करोगे तो पाओगे—इस स्पोर्ट पर राजदान हमें ही नहीं, सारी दुनियां को इस भ्रमजाल में फंसाना चाहता है कि वह जीवित है। अपना ‘क्लोन’ भी उसने यही सिद्ध करने के लिए मैदान में उतारने का प्लान बनाया होगा।”

“मगर इससे उसे फायदा क्या होने वाल है?”

“सोचो, अगर मैं रामोतार को गिरफ्तार कर लूं तो वह सार्वजनिक रूप से क्या बयान देगा?”

“क्या तुमने रामोतार को गिरफ्तार नहीं किया?”

“अपने सवाल बाद में करना, पहले मेरे सवाल का जवाब दो।”

“बयान क्या देना है—यही कहेगा, खुद राजदान ने उसे इस काम के पैसे दिये थे।”

“उसका यह बयान हमारा बंटाधार कर देगा।”

“वह कैसे?”

ठकरियाल ने दिव्या से मुख़ातिब होकर कहा—“मैं सोच रहा था—कल ही तुम्हारे द्वारा बीमा कम्पनी को राजदान की पॉलिसी के ‘अगेन्स्ट’ क्लेम हेतु एक एप्लीकेशन दिलाऊंगा। सारी दुनियां की नजरों में राजदान का मर्डर हो चुका है। कम्पनी को केस के जजमेन्ट से कोई मतलब नहीं होता। उसकी नजर में अगर राजदान का मर्डर हुआ है, भले ही वह चाहे जिसने किया हो, तो वह क्लेम देने के लिए बाध्य है अर्थात् चार-पांच दिन के अंदर उन्हें तुम्हारे नाम पांच करोड़ का बैंक काटना पड़ता लेकिन...अगर यह प्रचारित हो गया—राजदान जीवित है तो समझ सकते हो, क्लेम झमेले में पड़ जायेगा।”

“ओह!” बात दिव्या और देवांश के भेजे में एक साथ उतर गई।

“ये है वह कारण जिसकी खातिर मरने से पहले राजदान ने अपना क्लोन तैयार किया।” ठकरियाल एक-एक शब्द पर जोर देता कहता चला गया—“जिसकी खातिर इस स्पोर्ट पर वह खुद को जीवित प्रचारित करना चाहता है। जब पांच करोड़ का बैंक ही झमेले में फंस जायेगा तो इस केस में हमारे लिये बचेगा ही क्या? मेरे ख्याल से अब तुम समझ गये होंगे—कितना गहरा जाल बिछाने के बाद मरा है राजदान। यहां तक पहुंचते-पहुंचते उसने वे पांच करोड़ ही हमसे दूर कर दिये जिनके लिये सारे पापड़ बेल रहे हैं।”

देवांश दांत भींचकर कह उठा—“बड़ा ही हरामजादा था कमीना।”

“नहीं।” ठकरियाल मुस्कराया—“न मैं उसे हरामजादा कहूंगा! न कमीना!...मैं उसे एक बहुत ही ब्रिलियेन्ट शख्स कहूंगा। मरने से क्या कमाल की शतरंजी बिसात बिछा गया है वह। वह, जो आज इस दुनियां में नहीं है। हमारे द्वारा जरा सी चूक होते ही हमें उन पांच करोड़ से महसूस कर सकता है जिनके लिये इस कीचड़ में उतरे हैं। वाकई—कमाल का प्लान बनाने के बाद मरा है वह।”

“लेकिन।” दिव्या ने कहा—“यह चाल उसकी चलेगी कब तक? क्लोन बहरहाल क्लोन है। एक न एक दिन यह साबित होगा ही कि असली राजदान वास्तव में मर चुका है। उस दिन क्लेम देना पड़ेगा बीमा कम्पनी को।”

“मेरे ख्याल से उसके प्लान के मुताबिक उस वक्त तक उसके पैतरे हम तीनों को पूरी तरह सक्सपोज कर चुके होंगे।”

“ओह!” दिव्या के चेहरे पर निराशा फैल गई।

देवांश ने कहा—“सचमुच! हम इतनी दूर तक नहीं सोच पाये थे ठकरियाल। खुद को जीवित प्रचारित करने की कोशिश के पीछे कितना बड़ा उद्देश्य है कम्बख्त का।”

“ये सब बातें मेरे दिमाग में तब आई जब यह समझा कि वह रामोतार को मेरे हाथों गिरफ्तार कराना चाहता है और...बातें समझ में आते ही मैंने उसे गिरफ्तार करने का विचार त्याग दिया।”

“मतलब?”

“यहां में यह भी स्पष्ट कर देना चाहूंगा—मेरी अब तक की रीडिंग के मुताबिक किसी भी मोहरे को राजदान ने अपने पूरे प्लान

से अबगत नहीं कराया है। फॉर ऐम्प्लि—शुरू-शुरू में, पांच लाख में खरीदा गया मैं भी उसका एक मोहरा ही था। लेटर्स के जरिये उसने मुझे अधूरी बातें बताकर आगे बढ़ाया। यह भनक तो कहीं लगने ही नहीं दी कि वह मेरे पैतरा बदलने की कल्पना भी कर चुका था और उससे आगे जाल बिछा चुका था। बबलू और वकीलचंद का उदाहारण भी सामने है। उन दोनों को भी राजदान का पूरा प्लान नहीं बल्कि केवल यह मालूम है जो उन्हें करना है। अर्थात् बड़ी ही चतुराई से उसने हरेक शख्स का 'यूज' किया है। रामोतार भी उन्हीं में से एक है। उसे दो लाख में केवल बबलू को फरार करने का काम सौंपा गया। साथ ही बड़ी चालाकी से उसकी नॉलिज में राजदान के जीवित होने की बात ला दी गई ताकि भविष्य में मेरे द्वार गिरफ्तार होने पर स्वाभाविक रूप से उसके जीवित होने के बयान दे और राजदान का उल्लू सीधा हो जाये। इसके आगे-पीछे राजदान का क्या प्लान है इस बारे में रामोतार कुछ नहीं जानता। तभी तो उसने मुझे ब्लैक मेल किया।”

“ब्लैक मेल किया?”

“वह उन दो कामों में से एक के बारे में जानता है जिनका जिक्र राजदान ने इस लेटर के शुरू में किया है। जिस काम के मैंने राजदान से पच्चीस लाख लिये थे। रामोतार ने मुझे उसी को लेकर ब्लैक मेल किया। धमकी दी—अगर मैंने उसे गिरफ्तार किया तो वह मेरी उस करतूत को सार्वजनिक कर देगा। जी चाहा—गर्दन मरोड़ दूँ साले की। हवलदार होकर थानाध्यक्ष को ब्लैक मेल करने की कोशिश कर रहा था और...ऐसा कर भी सकता था मैं। बता सकता था कि ठकरियाल ब्लैक मेल होने वालों में से नहीं है परन्तु राजदान की लाश को मात देने के लिये जो अस्वाभाविक चाल चलने की बात मेरे दिमाग में आ चुकी थी उसे परवान चढ़ाने की खातिर फिलहाल मैंने ऐसी ही एक्टिंग करना मुनासिब समझा जैसे उसकी धमकी से डर गया होऊँ।”

“अर्थात्?”

“गिरफ्तार नहीं किया उसे।” ठकरियाल ने बताया—“वह इस खुशफहमी में है, मैंने उसे धमकी से डरकर गिरफ्तार नहीं किया जबकि हकीकत ये है—मैं केवल इसलिये उसे गिरफ्तार रन करने का फैसला कर चुका था क्योंकि मेरे ख्याल से मरने से पूर्व राजदान ने यही सोचा था कि यहां मैं रामोतार को गिरफ्तार कर लूंगा और वह राजदान के जीवित होने का बयान देगा। यही है मेरी वह अस्वाभाविक चाल जो मेरे ख्याल से राजदान के आगे के सारे प्लान को गड़बड़ा कर रख देगी।”

“रामोतार से क्या समझौता हुआ तुम्हारा?”

“वही, जो चोर-चोर मौसरे भाईयों में होता है। न मैं यह बात सार्वजनिक होने दूंगा कि बबलू को फरार करके उसने दो लाख पीट लिये हैं, न वह किसी से मरे पच्ची लाख कमने का जिक्र करेगा।”

“बबलू की फरारी के सम्बन्ध में कहानी क्या गढ़ी जायेगी?”

“वही, जो मेरे सुबह थाने पहुंचने पर मुझ तक को सही नजर आती।...बबलू नाईट ड्यूटी पर मौजूद स्टाफ और वकीलचंद की गफलत का फायदा उठाकर फरार हो गया।”

“लेकिन” दिव्या ने कहा—“अकेले रामोतार का मुंह बंद करने से क्या होगा? राजदान के जीवित होने की बात तो लोगों को बबलू भी बतायेगा।”

“वह राजदान का कातिल है। पुलिस कस्टेडी से फरार है। ऐसे शख्स के किसी भी कथन को कोई भी गम्भीरता से नहीं लेता।”

“राजदान ने अपने लेटर में लिखा है—वह जिस क्षण चाहेगा बबलू को बेगुनाह साबित कर देगा।”

“हन्डरेड परसेन्ट सही है यह बात।...गलत नहीं लिखा उसने।”

“फ-फिर?”

“हमारी कोशिश ऐसा होने से पहले हालात को अपनी मुट्ठी में कैद कर लेने की होनी चाहिये।”

दिव्या ने कहा—“कैसे कर सकेंगे ऐसा?”

“कर नहीं सकते मगर कहकर, या सोचकर खुश तो हो ही सकते हैं।” देवांश बड़बड़ाया।

“मैं एक बार फिर तुमसे वही कहूंगा देवांश जो अनेक बार पहले भी कह चुका हूँ।” ठकरियाल के लहजे में कोड़े की सी फटकार उत्पन्न हो गई थी—“हार मान लेने या बुटने टेक देने से काम नहीं चलेगा। मरे हुए राजदान की चाल को यमझने की कोशिश करो। कदम-कदम पर टेप या लेटर्स के जरिये हमें जो उसके मैसेज मिल रहे हैं उनका उद्देश्य ही हमें हतोत्साहित कर देना है। और...वही हम हो जायें। यह एक बार फिर, हमारा उसके जाल में फंस जाना होगा।”

“मैं यह जानना चाहता हूँ, हम कर क्या सकते हैं?”

“अपनी समझ में मैं वह पहली चाल चल चुका हूँ जिसकी कल्पना मरने से पूर्व राजदान नहीं कर पाया होगा। अब देखना है—मेरी इस चाल के जवाब में उसकी कौन-सी चाल ‘खुलती’ है।”

“जितना चालू राजदान अपनी अब तक की चालों से साबित हुआ है, उसकी रोशनी में मैं ये नहीं मान सकता उसने यह कल्पना भी नहीं कर ली होगी कि किसी स्पॉट पर तुम अस्वाभाविक अर्थात् उल्टी चाल भी चल सकते हो।”

“यानी उसने यह कल्पना भी कर ली होगी कि मुमकिन है—मैं रामोतार को गिरफ्तार न करूँ?”

“बिल्कुल हो सकता है।” ठकरियाल ने कहा—“मरने के बाद जितनी चालू रकम बनकर राजदान सामने आया है उसमें हमें यह कल्पना भी कर लेनी चाहिये कि सम्भव है—उसने यह भी सोच लिया हो और मेरी इस चाल को काटने वाली चाल भी पहले ही चल गया हो। इसलिये—अब हमारा काम यह सोचना है कि ऐसी वह क्या चाल चल गया होगा?”

“लगाते रहो क्यास।” देवांश बोला—“मेरे ख्याल से हम उसक दिमाक तक कभी नहीं पहुंच पायेंगे।”

“ऐसा सोचकर हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा जा सकता। इस ‘स्पॉट’ पर वह अगर यह जाल बिछाकर गया है कि लोगों को उसके जीवित होने का भ्रम हो जाये तो हमें यह कोशिश करनी है—लोगों को उसकी मौत का पक्का विश्वास हो जाये।”

“इसके लिये क्या कर सकते हैं हम?”

“मेरे ख्याल से राजदान के प्लान की रीढ़ की हड्डी यही शख्स है।” देवांश की बात ध्यान दिये बगैर ठकरियाल एक बार फिर कहता चला गया—“प्लान के बारे में पूरा न सही, सबसे ज्यादा मालूम भी उसी को होना चाहिये। वही बबलू को भ्रम में रखे हुए है। उसी ने रामोतार को दो लाख दिये। एक तरह से यह कहा जा सकता है—राजदान के बाद वही उसके प्लान को संचालित कर रहा अर्थात् अगर एक बार हम किसी तरह उस तक पहुंच जायें। उस पर काबू पा लें तो सारे हालात हमारे पक्ष में मुड़ सकते हैं।”

“वो सब तो मैं समझ गया मगर ऐसा हो कैसे...”

ठकरियाल उसकी बात काटकर कह उठा—“इसके लिये मैंने एक तरीका सोची है।”

“क्या?”

“मैं बबलू के मां-बाप को उठा लेता हूँ।”

“ल-लेकिन...उन्हें किस जुर्म में उठाया जा सकता है?”

“यह जुर्म कम नहीं है कि वे बबलू के मां-बाप हैं।”

“यह क्या जुर्म हुआ?”

“हम पुलिस वालों की नजर में किसी छोटे-मोटे अपराधी के मां-बाप होना भी काफी बड़ा जुर्म होता है। और वे...वे तो कातिल के मां-बाप हैं। कातिल भी ऐसा जो सारे थाने को धता बताकर फरार हो गया है उस पर दबाव बनाने के लिये, उसे सामने लाने के लिए पुलिस ऐसा कर सकती है।”

“मान लो ऐसा कर भी लिया, फायदा क्या होगा?”

“राजदान के लेटर की अंतिम पंक्तियों पर ध्यान दो...लिखा है, बबलू को चाहे जिस क्षण बेकसूर साबित किया जा सकता है। जाहिर है—राजदान को क्लोन जल्द ही इस दिशा में कोई कदम उठा सकता है। हमारी यह कार्यवाही एक तरह से उस पर यह धमकी होगी की यदि उसने बबलू को बेकसूर और हमें कुसूरवार सिद्ध करने की कोशिश की तो भले ही हम जेल चले जायें मगर बबलू के मां-बाप की खैरियत नहीं है।”

“क्या इस धमकी से वह डरेगा?”

“अगर वह उसका शुभचिन्तक न होकर, केवल खरीदा हुआ मोहरा हुआ?”

“तब भी हाथ पर हाथ धरे बैठकर दुश्मन की चाल का इन्तजार करने से बेहतर कुछ करना है।” ठकरियाल के दिमाग की जाम पड़ी नसों ने मानो खुलना शुरू कर दिया था—“दुश्मन के आक्रमण कर देना। हमारी यह कार्यवाही एक तरह से उन पर आक्रमण ही होगी। हमारी तरफ से पहला आक्रमण।”

“बात जम रही है” अब देवांश भी उत्साहित ही नजर आया—“बबलू हो या राजदान का क्लोन। यह कार्यवाही दोनों पर हमारी दबाव बढ़ा देगी मगर...”

“मगर?”

“मेरे ख्याल से हमें अपनी कार्यवाही का दायरा थोड़ा बढ़ा देना चाहिये।”

“मतलब?”

“बबलू के मां-बाप के साथ स्वीटी को भी उठा लेना चाहिये। क्लोन के बारे में तो नहीं कह सकता मगर बबलू पर एक्सट्रा दबाव जरूर पड़ेगा।”

“व...वेरी गुडा।” दिव्या कह उठी—“देवांश बिल्कुल ठीक कह रहा है।”



अगली सुबह।

उत्साह से भरे वे बबलू के घर के दरवाजे पर पहुंचे।

मगर।

एक ही झटके में सारे मंसूबों पर इस तरह पानी फिर गया जैसे खाने पानी की लहर समुद्र किनारे किसी के द्वारा बड़े अरमानों के साथ बनाये गर्म रेत के धरौंदे को अपने साथ ले गई हो।

मुख्य द्वार पर ताला पड़ा था।

मोटा।

अलीगढ़ी ताला।

मुंह चिढ़ाता लग रहा था वह उन्हें।

कुछ देर तक किसी के मुंह से कोई आवाज न निकल सकी।

ठगे से खड़े रह गये वे।

फिर।

ठकरियाल ने बबलू के फ्लैट के ठीक सामने वाले फ्लैट का दरवाजा खटखटाया।

दरवाजा एक अधेड़ आयु की महिला ने खोला।

ठकरियाल ने पूछा—“कहां गये ये लोग?”

“बद्रीनाथ गये हैं मगर ठहरिये, आपके लिये कुछ दे गये हैं वे।” कहने के बाद महिला मुड़ी, वापस अपने फ्लैट के अंदर गई और मुश्किल से आधा मिनट बाद आई तो उसके हाथ में एक दज्ञेता सा पैकिट था। उसे ठकरियाल की तरफ बढ़ाती बोली—“सत्यप्रकाश जी कह गये हैं, आप आयें तो यह आपको दे दूं।”

पैकिट लेते वक्त ठकरियाल के मुंह से निकला—“क्या है इसमें?”

“न उन्होंने बताया। न मैं। न खोला। वैसा का वैसा ही सीलबंद है।”

ठकरियाल ने देखा—सचमुच वह एक सीलबंद पैकिट था और...यह देखकर तो दिव्या और देवांश के ददेवता ही कूच कर गये कि सील पर राजदान के हस्ताक्षर थे।

नीचे तारीख पड़ी थी—अट्टाईस अगस्त।

सहमी-सहमी आंखों से तीनों एक-दूसरे की तरफ देखते रह गये।



“हा...हा...हा...हा...”

सारे कमरे में राजदान के अट्टहास गूंज रहे थे।

पागलों की तरह हंसता प्रतीत हो रहा था वह।

दिव्या और देवांश के चेहरों पर हवाईयां उड़ रही थीं।

ठकरियाल की हालत भी उनसे अलग नजर नहीं आ रही थी। कहकहों के बाद टेप रिकार्डर से निकलकर राजदानकी आवाज पिवला शीशा बनकर उनके कानों के रास्ते जहन में उतरने लगी—“मैं जानता हूं। आज...अर्थात् अट्टाईस अगस्त को ही जानता हूं कि बबलू की हवालात से फरारी के बाद तुम उसके मां-बाप को गिरफ्तार करने पहुंचोगे। ऐसे हर केस में पुलिस सदियों से यही करती आई है। फरार चोर-उचक्कों तक को पकड़ने के लिये पुलिस को उसके नाते-रिश्तेदारों को उठाने के अलावा और कुछ नहीं सूझता। इसलिये मैंने सत्यप्रकाश और सुजाता को ही नहीं, स्वीटी को भी अण्डग्राउण्ड करने का इन्तजाम कर दिया है। चाहे जितनी सिर पटक लो—वे तुम्हारे हाथ नहीं आयेंगे। धरे रह जायेंगे बबलू पर दबाव बनाने के तुम्हारे मंसूबे। नहीं ठकरियाल इन घिसी-पिटी चालों से कोई नतीजा नहीं निकलेगा। कोई नया पैतरा सोचो, ऐसा—जिसे मैं न सोच सका होऊं।”

बात पूरी होने के बाद टेपरिकार्डर से एक बार फिर राजदान के हंसने की आवाज निकलने लगी। ठकरियाल ने झपटकर उसे ‘ऑफ’ कर दिया।

दिव्या और देवांश में तो अपने स्थान से हिलने तक की ताकत नहीं बची थी।

अचानक किसी ने कमरों का दरवाजा खटखटाया।

यूं उछल पड़े तीनों, जैसे आसपास बम फटा हो।

देवांश बड़ी मुश्किल से अपने मुंह से मरियल सी आवाज निकाल सका—“क...कौन है?”

“आपसे कोई मिलने आया है साब।” आवाज आफताब की थी।
 भन्नाया हुआ देवांश आफताब पर चिल्ला पड़ने वाला था कि ठकरियाल ने रोका। टेपरिकार्डर से केसिट निकालकर जेब में डाली और दरवाला खोलने का दशारा किया।
 जाने क्या-क्या कहने की हसरतों को दिल में दबाये देवांश दरवाजे की तरफ बढ़ा।
 उसे खोला।
 सामने आफताब खड़ा था।
 “कौन है?” देवांश ने पूछा।
 “मैं नहीं जानता साब। पहली ही बार आया है। मगर कहता है—बड़े साहब का पुराना दोस्त हैं”
 “नाम नहीं पूछा तूने?”
 “अखिलेश बताया है साब।”
 “अखिलेश?” दिव्या चौंक सी पड़ी।
 और बस।
 आगे कुछ नहीं बोली वह।
 शायद आफताब की मौजूदगी के कारण चुप रह गई थी।
 ठकरियाल ने हालात को समझा। आफताब से कहा—“उसे बाहर बैठा। हम आते हैं।”
 आफताब पत्थर की तरह सपाट चेहरा लिये वापस चला गया।
 देवांश ने शंका व्यक्त की—“टेप से निकली आवाज तो नहीं सुन ली होगी आफताब ने?”
 “नहीं।” ठकरियाल ने कहा—“मैंने ‘वोल्यूम स्लो’ रखा था। बंद कमरे के बाहर आवाज हरगिज नहीं गई होगी।”
 “आगन्तुक का नाम सुनकर तुम चौंकी क्यों थी?” देवांश ने दिव्या से पूछा।
 “मैंने यह नाम कहीं सुना था।” दिमाग पर जोर डालती सी दिव्या ने कहा—“शायद वकीलचंद जैन के मुंह से लिकला था। तब, जब वह पहली बार यहां आया था। इसके अलावा एक और कोई नाम लिया था उसने। याद नहीं आ रहा। कहा था—राजदान के बचपन के चार दोस्त थे। भट्टाचार्य, वकीलचंद, अखिलेश और... एक कोई और। पता नहीं क्या नाम लिया था उसने।”
 देवांश बड़बड़ाया—“सवाल ये है, वह यहां आया क्यों है?”
 “मुझे तो कोई नया पंगा लगता है।”
 “मतलब?”
 “अपने पुराने दोस्तों को ही काम सौंप गया है राजदान।”
 ठकरियाल ने कहा—“जैसे वकीलचंद को मानवाधिकार आयोग की तरफ से ड्यूटी पर लगा गया।”
 “उम्मीद है, इस टेप को सुनने के बाद एक बार फिर तुम्हारे दिमाग से यह गलतफहमी दूर हो गई होगी कि तुम कोई ऐसी चाल सोच सकते हो जो मरने से पहले राजदान ने नहीं सोच ली थी।” देवांश ने अंततः वह बात कह दी जो टेप सुनने के बाद से लगातार उसके पेट में गैस का गोला बनकर घुमड़ रही थी—“पता नहीं ऐसा कुछ है भी या नहीं जो उसने सोच नहीं लिया था।”
 “इन बातों पर बाद में चर्चा करें तो बेहतर होगा।” ठकरियाल ने कहा—“फिलहाल उसे देखा जाये जो आया है। जाने क्यों, मेरी ‘सिक्सथ सेंस’ कह रही है—वह भी किसी खास काम पर राजदान का ही नियुक्त किया हुआ मोहरा होना चाहिये।”
 इस तरह, अखिलेश से मिलने का फैसला हुआ।
 वे इमारत से बाहर आये।
 वह फ्रन्ट लॉन में पड़ी छः लॉन चेयर्स में से एक पर बैठा था।
 बल्कि।
 उसे बैठा हुआ कहना गलत है।
 कुर्सी पर लेटा हुआ था वह।
 पैर फैलाकर सामने पड़ी मेज पर लुढ़का रखे थे।
 धूप चटकी हुई थी।
 दृश्य ऐसा था जैसे सागर किनारे धूप स्नान कर रहा हो।
 सूरज की सीधी और तीखी किरणों से बचने के लिये उसने अपनी कैप से चेहरा ढक रखा था। बेहद पतला था वह।
 कपड़े जिस्म पर यूँ झूलते से महसूस हो रहे थे जैसे खेत में पक्षियों को डराने के लिये बांस के पुतले को पहना दिये जाते हैं।
 और।

कपड़े भी अजीब थे।
 कमीज पर रंग-बिरंगे वाहन बने हुये थे।
 बच्चों की तिपहियां साईकिल से लेकर अंतरिक्ष यान तक।
 साईकिल, स्कूटर, मोटरसाईकि, रेलगाड़ी, हवाई जहाज, जलपोत और पनडुब्बी तक।
 पैंट लाल कलर की थी।
 आंखों में चुभने वाले रंग की।
 पैरों में जूतियां थीं। वे, जो कुर्ते-पैजामे पर पहनी जानी चाहिये थीं।
 तीनों के दिमाग में एक ही बात कौंधी—ये आदमी, आदमी कम कार्टून ज्यादा है।
 वे उसके नजदीक पहुंच गये।
 ऐसी कोई कोशिश नहीं की थी तीनों में से किसी ने कि कदमों की आहट न हो सके। सामान्य चाल से चलते उसके नजदीक पहुंचे थे। आहटें भी हुई थीं मगर वह जरा भी सजग नहीं हुआ। सजग होना तो दूर, जगा तक नहीं।
 वह सवचमुच सो रहा था।
 वातावरण में खर्राटे गूंज रहे थे।
 कुछ देर तीनों उसे अजीब सी नजरों से देखते रहे। फिर आपस में आंखें मिलीं। अंततः ठकरियाल को कंधा पकड़कर झंझोड़ना पड़ा—“मिस्टर अखिलेश!”
 “मैं जाग रहा हूं।” उसने उसी मुद्रा में कहा।
 तीनों ने अजीब नजरों से एक-दूसरे की तरफ देखा।
 “बैठिये।” उसने डंडे जैसे अपने हाथ से मेज के चारों तरफ पड़ी कुर्सियों की तरफ इशारा किया।
 ठकरियाल ने थोड़े सख्त स्वर में पूछा—“तुम्हें मिलना किससे है?”
 “मिलना तो भाभी जान से था लेकिन जब तुम तीनों आ गये हो तो तीनों से ही मिल लूंगा। मिलने में कुछ घिस तो जायेगा नहीं मेरा।”
 एक बार फिर तीनों की नजरें मिलीं। उन्हें आश्चर्य हुआ—आखिर यह कब जान लिया उसने कि वे तीन हैं। चेहरे से कैप तक तो हटोई नहीं थी पट्टे ने। कुछ देर की खामोशी के बाद दिव्या ने कहा—“मैं हूं दिव्या। कहो क्या कहना है?”
 “यूं लट्टमार बातें क्यों कर रही हो भाभी जान। आराम से बैठ जाओ।”
 “तुम तो ऐसी बेतकलुफी के साथ बातें कर रहे हो जैसे पता नहीं मुझे कब से जानते हो।” दिव्या ने शुष्क स्वर में कहा—“जबकि मैंने जीवन में पहली बार तुम्हारी शक्ल देखी है।”
 “गलत...।” वह बोला—“गलत कहा आपने। शक्ल अभी देखी कहां है? अभी तो पर्दानर्शी हुआ पड़ा हूं मैं।”
 “म-मेरा मतलब।” दिव्या बौखला सी गई—“म-मैं तुमसे पहले कभी नहीं मिली।”
 “करेक्ट।...ये बात करेक्ट है।”
 देवांश ने पूछा—“हो कौन तुम?”
 “पुराना परिचय हूं या नया?”
 “मतलब?”
 “मेरा एक परिचय वह है जो आफताब आपको दे चुका है अर्थात् कच्छिया यार हूं राजदान का। उस राजदान का जो इस नश्वर संसार को छोड़कर जा चुका है। पांच यार हुआ करते थे हम। मैं, राजदान, भट्टाचार्य, वकीलचंद और अवतार। धमाचौकड़ी मचाये रखा करते थे मुहल्ले में। ऐसी, कि लोगों की नाक में दम हो जाया करता था। वैसे ये नाक में दम वाला मुहावरा आज तक मेरे दिमाग शरीफ में नहीं...
 “यहां क्यों आये हो?” ठकरियाल उसकी बात काटकर गुराया।
 “अभी तो पहला ही परिचय पूरा नहीं हुआ, दूसरा देना भी शुरू नहीं किया कि आपने तीसरा सवाल ठोक दिया। सीढ़ी-सीढ़ी चढ़कर बात परवान चढ़े तो बेहतर होता है।”
 “जो भी कहना है, संक्षेप में कहो।”
 “जैसा हुक्म।” कहने के साथ उसने अपना हाथ ठकरियाल की तरफ बढ़ा दिया—“ये है मेरा नया परिचय।”
 तीनों ने देखा—उसके हाथ ने एक विजिटिंग कार्ड था।
 ठकरियाल ने उसे लिया।
 तीनों ने एक साथ देखा और...तीनों ही चौंक पड़े।
 ठकरियाल ने कहा—“तो प्राइवेट जासूस हो तुम?”

“अभी-अभी संक्षेप में बात करने के लिये कहा था आपने। क्या फायदा उसे दोहराने से जो कार्ड बता रहा है। दिल्ली से पधारा हूं। वैसे जो धंधा मैं करता हूं, हमारे मुल्क में उसे फालतू का धंधा माना जाता है। कहा जाता है—जिसे कोई और धंधा न मिले, वह प्राइवेट जासूस बनकर बैठ जाये। वैसे, दिल्ली में दुकान ठीक चल रही है मेरी।”

“यहां पधारने का कारण?”

“हां।...अब ठीक है ये सवाल मगर, जवाब इसके भी दो हैं। पहला—यार मर गया है, आना तो था ही लेकिन...

“लेकिन?”

“आप लोगों ने अक्सर सुना होगा—जो सिंगर होते हैं, उन्हें दोस्त भी शादी में बुलाये तो गाना गाने के लिये कहने लगते हैं। ऐसा ही हाल फोटोग्राफर दोस्त का भी होता है। पट्टा पहुंचता यार की शादी अटैन्ड करने है, पकड़ा हाथ में कैमरा दिया जाता है। कुछ ऐसी ही हालत मेरी भी हो गई है। आना मातम में शामिल होने चाहिये था, आ जासूसी करने गया हूं।”

“ज-जासूसी करने?”

“ज-जी।”

“तुम प्राइवेट जासूस हो न?”

“स्टाम्प पेपर निकालो। लिखकर दे देता हूं। बाकायदा लाईसेंस है मुझ पर।”

“प्राइवेट जासूस तब जासूसी करने निकलता है न, जब उसे ‘एप्रोच’ किया जाये?”

“काफी शानदार ‘जी. के.’ है आपका?”

“इस केस पर तुम्हें किसने नियुक्त किया है?”

“खुद याड़ी ने मेरे।”

“र-राजदान ने?”

“वही तो।” कहने के साथ झटके से उसने अपने चेहरे से कैप हटा लिया—“मैं भी ठीक उसी तरह चौंका था जैसे आप चौंके हैं। खुद मक्तूल ने अपने मर्डर की इन्वेस्टीगेशन के लिये नियुक्त किया है मुझे। मेरे जीवन की यह पहली ‘दुर्घटना’ है। और मेरे ही जीवन की क्यों, मेरे ख्याल से तो विश्व में पहली ही बार घटी है ये दुर्घटना। इसे तो ‘गिनीज बुक’ में जगह मिलनी चाहिये। राजदान से पहले शायद दुनिया के किसी शख्स ने कभी अपने मर्डर की इन्वेस्टीगेशन करने के लिये जासूस ‘एंगेज’ नहीं किया होगा। वाह, क्या बात है। कारनामा हो तो ऐसवा। आखिर यार था अपना। ऐसी ही कुछ करना चाहिये था उसे।”

ठकरियाल, दिव्या और देवांश उसे देखते रह गये। उसने जिसके चेहरे की एक-एक हड्डी खाल को चीरकर बाहर निकल आने को बेचैन सी नजर आ रही थी। नाक गोभी के पकौड़े जैसी थी। कान सामान्य से बड़े। होठ पतले निब से खींची गई सरल रेखा जैसे और आंखें गढ़े में धंसी थीं। पुतलियों का रंग हरा था। क्रिस्टल की गोलियों जैसी चमक थी उनमें। ठकरियाल ने वैसी आंखें ‘डिस्कवरी’ पर दिखाये गये ‘किंग कोबरा’ की देखी थीं। सचमुच उसकी आंखों में ऐसा कुछ था कि दिव्या और देवांश की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ती चली गई। काफी कठिनाई से खुद को नियंत्रित करने के बाद ठकरियाल ने पूछा—“हम कैसे मान लें तुम्हें राजदान ने ‘एंगेज’ किया है?”

उसने मेज से पैर हटाये। टांगे समेटी और कुर्सी से खड़ा हो गया।

उन्हें पहली बार एहसास हुआ—साढ़े छः फुट से एक सूत भी कम लम्बा नहीं था वह।

पतला-दुबला। साढ़े छः फुट।

अजीब लग रहा था।

हवा थोड़ी तेज चली तो तन पर मौजूद सुर्ख पैन्ट और वाहनों सजी शर्ट ‘फड़-फड़’ की आवाज के साथ यूं फड़फड़ाने लगी जैसे ‘क्लिप’ में फंसे सूखने के लिये डाले गये कपड़े। ठकरियाल के एकदम नजदीक खड़ा था। इसलिये उसके चेहरे की तरफ देखने के लिये ठकरियाल को ऊपर देखना पड़ा। ‘सरल रेखा’ नुमा होठ मुस्कराने वाले अंदाज में फले। साथ ही वातावरण में उसकी आवाज गूंजी—“जवाब संक्षेप में दूं या हनुमान की पूंछ बनाकर?”

“संक्षेप में।”

उसने जेब से कागज निकालकर ठकरियाल की तरफ बढ़ा दिया।

ठकरियाल ने कागज लिया।

उत्सुकतावश देवांश और दिव्या भी उसके नजदीक सरक जाये। जैसी कि उम्मीद थी—एक बार फिर राजदान के लेटर पैड पर राजदान की हैंड राइटिंग मौजूद थी।

वह लेटर भी अट्टाईस अगस्त को ही लिखा गया था।

अखिलेश वापस कुर्सी पर बैठ चुका था।

तीनों ने एक साथ लेटर पढ़ना शुरू किया—

अखिलेश—म मुझे एक वकील की जरूरत थी। सो, वकीलचंद का ख्याल आया। पूना से बुलाया उसे। तेरे और अवतार के बारे में पूछा। अवतार का तो उसे भी नहीं पता आजकल कहां है और क्या कर रहा है। तेरे बारे में बताया—तू दिल्ली में है और वहां के हाई सर्किल में सबसे बेहतरीन प्राइवेट डिटेक्टिव माना जाता है।

सच पूछे तो मुझे किसी ऐसे ही जासूस की तलाश थी।

कितना सुखद इत्फाक है, ऐसा एक शख्स तू ही निकल आया।

मेरे बचपन का दोस्त।

दोस्त, पता नहीं—ये जिन्दगी भी कितनी पेचीदगियों से भरी पड़ी है। अब मुझे ही को ले। मुझे मालूम है—कल, यानी उन्तीस अबस्त की रात को करीब एक बजे मुझे कत्ल कर दिया जायेगा। साईलेंसर युक्त रिवाल्वर से कत्ल होगा मेरा। मेरे अपने ही रिवाल्वर से। कातिलों को भी अच्छी तरह जानता हूं अर्थात् मालूम है—मुझे कौन लोग कत्ल करने वाले हैं परन्तु इस लेटर में उनके नाम नहीं लिखूंगा। ऐसा कोई हिन्ट तक नहीं दूंगा जिससे तू कातिलों के बारे में अनुमान लगा सके।

ऐसा कुछ कर दिया तो तेरे करने के लिये भला रह ही क्या जायेगा?

मैं चाहता हूं—इस केस में अपनी काबिलियत दिखाने का तुझे पूरा मौका मिले। अपने टेलेंट से पहुंचे मेरे कातिलों तक।

यह लेटर तुझे मिलने तक मेरा कत्ल हो चुका होगा।

खोपड़ी घूम रही होगी तेरी। यह सोचकर कि जब मुझे मालूम है, मेरा कत्ल कब, कहां और किन लोगों के हाथों होना है तो ऐसा होने ही क्यों दे रहा हूं मैं?

उससे पहले ही, पकड़वा क्यों नहीं देता उन्हें जो ऐसा करने वाले हैं।

यह भी एक रहस्य है।

ऐसा रहस्य जिसका तुझे पर्दाफाश करना है।

चाहूं तो इस लेटर में भी लिख सकता हूं।

मगर नहीं।

बात एक बार फिर वहीं आकर अटक जाती है।

मैंने ही लिख दिया तो तेरे करने के लिये क्या बचेगा?

दुनिया को तुझे ही बताना है कि मालूम होन के बावजूद मैंने अपना कत्ल क्यों हो जाने दिया।

कत्ल होने वाले हर शख्स की केवल एक ही ख्वाहिश होती है—यह कि उसके कातिलों को सख्त सजा मिले। मेरी भी यही ख्वाहिश है। यह जिम्मेदारी मैं तुझे सौंपकर जा रहा हूं। उम्मीद है, तू जरूर खरा उतरेगा।

तेरे बचपन का यार—आर. के. राजदान

पत्र पढ़कर ठकरियाल ने चेहरा ऊपर उठाया।

नजर दिव्या और देवांश के चेहरों पर पड़ी तो लगा—उन पर किसी ने हल्दी पोत दी है।

टांगे कांप रही थीं उनकी।

ठकरियाल ने अखिलेश पर ध्यान दिया।

वह पुनः उसी पोज में खड़ा खर्राटे मार रहा था जिसमें उसके जगाये जाने से पहले था।

देवांश ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला।

ठकरियाल ने उसे कुछ न बोलने का इशारा किया और अखिलेश का कंधा पकड़कर पूर्व की भांति झंझोड़ता हुआ बोला—“मिस्टर अखिलेश।”

“मैं जाग रहा हूं।” कहने के साथ वह कुर्सी पर सीधा होकर बैठ गया। कैप सिर पर रख ली। बोला—“उम्मीद है अब आपको मानना पड़ेगा, मुझे राजदान ने ही ‘एंगेज’ किया है।”

“मिस्टर अखिलेश!” ठकरियाल के लहले में अजीब सी कठोरता उत्पन्न हो गयी थी—“हम लोग काम की बातें करें तो बेहतर होगा।”

“हां। बेहतर तो यही होगा मगर, काम की बात करने से पहले मैं एक जरूरी काम जरूर करता हूं। उसे कर लूं।” कहने के साथ उसने पैंट की जेब से सिगरेट का पैकेट निकला।

एक सिगरेट का सारा तम्बाकू निकालकर बायीं हथेली पर डाल लिया।

उसमें सुल्फा मिलाया।

दायें हाथ के अंगूठे से रगड़ा। सुल्फे को अच्छी तरह तम्बाकू के साथ रगड़ने के बाद तम्बाकू को वापस सिगरेट में भर लिया।

इस काम में पांच मिनट लग गये उसे।

तीनों खामोशी के साथ उसकी हरकतों को देखते रहे।

सिगरेट सुलगाकर एक कश लगाने के बाद कहा—“हां। अब तैयार हूं मैं काम की बातें करने के लिये।”

ठकरियाल ने पूछा—“हमसे क्या चाहते हो?”

अखिलेश ने सिगरेट उसकी तरफ बढ़ा दी।

“नहीं।” ठकरियाल ने कहा—“मैं सुल्फा नहीं पीता।”

“अच्छी बात है। पीना भी नहीं चाहिये। बुरी चीज होती है। पर क्या करूं। ‘लत’ पड़ गयी। खैर!” कहने के बाद उसने एक सुट्टा लगाया। ढेर सारे गाढ़े धुवें से वातावरण को दूषित किया और बोला—“आप इन्वेस्टीगेटर हैं इस केस के। अभी तक की इन्वेस्टीगेशन आप ही ने की है। क्या कहते हैं आपके जहन के कलपुर्जे?”

“शायद तुम्हें मालूम नहीं है, यह केस तुम्हारे यहां आने से पहले ही हल हो चुका है।”

“नाशते में आज अखबार ही चाटे हैं मैंने।”

“तब तो...”

“नहीं। बबलू राजदान का कातिल नहीं हो सकता।”

“बेस?”

“एक नहीं, दो हैं।”

“बोलो।”

“पहला—मेरे उस यार के कत्ल का केस इतना सीधा-सादा नहीं हो सकता है जिसके लिये उसने मुझ जैसे महान जासूस को यहां बुलाया है और न ही, उसका कातिल इतनी आसानी से पकड़ा जा सकता है।” कहने के साथ एक और सुट्टा लगाया, बोला—“बेस नम्बर दो—याड़ी ने अपने लेटर में एक से ज्यादा बार ‘कातिलों’ लिखा है अर्थात् कोई एक शख्स उसका कातिल नहीं होना चाहिये।”

“ये सिर्फ ‘कयास’ है, जबकि हमारे पास ठोस सुबूत मौजूद हैं।”

“जैसे?”

“घटनास्थल से बरम, बबलू के फुट स्टैप्स, अंगुलियों के निशान, उसके स्कूल बैग से बरामद दिव्या जी क जेवर, राजदान के खून से सने बबलू के कपड़े और अंत में, बबलू द्वारा किया गया इकबाले जुर्म। खुद उसके द्वारा सुनाई गई कत्ल की चश्मदीद वारदात।”

“मेरे ख्याल से बजलू असल हत्यारों के षड्यंत्र का शिकार है।”

“बात ख्यालों से नहीं ठोस सुबूतों से बनती है मिस्टर अखिलेश।”

“धन्यवाद। ऐसे शख्स को इतनी उम्दा बात बताने के लिये धन्यवाद जिस शख्स ने दिल्ली के जासूस मार्केट में तहलका मचा रखा है।” कहते वक्त ‘सरल रेखा’ पर बड़ी ही विचित्र मुस्कान उभरी थी। उसने अपनी किंग कोबरा जैसी हरी आंखें ठकरियाल के चेहरे पर जमाये रख कर कहा—“अब आया हूं तो सुबूत भी जुटने शुरू हो जायेंगे। इस मामले में लोग मुझे ‘मैग्नेट’ कहते हैं। ऐसा मैग्नेट जिसकी तरफ ‘लोहे के बुरादे’ की तरह सुबूत खिंचे चले आते हैं और अंततः चिपककर रह जाते हैं मेरे जहन की दीवारों पर।”

यह सब अखिलेश ने इतने दृढ़ आत्मविश्वास के साथ कहा था कि दिव्या और देवांश की रूह फना हो गयीं। उन्हें लगा—यह शख्स किसी हालत में उन्हें पांच करोड़ तक नहीं पहुंचने देगा।

मगर,

ठकरियाल उतना डरा हुआ नजर नहीं आ रहा था।

कुछ कहने के लिये उसने मुंह खोला था कि दीनू काका ने नजदीक आकर कहा—“पोस्टमार्टम से फोन आया है छोटे मालिक। डैड बॉडी मिल सकती है।”

देवांश ने यह सोचकर राहत की सांस ली कि फिलहाल उसे अखिलेश के सवालों का सामना नहीं करना पड़ेगा।



अंतिम यात्रा की तैयारियां चल रही थीं।

माहौल गमगीन था।

समरपाल सहित राजदान एसोसियेट्स के सभी कर्मचारियों के अलवा शहर के प्रतिष्ठित लोग विला के फ्रन्ट लॉन में मौजूद थे। और अंदर।

वहां, जहां डैड बॉडी को नहलाया जा रहा था।

ठकरियाल वहीं था।
 दिव्या और देवांश तो थे ही।
 लाश पूरी तरह नग्न थी।
 ठकरियाल ने खूब चैक किया।
 भिन्यास उड़े चेहरे पर प्लास्टिक सर्जरी का कहीं कोई रेशा नहीं था।
 केवल इतना ही कहा ठकरियाल ने—“हन्ड्रेड परसेन्ट वही है।”
 “पहले ही कम मुसीबत नहीं थी।” देवांश बड़बड़ाया—“अखिलेश के रूप हरामजादे ने एक और मुसीबत भेज दी।”
 “सचमुच।...मुसीबत ही है वह।” दिव्या बोली।
 ठकरियाल ने कहा—“शायद एक खास बात पर ध्यान नहीं दिया तुमने।”
 “वह क्या?”
 “उसके पास जो लेटर है, उसमें राजदान ने आत्महत्या का जिक्र कहीं नहीं किया है। उल्टे बार-बार कत्ल बताया है अपने अंत को। कातिल कहा है हमें।”
 “मतलब क्या हुआ इस बात का?”
 “सीधा सा मतलब है।” देवांश ने कहा—“वही होने वाला है जिसका मुझे पहले ही से डर था। वास्तव में हम आत्महत्या को हत्या का रंग देने के गुनेहगार हैं जबकि साबित होने वाले हैं, सीधे-सीधे राजदान के कातिल।”
 ठकरियाल बोला—“लगता तो यही है राजदान के नये पैतरे से परन्तु बात समझ में नहीं आ रही। ऐसा हो कैसे सकेगा? खुद हमारे पास उसके हाथ के लिखे ऐसे लेटर हैं जिनमें खुद उसने अपने अंत को आत्महत्या कुबूल किया है। दूसरी बात—एक तरफ वह खुद को जीवित साबित करने के मिशन पर है, दूसरी तरफ—हमें हत्यारे साबित करने के लिये अखिलेश आ पहुंचा है। आखिर असल में साबित क्या करना चाहता है राजदान।”
 “मैं पहले ही कह चुका हूं।” देवांश ने कहा—“हमारी समझ में उस वक्त तक कुछ आयेगा जब तक जेल की चारदीवारी में नहीं पहुंच जायेंगे और भगवान जाने उस वक्त भी कुछ समझ में आ पायेगा या नहीं।”
 दिव्या कुछ कहना ही चाहती थी कि बाथरूम में ‘महापंडित’ प्रविष्ट हुआ।
 वह, जिसकी प्रतीक्ष थी।
 जिसे अंतिम संस्कार की रस्में करानी थीं।
 महापंडित ने आते ही मंत्रोच्चारण शुरू कर दिया।
 ठकरियाल ने सोच रहा था—कितनी करामाती लाश है ये?
 कैसे अनोखे जाल में उलझाये हुये है अपने दुश्मानों को। ठकरियाल अपनी पिछले जीवन में कभी यह कल्पना नहीं कर सका था एक शख्स मरने के बाद किसी के लिये इतना खतरनाक बना सकता है।
 दिव्या और देवांश को लग रहा था—लाश अभी खिलखिलाकर हंस पड़ेगी। अपनी खिल्ली सी उड़ाती लग रही थी वह उन्हें जिसे वे महापंडित के निर्देशों के कारण मल-मलकर नहलाने पर मजबूर थे।
 ठकरियाल को लगा—अब यहां उसका कोई काम नहीं है।
 सो।
 बाहर निकल आया।
 फ्रन्ट लॉन में पहुंचकर एक सरसरी नजर मौजूद लोगों पर डाली।
 रामोतार के अलावा वहां बन्दूकवाला, आफताब, विला का एक अन्य नौकर, भागवंती, समरपाल, भट्टाचार्य, अखिलेश, वकीलचंद, रामभाई शाह और अन्य ऐसे ढेर सारे लोग मौजूद थे जिनके नाम नहीं जानता था। वह खुद भी उन्हीं गमगीन लोगों के बीच जा खड़ा हुआ।
 धीरे-धीरे सरकता रामोतार उसक नजदीक आ गया।
 मौका पाकर फुसफुसाया—“एक बात ने मरी खोपड़ी की जड़े हिला रखी हैं साब।”
 ठकरियाल कुछ बोला नहीं, केवल सवालिया नजरों से घूरा उसे।
 “अगर हम राजदान साब की शवयात्रा में शामिल होन आये हैं तो मुझे नांवा पहुंचाने वाला कौन था?”
 सकपका गया ठकरियाल। बड़बड़ाकर केवल इतना कह सका—‘तू ही जानता होगा।’
 “क्या आपको पूरा यकीन है साब, लाश राजदान सब की ही है?”
 “क्यों, तूने नहीं देखा उसे?” कहने के साथ उसने अखिलेश की तरफ देखा था। उसकी तरफ जो अपनी किंग कोबरा जैसी आंखों

से उन्हीं की तरफ देख रहा था।

“देखना अलग बात है साब, चैक करना अलग। आप तो बाकायदा चैक करके आये है।”

ठकरियाल ने उसे खा जाने वाली नजरों से घूरा।

जरा भी तो प्रभाव नहीं पड़ा रामोतार पर। कुछ देर उसके बोलने का इन्तजार करता रहा। जब नहीं बोला तो खुद ही बोला—“साब, क्या बताती है आपकी खोजबीन? लाश...”

“राजदान ही की है।” ठकरियाल दांत भींचकर गुर्रा उठा।

“फिर वह कौन...”

“तुझे मिला था वह। तुझे ही पता होगा। शायद आंखें फूट गई थीं तेरी जो किसी और को राजदान समझा।”

“साब। लगता तो नहीं था वह कोई और।”

“तो मोर्चरी से उठकर टहलता हुआ पहुंच गया होगा तेरे क्वार्टर पर।”

हौले से हंसा रामोतार। बोला—“आप तो ‘जोक’ करने लगे साब।”

“जोक तो तू कर रहा है। अभी तक नहीं समझा, वह राजदान का क्लोन था।”

“हां। क्लोन ही होगा।” बड़बड़ाकर रामोतार मानो खुद ही की संतुष्ट करने की कोशिश कर रहा था—“इसके अलावा और हो भी क्या सकता है? बहरहाल, आप जैसा ब्रिलियेन्ट आदमी खुद लाश को चैक करके आया है।”

ठकरियाल बड़ी मुश्किल से खुद को चुप रख सका। असल में उसका जी रामोतार के जबड़े पर एक धूसा जड़ने को चाह रहा था मगर अफसोस—वर्तमान हालात में अपनी यह आरजू पूरी नहीं कर सकता था। उसकी मानसिक अवस्था को समझते रामोतार के होठों पर हल्की-हल्की सी मुसकान थी। कुछ देर चुप रहने के बाद वह पुनः बोला—“पर साब मेरी समझ में फिर एक बात नहीं आ रही।”

जबड़े भींचे ठकरियाल ने कहा—“समझ में क्या आ रहा है तेरी?”

“भला क्लोन मुझे इतना नांवा क्यों देगा?” अपनी ही धुन में वह कहता चला गया।

“रामोतार!” वह गुर्राया—“जिस जगह खड़ा ये सारी बकवास तू कर रहा है, तेरी इस बेवकूफी से अगर तेरी करतूत किसी और के कानों तक पहुंचती है तो दोष मेरा नहीं होगा।”

“बात तो ठीक है साब। मगर...”

“फिर मगर?”

“दो ही लोगों से डिस्कस कर सकता हूं इस मसले पर। पहली मेरी घर वाली। दूसरे आप। घरवाली के बारे में तो कहूं क्या? उसकी समझ में तो आज तक यही बात नहीं आई कि वह सात बच्चों की मां बनी तो बनी कैसे? फिर भला ये ‘ओरिजनल’ और ‘क्लोन’ वाली बात क्या समझेगी। रहे आप। लगता है आप इस मसले पर वार्ता के ही इच्छुक नहीं हैं।”

“भलाई इसी में है रामोतार, इस बात को भूल जा कि राजदान तुझे कभी मिला था। उसने तुझे रुपये दिये थे और तूने बबलू को फरार किया था। ऐसी बातों को खुद याद रखो तो कभी न कभी, किसी न किसी के कानों तक पहुंच जाती हैं।” एक बार फिर उसने अखिलेश की तरफ देखा था और अब भी उसे अपनी ही तरफ देखते पाया था।

“ठीक कहा आपने। अब मैं ऐसा ही करूंगा। बहरहाल, आप पुराने ‘एक्सपीरियेंस होल्डर’ हैं। और फिर अगर मेरी पोल किसी पर खुल गई तो दिक्कत तो आपको भी हो जायेगी न!”

एक बार फिर ठकरियाल की इच्छा उसका जबड़ा तोड़ डालने की हुई। यदि अखिलेश वहां मौजूद न होता तो शायद अपनी इस इच्छा को पूरी कर ही हालता वह। भला हो उन लोगों का जो उसी वक्त राजदान की डैड बॉडी को अर्थी पर रखे विला की इमारत से बाहर निकल आये। जाने और क्या-क्या कहने की रामोतार की इच्छा का अंत हो गया।

‘राम नाम सत्य’ की आवाजों के साथ शवयात्रा शुरू हुई।

सारे रास्ते अखिलेश भट्टाचार्य और वकीलचंद के साथ रहा था। हालांकि यह स्वाभाविक था। पुराने दोस्त थे वे मगर, चोर की दाढ़ी में तिनका वाली कहावत गलत नहीं है। ठकरियाल के दिमाग को यह सवाल बराबर कचोटता रहा ‘वे क्या बातें कर रहे हैं?’

खुद उसने, खुद को रामोतार से दूर रखा था।

उसे डर था, कहीं रामोतार पुनः वही टॉपिक न छेड़ दे।

वह समझ चुका था—मूर्ख और कार्टून सा नजर आने वाला अखिलेश वास्तव में एक घुटा हुआ जासूस है। एक इंस्पेक्टर और अवलदार के बीच होती खुसफुसाहट उसे खटक सकती है।

शवयात्रा श्मशान पहुंची।

अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिये वहां भी पहले ही से सैकड़ों लोग मौजूद थे।

एस. एस. पी. अर्थात् रणवीर राणा भी था उनमें।

और।

राणा पर नजर पड़ते ही अखिलेश इस तरह उसकी तरफ लपक पड़ा जैसे किसी ने वर्षों बाद अपनी प्रेमिका को देखा हो। उसी तरफ देख रहे ठकरियाल का दिल उस वक्त जोर-जोर से धड़कने लगा जब राणा को भी उसने अखिलेश को देखते ही चौंकते और फिर इस तरह हाथ मिलाते देखा जैसे वह उसका पूर्व परिचित हो।

ठकरियाल को लगा—अखिलेश नाम का यह शख्स जरूर कुछ गुल खिलाने वाला है।

इसमें कोई शक नहीं, जब बीमा कंपनी से मिलने वाले क्लेम के लालच में उसने पलटा खाकर दिव्या और देवांश की राह पर चलने का फैसला किया था, तब वह स्वप्न तक में कल्पना नहीं कर पाया था यह मामला इतनी पेचीदगियों भरा साबित होगा। न ही यह कल्पना कर सका था कि राजदान इतना बड़ा खिलाड़ी निकलेगा। इतना बड़ा कि सचमुच उसके किये कुछ भी तो नहीं हो पा रहा था। जो भी करता था, थोड़ा आगे बढ़ते ही पता लगता था—राजदान पहले कही उसके स्टेप की कल्पना कर चुका था। दिव्या और देवांश से भले ही वह चाहे जो कहकर उनका ढाढस बंधा रहा हो परन्तु हकीकत यह थी—खुद उसे भी महसूस होने लगा था इस मामले में हाथ डालकर वह भूल कर चुका है।

और अब... हालात इतने विकट हो चुके थे कि चाहर भी कदम वापस नहीं खींच सकता था। अखिलेश नामक मुसीबत उसे, उस शख्स द्वारा खड़ी की गई अब तक की सभी मुसीबतों से खतरनाक नजर आ रही थी, जिसे चिता पर लिटाया जा चुका था। जिसके जिस्म को को पंचतत्वों में विलीन करने हेतु चारों तरफ लकड़ियां लगाई जा रही थीं।

ठकरियाल ने देखा—अखिलेश ने अभी-अभी जेब से एक कागज निकालकर राणा को दिखाया था। समझते देर नहीं लगी उसे—वह वही, राजदान का लेटर होगा। ठकरियाल के दिमाग में विचार कौंधा—आखिर क्या बातें कर रहा है वह एस. एस. पी. से?

कहीं वह उसे शीशे में न उतार ले?

ठकरियाल को लगा—उसे भी वहां होना चाहिये।

उनके बीच होने वाली बातें उसकी 'नॉलिज' में होनी चाहिये।

अतः भीड़ को चीरता तेजी से उनकी तरफ बढ़ा।

इस वक्त उसका ध्यान रामोतार की तरफ जरा भी नहीं था। उस रामोतार की तरफ जो लगभग उसके साथ ही साथ रणवीर राणा और अखिलेश की तरफ बढ़ा था।

नजदीक पहुंचकर ठकरियाल ने हौले से राणा को सैल्यूट किया।

राणा उसे देखते ही बोला—“आओ। आओ इंस्पेक्टर। इनसे मिलो। अखिलेश गुप्ता है ये। दिल्ली के जाने-माने प्राइवेट डिटेक्टिव। हमारा इनसे वहीं परिचय हुआ था। बड़ी ही आश्चर्यजनक बात बता रहे हैं ये।”

“मैं इनसे मिल चुका हूं सर और वह आश्चर्यजनक बात भी सुन चुका हूं।” बहुत ही संतुलित लहजे में ठकरियाल कहता चला गया—“वाकई ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि किसी ने अपने मर्डर की इन्वेस्टीगेशन के लिये खुद जासूस नियुक्त किया हो। इनके पास अपनी मृत्यु से पूर्व राजदान का लिख हुआ लेटर है।”

“हम तो चकित रह गये हैं इस रहस्योद्घाटन से।” राणा वाकई रोमांचित नजर आ रहा था—“इनका दावा है, कातिल बबलू दावे से बबलू नहीं हो सकता।”

ठकरियाल ने बहुत ही सावधानी पूर्वक पूछा—“क्या आप इनके दावे से सहमत हैं?”

“सवाल ही नहीं उठता, बबलू को हमने खुद पकड़ा है। उसके खिलाफ इतने सबूत हैं कि...

“आप भूल रहे हैं राणा साहब।” अखिलेश ने कहा—“लेटर से जाहिर है—राजदान को न सिर्फ यह मालूम था उसका कत्ल कौन लोग करने वाले हैं बल्कि यह भी मालूम था—यह कत्ल किस तरह और कितने बजे होगा?”

“इससे तो एक बार फिर बबलू ही कातिल साबित होता है।” ठकरियाल ने अखिलेश पर हावी होने के लिये तपाकू से कहा—“उस बयान पर गौर कीजिये सर। बबलू ने खुद बताया—वह दिन ही में राजदान से रात को आने के बारे में कह चुका था। अर्थात् राजदान जानता था वह रात के किस वक्त आयेगा। उसके लिये खिड़की भी खोलकर रखी थी। मतलब साफ है—वह समझ चुका था ज्वेलरी पर बबलू की नीयत खराब हो चुकी है। लालच में फंसा वह उसका कत्ल करने आ रहा है। राजदान के लेटर में यही सब लिखा है, केवल नाम नहीं लिखा बबलू का। नाम ही लिख देता तो राजदान के मुताबिक ‘इनके’ करने के लिये काम ही क्या रह जाता?”

“आप एक छोटी सी। बहुत ही नन्ही सी बात भूल रहे हैं मिस्टर ठकरियाल।” अखिलेश ने चटकारा लेते से लहजे में कहा।

ठकरियाल ने धड़कते दिल से पूछा—“वह क्या?”

“यह लेटर राजदान ने अट्टाईस तारीख को लिख अर्थात् उसे अपने कत्ल, कातिल और कत्ल के टाईम आदि के बारे में अट्टाईस

को मालूम था जबकि बबलू अपने बयान के मुताबिक उससे उन्तीस को दिन में मिला था।”

‘धाड़’ की जोरदार आवाज के साथ ठकरियाल को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके दिमाग में गोली मार दी हो। सचमुच—अखिलेश के शब्द कुछ इसी तरह उसके जहन से जाकर टकराये थे।

अवाकू सा रह गया वह।

कुछ कहने न बन पड़ा।

रणवीर राणा ने कहा—“बात वाई सोचने वाली है। मगर...

“चालाक अपराधियों का काम ही पुलिस को चकमा देने के लिये बेगुनाह के खिलाफ सबूत बिखेरना होता है।” अखिलेश के हर शब्द से आत्मविश्वास टपक रहा था—“कुछ लोग इतने घुटे हुये होते हैं कि बेकसूर किसी कमजोरी का फायदा उठाते हुये उससे जुर्म तक कुबूल करा देता हैं।”

“क्या ऐसा हो सकता है?” राणा कह उठा—“अगर ऐसा हुआ है तो वाकई, बहुत मार्बलस केस है ये। हमारी जिन्दगी में आया शायद सबसे दिलचस्प केस। और...हमें अखिलेश की बात कुछ-कुछ जंच रही है। याद करो इंस्पेक्टर, उस वक्त एक बार को तुमने भी शंका व्यक्त की थी। कहा था—तुम्हें आश्चर्य है, उस लड़के को एक चांटा तक नहीं मारा गया और सारा गुनाह कुबूल करता चला गया। कुद इस तरह धारा प्रवाह बोलता चला गया जैसे पूर्व निर्धारित था कि उसे कब क्या कहना है? इसका मतलब उस वक्त तुम्हारे द्वारा व्यक्त किया गया संदेह ठीक था। किसी के दबाव में वह वही कह रहा था जो उससे कहलवाया जा रहा था।”

ठकरियाल ने अपने जाल में खुद को बुरी तरह जकड़ा हुआ महसूस किया।

इस वक्त खुद उसकी हालत वैसी ही थी जैसी वह अपने सामने खड़े मुजरिम की कर दिया करता था। बचाव का एक ही रास्ता सूझा उसे। वही कह दिया—“अगर बबलू को किसी ने फंसाया होता तो घटनास्थल से छेड़छाड़ जरूर की जाती। और सर।” उसने राणा से कहा—“घटनास्थल का निरीक्षण आपने खुद किया है। वहां किसी वस्तु से कोई छेड़छाड़ नहीं...

“छेड़छाड़ की गई थी।” अखिलेश ने उसकी बात बीच ही में काट दी।

ठकरियाल कुछ बोल न सका। मुंह खुला का खुला रह गया था उसका।

राणा ने चकित लहजे में कहा—“घटनास्थल का निरीक्षण तो वाकई हमने खुद किया था मिस्टर अखिलेश। हमें तो नहीं लगा वहां के किसी सामान से छेड़छानी की गई है।”

अखिलेश ने मुंह से जवाब देने की जगह दूर खड़े आफताब को अपने नजदीक आने का इशारा किया।

राणा, ठकरियाल और रामोतार ने भी उधर देखा था। उधर, जिधर आफताब खड़ा था।

दीनू काका और एक अन्य नौकर के साथ सज चुकी चिता के बहुत नजदीक खड़ा था वह।

महापंडित मंत्रोच्चारण कर रहा था। देवांश के हाथों में वह लकड़ी थी जिसके अग्रिम सिरे पर आग लपलपा रही थी। चिता की परिक्रमा कर रहा था वह। मगर ध्यान चिता पर नहीं था।

ध्यान था राणा, ठकरियाल, रामोतार और अखिलेश की तरफ।

जहन में अनेक सवाल कौंध रहे थे।

उस वक्त तो सारे अस्तित्व में खलबली सी मच गई जब अखिलेश के इशारे पर आफताब को उनकी तरफ बढ़ते देखा। जी चाहा—लकड़ी यहीं फैंककर श्मशान से दूर भागता चला जाये।

परिक्रमाएँ पूरी हो चुकी थीं।

महापंडित ने चिता को अग्नि देने के लिये कहा।

खुद में खोया देवांश उस आदेश को सुन न सका।

महापंडित ने पुनः कहा।

देवांश ने इस बार भी न सुना।

तब, महापंडित ने उसे झंझोड़ डाला।

वह चौंका।

महापंडित बोला—“दुख से उबरिये जिजमान जी। बड़े भाई को अग्नि दीजिये। तभी इन्हे मोक्ष मिलेगा।”

देवांश ने चिता पर लेटे चेहरे और खोपड़ी विहीन राजदान को देखा।

जी चाहा—अग्नि देने की जगह अपने नाखूनों से नोच डाले उसे।

मगर।

अग्नि तो देनी ही थी। सो, दी।

उधर।

आफताब अखिलेश आदि के नजदीक पहुंचा। लगातार रोने के कारण उसकी आंखें सुख होकर सूज गई थीं। ठकरियाल को लगा—उसकी टांगें कांपने लगी हैं। अपने अदरक जैसे जिस्म को भार अचानक ही बहुत वजनी सा लगने लगा था उसे।

इस बीच अखिलेश एक सिगरेट का तम्बाकू बायीं हथेली पर फैला चुका था। उसमें सुल्फा मिलाते हुए आफताब से पूछा—“राजदान साहब को उस रात व्हिस्की तुम्हीं ने पहुंचाई?”

“जी साब।”

“गिलास कितने थे?”

“त...तीन साब।”

अखिलेश ने ठकरियाल से पूछा—“घटनास्थल से कितने मिले?”

“ए-एक।” ठकरियाल को कहना पड़ा।

तम्बाकू को वापस सिगरेट में भरते अखिलेश ने राणा से पूछा—“आपकी नॉलिज के मुताबिक?”

“एक।”

“बाकी दो कहा गये?”

सन्नाटा!

“यानि वहां मौजूद सामान से केवल छेड़छाड़ ही नहीं की गई।” सिगरेट को हथेली पर ठोकते अखिलेश ने कहा—“बल्कि पूरी तरह गायब ही कर लिये गये दो गिलास। क्यों?”

चिता की तरफ से लकड़ियां चटकने की आवाज आई।

ठकरियाल को लगा—उसके दिमाग की नसें चटक रही हैं।

उम्मीद है आपके दिमाग की नसें भी चटकने लगी होंगी। साथ ही दिमाग में सवाल होंगे—क्या राजदान जीवित है? अगर हां—तो कैसे? नहीं—तो कौन है उसका ‘क्लोन’? उद्देश्य क्या है उसका? ठकरियाल ने कहा—‘वह क्लोन को पहचान चुका है।’ क्या यह सच है या दिव्या और देवांश को बेवकूफ बना रहा है? खेल आखिर है क्या? कौन खेल रहा है असली खेल? अखिलेश ने क्या गुल खिलाये? क्या सचमुच सारा प्लान मरे हुए राजदान का है? बबलू, उसके मां-बाप और स्वीटी कहां गायब हो गये? क्या राजदान का चौथा दोस्त अवतार भी मैदान में आया? अगर हां—तो क्या किया उसने? उसका वर्तमान स्वरूप क्या है? क्या ठकरियाल राजदान के जाल को तोड़ सका? क्या हुआ दिव्या और देवांश का? शांतिबाई और विचित्रा क्या सचमुच मर चुकी थीं? सबसे अहम् सवाल है—राजदान दिव्या, देवांश और ठकरियाल के लिये क्या सजाएँ मुकर्रर करने के बाद मरा था? ऐसी वे क्या सजायेँ थी जिन्हें वह फांसी से भी बड़ी सजा कहता था? क्या उसके दुश्मनों को वे सजायेँ मिलीं? क्या कहीं कोई गड़बड़ हुई? हुई—तो क्या? क्या दिव्या, देवांश और ठकरियाल को पांच करोड़ हासिल हो सके? क्या गुल खिलाये उन पांच करोड़ ने? क्या सचमुच राजदान का प्लान परवान चढ़ सका? ऐसे अनेक सवालों का केवल एक ही जवाब है—‘मदारी।’ जी हां, ‘तुलसी पॉकेट बुक्स’ के अगले सैट में निश्चित रूप से प्रकाशित होने वाला वेद प्रकाश शर्मा का ताजा-तरीन उपन्यास—‘मदारी।’ आप समझ सकते हैं—मदारी सम्बोधन राजदान को दिया जा रहा है। उस राजदान को जो मरने के बाद भी अपने दुश्मनों के दिमाग में जिन्दा है। जो डुगडुगी बजा-बजाकर अपने शिकारों को मनचाहें ढंग से नचा रहा है। मदारी के खेल और उसके शिकारों के टुकड़ों का मजा लेने के लिये पढ़ें—‘मदारी।’ कातिल को तो ऐसा’ से शुरू होने वाल कथनक अत्यधिक लम्बा हो जाने के कारण तीन पार्ट तक फैलता चला गया। इसके कारण आपको हुई असुविधा के लिये हमें खेद है, परन्तु वेद प्रकाश शर्मा इस कथानक का तीसरा और अंतिम पार्ट अर्थात् ‘मदारी’ ‘शाकाहारी शंजर’ के साथ ही लिख चुके हैं इसलिये पूरे दो महीने बाद ‘मदारी’ आपके हाथों में होगा। यहां प्रस्तुत है—‘मदारी’ के दो दृश्यों की बानगी।



फोन की घंटी बजी।

देवांश ने रिसीवर उठाया। कहा—“हैलो।”

“मैं बोल रही हूं।” दूसरी तरफ से आवाज आई।

“कौन?”

“ओह! आवाज तक याद नहीं रही मेरी?”

“विचित्रा बोल रही हूं हुजूर।”

“व-विचित्रा?” बुरी तरह चौंक पड़ा वह।

“मुझे मालूम था। मेरी आवाज सुनकर तुम इसी तरह बौखला उठोगे। तुम्हारे भाई ने ठकरियाल के हाथों मेरा और मेरी मां का

मर्डर जो करा दिया था।”

“म-मर्डर करा दिया था?...भैया ने? मगर क्यों?”

“ताकि तुम अपने हाथ हमारे खून से न रंग सको।”

“...ये ऊट पटांग बक रही हो तुम? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।”

“जानती हूँ। तुम्हारी समझ में इसलिये नहीं आ रहा क्योंकि तुम्हें सचमुच नहीं मालूम मेरे और मां के साथ क्या हुआ? मगर, हममारते वक्त ठकरियाल ने सब कुछ बात दिया था। अपने भाई के मुंह से हमारी हकीकत सुनने के बाद तुम आग का गोला बने हमें तलाश करते घूम रहे थे। राजदान को डर था अगर मैं या मां तुम्हें कहीं नजर आ गई तो तुम हमें अपने हाथों से मार डालोगे। राजदान ऐसा नहीं चाहता था। वह सोचता था अगर तुमने ऐसा किया तो हत्या के इल्जाम में फांसी पर चढ़ जाओगे। ऐसा कभी हो ही न सके। यह सोचकर राजदान ठकरियाल को पच्चीस लाख रुपये दिये। हमारी हत्या के लिये दी गई थी वह रकम। और अपनीतरफ से ठकरियाल ने हमें समुद्र में डुबोकर मार भी डाला। मगर मारने वाले से बचाने वाले के हाथ लम्बे होते हैं देवांश। मां के बारे में तो कह नहीं सकती। मर गई या मेरी तरह कहीं जिन्दा है मगर मैं हूँ और इस वक्त तुमसे बातें कर रही हूँ।”

देवांश के दिमाग ने चकराघिन्नी की तरह घूमना शुरू कर दिया था।

उसे याद आया—इस बात की जिक्र कई बार आ चुका है कि राजदान ने ठकरियाल को किसी काम के पैसे दिये थे। ठकरियाल ने भी राजदान को सोन के अंडे देने वाली मुर्गी बताया। खुद राजदान के लेटर्स में भी ऐसा जिक्र था।

तो इस काम के पैसे दिये थे राजदान ने उसे?

वह अभी सोचों में ही गुम था कि दूसरी तरफ से आवाज उभरी—“क्या सोचने लगे देवांश? शायद रास नहीं आ रही मेरी आवाज।”

“मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ।”

“मिलना तो मैं भी चाहती हूँ तुमसे मगर...”

“मगर?”

“अपने कुछ सवालों के जवाब मिल जाने बाद।”

“कैसे सवाल।”

“मैं सब कुछ मान सकती हूँ। मगर यह नहीं मानसकती, राजदान का हत्यारा बबलू हो सकता है।”

“म-मतलब?”

“यकीनन तुम्हीं ने मारा है उसे। फंसा बबलू को दिया। मगर, ये क्या बेवकूफी की देवांश? उसके बाद तो जायदाद दिव्या की होगी। करना तुम्हें वही चाहिये था जो हमारा प्लान था। राजदान की हत्या के इल्जाम में दिव्या फंसानी चाहिये थी। ताकि जायदाद सीधी तुम्हारी हो जाती और प्लान भी वही सबसे अच्छा था। दिव्या के उरोजों के निष्पत्स पर जहर लगा दिया जाता। राजदान उन्हें चुसकता और मर जाता। दिव्या पकड़ी जाती। ये मर्डर रिवॉल्वर से करने की सलाह किसने दी तुम्हें?”

“नहीं।” देवांश ने कहा—“ये मर्डर मैंने नहीं किया।”

“दाई से पेट छुपाने की कोशिश मत करो देवांश। मैं तुम्हारी फितरत से अच्छी तरह वाकिफ हूँ।” वह कहती चली गई—“ठकरियाल से कैसे पास पाये? बहुत ही हरामजादा पुलिसिया है वो। वक्त से पहले ही ताड़ गया था कि तुम दिव्या के निष्पत्स पर जहर लगाने वाले हो। वैसे उस दिन, बाथरूम में तुम यह काम पूरा कर पाये थे या नहीं?”

“प्लीज! प्लीज ये बातें फोन पर मत करो। दिव्या के कानों तक पहुँच गई तो गजब हो जायेगा।” दांत भींचकर देवांश बोला—“तुम हो कहां? मैं वहीं तुमसे मिलने आ जाता हूँ।”

“क्यों...कत्ल करना चाहते हो मुझे?”

“क-कैसी बातें कर रही हो विचित्रा?”

“कहा तो यही था ठकरियाल ने कि हमारी हकीकत जानने के बाद तुम हमें मारने के लिये पागलों की तरह दूँढते फिर रहे थे।”

“झूठ बोला होगा उसने।”

“चलो। मान लेती हूँ। हम आज रात ग्यारह बजे मिल सकते हैं।”

“कहां?”

“ब्रैण्ड स्टेण्ड पर एक स्टीमर खड़ा होगा। उसके अंदर।”

“ओ. के.।...में पहुँच जाऊंगा।”

“नेक इरादों के साथ।” दूसरी तरफ से चेतावनी दी गई—“इस बात को अच्छी तरह समझ लेना देवांश। इस बार मैं किसी धोखे का शिकार होने वाली नहीं हूँ। मेरे खातमें के इरादे से आये तो खुद खत्म हो जाओगे।”

“भला मैं क्यों तुम्हें...”

दूसरी तरफ से रिसीवर रख दिया गया।



“नहीं! नहीं इंस्पेक्टर!” दिव्या ने चीखना चाहा मगर। ठकरियाल ने पूरी चीखें भी नहीं निकलने दीं उसके मुंह से। शराब की बोतल का मुंह दिव्या के मुंह में ठूस दिया। साथ ही कहा—“पी जा। पी जा इसे। अब सिर्फ यही तोरी मदद कर सकती है।”

कुछ शराब उसके कपड़ों पर बिखरी। ज्यादातर हलक में उतरीती चली गई।

शुरू में दिव्या को जबरदस्ती पिलानी पड़ी मगर बाद में, तब जबकि उसकी समझ में यह बात आ गई कि अब वह राजदान के चक्रव्यूह से निकल नहीं सकती। तब जबकि खुद उसे भी लगा—व्हिस्की वाकई उसकी मदद कर सकती है, खुद ही बोतलें उठा-उठाकर पीने लगी। बीच में उसने ठकरियाल से एक सिगरेट मांगी।

ठकरियाल ने सिगरेट बाकायदा सुलगा कर दी।

अब उसे यहां इसलिये रहना था कि दिव्या जरूरत से ज्यादा न पी जाये। पीती-पीती गिर ही न पड़े वह। बेहोश न हो जाये।

“मैं नाचूंगी। मैं ‘उन सबके’ सामने नंगी होकर नाचूंगी इंस्पेक्टर।” नशे की झोंक में वह कहती चली जा रही थी—“मगर भूल मत जाना अपना वादा। याद रखना—उन सबको भी मेरे सामने नंगा करके नचाना है तुम्हें।”

“बेवकूफी भरी बातें मत करो दिव्या!” ठकरियाल गुर्गया—“वे सब बाहर ही मौजूद हैं अगर तुम्हारे मुंह से निकला ऐसा एक भी लफ्ज उनके कानों में पड़ गया तो सारे प्लान पर पानी फिर जायेगा। चुप हो जाओ एकदम। मुंह सिल लो अपना। अभी हमारे बोलने का वक्त नहीं आया है।”

“श-शी-शी-” मुंह से शी की आवाज निकालकर उसने अपनी अंगुली होठों पर रख ली। अब उसकी हर हरकत बता रही थी शराब दिमाग को नचाने लगी है।

उसने सिगरेट में एक कश लगाया।

नजर दीवार पर टंगे राजदान के फोटो पर पड़ी।

जाने क्या आया दिमाग में कि दीवार की तरफ बढ़ी। फोटो के ठीक सामने पहुंच गई। नजर उसी पर थी।

“हंस रहे हो तुम?... हंस रहे हो मुप पर?” व्हिस्की की तरंग में दिव्या कहती चली गयी—“खूब हंसो! खूब हंसो मेरे देवता। मैंने काम ही ऐसे किये हैं। धोखा दिया न तुम्हें? मति मारी गई थी मेरी। देखो...देखो तुमसे बेवफाई करके तुम्हारी गुड़िया ने खुद को क्या बना लिया? एक तुम क्या नहीं रहे इस विला में? कितने लोग घुस आये हैं। तुम्हारा साया सिर पर नहीं रहा तो सचमुच वेश्या ही बन गई मैं तो। नंगी होकर नाचूंगी तुम्हारे दोस्तों के बीच। वे कहते हैं—ऐसा तुम कह गये हो? जरूर कह गये होंगे। बहुत दिल दुखाया न मैंने तुम्हारा? कह जरूर गये होंगे लेकिन इस मंजर को अपनी आंखों से देख नहीं सकते थे। अपने ही हाथों से गोली मारकर इस जिल्लत से मुक्ति दिला देते अपनी गुड़िया को।” वह चुप हो गई, चुपचाप देखती रही राजदान के फोटो को। नशे की तरंग में जाने क्या सोच रही थी? फिर, अचानक उसने फोटो के समक्ष हाथ जोड़ दिये। बहुत ही भावुक स्वर में कहती चली गई वह—“सचमुच मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा किया मेरे साथी। मुझे माफ कर दो राजदान। घुटने टिकाकर भीख मांगती हूं मैं तुमसे।” कहने के साथ उसने वाकई अपने घुटने फर्श पर टिका दिये—“मुझे माफ कर दो। गले से लगा लो अपने। प्यार करो राजदान। सिर पर हाथ फेरो मेरे, तुम्हारा हाथ अपने सिर पर मुझे बहुत अच्छा लगता है।” कहने के साथ सचमुच वह बुरी तरह रो पड़ी थी।

हर नया उपन्यास लिखते वक्त मेरी एक ही कोशिश रहती है। यह कि इस बार नया क्या लिखा जाये? इस उपन्यास का मुख्य किरदार एक मृतक है। उसका प्लान है। यह नया प्रयोग कैसा लगा, इस सम्बन्ध में हमेशा की तरह निम्न पते पर अपनी बगैर लाग-लपटे वाली राय जरूर भेजें।

आपका
वेद प्रकाश शर्मा
तुलस